

हिन्दी-पर्यायवाची कोश

जिसमें विषयों के अनुसार समस्त व्यावहारिक शब्दों के पर्यायों का वर्गीकरण ४ खण्ड और ३७ वर्गों में बड़ी उत्तमता के साथ हुआ है ।



लेखक

पंडित श्रीकृष्ण शुक्ल-विशारद
अध्यापक, सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, बनारस ।

प्रकाशक

भारग्वपुस्तकालय बनारस सिटी

विक्रमाब्द १९९२

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन हैं ।

प्रकाशक—

कैलाशनाथ भार्गव

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।

प्रथम संस्करण]

जून, सन् १९३५ ईस्वी०

[मूल्य २॥
सजिल्द

मुद्रक—

भा० रा० काले

श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी ।

हिन्दी-पर्यायवाची कोश



ग्रन्थकार

पण्डित श्रीकृष्ण शुकु-विशारद ।



समर्पण

भूत-भावन भगवान् शंकर ! आपकी ही प्रेरणा
से एक दिन इस ग्रन्थ का लिखना आरम्भ
हुआ था और आज भी आपकी ही
प्रेरणा से यह समाप्त होकर आपके
अभयप्रद श्रीचरणों में सादर
समर्पित होता है ।

लेखक

परिचय



जकल हिन्दी के कई छोटे-बड़े शब्द-कोश बन गये हैं जिनका संकलन अक्षर क्रम से होने के कारण ज्ञात शब्दों के अर्थ ढूँढने में बहुत सुवीता रहता है। पर शब्द-कोश-संकलन की एक और पुरानी पद्धति हमारे यहाँ प्रचलित थी, जिसमें वस्तुओं के वर्गीकरण के अनुसार शब्द रखे जाते थे। वह पद्धति सर्वथा अनुपयोगी नहीं कही जा सकती। अक्षर-क्रम से संकलित आधुनिक ढंग के कोशों में हम ज्ञात शब्दों के अर्थ निकाल सकते हैं। पर यदि किसी को कोई वस्तु या पदार्थ ज्ञात है, पर उसके लिये ठीक शब्द उसके ध्यान से उत्तर गया है, तो उसका काम अक्षर क्रम वाले कोशों से नहीं निकल सकता। उसके लिये वस्तुओं के वर्ग-विधान वाले कोश ही काम दे सकते हैं। ऐसे कोशों से कविता या लेख लिखने का अभ्यास करने वाले भी लाभ उठा सकते हैं। किसी दृश्य के वर्णन के लिये उन्हें बहुत से वृक्षों, पशुओं या नगर की वस्तुओं के लिये अनेक प्रकार के शब्द एकत्र मिल सकते हैं। यही बात किसी प्रसंग के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। किसी शब्द के अनेक पर्यायवाचक शब्द भी सुनाव के लिये एक जगह मिल जायँगे।

इस प्रकार के कोशों की उत्तमता वस्तुओं के वर्गीकरण में देखी जाती है। जितने ही अधिक और जितने ही ठीक वर्ग पदार्थों के किये जायेंगे उतनी ही सुगमता शब्द ढूँढ़ने वालों को होगी। हिन्दी में “अनेकार्थ नाममाला” ऐसे कुछ पद्यबद्ध पुराने कोश बने थे, पर पद्यबद्ध होने के कारण उनके पर्याय शब्दों के अतिरिक्त कुछ फालतू शब्द भी छन्द के अनुरोध से रखे रहते हैं जिससे भ्रम की संभावना रहती है। वस्तु-वर्ग-विधान वाला ऐसा शब्द-कोश जिसमें केवल पर्याय रखे गये हों, मैं समझता हूँ यह पहला है। आयुर्वेद, ज्यौतिष इत्यादि भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थों से भी शब्द लिये जाने के कारण शब्दों की संख्या इस कोश में अधिक है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का यह प्रयत्न निस्सन्देह स्तुत्य है। उन्होंने बड़े परिश्रम से यह कोश प्रस्तुत किया है। आशा है जिन लोगों के लिये यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वे इससे पूरा लाभ उठायेंगे और संकलनकर्त्ता को धन्यवाद देंगे।

दुर्गाकुण्ड, काशी
१८-५-३५

रामचन्द्र शुक्ल
प्रोफेसर हिन्दी-विभाग,
हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

प्राकथन



हिन्दी के अर्वाचीन साहित्य में बहुधा संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य देख पड़ता है, जिनके लिये प्रायः विद्यार्थी, लेखक और कवि हिन्दी और संस्कृत के शब्द-कोशों की सहायता लेते हैं। शब्द-कोशों में समानार्थवाचक शब्दों की संख्या परिमित होती है, जिससे विद्यार्थियों एवं कवियों

में प्रचुर शब्द-भाण्डार की पूँजी नहीं हो पाती। फलस्वरूप वे उन्हीं इने-गिने शब्दों को लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होते हैं और अपनी रचनाओं में प्रायः शब्द-दारिद्र्य का ही प्रदर्शन करते हैं। यदि उन्हें पर्यायवाची शब्दों की नितान्तावश्यकता जान भी पड़ी तो 'हिन्दी-शब्दसागर', 'मङ्गलकोश', 'शब्दार्थपारिजात' आदि हिन्दी के अर्थकोश अथवा संस्कृत के 'अमरकोश' की सहायता लेते हैं। जब इतने पर भी उनकी पिपासा पूर्ण नहीं होती, तो वे या तो संस्कृत के अन्यान्य कोशों की खोज करते हैं, अन्यथा इत्यल्म समझ कर चुप बैठते हैं।

इस प्रकार की कठिनाइयाँ हिन्दी-साहित्य के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मेरे सामने कई बार आईं। यथासाध्य मैं उनका तो समाधान करता गया, परन्तु मेरे मन में यह बात बराबर खटकती रही कि हिन्दी का कोई ऐसा पर्यायवाची कोश नहीं है जिस एक ही ग्रन्थ से हम सभी विषयों के शब्दों के यथेष्ट पर्याय प्राप्त कर सकें। बहुत कुछ खोज करने पर जो कुछ एक छोटे-मोटे पर्याय कोश मिले भी वे अपूर्ण और नितान्त अक्रम थे। उनसे अच्छी और बहुत अच्छी सहायता तो 'अमरकोश'

नामक अत्यन्त व्यापक और प्रचलित संस्कृत कोश से ही मिल जाती है। हिन्दी-संसार के इस समुन्नत क्षेत्र में इस प्रकार का अभाव मेरे लिये असह्य हो गया। मैं दिन-रात इसी चिन्ता में व्यग्र था कि किस प्रकार हिन्दी के माथे से इस अभाव का कलङ्क मिटाया जाय। मैंने एक बार अपनी यह चिन्ता गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान् दीनजी के समक्ष प्रकट की और उनसे प्रार्थना की कि वे इस अभाव को दूर करके हिन्दी के भण्डार की एक बृहत् पर्याय कोश से अभिवृद्धि करें। पहिले तो लालाजी ने मेरी प्रार्थना पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, परन्तु जब मैं इसी बात को लेकर उनके पीछे पड़ गया और कई बार अपनी आकांक्षा प्रकट की तब एक दिन आपने मुझसे झिझक कर कहा कि “मुझे तो समय नहीं है, तुम्हीं क्यों नहीं लिख डालते ?”

मेरे हृदय में इस विचार का बीजारोपण तो पहिले ही से हो चुका था, उसपर “गुरोराज्ञा गरीयसी” का सिद्धान्त पाकर पूर्वरोपित बीज अंकुरित हो उठा। “आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है” इस सिद्धान्त के अनुसार मैं अपने कार्य के साधनों का जुगाड़ करने लगा और विश्वेश्वर की अनुकम्पा एवं गुरुवर के आशीर्वाद से बिक्रमाब्द १९७८ की गुरुपूर्णिमा को मैंने इस कार्य का आरम्भ किया। प्रायः तीन महीने के परिश्रम से प्रथम खण्ड समाप्त करके मैंने गुरुवर लालाजी के सामने अपना सङ्कलन रखा, जिसे देखकर उन्हें आश्चर्य और अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपने मेरी पीठ ठोंकी और अपने अन्तःकरण की रत्नमञ्जुषा से निकाल कर शुभाशीर्वाद-रत्न का पुरस्कार दिया। मेरा उत्साह और साहस बढ़ा। मैंने सहायक ग्रन्थों का संग्रह करना आरम्भ किया। कुछ ही साधक ग्रन्थ जुट पाये थे कि अनेक सांसारिक शंशयों के कारण कई वर्षों तक यह कार्य स्थगित रहा। इसी बीच में मेरे प्रोत्साहक गुरुवर लालाजी का स्वर्गवास हो गया। परन्तु उनका दिया हुआ सत्साहस एवं आशीर्वाद-रत्न मेरे हृदय के एक कोने में सुरक्षित रहा, जिसके दिव्यालोक में

मैंने पुनः लिखना आरम्भ किया। कार्य की अधिकता एवं समय का अभाव होते हुए भी मैं अपने अनुष्ठान में लगा रहा और इधर प्रायः तीन वर्षों के अविरत परिश्रम से आषाढ कृष्ण एकादशी सं० १९९१ वि० को यह “हिन्दी-पर्यायवाची-कोश” समाप्त होकर सर्वान्तर्यामी भगवान शंकर के चरणारविन्द में समर्पित हुआ।

विषयों के अनुसार इस ग्रन्थ का विभाजन चार खण्डों में किया गया है। प्रथम खण्ड में देवादि शब्दों के पर्याय दिये गये हैं, जिसमें देवता, देवतुल्य विशिष्ट व्यक्ति, तीर्थ, आकाश के ग्रहोपग्रह नक्षत्रादि, दिशाकालादि के नामों के पर्याय कुल छः वर्गों में विभाजित हैं, जिनमें मूल शब्दों की संख्या २६७ है। द्वितीय खण्ड में स्थल एवं जल के विभिन्न विभागों के साथ-ही-साथ उद्भिज, खनिज और जलजादि सम्बन्धी शब्दों के पर्यायों का वर्गीकरण १५ वर्गों में हुआ है, जिनमें कुल ५८६ मूल शब्दों के पर्याय हैं। तृतीय खण्ड में मानव जगत के शब्दों का विभाजन ११ वर्गों में किया गया है, जिनमें कुल ९९८ मूल शब्दों के पर्याय हैं, चतुर्थ खण्ड में मानवेतर जीवों (पशु-पक्षी-कीट-पतङ्गादि) एवं कुछ चुने हुए क्रियापदों के पर्याय दिये गये हैं, जिसमें कुल ५-वर्गों में विभाजित ४०० मूल शब्दों के पर्याय हैं। इस प्रकार यह सम्पूर्ण ग्रन्थ विषयानुसार ३७ वर्गों में विभाजित है, जिनमें कुल २२५१ मूल शब्दों के पर्याय हैं। ग्रन्थ का वर्गीकरण करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि हमारे व्यवहार में आनेवाले विषय एवं उनके अन्तर्गत उपयोगी शब्द यथासम्भव न छूटने पावें। फिर जहाँ इन्द्रादिक देवता भी शब्द-वारिधि का पार न पा सके वहाँ हमारी तुच्छ बुद्धि उसके अवगाहन में कहाँ तक समर्थ हो सकती है ?

वर्गों के अनुसार शब्द-संग्रह करने में मुझे विभिन्न विषयों के ग्रन्थों से सहायता लेनी पड़ी। हिन्दी-शब्द-कोशों में अर्थ-विचार से इने-गिने शब्द रखे जाते हैं, उनसे पर्याय का पूरा मतलब हल नहीं हो पाता।

सुतरां संस्कृत कोशों की सहायता के बिना शब्द-भाण्डार सर्वथा अपूर्ण ही रहता है। अतः मैंने संस्कृत के अमरकोश, वैजयन्ती कोश, मेदिनी कोश, शब्दकल्पद्रुम से, एवं हिन्दी के शब्दसागर शब्दार्थपारिजात, नाममाला (नन्ददास) और विश्वकोश से शब्दों के पर्यायों का संग्रह किया। जब इतने ग्रन्थों से शब्द-संग्रह करने पर भी मुझे आयुर्वेद, ज्यौतिष सम्बन्धी शब्दों के यथेष्ट पर्याय नहीं मिल सके तब मैंने आयुर्वेद और ज्यौतिष के ग्रन्थों से शब्द संग्रह करना आरम्भ किया। इस प्रकार मैंने शालिग्राम निघण्टु, राजनिघण्टु, हरीतक्यादि निघण्टु, बृहन्निघण्टु रत्नाकर, भाव-प्रकाश, माधव-निदान आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों एवं सूर्य-सिद्धान्त, ग्रह लाघव, मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि ज्यौतिष ग्रन्थों से एत-द्विषयक शब्दों का सङ्कलन किया।

यद्यपि यह ग्रन्थ केवल पर्याय के अभिप्राय से लिखा गया है, तथापि पाठकों की विशेष जानकारी के लिये मैंने यथास्थान उपयोगी पादटिप्पणियों का भी समावेश कर दिया है। इन टिप्पणियों में अनेक शास्त्रों एवं पुराणादिकों के मतानुसार कहीं तद्विषयक विस्तृत व्याख्या, कहीं परिभाषा, कहीं परिचय और कहीं वस्तुओं के आकार प्रकार, भेद, गुण-दोषादि का विवेचन किया गया है। जैसे 'दुर्गा' का पर्याय देते हुए टिप्पणी में देवी के अन्तर्गत पञ्चदेवी, सप्तमाता, नवदुर्गा, नवकन्यका, नवशक्ति, दश महाविद्या और चौंसठ योगिनियों के नामों का उल्लेख कर दिया गया है। 'अग्नि' शब्द की टिप्पणी में वैद्यक मत से अग्नि के तीन प्रकार एवं कर्म-काण्डानुसार अग्नि के छः भेदों का उल्लेख हुआ है। 'वायु' शब्द पर शरीरस्थ पञ्चवायु एवं उनचासों पवनों के नाम दिये गये हैं। सूर्य और चन्द्र की क्रमशः बारह और सोलह कलाओं के नाम दिये गये हैं। खनिज वर्ग में गन्धक, हरिताल, अञ्जक और शिलाजीत के भेद, उत्पत्ति, लक्षण और गुणों की व्याख्या पुराण और वैद्यक दोनों मतानुसार की गई है। इसी प्रकार संस्कार, विद्या, व्यसन और कलाओं के भेदों के नाम, नाट्यशास्त्र-

नुसार रूपकों और उपरूपकों के भेद, गायन-वादन कला के अनुसार स्वर-तालदि के भेदोपभेद वर्णित हैं। इस प्रकार पाद टिप्पणियों के समावेश से ग्रन्थ की उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। मेरा विश्वास है कि ये पाद टिप्पणियाँ पाठकों को मनोरञ्जन के साथ ही साथ अपनी उपयोगिता से सन्तुष्ट करेंगी।

मुझे इस बातका अवश्य दुःख है कि शब्दों के जितने पर्याय मैंने दिये हैं, वे सबके सब अपने मूल शब्द के आन्तरिक भावों के द्योतक नहीं हो सके। बहुत से ऐसे शब्द हैं जो वास्तविक पर्याय न होकर पर्यायाभास मात्र कहे जा सकते हैं। परन्तु उनके प्रयोगों की रूढ़ि पर्याय रूप से ही चली आ रही है, अतएव वे अब पर्याय ही में परिगणित हो रहे हैं। ऐसे शब्दों के सङ्कलन करने में मेरा विशेष दोष नहीं। हम संस्कृत कोशों में भी ऐसे दोष पर्याय रूप में पाते हैं। वास्तव में उन कोशकारों ने भी शब्दों के पर्याय देने में वस्तुओं के आकार-प्रकार, गुण-दोष, एवं व्यवहारादि के अनुसार पर्याय दिये हैं। अतः कहीं-कहीं तो शब्द वाच्यार्थ बोधक और कहीं लक्ष्यार्थ बोधक हो गये हैं। जैसे 'शंखाहुली' का पर्याय 'मेध्या' है। यह वास्तविक पर्याय नहीं, प्रत्युत यह नाम शंखाहुली में मेधा शक्ति बढ़ानेवाले गुण के अनुसार है। अतः यह शंखाहुली का वाचक नहीं लक्षक शब्द कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'तरबूज' नामक फल का पर्याय उसके आकार-प्रकार के अनुसार माँस-फल, माँसल, सुवर्चुल दिया गया है एवं उसके स्वाद के अनुसार 'सुखाश' नाम पड़ा है।

ऐसे ही बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके पर्याय किसी अन्य शब्द के पर्याय से मिलते हैं। यथा 'हलदी' शब्द के जितने पर्याय हैं उनसे 'रात्रि' का एवं 'रात्रि' के पर्याय से हलदी का परस्पर समान बोध होता है। इसी प्रकार 'भिलावाँ' और 'अग्नि' शब्द के पर्याय परस्पर एक दूसरे के अर्थ बोधक हैं। विज्ञान प्रसंगानुसार वास्तविक अर्थ लगा लेते हैं।

अनेकार्थ बोधक बहुत से ऐसे शब्द भी मिलते हैं जो कई शब्दों के पर्याय हैं। जैसे 'हरि' शब्द सिंह, बन्दर, विष्णु भगवान और सुवर्ण का; 'शिव' शब्द सियार, शंकर भगवान और कल्याण का एवं 'पुष्कर' शब्द आकाश, जल और पोखर (तालाब) का बोधक होता है। अस्तु अनेक शब्दों के अनेक अर्थ होने पर भी प्रसंगानुसार उनसे एक ही अर्थ का बोध किया जाता है।

हमारी व्यावहारिक हिन्दी भाषा में पर्यायों का प्रयोग प्रायः नहीं होता, इसलिये हमें अर्थ में एक ही शब्द का प्रयोग जो परम्परा से चला आता है, करने का अभ्यास पड़ गया है। कहीं-कहीं एक अर्थ में एक से अधिक दो या तीन शब्द भी प्रयोग में आते हैं, बस इतना ही बहुत है। जैसे पानी के लिये पानी या जल इन्हीं दो शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषा भाषियों में प्रचलित है। अब इनके अतिरिक्त किसी अन्य पर्याय जैसे घन, रस, अमृत, वारि तोय, जीवन आदि का प्रयोग करें तो वह एक हँसोड़ मात्र होगा। हाँ, पद्य रचना में हम पर्यायों का स्वेच्छया प्रयोग करते हैं और वह परम्परित प्रथा होने के कारण कुछ बुरा भी नहीं जान पड़ता। किसी देश, प्रान्त वा समाज की बोलचाल की भाषा प्रायः सरल एवं परम्परित होती है किन्तु उसी देश वा समाज के साहित्य की भाषा बोलचाल की भाषा की अपेक्षा कुछ क्लिष्ट और अप्रचलित हो सकती है। कारण इसका केवल यही जान पड़ता है कि बोलचाल की भाषा पठित एवं अपठित समाज में समान रूप से व्यवहृत होती है, इसी लिये उसका एक सरल व्यापक और परम्परित रूप ही व्यवहार में आता है और साहित्य की भाषा पठित समाज के सामने आती है इसलिये उसका क्षेत्र बोलचाल की भाषा से अधिक व्यापक और रूप कहीं-कहीं क्लिष्ट भी होता है। इसमें ही हम एक अर्थ का बोध कराने वाले अनेक पर्यायों का प्रयोग करते हैं। हमें अपने भावों के व्यक्त करने में कभी-कभी शब्दों के लक्षक एवं व्यञ्जक रूपों का भी प्रयोग करना पड़ता है, और उस समय उनसे

वाच्यार्थ न निकाल कर लक्ष्यार्थ वा व्यङ्ग्यार्थ ही का बोध करना श्रेयस्कर होता है। जैसे 'तुम तो पूरे नारद हो', वह बड़ा कौआ है, वह तो सूख कर काँटा हो गया है, इनमें नारद का लक्ष्यार्थ झगड़ा लू, कौआ का चेष्टावान और काँटा का अत्यन्त कृश ही होमा। यहाँ वाच्यार्थ कहनेवाले का भाव कदापि स्पष्ट नहीं हो सकता। इसी प्रकार जब हम दूब नामक घास का प्रयोग साधारणतः घास के अर्थ में करना चाहते हैं तब तो दूब वा दूर्वा भले ही कहलें, परन्तु जब उसका प्रयोग किसी मंगल सूचक अर्थ में किया चाहते हैं तब उसे मंगल्या, अमृता, गौरी, गुणा, विजया, शिवा, शिवेष्टा, शुभा, स्वच्छा, सुरवल्लभा, अनन्ता, महावरा आदि अनेक मंगल वाचक शब्दों से बोधित करते हैं। क्योंकि ये शब्द दूर्वा में मंगलात्मक गुणों का लक्ष्य कराते हैं, अतः ये दूब के लक्षक पर्याय हैं। इसी प्रकार शब्दों के विभिन्न पर्याय उनके गुण, दोष, बल, वीर्य, विपाक, आकार, प्रकार, आदि के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में प्रयुक्त हो सकते हैं। अब इन पर्यायों का उचित उपयोग उनके प्रयोग करने वाले की योग्यता पर निर्भर है वह चाहें उसका उचित प्रयोग करें वा अनुचित, इसके लिये यश वा अपयश के भागी वे ही हो सकते हैं। पर्याय तो सभी ठीक हैं।

इस कोश में विभिन्न ग्रन्थों से ऐसे भी शब्द संकलित हुए हैं। जिनमें से अधिकांश हमारे व्यवहार और प्रयोग से दूर हो गये हैं। अतः उनके ठीक ठीक रूपकरण में मुझे सन्देह है। मैंने उन ग्रन्थों में,— जिनसे शब्द-संग्रह किया है, जैसा रूप देखा ज्यों का त्यों वैसा ही दिया है, यदि कहीं उनके रूप अशुद्ध रह गये हों तो विद्वज्जन सुधार कर मुझे उसकी सूचना देने का कष्ट करेंगे। मैं उनके इस उपकार का आभारी रहूँगा। इसके अतिरिक्त कुछ प्रूफ संशोधन में भी भूलें रह गई हैं, जिनके लिये ग्रन्थारम्भ से पूर्व "शुद्धि-पत्र" देकर उनका सुधार कर दिया गया है। पाठक कृपया उसके अनुसार संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन करें।

“हिन्दी-पर्यायवाची-कोश” लिखने में जिन २ ग्रन्थों से मैंने सहायता ली है, उनके नाम नीचे दिये जाते हैं—

संस्कृत-ग्रन्थ—

१. अमरकोश	१३. ग्रहलाघव
२. मेदिनीकोश	१४. सुहृत्त चिन्तामणि
३. वैजयन्तीकोश	१५. अग्निपुराण
४. जटाधर	१६. ब्रह्मवैवर्तपुराण
५. शब्दकल्पद्रुम	१७. देवीपुराण
६. माधवनिदान	१८. राजवल्लभ
७. भावप्रकाश	१९. गारुड़ी
८. शालिग्राम निघण्टु	२०. कामसूत्रम् (वात्सायन)
९. हरीतक्यादि निघण्टु	२१. काव्य-प्रकाश
१०. राज निघण्टु	२२. संगीत दामोदर
११. बृहन्निघण्टु रत्नाकर	२३. मनुस्मृति
१२. सूर्यसिद्धान्त	२४. चाणक्यनीति
	२५. शुक्रनीति

हिन्दी-ग्रन्थ—

२६. रामचरितमानस	३१. नाममाला
२७. काव्य-प्रभाकर	३२. नाम-रामायण
२८. रूपक-रहस्य	३३. शब्दार्थ पारिजात
२९. शब्द-सागर	३४. मङ्गलकोश
३०. विश्वकोश	३५. पाक-प्रकाश

जिन ग्रन्थों से मैंने इस कोश-रचना में सहायता ली है, उनके लेखकों एवं अपने प्रथम प्रोफेसार्हक गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान 'दीन' जी को अभिवादन पूर्वक धन्यवाद देता हूँ। साथही मैं आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल (प्रोफेसर हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) का अत्यन्त

उपकृत हूँ जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थ का 'परिचय' लिख कर इसकी पद्धति एवं उपयोगिता का समर्थन किया है। मैं उन विद्वानों का भी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी शुभ सम्मति द्वारा ग्रन्थ की उपयोगिता प्रमाणित की है। अन्त में मैं अपने अभिन्न मित्र पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा 'रसिकेश' एम० ए० (प्रोफेसर, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जो सर्वदा हमारे सभी कार्यों में सत्परामर्श दाता रूप से सहायक रहते हैं। इस कोश की रचना में आपने ही प्रायः सभी सहायक ग्रन्थों का संग्रह करके मुझे कार्यक्षेत्र में प्रोत्साहित किया है।

मैंने इस कोश का सङ्कलन अपनी बुद्धि के अनुसार यथा-साध्य बहुत कुछ खोज और परिश्रम से किया है। मेरा विश्वास है कि इस छोटे से कोश से हमारे व्यवहार के प्रायः सभी वर्ग के शब्दों के पर्याय मिल सकते हैं। साथही जो थोड़ी बहुत पाद-टिप्पणियाँ दी गई हैं, उनसे भी मनोरञ्जन पूर्वक लाभ की सम्भावना है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह "हिन्दी-पर्यायवाची-कोश" कवि, लेखक, समालोचक, शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग का एक विश्वस्त मित्र के समान सहायक, एवं सुयोग्य शिक्षक के समान शब्द-पथ-प्रदर्शक का काम देगा। यदि यह गुणग्राही पाठकों की दृष्टि में कुछ भी उपयोगी जँचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। मैं सहृदय उदार विद्वज्जनों का अत्यन्त आभारी होऊँगा यदि वे इस कोश में किसी प्रकार की त्रुटि दिखाने की कृपा करेंगे, अथवा इसके संकलन का कोई इससे उत्तम सरल और अधिक उपयोगी मार्ग बताने का अनुग्रह करेंगे। मैं यथा सम्भव द्वितीय संस्करण में उनके सुधारने का प्रयत्न करूँगा।

ज्येष्ठ-गङ्गादशहरा
विक्रमाब्द १९९२

विनम्र निवेदक,
श्रीकृष्ण शुक्ल

प्रसिद्ध विद्वानों की सम्मति



कविसम्राट् पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

“हिन्दी-पर्यायवाची कोश की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूँ । ग्रन्थ उपयोगी और उपकारक है, परिश्रम से लिखा गया है । उसके प्रकाशन और संकलन के लिये आपको बधाई है । यह कवियों और विद्यार्थियों के लिये विशेष उपकारक है । आपका श्रम सार्थक है । ग्रन्थ पाकर मैं आत्हादित हुआ । आशा है हिन्दी संसार में इसका उचित आदर होगा ।”

पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शर्मा एम्० ए०
प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

“प्रस्तुत हिन्दी-पर्यायवाची कोश ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव सभी कर रहे थे, परन्तु पण्डित श्रीकृष्णशुक्ल ने जिस अध्यवसाय एवं लगन के साथ इस पुस्तक को तैयार किया है वही इस बात का प्रमाण है कि उनके हृदय में वाङ्मय की यह न्यूनता अत्यधिक खटकती रही । आठ-दस वर्षों के सतत प्रयास से जो यह ग्रन्थ तैयार किया गया है, वह अनेक प्रकार से प्रशंसनीय है । इसकी पाद टिप्पणियाँ लेखक के विशेष ज्ञान एवं परिश्रम की ही केवल परिचायक नहीं हैं, वरन् पढ़ने वालों के लिये विशेष उपयोगी हैं । वर्तमानकाल में यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है । इसका लेखक सभी प्रकार से साधुवाद का पात्र है ।”

हिन्दी साहित्य के महारथी श्रेष्ठ आचार्य
पण्डित महावीर प्रसाद जी द्विवेदी ।

समिति

हिन्दी-पर्यायवाची कोश-
को महत्त्व की पुस्तक है।
दुनी में इसी एक ही पुस्तक
अपराध मेरे देश में न
अप्राप्त। इस पुस्तक के उच्च
आभाव की पूर्ति कर दी
लोचक गण-प्रकाशक के
अप्राप्त के पात्र है।
१२-३५

हिन्दी के अनन्य भावुक कवि एवं सफल नाट्यकार बाबू जयशंकर 'प्रसाद' जी, काशी ।

“वर्गानुक्रम से संगृहीत शब्द कोश संस्कृत वाङ्मय में बहुत हैं । विषयानुकूल शब्दों का ज्ञान कराने में उनकी विशेष उपयोगिता है । पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल जी का पर्यायवाची कोश हिन्दी में उस शैली का प्रथम प्रयास है । इसमें उपयोगी टिप्पणियाँ भी दी गई हैं । इसे देख कर मुझे प्रसन्नता हुई । आशा है कि इसके आगामी संस्करण में कुछ छूटे हुए वर्ग और भी संगृहीत होंगे और अधिक टिप्पणियाँ बढ़ाई जायँगी ।

अध्यापक श्री रामदासजी गौड़ एम्० ए० अवैतनिक सम्पादक “विज्ञान” काशी ।

“मैंने पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का लिखा ‘हिन्दी-पर्यायवाची कोश’ देखा । इस ढंग का हिन्दी में यह पहला ही कोश है जिसमें इतने शब्दों का गद्य में संग्रह है । यह ‘अमरकोश’ की तरह वर्गानुक्रम से है । शुक्ल जी ने इसमें बहुत ही परिश्रम किया है । यह आरंभिक काम है । औरों के लिये आपने मार्ग दिखा दिया है । लेखकों, कवियों और शिक्षकों के लिये तो यह एक अनमोल चीज है । हिन्दी साहित्य के भाण्डार की शुक्ल जी ने एक अमूल्य रत्न से वृद्धि की है । आपकी पादटिप्पणियाँ बड़े काम की हैं । इस सत्संग्रह के लिये आप सर्वथा बधाई के पात्र हैं ।”

पण्डित रामनारायण जी मिश्र बी० ए०, पी० ई० एस्०,
हेडमास्टर, सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, काशी ।

“पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का “हिन्दी पर्यायवाची कोश” देखकर मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता हुई । आश्चर्य इस बात से कि अनेक शब्दों के रहते हुए भी वे इतने महत्व का काम कर सके । यह उनकी बरसों की तपस्या का फल है ।

प्रसन्नता इस बात से कि यह कोश हिन्दी की एक बड़ी आवश्यकता को पूरा करता है । इससे पहिले ऐसे शब्दों का कोई संग्रह मैंने हिन्दी में नहीं देखा था ।

मुझे आशा है कि यदि शुक्ल जी का उत्साह बढ़ाया जायगा तो वे इसके दूसरे संस्करण में यह भी बतला सकेंगे कि इन पर्यायवाची शब्दों के अर्थ में क्या भेद है । शुक्ल जी को मैं इस परिश्रम की सफलता के लिए बधाई देता हूँ ।



हिन्दी-
पर्यायवाची
शब्दकोश

हिन्दी-पर्यायवाची कोश को वर्ग-सूची

वर्ग-नाम	मूलशब्द	पृष्ठ	वर्ग-नाम	मूलशब्द	पृष्ठ
प्रथम खण्ड			१५. गोरस वर्ग	९	१४५
१. स्वर्गादि वर्ग	७८	३	तृतीय खण्ड		
२. देवावतार वर्ग	३३	२२	१. मनुष्य वर्ग	२७६	१४९
३. तीर्थादि वर्ग	१०	२६	२. सम्बन्धी वर्ग	५०	१७५
४. दिशादि वर्ग	२३	२८	३. जाति वर्ग	१११	१८०
५. आकाशादि वर्ग	७५	३१	४. भावादि वर्ग	१७८	१९२
६. कालादि वर्ग	४८	३८	५. रोगादि वर्ग	५९	२११
द्वितीय खण्ड			६. भोजनादि वर्ग	९३	२१७
१. स्थलादि वर्ग	८२	४५	७. वस्त्राभरण वर्ग	५९	२२४
२. जलादि वर्ग	६५	५३	८. ब्रह्मचारी वर्ग	३१	२२९
३. खनिज वर्ग	६१	६२	९. राज वर्ग	५७	२३२
४. वनादि वर्ग	२९	७८	१०. व्यवसाय वर्ग	६४	२३७
५. धान्य वर्ग	२२	८१	११. स्वर-तालादि वर्ग	२०	२४१
६. तिलादि वर्ग	८	८५	चतुर्थ खण्ड		
७. शाक-भाजी वर्ग	३१	८७	१. पशु वर्ग	३०	२४७
८. मूल-कन्द वर्ग	१३	९२	२. सरिसृप वर्ग	२२	२५३
९. फल वर्ग	५१	९४	३. पक्षी वर्ग	४३	२५५
१०. पुष्प वर्ग	३०	१०३	४. कीट-पतङ्गादि वर्ग	१८	२६०
११. वृक्ष वर्ग	२४	१०९	५. क्रियादि वर्ग	२८७	२६३
१२. वनौषधि वर्ग	१२२	११४	—:ॐ:—		
१३. गन्धादि वर्ग	३१	१३६	पूर्ण संख्या—खण्ड ४, वर्ग ३७,		
१४. मधु वर्ग	८	१४३	मूलशब्द २२५१		

वर्गानुक्रम शब्द-सूची



प्रथम खण्ड

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१. स्वर्गादि वर्ग		इन्द्र का हाथी	”
स्वर्ग	३	इन्द्र का वज्र	६
ईश्वर	”	इन्द्र का विमान	”
देवता	”	वरुण	”
[टि० देवयोनि । गणदेवता ।		[टि० वरुण का परिचय]	”
अष्टवसु । दश विश्वेदेव । गणदेवता]		कुबेर	”
देवसभा	४	[टि० कुबेर का परिचय]	”
असुर	”	कुबेर का पर्वत	”
किन्नर	”	कुबेर का ऐश्वर्य	७
गन्धर्व	”	[टि० अष्ट सिद्धियाँ और नव	”
[टि० गन्धर्वों के ११ गण]		निधियाँ]	”
अप्सर	५	कुबेर का खजाना	”
[टि० स्वर्ग की वेद्यायें]		यम	”
इन्द्र	”	[टि० चतुर्दश यम]	”
[टि० चतुर्दश इन्द्र आदि]		राक्षस	”
इन्द्राणी	”	दानव	८
इन्द्रपुरी	”	राक्षसी	”
इन्द्र का पुत्र	”	नरक	”
		[टि० नरक-भेद २५ प्रकार के]	”

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नरक भोगी	८	बब्वानल	१६
नरक जीव	”	वनकी अग्नि	”
नरक पीड़ा	”	पेट की अग्नि [टि० परिचय]	”
ब्रह्मा	९	अग्नि कण	”
[टि० ब्रह्मा का परिचय]		अग्नि ज्वाला	”
ब्रह्मा का वाहन	”	अग्नि सन्ताप	”
विष्णु	”	वायु [टि० शरीरस्थ पञ्चवायु	
विष्णु का घोड़ा	१०	४९ पवन ।]	”
विष्णु का वाहन	”	आँधी	१८
महादेव	”	वायुवेष	”
[टि० परिचय, शिव की अष्टमूर्ति,		कामदेव	”
एकादश रुद्र, शिव के नन्दी गण]		[टि० पंचबाण, काम का धनुष	
सरस्वती [टि० परिचय]	१२	काम की स्त्री]	”
लक्ष्मी [टि० परिचय]	”	अश्विनीकुमार [टि० परिचय]	”
पार्वती [टि० परिचय]	”	जप	१९
दुर्गा	१३	तप	”
[टि० पंचदेवी, सप्तमाता, नवदुर्गा,		पूजा	”
नवशक्ति, दशमहाविद्या, ६४ योगिनी]		यज्ञ [टि०—पंच महायज्ञ]	”
गणेश	१४	दान	”
कार्तिकेय [टि० परिचय]	”	उपासना	”
भैरव	१५	व्रत	”
अग्नि	”	सन्यास	”
[टि० वैद्यक और कर्मकाण्ड मत से		सन्यासी	२०
अग्नि के भेद, ७ जिह्वाएँ ।]		तपस्वी	”
		ब्रह्मत्वभाव	”

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
विवेक	२०	गायत्री	२३
दर्शन	,,	हनुमान	२४
दर्शनशोग्य	,,	नारद	,,
धर्म [टि० धर्म के १० लक्षण]	,,	विश्वामित्र	,,
मुनि	,,	विश्वकर्मा	,,
ब्रह्मज्ञानी	,,	शृङ्गीन्द्रषि	,,
मुक्ति	,,	अगस्त्य	,,
अमृत	२१	वशिष्ठ [टि० सप्तर्षि]	,,
स्वर्णाचल	,,	वाल्मीकि	,,
देववृक्ष	,,	व्यास	,,
देवनदी	,,	युधिष्ठिर [टि० पंच पाण्डव]	,,
कामधेनु	,,	अर्जुन	२५
वेद [टि० चार वेद और ४ वेदाङ्ग]	,,	कर्ण	,,
शास्त्र [टि० १८ शास्त्र]	,,	भीष्म पितामह	,,
२. देवावतार वर्ग		द्रौपदी	,,
रामचन्द्र [टि० परिचय]	२२	अभिमन्यु	,,
जानकी [टि० परिचय]	,,	दशरथ	,,
परशुराम [टि० परिचय]	,,	जनक	,,
कृष्ण	,,	लक्ष्मण	,,
राधा	२३	शत्रुघ्न	,,
यशोदा	,,	रावण	,,
बलराम	,,	मेघनाद	,,
अनिरुद्ध	,,	जामवन्त	,,
ऋषिंह	,,	३. तीर्थादि वर्ग	
गौतमबुद्ध	,,	प्रयागराज	२६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
अयोध्या [टि० सप्त मोक्षदा पुरी] २६		एकान्त	२९
मथुरा	”	ओट	”
काशी	”	दहिना	”
जगन्नाथपुरी [टि० चारों धाम]	”	बाँया	”
द्वारकापुरी	”	समीप	”
गंगा	”	दूर	३०
यमुना	२७	आदि	”
नर्मदा	”	मध्य	”
सरयू	”	अन्त	”

४. दिशादि वर्ग

दिशा	२८
दिक्पाल [टि० दशोदिग्पाल]	”
पूर्व	”
पश्चिम	”
उत्तर	”
दक्षिण	”
दिगन्तर [टि० परिचय]	”
दिग्गज [टि० अष्ट दिग्गज]	२९
मण्डल	”
ऊपर	”
नीचे	”
आगे	”
सम्मुख	”
विमुख	”

५. आकाशादि वर्ग

आकाश	३१
मेघ	”
मेघ पंक्ति	”
मेघ गर्जन	”
बिजुली	”
इन्द्रधनुष	३२
वृष्टि	”
झँसी	”
मृगतृष्णा	”
पाला	”
सूर्य [टि० सूर्य की १२ कलाएँ]	”
सूर्य के पारिपार्श्वक	३३
सूर्य का सारथी	”
सूर्य-मण्डल	”

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सूर्य-किरण	३३	आर्द्रा	३६
सूर्य-प्रकाश	,,	पुनर्वसु	,,
सूर्य के घोड़े	,,	पुष्य	,,
चन्द्रमा [टि० चन्द्रमा की १६ कलाएँ]		अश्लेषा	,,
चन्द्रमण्डल	३४	मघा	,,
चन्द्रिका (चाँदनी)	,,	पूर्वा फाल्गुनी	,,
द्वितीया का चन्द्रमा	,,	उत्तरा फाल्गुनी	,,
पूर्णमासी का चन्द्रमा	,,	हस्त	,,
चन्द्र-चिह्न	,,	चित्रा	,,
चन्द्रमा की स्त्री	,,	स्वती	,,
मङ्गल	,,	विशाखा	,,
बुध	,,	अनुराधा	,,
बृहस्पति	३५	ज्येष्ठा	,,
शुक्र	,,	मूल	,,
शनि	,,	पूर्वाषाढ़	,,
राहु	,,	उत्तराषाढ़	,,
केतु	,,	अभिजित	,,
नक्षत्र [टि० २७ नक्षत्रों के नाम]		श्रवण	,,
नक्षत्रों का समूह	,,	घनिष्ठा	,,
ध्रुव	३५	शतभिषा	३७-
अश्विनी	,,	पूर्वाभाद्रपदा	,,
भरणी	,,	उत्तराभाद्रपदा	,,
कृत्तिका	,,	रेवती	,,
रोहिणी	३६	राशि [टि० १२ राशियाँ]	,,
मृगशिरा	,,	मेष	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वृष	३७	कृष्ण पक्ष	३९
मिशुन	"	शुक्ल पक्ष	"
कर्क	"	मास	"
सिंह	"	वर्ष	"
कन्या	"	अमावास्या	"
तुला	"	पूर्णमासी	"
वृश्चिक	"	चैत्र	"
धनु	"	वैशाख	४०
मकर	"	ज्येष्ठ	"
कुम्भ	"	आषाढ़	"
मीन	"	श्रावण	"
६. कालादि वर्ग		भाद्रपद	"
समय	३८	आश्विन	"
पल	"	कार्तिक	"
दण्ड	"	मार्गशीर्ष	"
प्रहर [टि०८ प्रहरों का विवरण]	"	पौष	"
दिन	"	माघ	"
प्रातःकाल	"	फाल्गुन	"
मध्याह्न काल	३९	अधिकमास [टि० परिचय]	"
सायंकाल	"	वसन्त (ऋतु)	"
रात्रि	"	ग्रीष्म	४१
अँधेरी रात	"	वर्षा	"
उँजाली रात	"	शरत्	"
सप्ताह	"	शिशिर	"
पक्ष	"	हेमन्त	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सतयुग	४१	अनुपस्थित	४१
कलियुग	,,	गत	,,
प्रलयकाल	,,	आगामी	,,
अवशिष्ट	,,	नित्य	,,
उपस्थित	,,	पश्चात्	४२

द्वितीय खण्ड

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१. स्थलादि वर्ग		सुन्दर मार्ग (सुगम मार्ग)	४७
पृथ्वी	४५	दुर्गम मार्ग	,,
संसार [टि० १४ लोक]	,,	संकीर्ण मार्ग	,,
मिट्टी	४६	चौराहा	,,
धूलि	,,	राज मार्ग	,,
उपजाऊ भूमि	,,	नगर	,,
बिना उपजाऊ भूमि	,,	टोला	,,
आर्यावर्त्त देश	,,	बाजार	,,
राष्ट्र	,,	तेल का बाजार	,,
ऊसर देश	,,	कपड़े का ,,	,,
खेत	,,	मछली का ,,	,,
म्लेच्छ देश	,,	सुनारों का ,,	,,
जल प्रचुर देश	,,	बर्तनों का ,,	४८
बालुका प्रचुर देश	,,	गाँव	,,
बल्मीक	,,	अहीरों का गाँव	,,
मार्ग	४७	भीलों का गाँव	,,

(८)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क :
चमारों का गाँव	४८	झोपड़ी	५०
घर	"	घुड़साल	"
घर की दीवाल	"	हाथीखाना	"
गृहद्वार	"	गोशाला	"
वगली-द्वार	"	औषधालय	"
देहली	"	पाठशाला	"
ओसारा	"	यज्ञशाला	"
आँगन	"	शस्त्रालय	५१
खंभा	४९	धर्मशाला	"
सीढ़ी	"	रणभूमि	"
अटारी	"	न्यायशाला	"
खिड़की	"	मद्यगृह	"
क्रिवाड	"	शिल्पशाला	"
छाजन	"	पौसर	५३
बैठक	"	श्मशान	"
शयन-गृह	"	कारागार	"
रसोई-गृह	"	जुआखाना	"
रति-गृह	"	नाट्यशाला	"
प्रसव-गृह	"	व्यायामशाला	"
राज-महल	"	पर्वत [टि० सप्त पर्वत]	"
कोट	५०	पर्वत-शिखर	५२
किला	"	पाताल	"
अन्तःपुर	"	गड्ढा	"
देव-मन्दिर	"	पत्थर	"
सभा-भवन	"	चरना	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कन्दरा	५२	जहाज	५६
२. जलादि वर्ग		नाव की डौड़	”
जल	५३	पतवार	”
जलाशय	”	पानी फेरने की कडाही (तसली)	”
समुद्र [टि० सप्त सिन्धु, चौदह रत्न]	”	केवट	”
समुद्र-मर्याद	५४	नाव की उतराई (भाड़ा)	”
समुद्र-फेन	”	नाव खींचने वाली रस्सी	”
तरङ्ग	”	बंसी	”
जल की गहराई	”	मछली पकड़ने का जाल	”
पानी का चक्र	”	मछली [टि० मछली की विशेष	”
जलविन्दु	”	जातियाँ]	५७
जलाशय का किनारा	”	केकड़ा	”
जलाशय के बीच का स्थल भाग	”	कछुआ	”
नदी	५५	मगर	”
तालाब	”	जोंक	”
बावली	”	मछली रखने का पात्र	”
नदी संगम	”	सीपी (साधारण सुतुही)	”
नदी का फेन	”	सीपी (मोती वाली)	”
कीच	”	शंख	५८
बाँध	”	घोंघा	”
कुआँ	”	कौड़ी	”
बालू	”	मेढक	”
खाई	५६	कमल (सूर्य विक्रासी)	”
पुल	”	श्वेत कमल	”
नौका	”	रक्त कमल	५९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नील कमल	५९	माणिक	६३
पीला कमल	"	नीलम	"
कुमुद (चन्द्रविकासा)	"	पोखराज	"
कमल दल	"	सूर्यकान्त मणि (आतशी शीशा)	"
कमल-दण्ड	"	चन्द्रकान्त मणि	६४
कमल की जड़	"	स्फाटिक मणि (बिल्लौरी)	"
कमल-केशर	"	फिरोजा	"
कमल-रस	"	काँच	"
कमल-धूलि	"	(धातु-उपधातु)	
कमल बीज (कमल गट्टा)	६०	लोहा [टि० पौराणिक मतानुसार उत्पत्ति]	"
जलकुम्भी	"	ताँबा	"
सिंघाड़ा	"	चाँदी	६५
सेवार	"	पीतल	"
मखाना	"	काँसा	६६
केशर (कुंकुम)	"	सोना [टि० पौराणिक परिचय]	"
बेंत	६१	जस्ता	६७
मूँगा	"	राँगा	"
मोती	"	शीशा	"
३. खनिज वर्ग		पारा [टि० पौराणिक परिचय]	"
(रत्न-उपरत्नादि)		गन्धक [टि० गन्धक के ४ भेद]	६८
खान	६२	हरताल [टि० हरताल के २ प्रकार]	"
हीरा [टि० नवरत्नों के नाम]	"	अभ्रक [टि० अभ्रक के ४ भेद]	६९
पन्ना	"	मुरदासंग	"
लहसुनियाँ (वैदूर्यमणि)	६३	रूपामाखी	"
गोमेद	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सोनामाखी	७०	जवाखार	७५
खपरिया	"	सज्जीखार	"
तूतिया	"	सुहागा	"
कोसीष [टि० दो प्रकार]	"	सेधानोंन	७६
गेरू (साधारण)	७१	साँभरनोंन	"
स्वर्णगैरिक (गेरू)	"	समुद्रीनोंन	"
हिरौंजी	"	संचरनोंन	"
खडिया (सेलखड़ी)	"	कालनोंन	"
मैनसिल	"	कँचियानोंन	"
सुरमा (खोतोंजन)	"	खारीनोंन	७७
[टि० सुरमा के ३ प्रकार]	"	नौसादर	"
सुरमा (सौवीराञ्जन)	७२	शोरा	"
सुरमा (पुष्पाञ्जन)	"		
हिंशुल (ईशुर)	"		
[टि० हिंशुल के ३ प्रकार]	"	४. बनादि वर्ग	
सिन्दूर	"	वन	७८
शिलाजीत	"	महावन	"
[टि० ४ प्रकार का शिलाजीत] ७३	"	उपवन	"
बच्छनाग विष	"	पौधा	"
[टि० दो प्रकार के विष]	"	वृक्ष	"
संख्या [टि० विष, उपविष] ७४	"	लता-बौर	"
फिटकिरी	"	बीज	"
चुम्बक	"	जड़	७९
गोपीचन्दन	"	अंकुर	"
बोल (बोर) [टि० परिचय] ७५	"	मंजरी	"
		कली	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
फूल	७९	उड़द (उर्द)	८२
फूल का गुच्छा	"	लोबिया	"
पुष्प-रस	"	मसूर	८३
पुष्प-रज	"	मूँग	"
पत्र	"	रहर	"
शाखा	"	मोठ (मोथी)	"
टहनी	"	साँवा	"
काँटा	"	कोदव (कोदो)	"
छाल	"	मक्का	"
बरोह	८०	बाजरा	८४
गोंद	"	ज्वार	"
फलयुक्त वृक्ष	"	केसारी	"
फलहीन वृक्ष	"	ककुनी	"
फूला हुआ वृक्ष	"	तीनी (तिन्नी)	"
कोटर	"	कूद्र	"
काठ	"	साबूदाना	"
जलाने की लकड़ी	"	६. तिलादि वर्ग	
थाला	"	तिल	८५
५. धान्य वर्ग		सरसों	"
अन्न	८१	राई	"
धान [टि० धान के भेद]	"	अलसी (तीन्नी)	"
जव	८२	बरेँ	८६
गेहूँ	"	रेंडी	"
चना	"	तेल	"
मटर	"	खली	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
७. शाक-भाजी वर्ग		ढेंडसा	९०
बथुआ	८७	भिंडी	९१
नोनियाँ	"	बैंगन (भोंटा)	"
मरसा	"	गवालिन	"
चौराई	"	सेम	"
सोया	"	सहिंजन	"
पालक	८८	कचनार	"
पोय (पोई)	"	८. मूल-कन्द वर्ग	
मेथी	"	लहसुन	९२
पेठा	"	प्याज	"
कुम्हड़ा	"	मूली	"
लौकी (कद्दू)	"	बड़ी मूली	"
तितलौकी	८९	गाजर	"
ककड़ी	"	सलजम (गोलगाजर)	"
खीरा	"	सूरन	९३
फूट-ककड़ी	"	लालकन्द	"
खरबूजा	"	शकरकन्द (सफेद)	"
तरबूज	"	अरबी (बुइयाँ)	"
तोरई	९०	आलू	"
नेनुआँ	"	सुथनी	"
चिचिडा	"	कसेरू	"
परवल	"	९. फल वर्ग	
कुन्दुरू	"	आम	९४
खेखसा	"	कलमी आम	"
करेला	"		"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
आमड़ा	९४	अनघास	९९
अनार	"	मकोय	"
केला	९५	आँवला	"
नारियल	"	गूलर	"
खजूर (पिण्डखजूर)	"	शङ्खूत	१००
ताड़ी-फल	९६	लिसोडा	"
सेव	"	जामुन (छोटी-जामुन)	"
नाशपाती	"	जामुन (बड़ी-जामुन)	"
अमरूद	"	बेल	"
नारंगी	"	पपीता	१०१
नीबू (कागजी)	"	[सुखा फल-मेवा आदि]	
नीबू (बिजौरा)	"	छोहारा	"
नीबू (जम्भारी वा कमला)	"	बादाम	"
इमली	९७	आलूबोखारा	"
कटहल	"	अखरोट	"
बड़हल	"	सुपारी	"
महुआ	"	चिरौंजी	"
कैथा	"	पिस्ता	१०२
कमरख	९८	अजौर	"
हरफारेवड़ी	"	काजू	"
करौदा	"	अंगूर	"
बैर	"	मुनक्का	"
खिरनी	"	किशमिश	"
फालसा	९९	मूंगफली	"
शरीफा	"	निर्मली	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
		लटकन [टि० परिचय और उपयोग]	१०७
१०. पुष्प वर्ग		हारसिंगार	१०८
चमेली (पीली)	१०३	ओड़हुल	"
चमेली (सफेद)	"	अगस्त्य	"
बेला	"	गुलदौना	"
नेवारी	१०४	कनेर	"
जूही (सफेद)	"		
जूही (पीली)	"	११. वृक्ष वर्ग	
माधवी	"	बड़	१०९
मालती	"	पीपर	"
गुलाब [टि० गुलाब के भेद]	१०५	पाकर	"
चम्पा [टि० चम्पा की विशेषता]	"	सिरस	११०
मौलसैरी	१०६	शीशम	"
मुचुकुन्द	"	शाल	"
कुन्द	"	सलई	"
कदम्ब	"	अर्जुन	"
केवड़ा-सफेद	"	विजयसार	१११
केवड़ा-पीली	"	खैर	"
कटसरैया-पीली	१०७	पपाड़िया खैर	"
कटसरैया-नीली	"	बबूल	"
कटसरैया-लाल	"	रीठा	"
कससरैया-सफेद	"	तमाल	"
गुलदुपहरिया	"	भोजपत्र	"
गुलतुरा	"	पलास	११२
गुलपरी	"	सेमल	"
मखमली	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
धव	११२	करञ्ज	११८
करील	"	केवाँच	"
सागौन	"	गुञ्जा (घुमची)	"
समी	"	गुञ्जा-सफेद	११९
रुद्राक्ष	११३	बीजबन्द	"
अशोक	"	सहदेई	"
नीम	"	कपास	"
		बाँस	"
		नर्कट	१२०
		मूँज	"
		कास	"
		कुशा	"
		बिदारीकन्द	"
		मूसली	"
		सतावर	"
		असगन्ध	१२१
		जमालगोटा	"
		इन्द्रायन (इनारू-फल)	"
		(टि० परिचय)	"
		सनाय	"
		नील	१२२
		सरफोंका	"
		गोरखमुण्डी	"
		लटजीरा (ओंगा)	"
		तालमखाना	"

१२. वनौषधि वर्ग

टैटी [टि० परिचय]

११४

सोनापाढा

"

भटकटैया

"

गोखरू (बद्धा)

११५

गोखरू (छोटा)

"

जीवन्ती

"

मदार (आक)

"

सेँहुइ

११६

करियारी

"

दूब

"

तुलसी

"

श्यामा-तुलसी

११७

कनेर [टि० भेद]

"

धतूरा

"

अरूसा

"

पित्तपापड़ा

११८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
घोक्चार	१२२	सोंठ	१२५
रामबाँस	१२३	अदरक	"
गदहपूरना	"	मिर्च (काली)	१२६
भंगरैया	"	मिर्च (सफेद)	"
सन	"	पीपल	"
मोमलता	"	पिपरामूल	"
आकाश बौर	"	चीता	"
शंखाहुली	"	सौंफ	"
अंधाहुली	"	मेथी	"
लज्जावन्ती	"	अजवायन	१२७
ब्राह्मी	"	अजमोदा	"
गाजुबाँ	१२४	जीरा सफेद	"
कुकरौंदा	"	जीरा-स्याह	"
सुदर्शन	"	मगरैया	"
चाय	"	धनियाँ	"
माजूफल	"	कालीजीरी	१२८
तमाखू	"	ह्रींग	"
इसरगोल	"	बच	"
सालम मिश्री	"	कुलींजन	"
लाल मिर्च (मिरचा)	"	चोपचीनी	"
मेंहदी	"	अकरकरा	"
बिधारा	"	बाबीरंग	"
हरें [टि० हरें के भेद]	१२५	वंशलोचन	"
बहेड़ा	"	ताखुर (तवाखीर)	१२९
आँवला	"	समुदफेन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
काकोली	१२९	भाँग	१३४
कीरकाकोली	"	गाँजा	"
मुलेठी	"	पोस्ता (अफीम का फल)	"
कबीला	"	अफीम [टि० चार प्रकार,	
अमलतास	"	परिचय]	"
कुटकी	१३०	खसखस (पोस्ते के दाने)	"
चिरायता	"	गुर्च (गिलेय)	१३५
इन्द्रजौ	"	पान	"
मैनफर	"		
मालकँगुनी	"		
पुष्करमूल	१३१	कपूर [टि० १३ प्रकार]	१३६
केकड़ासिंगी	"	कस्तूरी	"
कायफर	"	चन्दन	"
मजीठ [टि० परिचय]	"	लाल चन्दन	१३७
लाही (लाह)	"	अगर	"
हलदी	१३२	देषदार	"
आमाहलदी	"	तगर	"
दारुहलदी	"	शुगुल	"
रसवत	"	राल	"
बकुची	"	गन्धाविरोजा	"
चकवँड़	१३३	लौंग	१३८
अतीस	"	जायफल [टि० परिचय]	"
लोध	"	जावित्री	"
पठानी लोध	"	इलायची-बची	"
भि लावों [टि० परिचय, विशेषता]	"	इलायची-छोटी	"

१३. गन्धादि वर्ग

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
शीतलचीनी	१३९	मोम	१४३
नागकेशर	"	काँजी	"
दालचीनी [टि० परिचय]	"	मदिरा (शराब)	"
तेजपात	"	ईख	१४४
बालछद्द	१४०	गुड	"
खस	"	खाँड	"
गोरोचन [टि० परिचय]	"	चीनी	"
नख	"		
नखी	"		
सुगन्धवाला	१४१	१५. गौरस वर्ग	
पद्मकाठ [टि० परिचय]	"	दूध	१४५
नागरमोथा	"	दही	"
छरीला [टि० परिचय]	"	मलाई	"
कचूर	१४२	खोआ	"
कपूर कचरी	"	छेना-पानी	"
पुदीना [टि० विशेषता]	"	छेना	"
१४. मधु वर्ग		मट्टा	"
मधु (शहद) [टि० चार प्रकार] १४३		मक्खन	"
		घी	"

तृतीय खण्ड

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१. मनुष्य वर्ग		मुँह [टि० २ भेद]	१५१
शरीर	१४९	जीभ	”
अङ्ग	”	दाँत	”
शिखा	”	जबड़ा	”
सिरके बाल	”	ताछ	”
चेटी	”	कंठ	”
सिर	”	गरदन	”
ललाट	”	कंधा	”
जटा	१५०	घंटी (घाटी)	”
कान	”	छाती	”
कनपटी	”	स्तन	”
भौंह	”	स्तन का अग्रभाग	”
बरौनी	”	काँख	”
आँख	”	कमर	”
आँख की पुतली	”	कूल्हा (कमर की हड्डी)	१५२
आँख का गोला	”	पेट	”
आँख का कोना	”	नाभि	”
पलक	”	पीठ	”
गाल	”	पसली	”
नाक	”	लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)	”
ओठ	”	अण्डकोष	”
लुङ्गी	”	योनि	”
मुँछ-दाढ़ी	१५१	नितम्ब	”

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मलद्वार	१५२	रोमाञ्च	१५५
मलाशय	१५३	आँसू	१७
मूत्राशय	१५३	पसीना	१७
जॉध	१५३	चमड़ा	१७
घुटना	१५३	लोहू	१७
पैर	१५३	मांस	१७
एड़ी	१५३	चरबी [टि० परिभाषा]	१७
पैर का तलवा	१५३	मज्जा [टि० परिभाषा]	१७
पैर की उँगुली	१५३	हड्डी	१५६
बाँह [टि० आजानुबाहु]	१५४	वीर्य [टि० सप्तधातु]	१७
केहुनी	१५४	रज [टि० रजोदर्शनकाल]	१७
हाथ	१५४	कलेजा	१७
हथेली	१५४	बात [टि० ५ प्रकार]	१७
हथेली के पीछे	१५४	पित्त [टि० ५ प्रकार]	१७
उँगुली	१५४	कफ [टि० ५ प्रकार]	१७
गावा	१५४	नस	१७
अँगुली के पोर	१५४	नाडी	१८
नाखून	१५४	लार (थूक)	१५७
इन्द्रिय [टि० ५ कर्मेन्द्रिय,		पिलही (तिल्ली)	१७
५ ज्ञानेन्द्रिय तथा		यकृत	१७
४अन्तरिन्द्रिय]		अँतड़ी	१७
थप्पड़		फेफड़ा	१७
धूँसा		त्रिबली	१७
गोद		गर्भाशय	१७
रोम		गर्भ (गर्भस्थित पिण्ड)	१७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
प्रसव	१५७	कुटनी	१६०
कान का मैल	"	बालक	"
आँख का कीचड़	"	बालिका (कन्या)	१६१
नाक का मैल	"	युवा	"
विष्टा (मल)	"	युवती	"
मूत्र	१५८	प्रौढ़	६१
पुरुष [टि० ४ प्रकार]	"	प्रौढ़ा	"
स्त्री	"	वृद्ध	"
सुन्दरी स्त्री	"	मस्तिष्क	"
पतिव्रता स्त्री	१५९	शब्द	"
कुटुम्बवाली स्त्री	"	दृष्टि	"
सधवा स्त्री	"	गंध	"
विधवा स्त्री	"	भूख	"
रँडुआ (जिसकी स्त्री मर गई हो)	"	प्यास	"
रजस्वला स्त्री	"	जँभाई	१६२
विगतरजा स्त्री	"	छोंक	"
स्वयंवरा स्त्री	"	हँसी [टि० ६ भेद]	"
पति-पुत्र-हीना स्त्री	"	रोना	"
सती स्त्री	१६०	हिचकी	"
प्यारी स्त्री	"	सुनना	"
विवाहिता स्त्री	"	स्वाद	"
गर्भवती स्त्री	"	निद्रा	"
प्रसूता स्त्री	"	ऊँघ	"
बन्ध्या स्त्री	"	आलिङ्गन	"
व्यभिचारिणी	"	चुम्बन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मैथुन	१६३	सजग	१६५
जीव	"	तैयार	"
आत्मा	"	तत्पर	"
मन	"	पुष्ट	"
बुद्धि	"	नष्ट	"
अहंकार	"	भाग्यमान	"
कबन्ध	"	उदार	"
मुर्दा	"	पूज्य	"
भाग्य	"	परीक्षक	"
अभाग्य	"	प्रसन्नचित्त	"
[विशेषण बोधक शब्द]	१६४	व्याकुलचित्त	"
प्रजा	"	उत्कण्ठित	"
धनी	"	सरलचित्त	"
दरिद्र	"	स्वामी (मालिक)	१६६
चतुर	"	स्वतन्त्र	"
मूर्ख	"	पेट (अपना पेट पालनेवाला)	"
मीठा	"	विनीत	"
खट्टा	"	चुगुलखोर	"
नमकीन	"	क्रूर	"
तीता	"	सज्जन	"
कडुआ	"	दुर्जन	"
कसैला	१६५	भयभीत	"
ठंडा	"	कामी	"
गरम	"	व्यभिचारी	१६७
रिक्त	"	अधम	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
उत्तम	१६७	कोमल	१६९
भयंकर	"	साँवला	"
ल्यागी	"	गोरा	"
आलसी	"	सफेद	"
लम्बा	"	लाल	"
नाटा	"	पीला	"
मोटा	१६८	चितकबरा	"
पतला	"	हरा	"
आरोग्य	"	छोटा	"
रोगी	"	बड़ा	"
अन्धा	"	सूक्ष्म	१७०
काना	"	नया	"
बहिरा	"	पुराना	"
गूँगा	"	थोड़ा	"
कुबड़ा	"	बहुत	"
नाक-कटा	"	पूर्ण	"
बड़े कानवाला	"	आधा	"
कान-कटा	"	चौथाई	"
लम्बी भुजावाला	"	चिकना	१७१
छोटी भुजावाला	"	रूखा	"
हाथ-कटा	"	टेढ़ा	"
लँगड़ा	"	पवित्र	"
सुन्दर	१६९	अपवित्र	"
कुरूप	"	अतिथि	"
कठोर	"	धूर्त	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
प्रिय	१७१	उचित	१७३
पुरवासी	"	अनुचित	"
ग्रामवासी	"	नंगा	"
बटोही	"	हिंजडा	"
थका	"	शत्रु	"
वृणित	१७२	मित्र	१७४
अद्भुत	"	सखी	"
शान्त	"	नेता	"
वीर	"	कुलीन	"
सीधा	"		
पागल	"		
मौनी	"	२. सम्बन्धी वर्ग	
दानी	"	माता [टि० ७ प्रकार]	१७५
सूम	"	पिता [टि० ७ प्रकार]	"
दानपात्र	"	पति [टि० ४ प्रकार]	"
मुख्य	"	पत्नी	१७६
मतवाला	"	पुत्र	"
पराधीन	१७३	पुत्री	"
दयावान	"	पौत्र (पुत्र का पुत्र)	"
अपकारी	"	पौत्री (पुत्र की पुत्री)	"
क्षमाशील	"	नाती (पुत्री की पुत्री)	"
क्षमारहित	"	नातिनी (पुत्री की पुत्री)	"
अधीन	"	भाई (सगा)	१७७
अगुआ	"	भाई (ज्येष्ठ)	"
अशकुन	"	भाई (छोटा)	"
		बहिन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
शदा (पिता के पिता)	१७७	देवर	१७८
शदी (पिता की माता)	"	ननद	१७९
वाचा	"	जेठ (स्त्री के पति का बड़ा भाई)	"
वाची	"	पति-पत्नी	"
वुआ	"	सौत	"
फुफेरा भाई	"	उपपति	"
गौसी	"	उपपति से उत्पन्न पुत्र	"
गौसरा भाई	"	[टि० दो प्रकार]	"
गौसरी बहिन	"	गोद बैठाया हुआ पुत्र	"
गाना	"	सन्तान	"
गानी	"	समान अवस्था के	"
गामा	१७८	३. जाति वर्ग	
गामी	"	जाति	१८०
भाऊजा	"	ब्राह्मण [टि० छः कर्म]	"
भाऊजी	"	ब्राह्मण-पत्नी [टि० अर्थभेद]	"
भतीजा	"	क्षत्री	१८१
भतीजी	"	क्षत्री-पत्नी	"
भौजाई	"	वैश्य	"
बान्धव	"	वैश्य-पत्नी	"
पतोहू	"	शूद्र	"
सास	"	शूद्र-पत्नी	"
साला	"	चाण्डाल [टि० भिन्न २ प्रकार]	"
साली	"	धोबी	१८२
बहनोई	"	धोबी की स्त्री	"
शामाद	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चमार	१८२	दरजी	१८४
चमार की स्त्री	,,	जुड़िहारा	,,
भंगी	,,	माली	,,
धुनियाँ	,,	माली की स्त्री	,,
जुलाहा	,,	बहेलिया	,,
अंग्रेज	,,	केवट	,,
मुसलमान	,,	नट	,,
कोल-किरात [टि० उत्पत्ति]	,,	भाट	१८५
लोहार	१८३	कसाई	,,
बढ़ई	,,	राजगीर	,,
कहार	,,	कारीगर	,,
कहार की स्त्री	,,	चित्रकार	,,
नाई	,,	तमोली	,,
बारी	,,	हलवाई (रसोइया)	,,
ठठेरा	,,	किसान	,,
अहीर	,,	गवैया	,,
अहीर की स्त्री	,,	बजानेवाले	,,
गड़ेरिया	,,	बंशी बजाने वाले	,,
कुम्हार	,,	मृदङ्ग " "	,,
कोइरी	,,	नाचने वाले पुरुष	१८६
कुरमा	,,	नाचने वाली स्त्री	,,
सोनार	१८४	वेश्या	,,
तेली	,,	वेश्याओं के गुरु	,,
कलवार	,,	महन्त	,,
छीपी	,,	पुरोहित (पण्डा)	,,

(२८)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पहरेदार	१८६	वैद्य [टि० ४ भेद]	१८९
दूत	"	विष-वैद्य	"
दास	"	महाजन	"
दासी	१८७	हाकिम	"
बाजीगर (जादूगर)	"	जासूस	"
चोर	"	चक्रवर्ती राजा	"
ठग	"	महाराजाधिराज	"
कैदी	"	राजा	"
जुआरी	"	पटरानी	"
कवि (पण्डित)	"	मंत्री	१९०
लेखक (मुहर्रिर)	"	पारिषद (दरबारी)	"
ज्योतिषी	१८८	सेना [टि० चतुरङ्गिनी]	"
शास्त्री	"	सिपाही (योद्धा)	"
नौकर	"	सेनापति	"
न्यायाधीश	"	प्यादा (सैनिक)	"
धर्माध्यक्ष	"	रथी (सैनिक)	"
व्यास (कथावाचक)	"	घोड़सवार	"
यज्ञकर्ता	"	महावत	"
वेदान्ती	"	कोचवान (सारथी)	१९१
नैयायिक	"	ब्रह्मचारी	"
मीमांसज्ञ	"	गृहस्थ	"
वेदपाठी	"	वानप्रस्थी	"
शिक्षक	"	सन्यासी	"
अध्यापिका	"	भिक्षुक	"
शिष्य	"		"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
		ज्ञान	१९४
४. भावादि वर्ग		स्मृति	"
अम	१९२	सहनशीलता	"
शोक	"	असहनशीलता	"
उत्साह	"	उत्कण्ठा	"
भय	"	न्योछावर	"
क्रोध	"	उत्सव	१९५
घृणा	"	दीनता	"
शान्ति	१९३	ईर्ष (सुख)	"
भक्ति [टि० नवधा भक्ति]	"	लज्जा	"
त्याग	"	उग्रता	"
बलानि	"	व्याधि	"
वात्सल्य	"	अम	"
शंका	"	आवेग	"
डाह	"	अभाव	"
द्वेष	"	परिक्रमा	"
भ्रम	"	हृद्	"
श्रद्धा	"	समाप्ति	१९६
मद	"	अकस्मात्	"
धीरज	"	अकाल	"
आलस्य	१९४	तारतम्य	"
दुःख (विषाद)	"	समूह	"
चिन्ता	"	उन्माद	"
मोह (अज्ञानता)	"	ज्ञाप (गाली)	"
स्वप्न	"	न्याय	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
जड़ता	१९६	मृत्यु	१९९
चपलता	,,	कर्याण	,,
क्षण	१९७	आचार	,,
धीरे	,,	क्रूरता	,,
अवकाश	,,	पाप	,,
शीघ्र	,,	पुण्य	,,
व्यतीत	,,	अपराध	,,
वितर्क	,,	सत्य	,,
निरलज्जता	,,	झूठ	,,
मूर्छा	,,	हाव (नाज़) [टि० १२ प्रकार] २००	
मान (आदर)	,,	यात्रा	,,
मान (हठ)	,,	दण्ड	,,
अपमान	१९८	व्यवहार	,,
मानता	,,	कीर्ति [टि० परिभाषा]	,,
स्वभाव	,,	अपयश	,,
काम (कामना)	,,	अपकार	,,
लोभ	,,	उपकार	,,
पाखण्ड	,,	मधुर वचन (अर्थ प्रयोग में)	,,
प्रमाद	,,	दुर्वचन	२०१
अभिप्राय (विचार)	,,	नीति	,,
सन्तोष	,,	स्तुति	,,
स्नेह	,,	कृपा	,,
उपवास	,,	कपट	,,
आज्ञा	,,	कलंक	,,
जीवन (जीवनकाल)	१९९	शपथ (कसम)	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कंजूसी	२०१	पवित्रता	२०५
जय (विजय)	,,	मधुर शब्द (शब्द प्रयोग में)	,,
हार (पराजय)	,,	अपभ्रंश	,,
आशीर्वाद	,,	पर्य्याय	,,
बचपन	,,	विपर्य्यय	,,
जवानी	,,	ओंकार	,,
अधेड़	२०२	इतिहास	,,
बुढ़ापा	,,	प्रबन्ध	,,
सुन्दरता	,,	आख्यान (कथा)	,,
कुरूपता	,,	आख्यायिका [टि० परिभाषा]	२०६
प्रार्थना	,,	पहेली	,,
उत्पात	,,	गल्प	,,
सूचना	,,	चाटुकारी	,,
हँसी-ठट्टा	,,	संगीत	,,
प्रलाप	,,	राग [टि० ६ भेद]	,,
संस्कार [टि० १६ प्रकार]	,,	नाच [टि ४ भेद]	,,
विधा [टि० १८ प्रकार]	२०३	प्रतिघ्वनि	,,
व्यसन [टि० १८ प्रकार]	,,	विदित	,,
बहाना	,,	नाटक [टि० १० प्रकार के रूपक	
कला [टि० ६४ प्रकार]	,,	और १८ प्रकार के उपरूपक]	२०७
सुगन्धि	२०४	सेवा	,,
दुर्गन्धि	२०५	विघ्न	,,
निश्चय	,,	व्यर्थ	,,
सिद्धान्त	,,	प्रतिज्ञा	,,
स्वीकार	,,	संयोग	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वियोग	२०७	लक्ष्य	२०९
प्रकार	"	शैली	२१०
शोभा	२०८	क्लिष्ट	"
श्रीहृत	"	उजाला	"
संकेत	"	अन्धेरा	"
अतिरिक्त	"	बदला (अपकार के बदले अपकार),	"
समता	"	५. रोगादि वर्ग	
विषमता	"	रोग	२११
बलात्कार	"	ज्वर	"
उपहार	"	दोष [टि० परिभाषा]	"
विस्मय	"	दाह	"
उल्लंघन	"	शीत	"
प्यार	"	पीनस [टि० निदान]	"
प्रतीक्षा	२०९	क्षय	२१२
प्रभाव	"	खाँसी	"
प्रस्ताव	"	सूजन	"
परिस्थिति	"	बेवाई	"
अन्वेषण	"	सेहुँआ [टि० निदान]	"
कुण्ठित	"	शीतला	"
व्यङ्ग्य	"	दाद	"
धूस	"	खाज [टि० निदान, उपाय]	"
विपरीत	"	फोडा-फुन्सी	"
समर्थन	"	घाव	"
फुटकर	"	पीब	२१३
तन्मय	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कढ़ी	२१८	इमली के पन्ना का बड़ा	२१९
रोटी	"	दही बड़ा	"
लिट्टी वा बाटी	"	पापड़	"
पूरी	"	भरता	"
कचौरी	"	चिखना	"
दलुआ	"	पराठा	२२०
मालपुआ	"	बेदई	"
पोलाव	"	पूरन-पूड़ी (मीठी पूड़ी)	"
तरकारी	"	सेवई	"
खीर	"	अनरसा	"
मीठाभात	"	गुक्षिया	"
सिखरन	"	खाजा	"
चबैना	"	चूरमा	"
लावा	२१९	जलेबी	"
चिवड़ा	"	लड्डू	"
चटनी	"	मोतीचूर के लड्डू	"
रायता	"	मूँग के लड्डू	"
अँचार	"	फेनी	"
मुरब्बा	"	घेवर	"
पन्ना	"	गुलाबजामुन	"
फुलौरी (पकौड़ी)	"	शकरपाला	"
बरी	"	खिचड़ी	"
भुँगौरी	"	सत्तू	"
घुघुरी	"	दाबुस	"
बड़ा	"	बघार	२२१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कौर	२२१	ओखली	२२२
बटुआ	"	मूसल	"
तवा	"	चूल्हा	"
कड़ाही	"	चक्की	"
कलछी	"	दौरा-दौरी	"
काठ की कलछी	"	झोंपी	२२३
कटोरा-कटोरी	"	अँगेठी	"
करवा (लोटा)	"	छुआठ (जलती हुई लकड़ी)	"
गिलास	"	खपड़ी (चबैना भूने की)	"
घड़ा (गगरी)	"	भट्टी (भाड़)	"
घड़े का ढक्कन	"	उपला (कंड़ा)	"
मटका (कुंडा)	"	राख	"
थाली	२२२	जूठा भोजन	"
चकला	"	७. वस्त्राभरण वर्ग	
पथरी	"	उबटन	२२४
खिल	"	तैलमर्दन	"
बट्टा	"	स्नान	"
झरना	"	चन्दनादि लेपन	"
कठवत	"	महावर	"
बरतन	"	पुष्पमाला	"
तेल की कुप्पी	"	वस्त्र	"
चौकी	"	रेशमी वस्त्र	"
पीड़ा	"	ऊनी-वस्त्र	२२५
सूप	"	नया वस्त्र	"
चलनी	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
छालटी	२२५	दर्पण	२२६
घोया-वस्त्र	"	पंखा	"
पुराना-वस्त्र	"	पीकदान	२२७
मोटा कपड़ा	"	दीपक	"
फटा कपड़ा	"	डब्बा	"
पगड़ी	"	आभूषण	"
दुपट्टा (चादर)	"	शृङ्गार [टि० १६ प्रकार के शृंगार]	"
जामा	"	मुकुट	"
धोती	"	शिरफूल	"
फतुही	"	बेंदी वा टीका	"
चोली	"	कर्णफूल	"
कमरबन्द	"	कुण्डल	"
लहङ्गा	"	कंठा	"
रजाई	"	मोती का हार	२२८
तोशक	२२६	नत्थ	"
तकिया	"	नाक की कील	"
चंदवा	"	बिजायठ	"
फरदा	"	पहुँची	"
ओहार	"	कड़ा वा कंकण	"
कुरसी (मचिया)	"	अँगूठी	"
पलँग	"	करधनी	"
छड़ी	"	धुँधुरू	"
जूता (खड़ाऊँ)	"	पायजेब	"
छाता	"	नूपुर	"
कंधी	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
		मुण्डन कर्म	२३०
८. ब्रह्मचारी वर्ग		होम का ईधन	"
पुस्तक	२२९	पवित्री	"
पत्रा	"	विवाह [टि० ८ प्रकार]	२३१
कलम	"	वर (वर)	"
स्याही	"	बरात (बारात)	"
दावात	"	बराती	"
पटिया	"		
काल-तखता	"	९. राज वर्ग	
नकशा	"	राजधानी	२३२
अध्ययन	"	राज्य [टि० आठ अंग]	"
अध्यापन	"	राज्य-व्यवस्था	"
मनन करना	"	राज्याभिषेक	"
हवन	२३०	दुन्दुभी	"
शाकल्य	"	छत्र	"
आचमन	"	चैवर	"
प्रणाम	"	पूर्णकलश	"
भूमि पर सोने वाले	"	खेमा (पङ्गाव)	२३३
ब्रह्मचारी का दण्ड	"	पहरा (गश्त)	"
ब्रह्मचारी का पात्र	"	कैद	"
मृगचर्म	"	कोड़ा	"
नित्यकर्म	"	देशनिकाला की सजा	"
संस्कार-भ्रष्ट	"	फाँसी की सजा	"
जनेऊ	"	महसूल	"
कौपीन (लँगोटी)	"	राजगद्दी	"
आसन	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
हाथी	२३३	बछ्छी-बाज	२३५
हाथिनी	,,	लट्टबाज	,,
मदवाले हाथी	,,	धनुष	,,
हाथी की सूँड़	,,	धनुष की डोर	,,
हाथी का सिकड़	,,	बाण	,,
हाथी का मद	,,	तरकश	,,
हाथी का अंकुश	,,	तलवार	,,
हाथी की बोली	२३४	ढाल	,,
घोड़ा	,,	गुप्ती	,,
घोड़ी	,,	छुरी	,,
घोड़े के गर्दन के बाल	,,	युद्ध	,,
घोड़े का खुर	,,	तोप	२३६
घोड़े की बोली	,,	बन्दूक	,,
घोड़े की लगाम	,,	भाला	,,
घोड़े की चाबुक	,,	वध	,,
रथ (लड़ाई के लिए)	,,	चिता	,,
हवाई जहाज	,,		
जनाना-रथ	,,		
गाड़ी	,,		
पालकी	,,		
डोली	,,		
बरखतर	,,		
टोप	२३५		
गेंद	,,		
धनुर्धर	,,		

१०. व्यवसाय वर्ग

जीविका	२३७
ऋण	,,
सूद	,,
सूदखोर	,,
खेती	,,
खलियान	,,
कुदार	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
हँसुआ	२३७	धन	२३९
हर	"	जुआ	"
हरिस	"	वेतन	"
हर का फाल	"	सलाई	"
बैल	"	दियासलाई	"
साँड़	"	भाथी	"
कोठार	२३८	कूँची (ब्रश)	"
रस्सी	"	घरिया (धातु गलाने की)	"
मथानी	"	कसौटी	"
मूलधन	"	रेती	"
नफा	"	बरमा (छेदने वाला)	"
लेनदेन	"	कतरनी	"
धरोहर	"	टाँकी	"
बिक्री की वस्तु	"	आरा	"
वेंचना	"	खूँटी	"
तौल वा मान	"	बहूँगी	२४०
तराजू	"	सिकहर (छीका)	"
तराजू का पलड़ा	"	जाल	"
तराजू की डाँड़	"	फन्दा	"
बाट	"	गुड़िया	"
बकद	"	बाँक (टँगारी)	"
उधार	"	चौपङ्क	"
सस्ता	"	पासा	"
महूँगा	"	अस्तूरा	"
दुकान	२३९	जाभिन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
खन्ती	२४०	उतार	२४२
सूई	,,	बाजा [टि० ४ भेद]	,,
तागा	,,	वीणा	,,
सिकड़ी	,,	मृदङ्ग	,,
ताला	,,	ढोल	,,
ताली	,,	डमरू	,,
कुंडी	,,	तबला	२४३
११. स्वर-तालादि वर्ग			
स्वर [टि० ७ भेद]	२४१	सारंगी	,,
ताल [टि० ५ भेद]	,,	बंशी	,,
मधुर-स्वर	२४२	गुरड़ी	,,
धीर-स्वर	,,	मजीरा	,,
उच्च स्वर	,,	शाहनाई	,,
चढ़ाव	,,	झाँझ	,,
		डफला	,,

चतुर्थ-खण्ड

१. पशु वर्ग			
पशु [टि० परिभाषा]	२४७	गैड़ा [टि० परिचय]	२४८
सिंह	,,	भाळ	,,
बाघ	,,	भैंसा	,,
व्याघ्र-नख	,,	ऊँट	,,
चीता	२४८	गदहा	२४९
सुअर	,,	सियार (गीदड़)	,,
भेड़िया	,,	हरिण [टि० मृग और हरिण के भेद],,	,,
		मृग-चर्म	२३०, २५०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बन्दर	२५०	साँप का शरीर	२५३
गाय	,,	साँप का फन	२५४
गाय का बछवा वा बछिया	,,	साँप का केंचुल	,,
गायों का समूह	,,	साँप का दाँत	,,
भेंड़ा	,,	साँप का विष	,,
बकरा	,,	विष	,,
साही	,,	साँप पकड़ने वाला	,,
साही के रोम (काँटे)	२५१	बिच्छू	,,
बिलार	,,	कान खजूरा	,,
कुत्ता [टि० कुत्ते के ६ गुण]	,,	बिल	,,
खरहा	,,	गोह	,,
चूहा	,,	केंचुआ	,,
छल्लन्दर	२५२	गिरगिट	,,
नेवला	,,	छिपकिली	,,
गिलहरी [टि० परिचय]	,,		
२. सरीसृप वर्ग		३. पक्षी वर्ग	
शेषनाग	२५३	पक्षी	२५५
सर्पराज	,,	मोर	,,
सर्प	,,	मोर-शिखा	,,
गोनस-सर्प	,,	मोर-चन्द्रिका	,,
अजगर-सर्प	,,	पपीहा	,,
डेङ्गा-सर्प	,,	हंस	,,
दोमुहों-साँप	,,	बगुला	२५६
करैत-साँप-	,,	वत्सख	,,
	,,	सारस	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कुररी	२५६	मुर्गा	२५८
चकवा	"	गौरैया	"
गरुड	"	चकोर	२५९
खंजन	"	काका कौआ	"
कोयल	"	चोंच	"
आड़ी	"	अंडा	"
गिद्ध	"	घोंसला	"
चील	२५७	पंख	"
कौआ	"	चिड़ियों के बच्चे	"
डोम कौआ	"		
चमगादर	"	४. कीट-पतङ्गादि वर्ग	
हारिल	"	मक्खी	२६०
सुग्गा वा तोता	"	मच्छर	"
मना	"	भौरा	"
तीतिर	"	मधुमक्खी [टि० ४ प्रकार]	"
बटेर	"	बर्रै [टि० विशेषता]	"
नीलकंठ	"	झोंगुर	२६१
भुजंगा	"	फतिंगा	"
कठफोरा	"	टिड्डा-टिड्डी	"
उल्लू	२५८	जुगुनू	"
वाज	"	मकड़ी	"
लवा	"	खटमल	"
कबूतर	"	चीलर	"
रुसुआ [टि० विशेषता]	"	जूँ	"
टिटिहरी	"	घुन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चींटी	२६२	उकताना	२६४
चींटा	,,	उकसना	२६५
लाल चींटा [टि० परिचय]	,,	उकेलना	,,
बीर बहूटी [टि० परिचय]	,,	उखड़ना	,,
		उगना	,,
		उगलना	,,
५. क्रियादि वर्ग		उगाहना	,,
अकुलाना	२६३	उधारना	,,
अगोरना	,,	उचटना	,,
अघाना	,,	उचाड़ना	,,
अँगेजना	,,	उछलना	,,
अँचवना (आचमन करना)	,,	उजड़ना	,,
अटना	,,	उझिलना (उँडेलना)	,,
अटकना	,,	उतरना	२६६
अटकाना	,,	उतराना	,,
अठिलाना	,,	उतारना	,,
अपनाना	२६४	उथलना	,,
अराधना	,,	उद्धारना (उद्धार करना)	,,
अलसाना	,,	उपटना	,,
अवगाहना	,,	उफनना	,,
अवमानना	,,	उबालना	,,
अवराधना	,,	ऊँघना	,,
अलापना	,,	ऐठना	,,
आँकना	,,	ओढ़ना	,,
आना	,,	ककोरना	,,
उकटना	,,		

(४४)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कचरना	२६७	चलना	२६९
कतरना	"	चसना	"
करकना	"	चहकना	"
कहना	"	चहलना	"
काटना	"	चालना	"
कौचना	"	चिढ़ना	२७०
कोसना	"	चिताना	"
खाना (टि० खाने के ६ प्रकार] ,	"	चिछाना	"
खिसकना	"	चिलकना	"
खेलना	२६८	चुभना	"
गढ़ना	"	चुराना	"
गन्धाना	"	थूकना	"
गर्जना	"	छजना	"
गलना	"	छिड़कना	"
गिरना	"	छिपना	"
गूँथना	"	छूना	"
गूँधना	"	छेदना	२७१
घिनाना	"	जन्ना	"
घिरना	"	जमाना	"
घिसना	"	जागना	"
घुसना	२६९	जगाना	"
घोटना	"	जलना	"
चपाना	"	जाना	"
चभोरना	"	जानना	"
चमकना	"	जुटाना	"

(४५)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
जोहना	२७१	तरसना	२७४
झकोरना	२७२	तरसाना	११
झखना	११	तरेरना	११
झगड़ना	११	त्यागना	११
झझकारना	११	दहलना	११
झटकना	११	देखना	११
झड़ना	११	देना	११
झल्लाना	११	दौड़ना	२७५
झॉसना	११	धड़कना	११
झाड़ना	११	धधकना	११
झुराना	२७३	धमकाना	११
झूमना	११	धिक्कारना	११
झोंकना	११	धोना	११
टकराना	११	नकारना	११
टघलना	११	नाघना	११
टिकना	११	निकालना	११
टेकना	११	निखारना	११
टेवना	११	निगलना	२७६
टोहना	११	निथारना	११
ठगना	११	निबाहना	११
ठठना	११	निथराना	११
ठिठुरना	२७४	निहुरना	११
डगमगाना	११	निवारण करना	११
ढकेलना	११	निस्तारना	११
ढाँकना	११		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पक्राना	२७६	बटोरना	२७८
पगना	"	बनाना	"
पगुराना	"	बरजना	२७९
पढ़ना	२७७	बरना	"
पढ़ाना	"	वहाना	"
पलना	"	वहाना करना	"
पलोटना	"	बहलाना	"
पहनना	"	बाँटना	"
पहचानना	"	वासना	"
पाना	"	बिचकना	"
पालना	"	बिचलना	"
पिचकना	"	बिछुड़ना	"
पिछलना	"	बिदारना	"
पीना	"	बीधना	२८०
पुकारना	"	बिलसना	"
पैरना	"	बीतना	"
पोसना	"	बूकना	"
प्रकट होना	२७८	बेघना	"
फेंदना	"	बैठना	"
फरकना	"	बोलना	"
फूलना	"	भकुआना	"
फेंकना	"	भगाना	"
फैलना	"	भजना	"
फैलाना	"	भटकना	"
वकना	"	भड़काना	२८१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
भरमाना	२८१	मूङ्गना	२८३
भसाना	"	मूसना	"
भागना	"	रचना	"
भाना	"	रमना	"
भासना	"	रहना	"
भुनना (भूना)	"	रिसाना	"
भुलाना	"	रीझना	"
भूलना	"	रूठना	"
भेजना	"	रोकना	"
भेंटना	"	रोना	"
भौकना	"	रोपना	"
भचलना	"	लखना	२८४
भटकाना	"	लजाना	"
भथना	२८२	लटपटाना	"
भनाना	"	लपेटना	"
भरना	"	ललचाना	"
भलना	"	लहना	"
भानना	"	लहकना	"
भाजना	"	लहकाना	"
भारना	"	लहलहाना	"
भिटाना	"	लादना	"
मिलना	"	लिपटना	"
मीचना	"	लिपटाना	"
मुङ्गना	"	लुटाना	"
सुरझाना	"	लुकना	२८५

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
लुटना	२८५	सिहरना	२८६
लेना	"	सींचना	"
लेटना	"	सीना	"
लौटना	"	सुनना	"
संचना	"	सूंधना	२८७
सँवारना	"	सोना	"
सकाना	"	सौंपना	"
सकारना	"	हँकाना	"
सड़ना	"	हँसना	"
सधना	"	दकबकाना	"
समाना	"	दकलाना	"
समेटना	"	दटकना	"
सँभालना	२८६	दटना	"
सराहना	"	दटाना	"
सहमना	"	दराना	२८८
सहलाना	"	दड़पना	"
सहेजना	"	द्वारना	"
सालना	"	द्विचकना	"
सिझाना	"	द्विलोरना	"
सिधारना	"	हुलसना	"
सिमिटना	"	होना	"
सिराना	"		

[नोट—अकारादि क्रमकी सूची ग्रन्थके अन्तमें देखिये ।]



शुद्धि-पत्र

—१०६—

[सूचना—कृपया इस “शुद्धिपत्र” के अनुसार पहिले संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन कीजिये ।]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१	अदि तिनन्दन	अदिति नन्दन
१२	१२	विष्णु-प्रिया	विष्णु-प्रिया
१५	१०	आशु शिक्षणि	आशु शिक्षणि
”	११	सप्तर्चि	सप्तर्चि
”	१२ - १३	ऊष । बुध	उषर्बुध
१६	१	वर्हिशुष्मा	शुष्म
३०	५	माँझू	माँझ
३५	१२	जन्हाई	जुन्हाई
३९	३	साँझू	साँझ
४५	६	रत्नावती	रत्नवती
६३	२२	तापना	तापन
६५	४	कनीयस	कनीपस
७१	१८	कुटली	कुलटी
७४	१३	आदुतकी	आदुकी
”	१५	मृदाह्वया	मृदाह्वया
७६	१९	चौहर कोड़ा	चौहार कोड़ा
८८	६	अयोदिका	अपोदिका

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	१७	गुण योगफल	गुड योगफल
८९	१६	लघुचिर्भिटा	लघुचिर्भिटा
९०	३	मूलत्र	मूत्रल
९३	१७	लुलाय कन्द	लुलाय कन्द
९५	६	नरौषधि	नगरौषधि
"	१७	विश्वमित्र प्रिय	विश्वामित्र प्रिय
९६	२०	दन्त शट	दन्तशठ
९८	५	मुग्दर	मुद्गर
१०१	१४	मदनाफ फल	मदनाभ फल
१०५	१०	कुसुमाधिय	कुसुमाधिप
"	१२	स्थिर गन्ध	स्थिर गन्ध
१०६	१	कण्ट	कण्ठ
"	५	मद्यमोद	मद्यमोद
"	८	लघुपुष्प	शुक्ल पुष्प
"	१०	अह पुष्पक	अट्टपुष्पक
१०८	५	जया कुसुम	जपाकुसुम
१२६	२१	गन्ध बीजा	गन्धबीजा
१३२	२०	रसगर्भ	रसगर्भ
१३७	१९	कलयस	कलयज
१४४	१०	मधुतृण	मधुतृण
१५७	१५	पातक	पोतक
१६०	२२	पुत्री	पुत्र
१६२	१०	स्वप्त	स्वप्न
१७१	३	सूखा	रूखा
१८०	५	अम्रजन्त्रा	अम्रजन्मा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	७	द्विजन्म	द्विजन्म
"	८	वामन	वामन
१८७	२०	सूजान	सुजान
१९२	१३	तपुषी	तपुषी
१९४	११	आज्ञानान्धकार	अज्ञानान्धकार
१९७	१२	मिरान	सिराना
२०५	५	प्रधान लक्ष्य	प्रधान लक्ष्य
२२५	१२	संख्याना	संख्यान
२३७	१	जावन	जीवन
२३९	१३	(धातु गलानेका घटिका)	(धातु गलाने की)
२४२, २४३	पृष्ठाङ्क	१४२, १४३	२४२, २४३
२५६	१९	कामन्ध	कामान्ध
२७७	१०	रक्षा लरना	रक्षा करना
२७९	२१	करना	अलग करना
२८४	१०	"चकमना"	"चमकना"

प्रथम खण्ड

१. स्वर्गादिवर्ग

स्वर्ग—स्वः । अव्यय । त्रिदिव । त्रिविष्टप ।
त्रिदशालय । द्यौ । सुरलोक । नाक । दिव । मन्दर । अवरोह ।
गौ । फलोदय । देवलोक । स्वर्लोक । ऊर्ध्वलोक । सुखाधार ।
सौरिक । शक्रभुवन । दिवान ।

ईश्वर—ईश । परमेश्वर । परमात्मा । ब्रह्म । परब्रह्म ।
सच्चिदानन्द । ॐ । शिव । शर्व । अलख । अगोचर । अज ।
अनादि । अनन्त । गुणातीत । निर्गुण । व्यापक । महेश्वर ।
सर्वेश्वर । शंकर । प्रभु । महाप्रभु । स्वामी । परमपिता । पति ।
साहब । साई ।

देवता*—अमर । निर्जर । देव । विबुध । सुर ।
सुपर्वा । सुमना । त्रिदिवेश । लेख । दिवौकस । आदितेय ।

* देवजातिके अन्तर्गत—

(१) देवयोनि—विद्याधर । अप्सरा । यक्ष । रक्ष । गन्धर्व । किन्नर ।
पिशाच । गुह्यक । सिद्ध । भूत ।

(२) गण देवता—द्वादश आदित्य—१. विवस्वान । २. अर्यमा ।
३. पूषा । ४. त्वष्टा । ५. सविता । ६. भग । ७. धाता । ८. विधाता ।
९. वरुण । १०. मित्र । ११. शक्र । १२. उरुक्रम ।

अदि तिनन्दन । आदित्य । ऋभव । अस्वप्न । अमर्त्य । दानवारि ।
अमृतान्धा । बर्हिर्मुख । क्रतुभुक् । गीर्वाण । वृन्दारक । अग्निमुख ।
अमृतेश । भट्टारक । अग्निजिह्व ।

[नोट—कश्यप की स्त्री दिति से दैत्यों की और अदिति से देवताओं की उत्पत्ति हुई ।]

देवसभा—सुधर्मा । शुभा । देवसमाज । सुधर्मा ।

असुर—दनुज । दैत्य । दानव । दैतेय । इन्द्रारि ।
शुक्रशिष्य । दितिसुत । सुरद्विष । पूर्वदेव । राक्षस । निश्चर ।
तमीचर । निशाचर । मनुजाद ।

किन्नर—तुरङ्गमुख । मयु । किंपुरुष । गीतमोदी ।
हरिण नर्तक ।

[नोट—देवताओं की एक जाति जिनका मुख घोड़े की तरह होता है ।]

गन्धर्व*—देवजन । सुरगायक । विद्याधर । गातु ।
दिव्य गायन ।

(३) अष्टवसु—१ धर । २ ध्रुव । ३ सोम । ४ विष्णु [सावित्र] ।
५ अनिल । ६ अनल । ७ प्रत्युष । ८ प्रभास ।

(४) दश विश्वेदेव—१ कृत्तु । २ दक्ष । ३ वसु । ४ सत्य ।
५ काम । ६ काल । ७ ध्वनि । ८ रोचक । ९ आद्रव । १० पुरूरवा ।
[वह्निपुराण—गणभेद नामाध्याय ।]

(५) गणदेवता—आभास्वर, अनल, साध्व, तुषित, महाराजिक-
आदि गणदेवताओं के भी अनेक भेद हैं । ग्रन्थों में प्रायः इनके प्रयोग न होने के कारण नाम नहीं दिये गये ।

* अग्निपुराण में गन्धर्वों के ११ गण माने गये हैं—अश्राज्य ।

अप्सरा*—स्वर्वेद्या । स्वर्गवेद्या । अरुणप्रिया ।
परी । हूर ।

इन्द्र†—मधवा । बिडौजा । पाकशासन । शक्र । पुरन्दर ।
वज्री । वासव । वृषा । वृत्रहा । आखंडल । सहस्राक्ष । हरि ।
पुरुहूत । मेघवाहन । बलाराति । सुरपति । शचीपति । पाक-
रिपु । शुनासीर । जिष्णु । गोत्रभिद् । ऋसुक्षा । दिशिराज ।
देवराज । शतक्रतु । संक्रन्दन । वृद्धश्रवा । लेखर्षभ । दिवस्पति ।
वास्तोष्पति । शतमन्यु । सुत्रामा । जम्भभेदी । मरुत्वान् । तुषाराट् ।
दुश्च्यवन । महेन्द्र । कौशिक । पूतक्रतु ।

इन्द्राणी—शची । पुलोमजा । इन्द्रवधू । पूतक्रतायी ।
माहेन्द्री । जयवाहिनी । ऐन्द्री । शतावरी । पौलोमी ।

इन्द्रपुरी—अमरावती । देवपुरी । इन्द्रलोक । देवलोक ।

इन्द्र का पुत्र—पाकशासनि । जयन्त । ऐन्द्रि । उपेन्द्र ।

इन्द्र का हाथी—अभ्रमातङ्ग । गजेन्द्र । ऐरावत ।

अंधारि, वंभारि । शूर्यवर्चा । कृधु । हस्त । सुहस्त । स्वन् । मूर्धन्वा ।
विश्वावसु । कृशानु । इनमें ये प्रधान गन्धर्व माने गये हैं:—हाहा । हूहू ।
हंस । चित्ररथ । विश्वावसु । गोमायु । तुंबुरु । नंदि । (—“जटाधर”)

* उर्वशी । रंभा । मेनका आदि स्वर्ग की वेद्याएँ हैं ।

† चतुर्दश इन्द्र—इन्द्र । विश्वसुक् । विपश्चित । विभु । प्रभु । शिखि ।
मनोजव । तजस्वी । बलिर्भाव्य । त्रिदिव । सुशान्ति । सुकीर्ति । ऋतधाता ।
दिवस्पति ।—देवीपुराण—कालव्यवस्थाध्याय ।

इन्द्र के घोड़े को “उच्चैःश्रवा”, सारथी को “मातलि”, महल को
“वैजयन्त”, और वन को “नन्दनवन” कहते हैं ।

ऐरावण । अभ्रमुवल्लभ । श्वेतहस्ती । चतुर्दन्त । मल्लनाग ।
सदादान । सुदामा । गजाग्रणी ।

इन्द्र का वज्र—कुलिश । वज्र । पवि । अशनि ।
भिदुर । गो । हादिनी । शतक्रोडि । स्वरू । भेदी ।

इन्द्र का विमान—व्योमयान । विमान ।

वरुण*—यादसाम्पति । प्रचेता । पाशी । अप्पति ।
जलेश । पाथपति । पाशधर । अपांपति । जम्बुक । मेघनाथ ।
जलेश्वर । परञ्जय । जीवनावास । नन्दपाल । दैत्यदेव । सुखाश ।
वारिलोम । राम । कुण्डली ।

कुबेर†—किन्नरेश । यक्षराज । धनद । धनाधिप ।
गुह्यकेश्वर । राजराज । धनेश । त्र्यम्बकसखा । पौलस्त्य ।
वैश्रवण । मनुष्यधर्मा । पुण्यजनेश । ऐलबिल । सख । यक्ष ।
नरवाहन । एकपिङ्ग । श्रीद । हर्यक्ष । अलकाधिप ।

कुबेर का पर्वत—कैलाश पर्वत । कुबेराद्रि । कुबेराचल ।

* वरुण पश्चिम दिशा के स्वामी हैं । अदिति के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं । जल के प्रधान अधिष्ठातृ देव हैं ।

† कुबेर को इन्द्र का भण्डारी और महादेव जी का मित्र मानते हैं । यह विश्रवस् ऋषि के पुत्र और रावण के साँतेले भाई हैं । यह उत्तर दिशा के स्वामी हैं । इनके एक आँख, तीन पैर और आठ दाँत हैं । यह सम्पूर्ण धन के स्वामी हैं । इनके पुत्र का नाम नलकूबर है । कुबेर की पुरी को "अलकापुरी", उद्यान को 'चैत्ररथ' और विमान को 'पुष्पक' कहते हैं ।

कुबेर का ऐश्वर्य*—विभूति । भूति । ऐश्वर्य ।

कुबेर का खजाना—निधि । शेवधी । कोष । भण्डार ।
भाण्डार ।

यम†—वैवस्वत । मृत्युपति । सूर्यपुत्र । महिषध्वज ।
काल । नरदण्डधर । जीवनपति । अन्तक । कृतान्त । धर्मराज ।
कोपन्त । शमन । पितृपति । यमुनाभ्राता । समवर्ति । श्राद्धदेव ।
परेतराट् । धर्म । जीवितेश । यमराज । औडम्बर । दण्डाधर ।
कीनाश । दध्न । महिषवाहन । शीर्णपाद् । भीमशासन । कङ्क ।
हरि । कर्मकर ।

राक्षस—कौणप । निशिचर । निशाचर । पुण्यजन ।
यातुधान । क्रव्याद् । मनुजाद् । अस्रप । आशर । निकषात्मज ।
रजनीचर । अदेव । कर्वूर । नैऋत । यातु । रक्ष । क्षपाट ।
सन्ध्याबल । कीलाप । नृचश । पलाश । पलाशी । भूत । नीलाम्बर ।
कल्माष । कटप्रू । अगिर । कीलालय । नरधिष्मण । असुर ।

[नोट—‘असुर’ शब्द के पर्याय ‘राक्षस’ के भी पर्याय हो सकते हैं]

* कुबेर के ऐश्वर्य के अन्तर्गत अष्टसिद्धियाँ और नवनिधियाँ हैं—

अष्टसिद्धि—१. अणिमा, २. महिमा, ३. लघिमा, ४. गरिमा, ५. प्राप्ति,
६. प्राकाम्य, ७. ईशत्व और ८. वशित्व ।

नवनिधि—१. पद्म, २. महापद्म, ३. कच्छप, ४. नील, ५. मकर,
६. सुकुन्द, ७. शंख, ८. खर्व और ९. नन्द ।

† चतुर्दश यमों के नाम—१. यम, २. धर्मराज, ३. मृत्यु,
४. अन्तक, ५. वैवस्वत, ६. नील, ७. दध्न, ८. काल, ९. सर्वभूतक्षय,
११. परमेष्ठि, ११. वृकोदर, १२. औदुम्बर १३. चित्र, १४. चित्रगुप्त ।

दानव*—द्विमूर्द्धा । तापन । शम्बर । अरिष्ट । ह्यग्रीव ।
विभावसु । अयोमुख । शङ्कुशिरा । स्वर्भानु । कपिल । अरुण ।
पुलोमा । वृषपत्न्या । एकचक्र । विरूपाक्ष । धूम्रकेश । विप्रचित्ति ।
दुर्जय ।

राक्षसी—कौणपी । निशिचरो । सिंहका । दानवी ।

नरक+—यमालय । यमलोक । यमपुर । निरय ।
नारक । दुर्गति । संघात । कालसूत्र । रौरव ।

नरक-भोगी—नारकी । पापी । पतित ।

नरक-जीव—प्रेत । अग्निमुख ।

नरक-पीड़ा—यातना । तीव्रवेदना । पीड़ा । बाधा ।
व्यथा । दुःख । कृच्छ्र । आमनस्य । प्रसूतिज । तेलहत । कारणा ।

* [१] कश्यप ऋषि के वीर्य से दक्षकन्या दनु के गर्भ से उत्पन्न ६१ दानवों में से प्रधान १८ दानवों के नाम ये ही हैं। ये नाम 'दानव' शब्द के पर्याय रूप में प्रयुक्त होते हैं, इसी कारण पर्याय में भी लिखे गये हैं। वास्तव में ये पर्याय नहीं, बल्कि 'दनु' के पुत्रों के नाम हैं।

[२] 'असुर' 'राक्षस', और 'दानव'—इन सबके नाम पृथक् होते हुये भी परस्पर एक दूसरे के पर्याय माने जाते हैं।

† नरक के भेदः—पार्षवास, तामिस्र, अन्धतामिस्र, महारौरव, कुम्भी-पाक, असिपत्रवन, शूकरमुख, अन्धकूप, कुम्भीभोजन, सैन्दंश, तप्तभूमि, वैज्रकण्ठक, शैलमली, पूयोर्द, प्राणरोध, लालाभक्ष, सौरमेयादन, अर्वाचिरय-पान, क्षीरकर्म, रक्षोगण, शैलप्रोत, दन्तशूक, अविनिरोधन, पर्यावर्तन, सैचीमुख ।

ब्रह्मा*—आत्मभू । स्वभू । सुरज्येष्ठ । स्वयंभू । चतुरानन । परमेशी । पितामह । हिरण्यगर्भ । लोकेश । विधि । विधाता । धाता । स्रष्टा । अञ्जयोनि । नाभिजन्म । कमलासन । अण्डज । पूर्वनिधन । कमलोद्भव । प्रजापति । प्रजाधिप । सृष्टिकर्ता । रजोमूर्ति । सदानन्द । सत्यक । वेधा । द्रुहिण । विरंचि । हंसवाहन । अज । विश्वसृज । कर्तार ।

ब्रह्मा का वाहन—हंस । मराल । मुक्ताभुक् । श्वेत गरुत् । चक्राङ्ग । मानसौकस । कलकण्ठ । सितच्छद । सितपक्ष । सरकाक । पुरुदंशक । मानसालय ।

विष्णु†—नारायण । कृष्ण । वैकुण्ठ । माधव । धरणीधर । जनार्दन । हरि । मुरमर्दन । मुकुन्द । विश्वरूप । जलशायी । श्रीवत्सलाञ्छन । विधु । कैटभजित । विश्वंभर । अधोक्षज । कंसाराति । बलिध्वंसी । वनमाली । पुरुषोत्तम । देवकीनन्दन । शौरी । श्रीपति । त्रिविक्रम । वासुदेव । मधुसूदन । मधुरिपु । चतुर्भुज । पद्मनाभ । चक्रपाणि । उपेन्द्र । गोविन्द । गरुडध्वज । पीताम्बर । अच्युत । शार्ङ्गी । हृषीकेश । केशव ।

* ब्रह्मा = सृष्टिकर्ता, रक्तवर्ण, चतुर्मुख, कमलासन, हंसवाहन, विष्णु के नाभि से उत्पन्न और रजोगुण की मूर्ति हैं। कहते हैं कि वेद सबसे पहले ब्रह्माजी के ही मुखश्री से उच्चरित हुए ।

† त्रिदेव में से एक, सतोगुण के अधिष्ठातृदेव । विष्णु के उपासक को वैष्णव कहते हैं। विष्णु के शंख को 'पाञ्चजन्य', चक्र को 'सुदर्शन', गदा को 'कौमोदकी', खड्ग को 'नन्दक', धनुष को 'शार्ङ्ग', छाती के चिन्ह को 'श्रीवत्स', मणि को 'कौस्तुभ', सारथी को 'दारुक्' तथा मंत्री को उद्धव कहते हैं ।

पुराणपुरुष । यज्ञपुरुष । नरकान्तक । दैत्यारि । दामोदर ।
सनातन । पुरुष पुरातन । मनुजाद निकन्दन । अनन्त । भगवान् ।
श्रीश । इन्द्रवरज । शेषशायी ।

नोट—(१) ये सब नाम श्रोक्वण जी के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।

(२) 'लक्ष्मी' शब्द के किसी पर्याय के साथ 'पति' शब्द वा उसका पर्याय जोड़ देने से विष्णु शब्द का बोधक होता है ।

✓ विष्णु का घोड़ा—शैव्य । सुग्रीव । मेघपुष्प । बलाहक ।

विष्णु का वाहन—गरुड़ । गरुत्मान् । नागान्तक ।
ताक्षर्य । सुपर्ण । वैनतेय । विष्णुरथ । पन्नगाशन । खगेश्वर ।
खगपति । पक्षिराज । खगकेतु । खगेश । उरगारि । उरगाद ।
हरियान । शाल्मलिस्थ । अमृताहरण । तरङ्गी । (तरस्वी) ।
पक्षिसिंह । शाल्मली । महावीर ।

[नोट—ये विनता के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं]

महादेव*—शंभु । शंभू । ईश । शशुपति । शिव ।

* महादेव—(१) गौरी या पार्वती शब्द के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ पति-वाचक शब्द जोड़ देने से 'महादेव' का बोधक हो जायगा ।

(२) ईश्वर शब्द के जितने पर्याय हैं, वे सब 'महादेव' के बोधक हैं ।

(३) महादेव त्रिदेव में से एक देव हैं । यह तमोगुण के अधिष्ठातृ देवता हैं । यह दिगम्बर वेधी (नग्न) हैं । इनका आसन व्याघ्रचर्म तथा ओढ़ना गजचर्म है । त्रिशूल इनका अस्त्र है । इनके ललाट पर कालरूप एक तीसरा नेत्र है जो किसीको नाश करनेके समय खुलता है ।

(४) शिव की अष्टमूर्ति मानी गई है—१. क्षितिमूर्ति=सर्व । २. जल-

शूलो । महेश्वर । ईश्वर । शर्व । ईशान । शंकर । चन्द्रशेखर ।
 भव । भूतेश । खण्डपरशु । गिरीश । हर । मृड । कृत्तिवास ।
 पिनाकी । प्रमथाधिप । उग्र । कपर्दी । श्रीकण्ठ । शितिकण्ठ ।
 कपालभृत् । वामदेव । विरूपाक्ष । त्रिलोचन । पञ्चानन ।
 कृशानुरेत । सर्वज्ञ । धूर्जटि । प्रभु । स्थाणु । उमापति ।
 त्र्यम्बक । भर्ग । त्रिपुरारि । रुद्र । गंगाधर । अन्धकरिपु ।
 नन्दीश्वर । भूतनाथ । नीलकण्ठ । अग्निकेतु । क्रतुध्वंसी ।
 भगवान । स्मरहर । मदनारि । नटराज । अहिर्बुध्न्य । अष्टमूर्ति ।
 महानट । चन्द्रमौलि । गौरीपति । गिरिजापति । कापालिक ।
 कैलाशनाथ । भोलानाथ । रेरिहाण । भगाली । पांशुचन्दन ।
 दिगम्बर । अट्टहास । कालञ्जर । पुरद्विट् । वृषाकपि । महाकाल ।
 वराक । नन्दिवर्द्धन । हीर । वीर । खरु । भूरि । कटप्रू । भैरव ।
 ध्रुव । गुडाकेश । देवाधिदेव । कङ्कालमाली । सिद्धदेव ।

मूर्ति=भव । ३. अग्निमूर्ति=रुद्र । ४. वायुमूर्ति=उग्र । ५. आकाशमूर्ति=
 भीम । ६. यजमान मूर्ति=पशुपति । ७. चन्द्रमूर्ति=महादेव । ८. सूर्य-
 मूर्ति=ईशान ।

(५) एकादश रुद्र=१. अज । २. एकपात ३. अहिर्बुध्न्य । ४. अपरा-
 जित । ५. पिनाकी । ६. त्र्यम्बक । ७. महेश्वर । ८ वृषाकपि । ९. शम्भु ।
 १०. हरण । ११. ईश्वर ।

(६) शिव के नन्दीगण=शृङ्गी, मृङ्गी, रिटि, तुण्डी, नन्दिक,
 नन्दिकेश्वर ।

(७) शिव की पुरी को 'कैलाश', जटाजूट को 'कपर्द', धनुष को 'पिनाक'
 वा 'अजगव', और परिषद को 'प्रमथ' कहते हैं । शिव के उपासकों को शैव
 कहते हैं ।

विश्वेश्वर । विश्वनाथ । चन्द्रापीड । काशीनाथ । अस्थिमाली ।
श्मशानेश्वर । हिण्डी । विषमाक्ष । खेचर । रसनायक । अर्द्ध-
नारीश । यमान्तक । ऊर्ध्वरेता । अर्घाश । कुलेश्वर । शिपिविष्ट ।
वृषाङ्क ।

सरस्वती*—ब्राह्मी । भारती । भाषा । वाचा । गो ।
गिरा । सुष्टु । वाणी । शारदा । इला । वीणापाणि । वागीश ।
महाश्वेता । विधात्री । ब्रह्माणी । श्री । वाक् । इरा । ईश्वरी ।
वर्णमातृका । सन्ध्येश्वरी । वाक्येश्वरी ।

लक्ष्मी†—कमला । पद्मा । पद्मालया । पद्मासना ।
रमा । हरिप्रिया । श्री । इन्दिरा । लोकमाता । मा । क्षीरोद तनया ।
समुद्रजा । भार्गवी । क्षीरसागरकन्यका । विष्णुवल्लभा ।
जगन्माता । सम्पत्ति । सम्पदा । विभूति । भूति । लच्छि ।
माया । शोभा ।

पार्वती‡—उमा । कात्यायनी । गौरी । काली । हैमवती ।
ईश्वरी । शिवा । भवानी । रुद्राणी । शर्वाणी । सर्वमंगला ।
अपर्णा । दुर्गा । मृडानी । चण्डिका । अम्बिका । आर्या ।

* सरस्वती=ब्रह्मा की स्त्री (शक्ति), विद्या बुद्धि को देनेवाली हैं ।
संगीत एवं वादन कला की अधिष्ठातृ देवी हैं । इनका वाहन हंस है ।

† लक्ष्मी=विष्णु-प्रिया । धन-वैभव-स्वरूप को देनेवाली हैं । सम्पूर्ण
दरिद्रता को दूर कर सुख-शान्ति-धन-धान्य-प्रदायिनी हैं । इनका वाहन
उल्लू (उल्लूक) है ।

‡ पार्वती=हिमाचल की कन्या, शिव की अर्द्धाङ्गिनी हैं । सौभाग्य दायिनी
हैं । इनका वाहन सिंह है ।

दाक्षायणी । गिरिजा । मेनकात्मजा । हिमाचलसुता । हिमगिरि-
सुता । शंकरप्रिया । दक्षसुता । सती । शैलसुता । शैलनन्दिनी ।
पतिव्रता । इला । शिवाद्धाङ्गिणी । अम्बा । माया । विश्वकारिणी ।
सिंहवाहिनी । मैनासुता । भवा ।

✓**दुर्गा***—दुर्गाविनाशिनी । अनन्तशक्तिका । चण्डिका ।

* देवी के अन्तर्गतः—

(१) पञ्चदेवी—दुर्गा । लक्ष्मी । राधा । वाणी । शाकम्भरी ।

(२) सप्तमाता—१ ब्राह्मी । २ माहेश्वरी । ३ कौमारी । ४ वैष्णवी ।
५ वाराही । ६ इन्द्राणी । ७ चासुण्डा ।

(३) नवदुर्गा—१ शैलपुत्री । २ ब्रह्मचारिणी । ३ चन्द्रघण्टा ।
४ कूष्माण्डा । ५ स्कन्दमाता । ६ कात्यायनी । ७ कालरात्रि । ८ महागौरी ।
९ सिद्धिदात्री ।

(४) नव कन्यका—१ कुमारी । २ त्रिमूर्ति । ३ कल्याणी ।
४ रोहिणी । ५ कालिका । ६ शांभवी । ७ दुर्गा । ८ चण्डिका । ९ सुभद्रा ।

(५) नवशक्ति—१ वैष्णवी । २ ब्रह्माणी । ३ रौद्री । ४ माहेश्वरी ।
५ नारासिंही । ६ वाराही । ७ इन्द्राणी । ८ कार्तिकी । ९ सर्वमङ्गला ।

(६) दश महाविद्या—१ काली । २ तारा । ३ षोडशी । ४ भुवनेश्वरी ।
५ भैरवी । ६ छिन्नमस्ता । ७ धूमावती । ८ बगला । ९ मातङ्गी । १० कमला ।

(७) ६४ योगिनी—नारायणी । गौरी । शाकम्भरी । भीमा । रक्तदंतिका ।
पार्वती । दुर्गा । कात्यायनी । महादेवी । चन्द्रघण्टा । महाविद्या । महातपा । भ्रामरी ।
सावित्री । ब्रह्मवादिनी । भद्रकाली । विशालाक्षी । रुद्राणी । कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला । रौद्रमुखी । कालरात्रि । तपस्विनी । मेघस्वना । सहस्राक्षी ।
विष्णुमाया । जलोदरी । महोदरी । मुक्तकेशी । घोररूपा । महाबला । श्रुति ।
स्मृति । धृति । तुष्टि । पुष्टि । मेधा । विद्या । लक्ष्मी । सरस्वती । अपर्णा ।

चण्डमुण्डविनाशिनी । कालिका । शाम्भवी । रक्तबीजविना-
शिनी (प्रभञ्जनी) । कुमारी । कल्याणी । कामाक्षी । त्रिमूर्ति ।
रोहिणी । सुभद्रा । महागौरी । चामुण्डा । वाराही । सिंहवाहिनी ।
वागीश्वरी । नारसिंही । भगवती । विन्ध्यवासिनी । पार्वती ।
उमा । माया । विश्वकारिणी । शक्ति । महाशक्ति । धूम्रमर्दिनी ।
सौभाग्यदायिनी । विधातृ । धात्री । कृष्णामुण्डा । स्कन्दमाता ।
अजा । ब्राह्मी ।

[टिप्पणी में दिये हुये जितने नाम हैं वे सब दुर्गा के पर्याय
हो सकते हैं]

गणेश—लम्बोदर । हेरम्ब । द्वैमातुर । एकदन्त ।
मूषकवाहन । गजवदन । गणपति । शिवसुत । विनायक । गजास्य ।
विघ्नराज । गजानन । वक्रतुण्ड । महाकाय । धूम्रकेतु । गणाध्यक्ष ।
भालचन्द्र । विघ्न नाशक । विकट । मोदकप्रिय । मोददाता ।
विद्यावारिधि । बुद्धिविधाता । जगवन्द्य । आदिपूज्य । भवानी-
नन्दन । परशुपाणि । आखुग । शूर्पकर्ण ।

कार्तिकेय*—महासेन । शरजन्मा । षडानन । पार्वती-
नन्दन । स्कन्द । सेनानी । गुह । अग्निभू । बाहुलेय । क्रौञ्च-

अम्बिका । योगिनी । डाकिनी । शाकिनी । हारिणी । हाकिनी । लाकिनी ।
त्रिदशेश्वरी । महाषष्ठी । सर्वमङ्गला । लज्जा । कौशिकी । ब्रह्माणी । ऐन्द्री ।
नारसिंही । बाराही । चामुण्डा । शिवदूती । विष्णुमाया । मातृका । कार्तिकी ।
विनायकी । कामाक्षी ।

* महादेव जी के पुत्र हैं । कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण
कार्तिकेय नाम पड़ा । इनके छः भँह हैं । यह देवताओं के सेनानायक हैं ।

दारण । शक्तिधर । शिखिवाहन । कुमार । श्रीविशाख । तारका-
जित । षाण्मातुर । अग्निकुमार । स्वामि कार्तिक ।

भैरव—भूतनाथ । श्वानवाहन । रुद्रमूर्ति । भयङ्कर ।
भीम । कराल । कालमूर्ति । विकराल । भयानक ।

[नोट—अष्ट भैरवों के नाम—१. महाभैरव, २. संहार
भैरव, ३. असिताङ्ग भैरव, ४. रुद्र भैरव, ५. काल भैरव,
६. क्रोध भैरव, ७. ताम्रचूड़ भैरव, ८. चन्द्रचूड़ भैरव ।]

अग्नि*—वह्नि । बीतिहोत्र । धनञ्जय । कृपीटयोनि ।
ज्वलन । जातवेद । तनूनपात् । पावक । अनल । रोहिताश्व ।
वायुसख । आशुशिक्षणि । हिरण्यरेत । हुतभुक् । दहन । हव्य-
वाहन । सप्तर्षि । दमुन । शुक्र । चित्रभानु । विभावसु । शुचि ।
वैश्वानर । (अप० वैसन्दर) अपित्त । हुताशन । द्व । ऊष ।
बुध । धूम्रकेतु । आग । तपन । निर्जर जीभ । दग्धद्रुम । वृक ।

शिव जी के वीर्य को अग्निदेव ने कबूतर का रूप धर कर पान कर लिया
था, इन्हीं से स्कन्द की उत्पत्ति हुई । इनका वाहन मोर हैं ।

* वैद्यक मत से अग्नि ३ प्रकार की मानी गई है, यथा—१. भौमाग्नि,
जो पदार्थों के जलने से उत्पन्न होती है । २. दिव्याग्नि, जो आकाश में
विजली से उत्पन्न होती है । ३. जठराग्नि, जो पित्त रूप से हृदय और
नाभि के बीच में रहती है । कर्मकाण्ड में अग्नि छः प्रकार की मानी गई है,
यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसस्थ्य और
औपासनाग्नि । इनमें आरम्भ की तीन प्रधान हैं । ऋग्वेद का प्रादुर्भाव
अग्नि से ही माना जाता है । अग्नि की सात जिह्वाएँ मानी गई हैं—काली,
कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता ।

कुन्त । कुतप । शिखि । सप्तजिह्वा । पांचजन्य । वहिंशुष्मा । वहिं ।

बड़वानल—(जल में लगने वाली आग), और्वि ।
वाड़व । बड़वाग्नि ।

वन की अग्नि—दव । दावा । दावानल । दावाग्नि ।
दवारी । वनहुताशन ।

पेट की अग्नि*—जठराग्नि । पाचकाग्नि ।

अग्नि कण—स्फुल्लिंग । अनल-कण । चिनगी । चिनगारी ।

अग्नि ज्वाला—ज्वाला । कील । शिखा । अग्निशिखा ।
वर्चिस । हेति । उल्का । भूति । भस्मनी । क्षार । लूक । लुकारी ।
अग्नि कुक्कुट । लपट । लवर । लौ ।

अग्नि सन्ताप—संज्वर । सन्ताप । दाह । भस्मीभूत ।
डाढ़ा । मुलस । जलन ।

✓ **वायु†**—१. श्वसन । २. स्पर्शन । ३. मातरिश्वा । ४. सदा-
गति । ५. पृषदश्च । ६. गन्धवह । ७. अनिल । ९. आशुग ।

* जठराग्नि—हृदय और नाभि के बीच में उत्पन्न होने वाली अग्नि जो भोजन को पचाती और क्षुधा उत्पन्न करती है । कार्तिक शु० ८ से अग्रहण कृष्ण ८ के भीतर नवीन जठराग्नि की उत्पत्ति होती है ।

† शरीरस्थ वायु—पाँच प्रकार की होती है—

(१) प्राणवायु—मुख्य स्थान शिर है । छाती और कण्ठ तक विचरण करती है । बुद्धि, हृदय और चित्त को धारण करती है ।

(२) उदानवायु—मुख्य स्थान छाती है । नासिका, नाभि और गला विचरने के स्थान हैं । भोजन प्रवेश करना, छींक, डकार और जँभाई लाना इसके मुख्य कर्म हैं ।

१० समीर । ११. मारुत । १२. मरुत् । १३. जगत्प्राण ।
 १४. समीरण । १५. नभस्वान् । १६. वात । १७. पवन ।
 १८. पवमान । १९. प्रभंजन । २०. अजगत्प्राण । २१. खश्वास ।
 २२. वाह । २३. धूलिध्वज । २४. फलिप्रिय । २५. वाति ।
 २६. नभप्राण । २७. भोगिकान्त । २८. स्वकम्पन । २९. अक्षति ।
 ३०. कम्पलक्ष्मा । ३१ शसीनि । ३२. आवक । ३३. हरि ।
 ३४. वास । ३५. सुखाश । ३६. मृगवाहन । ३७. सार ।
 ३८. चञ्चल । ३९. विहग । ४० प्रकम्पन । ४१. नभस्वर ।
 ४२. निश्वासक । ४३. स्तनून । ४४. पृषतां पति । ४५. प्राण ।
 ४६. अपान । ४७. समान । ४८. व्यान । ४९. उदान ।

सूक । सरिमन । सरण्य । ह्वा । सर्वग । सरट । श्वग ।
 वयार ।

[नोट—ये ही “उनचास पवन” के नाम से भी प्रसिद्ध हैं । कहते हैं कि ये अदिति के पुत्र हैं । इनके कोई सन्तान नहीं हुई । इन्द्र ने इन्हें देव-पद दिया है । सृष्टिक वायु को ज्ञञ्भता कहते हैं ।]

(३) व्यानवायु—मुख्य स्थान हृदय है । यह सब शरीर में व्याप्त रहता है । अपक्षेपण, उत्क्षेपण, निमेष, उन्मेष आदि इसके कर्म हैं ।

(४) समानवायु—मुख्य स्थान नाभि है, विचरणस्थान कोष्ठ है । अन्न ग्रहण करना, पकाना, विवेचन करना और त्यागना इसके मुख्य कर्म हैं ।

(५) अपानवायु—मुख्य स्थान गुदा है, विचरणस्थान कटि, बस्ति, लिङ्ग और जाँघ हैं । मल, मूत्र, वीर्य, आर्तव और गर्भ आदि निकालना इसके मुख्य कर्म हैं ।

आँधी—आँधी । महावात । प्रकम्पन । अंधड़ । तूफान ।
बवण्डर (चक्राकार वायु) ।

वायुवेग—तरस् । रहस् । रय । स्पद । जव ।

कामदेव *—मदन । मन्मथ । मार । प्रद्युम्न । कन्दर्प ।
मीनकेतन । दर्पक । अनङ्ग । काम । पञ्चशर । शम्बरारि । मन-
सिज । कुसुमेषु । अनन्यज । पुष्पधन्वा । रतिपति । मकरध्वज ।
आत्मभू । मैत्र । अतनु । कुसुमसर । मन्थि । नवरंगी । मनोभव ।
मनजात । मकरकेतु । स्मर । हरि । विरहविदार । पुष्पचाप ।
कुसुमायुध । ब्रह्मसू । विश्वकेतु । कामद । कान्त । कान्तिमान् ।
कामग । कामचार । कामी । कामुक । कामवर्द्धन । राम । रम ।
रमण । रतिप्रिय । रममाण । नन्दक । नन्दन । नन्दी । रतिसखा ।
भ्रामक । भृङ्ग । मोहन । मोहक । मोह । मोहवर्द्धन । मातङ्ग ।
खेलक । विलास ।

अश्विनीकुमार†—स्ववैद्य । अश्विनीसुत । आश्विनेय ।

* (१) कामदेव के पंचवाण—१. सम्मोहन, २. उन्मादन, ३. शोषण,
४. तापन, ५. स्तम्भन । कामदेव का धनुष पाँच प्रकार के पुष्पों से बना है—
अरविन्द, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलकमल । इसे पुष्पधनु भी
कहते हैं ।

(२) कामदेव की स्त्री का नाम 'रति' है ।

† प्रभा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्रों को अश्विनीकुमार कहते
हैं । एक बार सूर्य के तेज को सहन करने में असमर्थ होकर प्रभा घोड़ी
बन कर भाग गई और तप करने लगी । तब सूर्य भी घोड़ा बन कर उसके
पास गये । इसी संयोग से अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई ।

अध्विनि । नासत्य । दस्र । नासिक्य । गदागद । पुष्करस्रज ।

जप—भजन । स्मरण । नाम स्मरण । जपन । मन्त्रोच्चारण । मन्त्रस्मरण । मन्त्रोद्धरण ।

तप—व्रत । अनुष्ठान । तपस्या । योग । योगाभ्यास । योगसाधन । ध्यानोपासना ।

पूजा—अर्चा । नमन । अर्हण । अपचिति । आराधन । पूजन । आराधना । आदर । सम्मान ।

यज्ञ *—याग । मख । ऋतु । अध्वर । सव । सप्ततंतु । इष्टि । वितान । मन्यु । आहव । हव । हवन । सवन । अभिषय । होम । मह ।

दान—त्याग । विहापित । उत्सर्जन । विसर्जन । अंहति । विश्राणन । वितरण । स्पर्शन । प्रतिपादन । प्रादेशन । निर्वपन । अपवर्जन । दाय । प्रदान । अतिसर्जन । विसर्ग । स्पर्श । क्षणन । प्रदेशन ।

उपासना—शुश्रूषा । सेवा । परिचर्या । वरिवस्या ।

व्रत—(देखो 'तप' शब्द)

सन्यास—वैराग । वैराग्य । त्याग । चतुर्थाश्रम । निर्वाण । परिव्रजन ।

* पञ्च महायज्ञ—१. स्वाध्याय । २. अग्निहोत्र । ३. आतिथ्य । ४. पितृतर्पण और ५. बलिवैश्व ।

यज्ञ के चार ऋत्विज् होते हैं—होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा ।

सन्यासी--त्यागी । वैरागी । दण्डी । निर्वाणपथी ।
चतुर्थाश्रमी । यती । परिव्राज । भिक्षु । कर्मन्दी । पाराशरी ।
मस्करी । भिक्षुक । न्यासी । स्वामी । गोस्वामी । जितेन्द्रिय ।
योगी ।

तपस्वी--तापस । तपी । पारिकांक्षी ।

ब्रह्मत्वभाव--ब्रह्मभूय । ब्रह्मत्व । ब्रह्मसायुज्य ।

विवेक--पृथगात्मता । ज्ञान । सद्विचार । सद्बुद्धि ।
प्रबोध ।

दर्शन--निर्वर्णन । निध्यान । आलोकन । ईक्षण ।
निभालन । देखाव ।

दर्शनयोग्य--दर्शनीय । द्रष्टव्य ।

धर्म *--पुण्य । श्रेय । सुकृत । वृष । आचार । स्वभाव ।

मुनि--तपी । साधक । तापस । पारिकांक्षिन् । मुनि ।
ऋषि । व्रती । संयमी । साधु । योगी ।

ब्रह्मज्ञानी--ज्ञाता । दार्शनिक । तत्वज्ञ । तत्वविद् ।
ब्रह्मज्ञ । ब्रह्मपरायण । ब्रह्मपर ।

मुक्ति--कैवल्य । निश्रेणी । निर्वाण । मोक्ष । अक्षय ।
स्वर्ग । अपवर्ग । अमृत । अपुनर्भव । महासिद्धि ।

* धर्म के दस लक्षण—१. धृति, २. क्षमा, ३. दम, ४. अस्तेय,
(चोरी न करना) ५. शुचि, ६. इन्द्रियनिग्रह, ७. बुद्धि, ८. विद्या, ९. सत्य,
१०. अक्रोध (क्रोध न करना वा क्रोध को रोकना) ।

अमृत—पीयूष । अमृत । सुधा । सोम । मधु । अगदकार ।
सुरभोग । अमी । अमिय । शशिरस । (अप० इमिरित,
अमरित) ।

स्वर्णाचल—मेरु । सुमेरु । हेमाद्रि । रत्नसानु ।
सुरालय । हेमकूट ।

देववृक्ष—कल्पद्रुम । कल्पवृक्ष । मन्दार । पारिजातक ।
सन्तान । कल्पतरु । सुरद्रुम । हरिचन्दन ।

देवनदी—मन्दाकिनी । वियद्गङ्गा । स्वर्णदी । सुर-
दीर्घिका । देवसरि । स्वर्गापगा । देवगङ्गा । स्वर्गङ्गा ।

कामधेनु—सुरधेनु । कामधुक धेनु । सुरसुरभी । कामदुहा ।
वेद *—ऋग्वेद । श्रुति । निगम । धर्ममूल । छन्द ।
आम्नाय । प्रवचन ।

शास्त्र†—आगम । विद्या । ग्रन्थ ।

* वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद । इन्हीं
वेदों से चार उपवेद निकाले गये, यथा—धन्वन्तरि ने ऋग्वेद से
आयुर्वेद निकाला, विश्वामित्र ने यजुर्वेद से धनुर्वेद निकाला, भरत मुनि ने
सामवेद से गन्धर्ववेद निकाला और विश्वकर्मा ने अथर्वणवेद से
स्थापत्य निकाला ।

वेदाङ्ग छः हैं, यथा — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष
और छन्द ।

† शास्त्र १८ हैं, यथा—४ वेद + ६ वेदाङ्ग तथा मीमांसा, न्याय,
धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद तथा अर्थशास्त्र ।

२. देवावतार वर्ग

रामचन्द्र *—राम । दशरथि । रघुवर । रघुपति ।
रघुराज । रघुनन्दन । रघुराय । सीतापति । खरारि । रावणारि ।
अवधेश ।

जानकी †—जानकी । वैदेही । सीता । भूतनया ।
भूमिजा । जनकनन्दिनी । जनकात्मजा । रामप्रिया ।

परशुराम ‡—रेणुकात्मज । परशुधर । राम । यामदग्नि ।
भार्गव ।

कृष्ण—श्याम । साँवले । सँवलिया । नन्दनन्दन ।

* अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे । लव और कुश
इनके दो पुत्र हुए ।

† मिथिला के राजर्षि महाराज जनकजी की पुत्री थी । इनकी उत्पत्ति
पृथ्वी से हुई है ।

‡ महर्षि यमदग्निजी के पुत्र थे । इन्होंने सहस्रबाहु को मार कर
२१ बार हैहयवंशी क्षत्रियों का नाश किया था । इनकी माता का नाम
रेणुका था ।

जनार्दन । यदुनन्दन । देवकीनन्दन । कंसारि । मुरमर्दन ।
 मुरलीधर । वंशीधर । गिरिधर । द्वारिकाधीश । माधव । केशव ।
 हृषीकेश । मुकुन्द । मधुसूदन । गोपीनाथ । राधारमण । पुरुषोत्तम ।
 भगवान् । चक्रपाणि । यादवेश । योगीन्द्र । ब्रजभूषण । वासुदेव ।

[नोट—विष्णु के सभी नाम कृष्ण के पर्यायवाची हो सकते हैं।]

राधा—राधिका । वृषभानुजा । हरिप्रिया । वृषभानुनन्दिनी ।
 कीर्तिकिशोरी । ब्रजरानी ।

यशोदा—जसुमति । यशुदा । नँदरानी ।

बलराम—बलदारु । दारु । बलदेव । हलदेव । हलधर ।
 रौहिणेय । बलभद्र । संकर्षण । नीलाम्बर । रेवतीरमण । मूशल-
 पाणिक । राम । कामपाल । हलायुध । अच्युताप्रज । प्रलम्बघ्न ।
 मुसली । हली । तालाङ्क । सीरपाणि । कालिन्दीभेदन । बल ।
 बलवीर । तालध्वजी ।

अनिरुद्ध—उषापति । ब्रह्मसू । ऋष्यकेतु ।

नृसिंह—नरहरि । नरसिंह । नारसिंह ।

गौतम बुद्ध—शाक्यसिंह । सर्वार्थ । गौतम । मायासुत ।
 अर्कबन्धु । शाक्यमुनि । शौद्धोदनि । सर्वज्ञ । सुगत । बुद्ध । धर्म-
 राज । तथागत । जिन । भगवत् । दशवल । मारजित् । लोक-
 जित् । समन्तभद्र । षडभिज्ञ । अद्वयवादी । विनायक । मुनीन्द्र ।
 श्रीघन । शास्ता । सिद्ध । महाबोधि । आर्य । दशार्ह । महासैत्र ।
 अर्हण ।

गायत्री—वेदमाता । सावित्री । ब्राह्मी । ब्रह्मवीज ।
 सरस्वती ।

✓ **हनुमान**—पवनसुत । अञ्जनीकुमार । महावीर । महा-
वली । विक्रम । वज्राङ्गी (अप० वजरंगी) कपिकेशरी ।
कपीश । जितेन्द्रिय । वातात्मज । आञ्जनेय । रामदूत । वरिष्ठ ।
प्रभंजनजात । मारुति । अक्षहन्त ।

नारद—देवर्षि । ब्रह्मसू । ब्रह्मपुत्र ।

विश्वामित्र—कौशिक । गाधिसूनु । गाधेय । राजर्षि ।

विश्वकर्मा—शिल्पराट् । सुरशिल्पकी । पटुशिल्पेश ।

शृङ्गी ऋषि—शृङ्गी । मृगज । विभांडसुत । शान्ताधव ।
(यह राजा दशरथ के जामाता, शान्ता के पति थे)

अगस्त्य—घटज । घटोद्भव । घटसंभव । घटयोनि ।
कुम्भज । सिन्धुशासनि । मैत्रावरुण । विन्ध्यकूट । समुद्रचुलुक ।
पीताब्धि । और्वशेय ।

[नोट—अगस्त्य की स्त्री लोपामुद्रा हैं ।]

वशिष्ठ *—वैरश्चि । ब्रह्मसू । ब्रह्मर्षि ।

[नोट—वशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती हैं]

वाल्मीकि—आदिकवि । वल्मीकोद्भव । प्राचेतस् ।
मैत्रावरुणि ।

व्यास—वेदव्यास । द्वैपायन । पाराशर्य । सत्यवतीसुत ।

युधिष्ठिर †—धर्मराज । अजातशत्रु । कौंतेय । कुरुराय ।

* सप्तर्षियों में से एक । सप्तर्षि—विश्वामित्र । यमदग्नि । भरद्वाज ।
गौतम । अत्रि । वशिष्ठ । कश्यप ।

† पञ्च पाण्डव—युधिष्ठिर । भीम । अर्जुन । नकुल । सहदेव ।

अर्जुन—जिष्णु । धनंजय । विजयरथ । फल्गुन । किरीटी । गुडाकेश । गांडीवधर । पार्थ । कपिध्वज । सब्यसाचि । शब्द-भेदि । धनुर्धर । कौन्तेय । नर ।

कर्ण—राधेय । वसुषेण । अर्कनन्दन । सूर्यसुत । चाम्पेश । सूतपुत्र । अङ्गराट् ।

भीष्मपितामह—गंगापुत्र । गांगेय । पितामह । शान्तनुसुत ।

द्रौपदी—द्रुपदसुता । पाञ्चाली । कृष्णा । सैरिंध्री । नित्ययौवना । याज्ञसेनी । वेदिजा ।

अभिमन्यु—सौभद्र । पार्थनन्दन । पाण्डुपौत्र ।

दशरथ—कौशलपति । अवधेश । रघुवंशमणि । दिगस्यन्दन ।

जनक—राजर्षि । विदेह । मिथिलेश । विवेकनिधि । तिर्हुत राज ।

लक्ष्मण—सौमित्र । अहीश । शेष । अनन्त । लखन । रामानुज । लल्लिमन ।

शत्रुघ्न—रिपुदमन । रिपुसूदन । शत्रुहन्ता । शत्रुहन ।

रावण—दशवदन । दैत्येन्द्र । दशकन्ध । लंकेश । निशि-चरपति । दशकंठ । दशमाथ । दशग्रीव । यातुधानेश ।

मेघनाद—शक्रारि । इन्द्रजित ।

जामवन्त—ऋक्षराज । जांबुवान ।

३. तीर्थादिवर्ग

प्रयागराज—तीर्थराज । प्रयाग । तीर्थेश । तीर्थपति ।

अयोध्या *—अवध । अवधपुरी । विमला । आदिपुरी ।
आद्या । साकेत ।

मथुरा—मधुपुरी । मधुवती । मधुरा । मधुवन ।

काशी—आनन्दपुरी । आनन्दवन । आनन्दकानन ।
शिवपुरी । काशिका । वाराणसी । मोक्षदा पुरी । बनारस ।

जगन्नाथपुरी †—जगदीशपुरी । पुरी । जगन्नाथ ।

द्वारकापुरी—द्वारकाधीश । वेंकटेश । द्वारावती ।

गंगा—भागीरथी । जाह्नवी । जह्नु नन्दिनी । मन्दाकिनी ।
सुरसरि । देवापगा । ध्रुवनन्दा । भीष्मसू । त्रिपथगा । सुरध्वनि ।

* सप्त मोक्षदायक तीर्थ—अयोध्या । मथुरा । काशी । कांची (काञ्चीवरम्) ।
अवन्तिका (उज्जैन) । जगन्नाथपुरी । द्वारकापुरी ।

† जगन्नाथपुरी, द्वारकापुरी, बदरिकाश्रम और रामेश्वरम् ये चारों धाम
तीर्थयात्रा की दृष्टि से मुख्य माने जाते हैं ।

नदीश्वरी । हरमौलिविहारिणी । त्रिस्रोता । सुरापगा । अलक-
नन्दा । अध्वगा ।

[‘देव’ वाची शब्द के आगे कोई ‘नदी’ वाचक शब्द जोड़ देने से ‘गंगा’ का बोधक होगा]

यमुना—सूर्यसुता । सूर्यतनया । कालिन्दी । शमन-
स्वसा । कृष्णा । अर्कजा । तरणिजा ।

[नोट—‘सूर्य’ के पर्याय के साथ ‘कन्या’ का पर्याय जोड़ देने से ‘यमुना’ का बोधक होगा ।]

नर्मदा—रेवा । नर्मदा । सोमोद्भवा । मेकलसुता ।

सरयू—सरजू । वाशिष्ठी । आनन्दाश्रुजा ।



४. दिशादिवर्ग

दिशा—दिक् । ककुभ । दिशा । काष्ठा । आशा । हरित ।
ओर । तरफ़ ।

दिक्पाल *—दिगाधिप । दिशाधिप । दिग्पति । दिगेश ।
दिशीश ।

पूर्व—प्राची । पूरब । पुरुब ।

पश्चिम—पच्छिम । प्रतीची । पच्छूं ।

उत्तर—उदीची ।

दक्षिण—अवाची । दक्खिन । दच्छिन ।

दिगान्तर †—कोण । दिशाओं का मध्यवर्ती कोना ।
दिक्कोण ।

* दशो दिग्पाल—पूर्व = इन्द्र । पश्चिम = वरुण । उत्तर = कुबेर ।
दक्षिण = यम । ईशान = ईश । नैर्ऋत्य = नैर्ऋत । वायव्य = वायु ।
आग्नेय = अग्नि । ऊर्ध्व = ब्रह्मा । अधः = शेष ।

✓† दिगान्तर—ईशान (पू०+उ०), नैर्ऋत्य (प०+द०) वायव्य,
वायुकोण (पू०+द०) आग्नेय, अग्निकोण (प०+उ०) ।

दिग्गज *—दिशिकुञ्जर । दिक्स्तम्भ ।

मण्डल—चक्रवाल । चक्र । मण्डल ।

ऊपर—ऊर्ध्व । ऊँचा । उच्च । उपरि । तुङ्ग । उन्नत ।
उद्धित । प्रांशु । उद्ग्र । उतङ्ग । ऊँच ।

नीचे—निम्न । अधः । तले (तरे, तर) । तल ।

आगे—अग्रे । अग्र । पूर्व । प्रथम । पहले । अगल (अगड) ।

सममुख—सन्मुख । सामे । सामुहे । सोझे । सौँहे ।
प्रत्यक्ष । समक्ष । साक्षात् ।

विमुख—परोक्ष । विलग । गुप्त । निगूढ । विगूढ ।
अन्तर्हित । अन्तर्धान । पिहित । प्रच्छन्न । निभृत । तिरोहित ।
सम्बरित । गोप्य । गहन । परे ।

एकान्त—अकेला । निर्जन । शान्त । इकन्त । एकाकी ।
शून्य । सूनसान । निराला ।

ओट—आड़ । परदा । छिपाव । दुराव ।

दाहिना—दक्षिण । दाहिन । दाएं ।

बायाँ—वाम (बाम) बाएं । बावाँ ।

समीप—पास । निकट । अनतिदूर । अदूर । अतिपाश्वर् ।
अध्यास । नेरे । पार्श्व । आसन्न । उपकंठ । समर्याद । अन्तिक ।

* अष्ट दिग्गज—ऐरावत (पू०) । पुण्डरीक (आ०) । वामन (द०)
कुमुद (नै०) । अञ्जन (प०) । पुष्पदन्त (वा०) । सार्वभौम (उ०) ।
सुप्रतीक (उ० पू०)

अभित । सनीड । तट । सन्निकट । दिग । सन्निकृष्ट । अभ्यास ।
सविधि । अभ्यग्र । सदेश । अभ्यर्ण । सवेश ।

दूर—परे । विलग । पृथक । भिन्न । विगत । न्यारा । अरग ।

आदि—आरम्भ । प्रथम । प्रारम्भ । समारम्भ ।

मध्य—बीच । मॉझू । मधि ।

अन्त—अवसान । समाप्त । इति । पर । छोर । पूर्ण ।



५. आकाशादि वर्ग ।

आकाश—द्यो । द्यौ । अभ्र । अम्भ । व्योम । पुष्कर ।
अम्बर । नभ । अन्तरिक्ष । अन्तरीक्ष । गगन । अनन्त । सुरवर्त्म ।
ख । वियत् । विष्णुपद् । विहाय । नाक । अनङ्ग । मेघवेश्म ।
महाविल । मरुद्वर्त्म । मेघवर्त्म । त्रिपिष्टप । शून्य ।

मेघ—अभ्र । मेघ । वारिवाह । धाराधर । जलमुच ।
मुदिर । धूम्रयोनि । तडित्वान् । घन । जलधर । स्तनयित्नु ।
जलदान । बलाहक । अम्बुभृत् । वारिद् । जीमूत । बादर ।
बादल । बहल । नीरद् । क्षरिद् । वारिधर । पयोद् । अम्बुद् ।
पयोधर । सारंग । पुरजन । यज्ञपुत्र । जगजीवन । असुर ।

मेघपंक्ति—मेघमाला । मेघावली । घनमाला । काद-
म्बिनी । आसार ।

मेघगर्जन—रसित । स्तनित । गर्जित । गर्जन । घोष ।
घनरव ।

बिजुली—क्षण (छन) छटा । तडित् । दामिनी ।
चपला । चंचला । विद्युत् । कौंधा । घनवल्ली । सौदामिनी । सम्पा ।

विज्जु । सज्जू । चटुल । अशनि । शतहृदा । हादिनी । चाँकी ।
क्षणप्रभा । ऐरावती । अकालकी ।

इन्द्रधनुष—इन्द्रायुध । शक्रधनु । ऋजुरोहित ।

वृष्टि—सम्पात । आसार । वर्षा । वारिस ।

भींसी—फुहार । सीकर । जलकण । अम्बुकण ।

मृगतृष्णा—मरीचिका । मृगजल । भ्रमजल । मृग-
त्रास । मिथ्याजल ।

पाला—तुपार (तुसार, टुसार) । हिम । तुहिन । बरफ ।
अवश्याय । मिहिका । प्रालेय । नीहार । ओला । ओस ।

नक्षत्रादि के नाम

सूर्य *—दिवाकर । प्रभाकर । दिनकर । दिवसाधिप ।
भास्कर । हंस । मिहिर । तिमिरहर । विभाकर । विवस्वान ।
भानु । विभावसु । पतंग । सविता । अम्बरमणि । रवि । श्वग ।
गभस्तिमान् । हिरण्यगर्भ । नक्षत्राधिपति । आदित्य । अंशुमाली ।
अर्क । मरीची । अवि । सूर । वीरोचन । मार्तण्ड । पूषण ।
तरणि । सुनूर । कुतप । अर्यमा । चित्रथ्य । चक्रबन्धु । कमल-
बन्धु । खगपति । हरि । सप्ताश्व । द्वादशात्मा । उष्णरश्मि ।
असुर । वितर्कन । ग्रहपति । सहस्रांशु । पद्माक्ष । तेजोराशि ।

* सूर्य की १२ कलाओं के नाम—१. तपिनी, २. तापिनी, ३. धूम्रा,
४. मरीचि, ५. ज्वालिनी, ६. रुचि, ७. सुषुम्णा, ८. भोगदा, ९. विश्वा,
१०. बोधिनी, ११. धारिणी, १२. क्षमा ।

महातेज । तमिस्रहा । छायानाथ । कर्मसाक्षी । जगच्चक्षु ।
प्रद्योतन । खद्योत । सारंग ।

[नोट—‘दिन’ शब्द के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ
‘स्वामी’ अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से ‘सूर्य’ का बोधक होगा ।]

सूर्य के पारिपाद्वक—माठर । पिङ्गलोदण्ड । चण्डांश ।

सूर्य का सारथी—अरुण । सूर्यसुत । अनूरु । काश्यपी ।
गरुड़ाप्रज ।

सूर्यमण्डल—मण्डल । परिवेष । परिधि । उपसूर्यक ।
मण्डन ।

सूर्य-किरण—किरण । दीधित । उल्ल । मयूख । कर ।
रश्मि । घृणि । गभस्ति । अंशु । गो । वसु । ज्योति । मरीचि ।
रंस । छटा । कला । भर्ग । प्रद्योत । आलोक ।

सूर्य-प्रकाश—प्रभा । रुचि । द्युति । छवि । शोचि ।
रोचि । भा । भास । त्विष । दीप्ति । प्रकाश । आतप । घाम ।

सूर्य के घोड़े—सप्ताश्व । उच्चैः श्रवा । रविहय ।

चन्द्रमा *—चन्द्र । चन्द्रमा । सोम । सुधाधर । इन्दु ।

* किसी नक्षत्र, औषधी, रात्रि आदि के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ स्वामी अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा का बोधक होगा ।

चन्द्रमा की १६ कलायें—१. अमृता, २. मानदा, ३. पूषा,
४. पुष्टि, ५. तुष्टि, ६. रति, ७. धृति, ८. शशनी, ९. चन्द्रिका,
१०. कांति, ११. ज्योत्सा, १२. श्री, १३. प्रीति, १४. अंगदा, १५. पूर्णा,
१६. पूर्णामृता ।

सुधाकर । हिमांशु । शुभ्रांशु । शशि । शशधर । शशाङ्क । ग्लौ ।
 मृगाङ्क । नक्षत्रेश । औषधीश । कुमुदवान्धव । निशापति ।
 निशिनाथ । सुधांशु । विधु । कलानिधि । अब्ज । क्षपाकर ।
 (छपाकर) । द्विजराज । जैवातृक । सुधानिधि । अमीकर ।
 हिमरोम । सिन्धुसुत । अम्भोज । ऋक्षराज । भेश । मृगपति ।
 कलङ्कधर । महताव । जलज । उडुप । मयङ्क । मन्थी । सुव्रग ।
 तारापति । सारंग । राकापति । अमृतबन्धु । अमृतद्युति ।
 अमृतवपु ।

चन्द्रमण्डल—चन्द्रबिम्ब । मण्डल ।

चन्द्रिका—चाँदनी । ज्योत्स्ना । जोन्ह । कौमुदी ।
 हिमकर । अँजोरिया । चन्द्रमरीची । अमृततरंगिणी । अमृतद्रव ।

द्वितीया का चन्द्रमा—तवचन्द्र । वक्रचन्द्र । बालविधु ।

पूर्णमासी का चन्द्रमा—पूर्णचन्द्र । राकाशशि ।
 राकेश ।

चन्द्र-चिन्ह—निर्वाद । अधम । प्रमाद । कलङ्क ।
 अङ्क । लाञ्छन । लक्ष्म । मसि । लक्षण । मलिन । मली ।
 मृगाङ्क । मृगचिन्ह ।

चन्द्रमा की स्त्री—रोहिणी । धातृ । अब्जयोनि ।
 विधातृ ।

मङ्गल—अङ्गारक । कुज । भौम । भूमिसुत । लोहिताङ्ग ।

बुध—सौम्य । चन्द्रसुत । जारज । चन्द्रज । रौहिणेय ।
 ज्ञ । विद । विदिच ।

बृहस्पति—गुरु । सुरगुरु । आङ्गिरस । सुराचार्य ।
शीष्पति । वाचस्पति । विषण । जीव । चित्र शिखण्डिज । ईज्य ।

शुक्र—कवि । काव्य । दैत्यगुरु । उशना । भार्गव ।
दैत्यराज । आदिदेव गुरु ।

शनैश्चर—शनि । मन्द । मन्दचाल । द्वायासुत । सौरि ।
रविनन्दन । अर्कि । मन्दग्रह ।

राहु—विधुन्तुद । तम । स्वर्भानु । सैहिकेय । सिंहिका-
सुत । असुर ।

केतु—शीर्षग्रह । धूमकेतु । धूमकेतु । मत्स्यवाहन ।
शिखि ।

नक्षत्र *—ऋक्ष । भ । तारा । उडु । तारिका । खग ।
नखत । निशिचर । नभचर । तमचर । जन्हाई ।

नक्षत्रों का समूह—तरैया । उडुगण । नखतावली ।

ध्रुव—औत्तानपादि । निश्चल । अचलग्रह । स्थिरग्रह ।

अश्विनी—अश्वयुज् । अश्व । दास ।

भरणी—यम । अन्तक (कोई भी यम का पर्याय) ।

कृत्तिका—अग्नि । अनल (कोई भी अग्नि का पर्याय) ।

* २७ नक्षत्र—अश्विनी । भरणी । कृत्तिका । रोहिणी । मृगशिरा ।
आर्द्रा । पुनर्वसु । पुष्य । अश्लेषा । मघा । पूर्वाफाल्गुनी । उत्तराफाल्गुनी ।
हस्त । चित्रा । स्वाती । विशाखा । अनुराधा । ज्येष्ठा । मूल । पूर्वाषाढ ।
उत्तराषाढ । श्रवण । धनिष्ठा । शतभिषा । पूर्वाभाद्रपदा । उत्तराभाद्रपदा ।
रेवती । (नोट—ज्योतिष के अनुसार 'अभिजित' नामक एक और नक्षत्र
उत्तराषाढ के बाद माना जाता है । इस प्रकार कुल २८ नक्षत्र होते हैं) ।

- रोहिणी—विधातृ । धातृ । अब्जयोनि ।
 मृगशिरा—मृगसिर । अग्रहायणि । मृग । शशभृत । चन्द्र ।
 आर्द्रा—रुद्र । शिव ।
 पुनर्वसु—अदिति ।
 पुष्य—सिध्य । तिष्य । इज्य । जीव । देवपुरोहित ।
 अश्लेषा—सर्प । उरग । भुजग । व्याल । अहि । भुजङ्ग ।
 मघा—पितृ । पितर ।
 पूर्वाफाल्गुनी—भग । योनि ।
 उत्तराफाल्गुनी—अर्यम ।
 हस्त—अर्क । रवि । कर ।
 चित्रा—त्वाष्ट्र । तक्ष ।
 स्वाती—वायु । समीर । अनिल । मरुत् ।
 विशाखा—राधा । द्विदैव । शक्राग्नि । द्वीश ।
 अनुराधा—मित्र । मैत्र ।
 ज्येष्ठा—इन्द्र । शक्र । शाक्र ।
 मूल—निरिति । रक्ष । राक्षस ।
 पूर्वाषाढ—क्षीर । जल ।
 उत्तराषाढ—विश्व । वैश्व ।
 अभिजित—विधि ।
 श्रवण—कर्ण । गोविन्द । हरि ।
 धनिष्ठा—श्रविष्ठा । वसु । वासव ।

शतभिषा—सप्ततारक । तोयप । जलप । वरुण ।
जलधि । अम्बुप ।

पूर्वाभाद्रपदा—श्रोष्ठपदा । अजचरण ।

उत्तराभाद्रपदा—श्रोष्ठपदा । अहिर्बुध्न ।

रेवती—पूषा । अन्त्य । पौष्ण । अन्त्यभ ।

राशि*—लग्न । मुहूर्त । भ ।

मेष—अज ।

वृष—वृषभ ।

मिथुन—युग्म ।

कर्क—कर्कट ।

सिंह—मृगेन्द्र ।

कन्या—कन्यका । सुता । कुमारी ।

तुला—तौलि । युक् । तुल ।

वृश्चिक—अलि ।

धनु—चाप । कोदण्ड ।

मकर—नक्र ।

कुम्भ—घट ।

मीन—भख । मत्स्य ।



* प्रसिद्ध राशियाँ १२ हैं—मेष । वृष । मिथुन । कर्क । सिंह ।
कन्या । तुला । वृश्चिक । धनु । मकर । कुम्भ । मीन ।

६. कालादिवर्ग

समय—वेला । अनिमेष । काल । वार । इष्ट । अदृष्ट ।
वशिष्ट । अनेह । वय । नमय । अवसर । प्रसङ्ग । दण्ड । मुहूर्त ।
घड़ी । विरिया ।

पल—क्षण (छन) । लमहा । दमभर । (२४ सेकेण्ड
का एक पल होता है) ।

दण्ड—घटी । घटिका । दण्ड ।

(नोट—२४ मिनट का एक दण्ड होता है । एक दिनरात
में ६० दण्ड होते हैं) ।

प्रहर *—पहर । याम । (३ घण्टे का एक प्रहर होता है)

दिन—दिवस । वासर । घस्र । अह्न (अहन) ।

प्रातःकाल—प्रत्यूष । अहर्मुख । प्रत्युषसी । गोसर्ग ।
प्रातः । सवेरा । भोर । प्रभात । भिनुसार । विहान । अरुणोदय ।
कल । दिनमुख । तड़का । सकाल ।

* प्रहर—एक दिन रात में ८ प्रहर होते हैं । यथा दिन में—१ पूर्वाह्न
वा प्रातः, २ मध्याह्न, ३ अपराह्न, ४ सायं । रात्रि में—१ प्रदोष वा
रजनीमुख, २ निशीथ, ३ त्रियामा, ४ उषा, भोर वा ब्राह्ममुहूर्त ।

मध्याह्नकाल—दोपहर । दुपहरिया । मध्यदिवस ।

सायंकाल—रजनीमुख । सायं । दिनान्त । सन्ध्या । गोधूलि । प्रदोषकाल । साँझ । पितृप्रसू ।

रात्रि—निशा । शर्वरी । निशीथ । निशीथिनी । त्रियामा (रात्रिका ३ रा पहर) । क्षणदा । विभावरी । रजनी । यामिनी । क्षपा (छपा) । निशि । नक्त । रैन । रात । कादम्बरी । सीता । कोटर । दोषा । असुर ।

अँधेरी रात—तमी । तमिस्रा । तामसी । तमस्विनी । श्यामा ।

उँजाली रात—ज्योत्स्नी । चन्द्रिकयान्विता । कौमुदी । हरिद्रा । विभावरी ।

सप्ताह—अठवारा । हफ्ता । (७ दिन का एक सप्ताह) ।

पक्ष—पख । पाख । पखवारा । (१५ दिन का १ पक्ष) ।

कृष्णपक्ष—अँधेरा पाख । असितपक्ष ।

शुक्लपक्ष—उँजेरा पाख । सितपक्ष ।

मास—माह । महोना ।

वर्ष—अब्द । वत्सर । हायन । सरत । संवत् । सम ।

अमावस्या—सूर्येन्दुसङ्गम । कुहू (जब कि चन्द्रमा की कला नष्ट हो जाती है) । अमा । दर्श । अमावस । सिनीवाली (जब कि चन्द्रमा की कुछ कला अवशेष रहती है) ।

पूर्णमासी—पौर्णमासी । राका । पर्व । पूनो । पुनवासी । पुनमासी ।

चैत्र—चैत । चैत्रिक । मधु ।

- वैशाख—माघव । राध । वैसाख ।
 ज्येष्ठ—जेठ । शुक्र । तपन ।
 आषाढ़—शुचि । असाढ़ । हाड़ ।
 श्रावण—नभा । श्रावणिक । सावन । नभ ।
 भाद्रपद—श्रौष्ठपद । भाद्र । भादों । भादँव । नभ ।
 आश्विन—इष । अश्वयुज् । काँर । कुआर ।
 कार्तिक—कार्तिकिक । बाहुल । कातिक । ऊर्ज ।
 मार्गशीर्ष—मगसिर । अग्रहण । अगहन । मगशिर ।
 मार्ग । आग्रहायणिक । सहस् ।
 पौष—सहस्य । पूस ।
 माघ—तपा । मांह ।
 फाल्गुन—फाल्गुन । फाल्गुनिक । तपस्य ।
 अधिक मास *—मलमास । लौंद का महीना ।
 पुरुषोत्तम मास । असंक्रान्त मास ।
 वसन्त (ऋतु)—ऋतुराज । पुष्पसमय । कुसुमाकर ।
 माघव । सुरभि । बहार । ऋतुपति । कुसुमकाल । मधु ।

* प्रति तीसरे वर्ष एक अधिक मास होता है, जो शुक्र पक्ष की प्रति-
 पदा से लेकर अमावास्या पर्यन्त रहता है, और इसमें संक्रान्ति नहीं होती ।
 यह चान्द्र और सौर वर्षों को एक करने के लिये चान्द्र वर्ष में जोड़ लिया
 जाता है ।

ग्रीष्म—उष्मक । निदाघ । उष्म । उष्मागम । उष्णागम ।

त्प । तपन । तपाक । गरमी ।

वर्षा—प्रावृट् । पावस । वरसात ।

शरद्—हिमर्तु । शरत् ।

शिशिर—शीत । सिसिर । जाड़ा ।

हेमन्त—हिमन्त ।

सतयुग—कृतयुग । पुण्ययुग । देवयुग । सत्ययुग ।

कलियुग—कलि । कलिकाल । कृष्णयुग । कल्कि ।

प्रलयकाल—संवर्त । प्रलय । क्षय । कल्प । कल्पान्त ।

नाश ।

अवशिष्ट—शेष । वचत । बाकी ।

उपस्थित—विद्यमान । प्रस्तुत । उद्यत । आयात ।

उपनित । तैयार । मौजूद । वर्तमान । प्रतिपन्न । हाजिर ।

अनुपस्थित—अप्रस्तुत + अनुद्यत । अभाव । शून्य ।

बिना । रहित । गैरहाजिर ।

गत—बीता हुआ । बिगत । व्यतीत । भूत । परोक्ष ।

पहले । पीछे ।

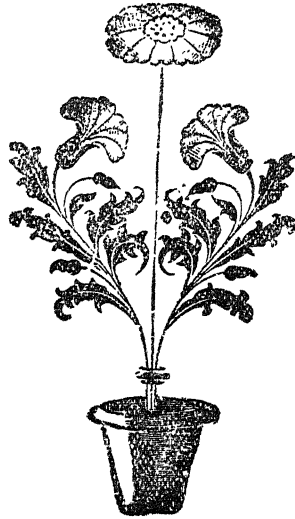
आगामी—आनेवाला । भविष्यत् । भविष्य ।

नित्य—प्रतिदिन । सदा । सर्वदा । रोजरोज । हमेशा ।

निरन्तर । निरवधि । सतत । सन्तत । सनातन । शाश्वत ।

अनांतर । अनपायिनी । अनुदिन । अविरल । अविरत ।
अश्रान्त । ध्रुव ।

पश्चात्—पुनः । बहुरि । फिर । बाद । उपरान्त । अथ ।
तदन्तर । तदनन्तर । अनन्तर । अन्तर ।



द्वितीय खण्ड

१. स्थलादिवर्ग ।

पृथ्वी—भू । भूमि । अचला । अनन्ता । रसा । विश्व-
म्भरा । स्थिरा । धरा । धरित्री । धरणी । क्षौणी । ज्या । काश्यपी ।
सर्वसहा । वसुमती । वसुधा । उर्वी । वसुन्धरा । गोत्रा । कु ।
पृथिवो । क्ष्मा । अवनि । मेदिनी । महि । रत्नगर्भा । सागराम्बरा ।
अन्धमेखला । भूतधात्री । रत्नावती । देहिनी । पारा । विपुला ।
धरणीधरा । धारणी । महाकान्ता । जगद्धहा । खण्डनी । गन्धवती ।
धात्री । गिरि कर्णिका । धारयत्री । सहा । अचलकीला । गौ ।
द्विरा । इड़ा । इडिका । इला । इलिका । उदधिवस्त्रा । इरा ।
आदिमा । इला । वरा । उर्वरा । आद्या । जगती । पृथु । श्यामा ।
क्रीड़ाकान्ता । खगवती । अदिति । वीजप्रसू । पृथ्वी । पटुमि ।
मुँई । उर्मि । उरा । सारंग । असुर ।

संसार *—जगत । भुवन । लोक । विश्व । जगती ।
भव । जग । भूलोक । भुव । मृत्युलोक । मर्त्यलोक । विष्टप ।

* लोक चौदह हैं—भूलोक, भुवलोक, महलोक, जनलोक, सत्यलोक, तपोलोक और स्वर्गलोक—ये सात ऊपर के लोक हैं । तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल और पाताल । ये सात नीचे के लोक हैं ।

संस्तुति । ब्रह्माण्ड । जहान । दुनिया । दुनी । खलक ।

मिट्टी—मृत् । मृत्तिका । माटी । मट्टी । मृत्सा । प्रशस्ता ।

धूलि—धूर । गर्द । धूल । धूसर । रज । रेणु । पांशु
(पाँस) । पिंजल । धूसरी । खेह । संचरा । वातकेतु । वातध्वज ।

उपजाऊभूमि—उर्वरा । उर्वरी । सस्याढ्या ।

बिनाउपजाऊभूमि—ऊषर । ऊसर । सस्यहीना ।
अनुर्वरा । बन्ध्याभूमि ।

आर्यावर्तदेश—भारतवर्ष । भरतखण्ड । भारत । आर्य-
भूमि । भारतभूमि । पुण्यभूमि । हिन्द । हिन्दुस्तान ।

(नोट—विशेषतः हिमालय और विंध्याचल की मध्यस्थ भूमि
को ही आर्यावर्त कहते हैं ।)

राष्ट्र—नीवृत । जनपद । सुदेश । उपवर्तन । विषय ।

ऊसरदेश—ऊषवती । ऊषरा । ऊषरस्थली । ऊषर ।
ऊषवान् । क्षारभूमि । मरुभूमि । मरुस्थल ।

खेत—क्षेत्र । वप्र । केदार । भूमि । निष्कुट । राजिका ।
वलज । पाटीर ।

म्लेच्छदेश—प्रत्यन्त । म्लेच्छवास । पतितभूमि ।
अनार्यभूमि ।

जलप्रचुरदेश—अनूपदेश । मालवदेश ।

बालुकायुतदेश—शर्करा । शर्करिल । शार्कर । शर्करावती ।

वल्मीक—वामलूर । नाकु ।

मार्ग—मग । राह । अयन । वर्त्म । पथि । अध्वा ।
 स्रुति । सरणि । पद्धति । पथ । पन्थ । पदवी । एकपदी । वर्तेनि ।
 संचरण । पद्या । बाट ।

सुन्दर मार्ग—अतिपन्थ । सुपन्थ । सत्पथ । सन्मार्ग ।
 अतिध्वति । विशिष्टमार्ग । रम्यपथ ।

दुर्गम मार्ग—प्रान्तर । कान्तार । क्लिष्ट पथ । कण्टका-
 कीर्ण मार्ग । दुष्पथ । कुपथ । कुमार्ग । कुराह । कापथ । विपथ ।
 दुर्गम पथ ।

संकीर्ण मार्ग—रथ्या । विशिखा । वीथी । वीथिका ।
 लघुपथि । गली । प्रतोली । त्रोलिका । गौल । खोरि । कूचा ।

चौराहा—शतुष्पथ । शृङ्गाटक । चौमुहानी । चौरस्ता ।
 चौहट्टा । चौक ।

राजमार्ग—घंटापथ । राजपथ । संसरण ।

नगर—नगरी । पुर । पुरी । पत्तन । पुटभेदन । निगम ।
 शहर । कसबा ।

टोला—मुहल्ला । टोला । टोली । पुर । पुरवा । कूचा ।

बाजार—हाट । पण्य । पण्यवीथिका । राजपथ ।
 चतुष्पथ । शृङ्गाटक । विपणि । मण्डी ।

तेल का बाजार—तेलहट्टा । तेलियाना ।

कपड़े का बाजार—बजाजा । चैल-हट्टा ।

मछली का बाजार—मछरहट्टा । मछरटोला ।

सुनारों का बाजार—सर्पाका ।

वर्तनों का बाज़ार—ठठेरी बाज़ार । ठठेरा ।

गाँव—ग्राम । गँवई । संवसथ । देहात ।

अहीरों का गाँव—घोष । आभोरपल्ली । अहिराना ।

भीलों का गाँव—पक्कण । शबरालय ।

चमारों का गाँव—चमरौटिया । चमरटोलिया ।

घर—गृह । आलय । आगार । ओक । आयतन । गेह ।
सदन । सद्य । सौध । वेस्म । वास । निकेत । निधान । निःशान्त ।
निवेश । शिविर । शाला । धाम । भवन । मन्दिर । मकान ।
आश्रपद् (आस्पद्) । धिश्रपद् । वस्य । आवास । शरन ।
निलय । निवास । अयन । परिघ । वाक्य । शाला । आराम ।
हरम्य । स्थान ।

[नोट—कच्चे घर को 'बखरी' भी कहते हैं तथा पक्के और
बड़े घरों को महल, प्रासाद या हवेली कहते हैं ।]

घर की दीवार—दिवाल । भीत । भित्ति । भीती ।
कुडचम् ।

गृहद्वार—द्वार । पौर । दुआर । ड्योदी । पहरा ।
दरवाजा । प्रतीहार । देहली । गृहावगृहणी । सिंहपौर ।

चगली द्वार—पार्श्वद्वार । पक्षद्वार । पक्षक । गुप्तद्वार ।

देहली—देहरी डेहरी । ड्योदी ।

ओसारा—ओटा । अलिन्द । प्रघण । प्रघण । प्रको-
ष्ठक । दालान ।

आँगन—आङ्गण । गृहाङ्गण । अजिर । चत्वर । बगर ।

सहन । चौक । चौगान । बाखर । प्राङ्गण । अँगना । चतुःशाल ।
संजवन । चौसार ।

खंभा—खंभ । स्तम्भ । स्तूप ।

सीढ़ी—आरोहण । सोपान । निश्रेणी (निसेनी) ।
अधिरोहिणी । आरोह । सिद्धी । (जीना) ।

अटारी—अट्टालिका । अटा । कोठा । सौध । हर्म्य ।

खिड़की—अन्तर द्वार । प्रच्छन्न । गवाक्ष । वातायन ।
जालरन्ध्र । झरोखा । जालमार्ग । झँझरी । बारी । पक्षक ।

किवाड़—किवार । केवाड़ । कपाट । पट । पल्ला । दरवाजा ।
अरर । द्वार । फाटक (बड़ा दरवाजा) ।

छाजन—खपड़ैल । छप्पर (फूस का छाजन) । छत ।
पाटन । छादन । पटल । छदि ।

बैठक—स्थायी । अथाई । वैठका । चौबारा । चौपाल ।

शयनगृह—शयनागार । शयनावास । आरामखास ।

रसोईगृह—पाकगृह । पाकशाला । सूपगृह । महानस ।
भोजनालय । पाकस्थली । अन्नचेत्र । रसवती सदन ।

रतिगृह—क्रीडालय । क्रीडावास । गर्भागार । वासगृह ।
रतिशाला । रंगमहल । विलास स्थल ।

प्रसवगृह—सूतिकागृह । अरिष्ट । सौरी । सोबड़ ।
प्रसूतिका गृह । जननावास ।

राजमहल—राजमन्दिर । राजभवन । प्रासाद । सौध ।
उपकारिका । राजसदन । उपकार्य । सर्वतोभद्र । स्वस्तिक ।
नन्द्यवर्त । हर्म्य । निष्कुट । महल । हवेली ।

कोट—आवर्तक । प्रकारक । परिघ । सालि । पुरसीम ।
प्राचीर । घेरा । वेष्टक ।

किला—दुर्ग । विकटस्थल । दुर्गम । अगम । गढ़ ।
सौंध । विद्ध ।

अन्तःपुर—रनिवास । हरमखाना । अवरोध । शुद्धान्त ।
स्त्रियागार । भोगपुर । अन्दर । जनानखाना ।

देवमन्दिर—देवालय । मन्दिर । प्रासाद । देवस्थान
(देवथान) ।

सभाभवन—समाज भवन । वास । सभा । पञ्चायती-
जगह । अखाड़ा । बैठक । परिषद् ।

झोपड़ी—पर्णकुटी । झोपड़ी । उटज । मुनिवास । शाला ।
पर्णशाला । पल्ली । कुञ्ज । गह्वर । कुटी ।

घुड़साल—घोड़शाला । हयशाला । घुड़सार । बाजिशाला ।
मन्दुरा । अस्तबल ।

हाथीखाना—गजशाला । पीलखाना । गयशाला ।

गोशाला—गोसाला । गऊशाला । घोष । गोथान ।
गोकुल । खिरक (खरिक) । गोमण्डल । गायगौठ ।

औषधालय—चिकित्सालय । भैषज्यागार । चिकित्सा-
भवन । दवाखाना । शफाखाना ।

पाठशाला—विद्यालय । चटशाला । विद्यामन्दिर ।
सरस्वतीभवन । गुरुकुल ।

यज्ञशाला—चैत्यधाम । यजनायतन । यज्ञस्थल ।
यज्ञथली । मखशाला । मखस्थान । मख । यज्ञभूमि ।

शस्त्रालय—शस्त्रागार । हथियारखाना ।

धर्मशाला—मठ । सराय । क्षेत्र । आवास । धर्मक्षेत्र ।
जनावास ।

रणभूमि—समरभूमि । संग्रामभूमि । संगरभूमि ।
वीरभूमि । युद्धभूमि । रणस्थल । युद्धस्थल । मैदान । क्षेत्र (खेत) ।
युद्धक्षेत्र ।

न्यायशाला—न्यायालय । न्यायभवन । कचहरी ।

मद्यगृह—कलवरिया । गञ्जा । मदिरागृह । आबकारी ।

शिल्पशाला—आवेशन । शिल्पिशाला ।

पौसरा—प्रण । पौसार । पानीयशाला । प्याऊ ।
जलसत्र । पानीयशालिका ।

श्मशान—मरघट । मसान । मुरदघट्टा । मृतकस्थान ।
दग्धस्थान । पितृवन । शातनक । रुद्राक्रीड । दाहसर । अन्त-
शय्या । पितृकानन । [श्म = शव, शान = शयनस्थान ।]

कारागार—कारावास । बन्दीगृह । यातनागृह । जेलखाना ।

जुआखाना—चूतगृह । फड़ ।

नाट्यशाला—नाटकभूमि । रङ्गभूमि । अभिनयस्थल ।
रङ्गालय । रङ्गस्थल । थियेटर । नाटकघर । नाचघर ।

व्यायामशाला—अखाड़ा । कसरतघर ।

पर्वत *—भूधर । भूभृत् । क्षमाभृत् । महीभृत् । शैल ।

* सप्तपर्वत—१. हिमालय । २. निषध । ३. विन्ध्य । ४. माल्यवान् ।
५. पारियात्रक । ६. गन्धमादन । ७. हेमकूट ।

अचल । महीध्र । शिलोच्चय । गिरि । अद्रि । गोत्र । धर । ग्राव ।
 शिखरी । अहार्य । नग । नाकु । भूमिधर । महीधर । कूट । मेरु ।
 तुङ्ग । अग । कुधर । धराधर । रजत । पयोधर । दरीभृत ।
 शृङ्गी । हरि । ग्रावा । पृथुशेखर । धरणी । कीलक । कुट्टार ।
 जीमूत । स्थिर । कटक्री । वृक्षयान् ।

पर्वत शिखर—शिखर । शृङ्ग । कूट । मेरु । सुमेरु ।
 दिवेश ।

पाताल—अधोभुवन । बलि सद्म । नाग लोक । रसातल ।
 अध । उरगस्थान ।

गड्ढा—गड्ढा । गर्त्त । अवट । भूरन्ध्र । दर । श्वभ्र ।

पत्थर—पाषाण । पाहन । प्रस्थर । पाथर । उपल । ग्राव ।
 वृषत् । अश्म । शिला । पखान । भार । सिल । गुरु । चट्टान ।

झरना—झर । निर्झर । प्रस्रवण । उत्स । वारिवाह ।
 स्रोत । सोता । जलमाला । प्रपात ।

कन्दरा—दरी । कन्दर । गुफा । गह्वर । विल । खोह ।
 देवखात । गुहा । माँद । विवर । कुहर । गर्त्त ।



२. जलादि वर्ग

जल—पानीय । सलिल । नीर । पानी । कोलाल । अम्बु । आप । वाः । वारि । तोय । पय । पाथ । उदक । जीवन । वन । अम्भ । अर्ण । अमृत । घनरस । मेघप्रसव । कमल । भुवन । कवन्ध । पुष्कर । सर्वतोमुख । सरिल । सल । जड़ । कं । अन्ध । कमन्ध । उद । दक । नार । शम्बर । अन्नपुष्प । घृत । कुल्ल । पाथ । पर्य । यादोनिवास । जीवनीय । जीवन । कुलीनस । कुलीन । पिप्पल । कुश । विष । काण्ड । सवर । सर । कृपीट । सदन । चन्द्रोरस । कर्बुर । व्योम । सम्ब । इरा । वाज । तामर । कम्बल । स्यन्दन । सम्बल । जलपीथ । क्षुर । ऋत । ऊर्ज । कोमल । सोम । नारा । छद्म । क्षोद । नभ । क । मधु । पुरीष । रेत । कश । जन्म । वृबूक । तुग्या । धरुण । सुरा । अरविन्दानि । जामि । रस । भेषज । ओज । सह । शव । क्षत्र । शुभ । रयि । सर्व । पूर्ण । क्षीर । गन । गो । सारंग । अधोगति ।

जलाशय—पनघट । जलस्थान । जलाधार ।

समुद्र*—सागर । सिन्धु । जलधि । पारावार । अमृतोद्भव ।

* (१) सप्तसिन्धु—१. क्षीरोद । २. लवणोद । ३. दध्युद । ४. वृतोद । ५. सुरोद । ६. ईक्षुद । ७. स्वाद्द । (ये पौराणिक नाम हैं) ।

सरस्वान । अधि । अर्णव । उधि । रत्नाकर । जलधाम ।
पयोधि । अकूपार । उदनवत । नदीश । नीरनिधि । सरित्पति ।
वारीश । पयोधि । अनख । दधि ।

समुद्र-मर्याद—अवधि । सीम । मर्याद । वेला ।

समुद्र-फेन—फेन । आप्य । आम्यय ।

तरङ्ग—ऊर्मि । भङ्ग । वीचि । उल्लोल । कल्लोल । लहर ।
मौज । टेह । हिलोर । हलफ़ । परिवाह । ऊर्मिका ।

जल की गहराई—गम्भीर । गहिर । अतलस्पर्श ।
अथाह । निम्न । अगाध । गभीर । डावर । नीचा ।

पानी का चक्र—भँवर । चक्र । आवर्त्त । अम्भभ्रम ।
जलावर्त्त ।

जल-विन्दु—पृषत । विन्दु । वुन्द । अम्बुकण । शीकर ।
कण । फुही । फुहार । वूँद । सीकर । जलकण ।

जलाशय का किनारा—तट । कूल । रोध । तीर ।
प्रतीर । पार । उपकंठ । पुलिन । करार । किनारा । गो ।

जलाशय के बीच का स्थल भाग—द्वीप । टापू ।
रेती । रेता ।

(२) समुद्र से निकले हुए १४ रत्न—श्री-मणि-रम्भा-वारुणी,
अमिय-शंख-गजराज । धनु-धन्वन्तरि-धेनु-शशि, कल्पद्रुम-विष-वाजि ।
अर्थात्—लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, रम्भा-अप्सरा, शराब, अमृत, पाञ्चजन्य-
शंख, ऐरावत हाथी, इन्द्र धनुष, धन्वन्तरि वैद्य, कामधेनु गौ, चन्द्रमा,
कल्पवृक्ष, हलाहल विष और उच्चैश्रवा घोड़ा ।

नदी—सरिता । तरंगिणी । तटनी । द्वीपवती । हादिनी ।
 शैवलिनी । रोधवक्त्रा । निर्झरणी । अपगा । अधगा । निम्नगा ।
 आपगा । श्रोतस्वती । तलोदा । जलधिगा । स्रवन्ती । विरेका ।
 जलमाला । श्रोती । स्रवती । आवर्त्तिनी । सरस्वती । सारंग ।
 चतुष्क । धारावती । जम्बालनी । लहरी । सरि । धुनि । ध्वनि ।
 कुलंकषा ।

तालाव—जलाशय । सरोवर । हृद । तड़ाग । कासार ।
 सरसी । सर । पद्माकर । पत्रवल । पुष्करण । सरस । सरक ।
 सरस्वत । ताल । सत्र । सारंग । जलवान । पोखरा (पुष्कर) ।

बावली—वापी । दीर्घिका । बौली ।

नदी-संगम—संभेद । सङ्गम । मिलन ।

नदी का फेन—माँजा । (मज्जा) । भाक । फेन ।
 जलफेन ।

कीच—पंक । शाद । कर्दम । काँदो । निषद्वर । जम्बाल ।
 जलकल्क । चुलुक । चेत्रजा । साद । दम । मृत्सा । कीचड़ ।
 कीचा । गारा । चिकिल । द्राप ।

बाँध—अम्भसा । पूर ।

कुँआ—अन्धु । प्रहि । कूप । उदपान । निवान । निपान ।
 इनार । इनारा (इन्दारा) ।

बालू—रेत । रेतजा । बालुका । बारू । सिकता । रेणु ।
 शिलाकण । सिक्ता । शीतला । सूक्ष्म शर्करा । प्रवाहोत्था ।
 महाश्लक्ष्णा । सूक्षा । प्रवाही । पानीयवर्णिका । बालिका ।

खाई—परिखा । खेय ।

पुल्ल—सेतु । अलि ।

नौका—नाव । तरणि । तरनी । जलयान । जलपात्र ।
पठावनी । वेड़ा । तरी । उड़प । प्लव । कोल । डोंगी । भौली ।
पनसुय्या (छोटी नाव) । नौ । नावर । वहित्र । नाउर ।
वनवाहन । तरन्त । पतंग ।

जहाज—बोहित । पोत । अर्णव पोत ।

नाँव की डाँड़—नौकादण्ड । क्षेपणी । क्षेपणिका ।
डाँड़ । डाँड़ा ।

पतवार—करिया । दरित्र । केनिपातक ।

पानी फेकने की कड़ाही—तसली । सेक । सेकपात्र ।
सेचन ।

केवट—मल्लाह । कर्णधार । नाविक । कैवर्त्त । तारक ।
खेवट । नौसाध्यजन । माँझी । खेवक । जालक । दाश । धीवर ।

नाव की उतराई—आतर । तरपण्य । द्रोणी । खेवा ।
महसूल । उतराई । खेवाई ।

नाव खींचने वाली रस्सी—गुण । कूपक । गून ।
गोन ।

बंसी—काँटा । बडिश । मत्स्यवेधन । मत्स्याघाती ।
मीनहा । कुम्भी ।

मच्छली पकड़ने का जाल—जालानाय । पवित्रकी ।
शणभव । सूत्री । जार ।

मछली *— मत्स्य । मच्छ । माछ । मच्छी । पृथुरोमा । शकुली । अण्डज । भ्रूख । वैसारिणी । मीन । तिमि । गण्डक । जलचर । जलजीवन । विसार । अण्डभव । मकर । मगरी । शष्कुली ।

केकड़ा—कर्कट । कर्कटक । कुलीर । कर्क ।

कलुआ—कूर्म । कमठ । कच्छप । कच्छ ।

मगर—ग्राह । अवहार । नक्र । जलकुञ्जर । कुम्भीर । क्रोड़ । घड़ियाल । जल किराट ।

जोंक—रक्तपा । जलूका । जलोरगी । तीक्ष्णा । बमनी । वेधनी । जलसर्पिणी । जलसूची । जलाटनी । जलाका । पटालुका । जलोका । जलौका ।

मछली रखने का पात्र—मत्स्यधारिणी । डोलनी । डोली । कुवेणो ।

सीपी (साधारण सुतुही)—जलशुक्ति । कृमिसू । कृमिसूक्ति । क्षुद्रशुक्तिका । शम्बूका । जलडिम्ब । पुटिका । नर शुक्ति ।

सीपी (मोतीवाली)—मुक्ताप्रसू । महाशुक्ति । शुक्ति । शुक्तिका । मुक्तास्फोट । अविधमण्डूकी । मौक्तिकप्रसवा ।

* मछली की विशेष जातियाँ—पाठीन=पैना वा पाहिना । सहस्र दंष्ट्रा उलूपी । शिशुक । चिलिमल=चेलहवा । नल । प्रोष्ठी । शर्फरी=सिधरी । झींगा=झिंगवा । पोता । शकुलार्भक । रोहू । सौरा । राया । सौरी ।

दुर्नामा । दीर्घकोशिका । दीर्घकौशिका । पंकशुक्ति । मुक्तागार ।
तौतिक । मौक्तिक शक्ति । मुक्तामाता । मुक्तास्फोटा ।

शंख—समुद्रज । कम्बु । सुनाद । पावनध्वनि । कम्बोज ।
अञ्ज । त्रिरेख । जलज । अर्णोभव । अन्तःकुटिल । महानाद । श्वेत ।
पूत । मुखर । दीर्घनाद । बहुनाद । हरिप्रिय । दीर्घनिरचन ।
सुरचर । सम्यक् शब्द । जलोद्भव । दुष्टद्रावी । धवल । स्त्री विभू-
षण । अर्णव भवोदर । जलकंकर ।

घोंघा—क्षुद्र शंख । क्षुल्लक । कोशस्थ । लघुशंख । क्षुद्रक ।
शंखनक । शम्बूक । नदीभव ।

कौडी—कपर्दक । कपर्दी । वराटक । वराटिका । वराट ।
कपर्ह । चर । उद्वाहवी । चराचर । वर्ज्य । बालक्रीडक ।

मेढक—मण्डूक । भेक । वर्षाभू । प्लव । हरि । दर्दुर ।
शालूर । दादुर ।

कमल (सूर्यविकासी)—शतपत्र । कुशेशय । पुष्कर ।
पारिजात । पत्री । शम्बर । द्रोण । अब्ज । सहस्रपत्र । राजीव ।
हरि । विसप्रसून । अम्भोज । अंबुज । पद्म । महोत्पल । उत्पल ।
जलज । सरोज । पंकज । नलिन । मकरंदी । सरोरुह । सारस ।
तामरस । अरविंद । कुटप । कञ्ज । अनिन्द । जलकरंक ।
अम्लान । वनज । नल । पाथोज । पुटक । सुजल । वार्ज ।
कुञ्ज । सारज । कज । विसकुसुम । कवार । आस्य पत्र । वन-
शोभन । श्रीवास । श्रीपर्ण । इन्दरालय । नालीक । नालिक ।

श्वेत कमल—पुण्डरीक । महापद्म । श्वेत पद्म । शारद ।
सिताम्बुज । दृशोपम । हरिनेत्र । शंभुवल्लभ । शरत्पद्म । सिताब्ज ।

रक्त कमल—रक्तोत्पल । क्रोकनद । रविप्रिय । अल्प-
पत्र । अरविन्द । रक्तकम्बल । आलोहित । अलिप्रिय । कृष्ण-
कन्द । शोणपद्म । चारुनालक ।

नील कमल—नीलाम्बुज । नीलाब्ज । मृदूत्पल ।
इन्दीवर । कुवलय । कन्दोट । नीलपत्रक । उत्पलक । असि-
तोत्पल । कुङ्मलक । इन्दिरावर । सुगन्ध । सौगन्धिक ।

पीला कमल—पीत कमल । स्वर्णकमल ।

कुमुद (चन्द्रविकासी)—कुँई । कौई । क्रमोदिनी ।
कुमोदिनी । नलिनी । पद्मिनी । कैरव । कुवलय । गर्दभ ।
चन्द्रकान्त । कन्दोत । कच्छ । कुब । गन्धसोम । कहार ।
शीतलक । धवलोत्पल । सितोत्पल । इन्दुकमल । चन्द्रिकाम्बुज ।

कमल-दल—दल । किसलय । संवर्त्तिका ।

कमल-दण्ड—नाल । मृणाल । विस । मुराट । मृणाल-
कन्द । विसिनी । कोरक । तन्तुर । कोमल । मृणाली । मृणालिनी ।
तन्तुल । कोमलक ।

कमल की जड़—करहाट । शिफाकंद । पद्मकन्द ।
भिस्साण्ड । जलालूक । पंक शूरण । शालु । गोपभद्र । कटाह्य ।
शालूक ।

कमल-केशर—जीरा । केशर । किञ्जल्क । चाम्पेयक ।
आपीत । काञ्चन । किञ्ज । पीतपराग । तुङ्ग ।

कमल-रस—मकरन्द । मधु । रस ।

कमल-धूलि—पराग । रज । रेणु । पाँसु । धूलि । मधु ।
पद्मबीज । पद्माक्ष । गालोड्य । पद्मकर्कटी ।

कमल-बीज (कमलगट्टा)—कमलगट्टा । वराटक ।
बट्टा । गट्टा । कन्दली । भेण्डा । क्रौञ्चादनी । क्रौञ्चा । श्यामा ।

जलकुम्भी—वारिपर्णी । कुम्भिका । काई । खजी ।
जलकुम्भिनी । खमूलिका । आकाशमूलि । कुतृण । कुमुदा ।
जलवल्कल । श्वेतपर्णा । अशकुम्भी । पानीयपृष्ठज । पर्णा । पृश्नी ।
दलाढक । वारिकर्णा । कुम्भी ।

सिंघाड़ा—शृंगाटक । जलफल । वारिकंटक । त्रिकोणफल ।
जलसूचि । शुक्लदुग्ध । शृंगाट । वारिकुब्जक । शृंगरुह । जल-
वल्ली । शृंगकंद । शृंगमूल । विषाणी । त्रिकोट । त्रिक । सिंघाटिका ।

सेवार—शैवाल । सेवाल । सिवार । अरक । जलनीली ।
जलकुंतल । जलपृष्ठजा । जलशूक । जलकल्क । शैवल । जलज ।
शेषान । शैवाल । शेषाल । वारि चामर । सलिलकुण्डल । हठ-
पर्णा । अम्बुताल । जलाञ्चन । जलकेश । कावार । शिवल ।

मखाना—मखान्न । पद्मबीजाभ । पानीय फल । ताल-
मखाना । अमरपुष्पक ।

केशर (कुंकुम)—कश्मीरी । कुंकुम । देववल्लभा ।
पिशुन । रक्त । वर । अग्नि । वाल्हीक । पीतन । धीर । काश्मीरज ।
शोणिताह्वय । कुसुमात्मक । संकोच । पीतन । रक्तचंदन । पीतक ।
घस्र । रक्तसंज्ञ । संकोचपिशुन । हरिचंदन । खल । रज ।
दीपक । लोहित । सौरभ । चन्दन । अग्निशिख । वर । असृक ।
शठ । शोणित । घुसृण । वरेण्य । कालेयक । जागुड । कान्त ।
गौर । अस्त्र । केसर । रुधिर ।

बेंत—झरी । बिट्टी । छरिब । बंजुल । अभ्रपुष्प । विटुर ।
 वेतस् । शीत । नादेय । नादेयी । बानीर । निकुञ्चक । परिव्याध ।
 जलवेतस् । शाखालु । मेघपुष्प । तोयकाम । अभ्रपुष्पक । नदी-
 कूल प्रिय । नीरप्रिय । सुशीतल । व्याधिघात ।

मूँगा—विद्रुम । द्रुमभव । प्रवाल । अङ्गरक मणि । रक्त-
 कंदल । रक्ताकार । अम्भोधिपल्लव । भौम रक्त । रक्ताङ्ग । लता-
 मणि । रक्तकन्द ।

मोती—सीपिज । मुक्ता । गुलिक । मौक्तिक । शुक्तिज ।
 जलज । शशिगोती । शशिप्रभ । सीपसुत । वन्दनवार । दर्दुर ।
 शंख । गज । क्रोड़ । शौक्तिकेय । तारा । अम्भःसार । हिम ।
 इन्दुरत्न । लक्ष्मी । हारी । कुवल । सौम्य । तार ।
 भौतिक । मुक्तिका । विन्दुफल । शशिप्रिय । हैमवत । नक्षत्र ।
 शौक्तेयक । शीतल । स्वच्छ । तौतिक । हिमबल । शुक्तिमणि ।
 सुधांशुभ । सुधांशुरत्न । लक्ष । भूरुह । शौक्तिक ।



३. खनिज वर्ग

(रत्न-उपरत्नादि)

खान—खनि । कान । खानि । आकर । खर ।

हीरा*—हीरक । वज्र । दृक् । निष्कम्पा । निष्क । पदक । पटु । गो । अशिर । षट्कोण । दृढगर्भक । हीर । दधीच्यस्थि । वज्रक । सूचीमुख । वरारक । रत्नमुख्य । अभेद्य । दृढाङ्ग । चन्द्र । मणिवर ।

[नोट—‘वज्र’ के लिये जितने पर्याय हैं वे सब ‘हीरा’ के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

पन्ना—मरकत । गरुडाश्म । मरक्त । राजनील । गरुडां-कित । रोहिणेय । सौपर्ण । गारुत्मत । गारुत्मक । हरितमणि ।

* नवरत्न—“वज्रं विद्रुम मौक्तिकं, मरकतं वैदूर्यं गोमेदकम् ।

माणिक्यं हरि नील पुष्प दृषदौ रत्नानि नाम्ना नव ॥”

—(निघण्टु रत्नाकर)

१. हीरा, २. मूँगा, ३. मोती, ४. मरकत (पन्ना), ५. वैदूर्य (लहसु-निर्याँ) ६. गोमेद ७. माणिक, ८. नीलम, और ९. पुष्पराग (पोखराज), ये नवरत्न हैं ।

अश्मगर्भ । गरुड़ोद्गीर्ण । बुधरत्न । अश्मगर्भज । गरलारि ।
वाप्रबोल । गरुड़ । गरुड़ोत्तीर्ण ।

लहसुनियाँ—वैदूर्य । वैदूर्य्य । राष्ट्रक । केतुरत्न ।
मेघखराङ्कुर । बालवायज । बालसूर्य । बालसूर्य्यक । कैतव ।
प्रावृष्य । अभ्ररोह । शराव्दांकुर । विदूर रत्न । विदूरज ।
केतुग्रह बल्लभ ।

गोमेद—पिङ्गस्फटिक । अगस्तिस्त्व । तमोमणि ।
गोमेदक । पीतरत्न । बाहुरत्न । स्वर्भानव । राहुमणि ।

माणिक—पद्मराग । मणि । लाल । कुरुविन्द ।
लोहितक । माणिक्य । शोणरत्नक । रत्नराट् । रविरत्नक ।
शोणरत्न । तरणिरत्न । शृंगारी । रंग माणिक्य । तरुण ।
रत्ननामक । रागयुक् । रत्न । शोणोपल । सौगन्धिक ।
कुरुवित्त्व । लोहित । कुरुविन्दक । लक्ष्मीपुष्प । अरुणोपल ।
मानिक ।

[नोट—माणिक के छोटे कण को चुन्ती कहते हैं]

नीलम—नीलमणि । असितरत्न । इन्द्रनील । नील ।
नीलक । मच्छ्रोद्भव । सौरिरत्न । नीलाश्मा । नीलपल ।
वृणम्राही । महानील । सुनीलक । मसार ।

पोखराज—पुष्पराग । जीवरत्न । पीतस्फटिक । गुरुरत्न ।
पीतमणि । वाचस्पतिवल्लभ । पुष्पराज । पीत । पीतरक्त ।

सूर्यकान्त मणि—दीप्तोपल । सूर्यकान्त । ज्वलनाश्म ।
अग्निगर्भक । रविकान्त । अर्कोपल । तापना । तपनमणि ।
सूर्याश्मा । दहनोपम । सूर्यमणि । आतशी शीशा ।

चन्द्रकान्त मणि—चन्द्रकान्त । सोममणि । सिताश्मा । प्रस्तरोपल । चान्द्र । चन्द्रमणि । चन्द्रपल । इन्दुकान्त । चन्द्राश्मा । संप्लवोपल । शीताश्मा । चन्द्रिकाद्राव । शशिकान्त । अमृताद्राव ।

स्फटिक मणि—श्वेत रत्न । शैव । स्फटिक । निस्तुषोपल । स्फटिक । स्फाटक । स्फटिकात्मा । स्फाटीक । स्फटिकोपल । स्फटिकोपल । भासुर । शालिपिष्ट । धौतशिल । सितोपल । विमलमणि । निर्मलोपल । स्वच्छमणि । अमररत्न । निस्तुषरत्न । शिवप्रिय । विल्लौरी पत्थर ।

फिरोजा—पेरोज । हरिताश्म । भस्माङ्ग । हरित ।

काँच—काच । कृत्रिमरत्न । पिंगाण । मुकुर । कंच । शीशा ।

(धातु-उपधातु)

लोहा *—सार । शच् । अश्मसार । मुण्डज । कृष्णायस् । आयस् । लोहकान्तक । लौह । लोह । कान्तलोह । कालायस् । शस्त्रालय । शस्त्र । तीक्ष्ण । शम्बक । पित्त । पित्तायस् । निशित । खड्ग । अयः । कान्त । चित्रायस् । लोष्ट । चालज । पिण्डक । शस्त्रक । वर्त्तलौह । तीव्र । अयस्कान्त ।

[नोट—लोहे के कीट को मण्डूर कहते हैं । यह औषधि के काम में आता है] ।

* लोमिन दैत्यों के शरीर से लोहे की उत्पत्ति मानी जाती है ।

ताँबा *—ताम्र । तामा । पवित्र । रक्तधातु । ब्रह्मवर्चस् ।
भासुर । सर्वलोह । तपनेष्ट । अम्बक । अरविन्द । रविलोह ।
रविप्रिय । रक्त । नैपालिक । द्वयष्ट । उदुम्बर । म्लेच्छमुख ।
मुल्प । वरिष्ट । कनीयस । ताम्रक । शुल्ब । द्विष्ट । उडुम्बर ।
शुल । रविसंज्ञक । अर्क । मुनिपित्तल । सूर्याह । लोहितायस् ।
लोहिताप ।

[नोट—ताँबे के कीट को 'तूतिया' कहते हैं । यह औषधि
के काम में आता है ।]

चाँदी †—रजत । रौप्य । खर्जूर । रुक्म । जातरूप ।
शुभ्र । चन्द्रकान्ति । महाधन । वाष्कल । चन्द्रवपु । महावसु ।
कलधौत । लोहराजक । अकुप्य । सौध । विमल । चन्द्रलोहक ।
शुभ । वसुश्रेष्ठा । दुर्दान । रूपा । रूपक । दुर्वर्णक । रूप्य ।
श्वेत । रुचिर । रुधिर । श्वेतक । महाशुभ्र । तप्त रूपक । तार ।
चन्द्रभूति । सित । कलधूत । रंगवीज । चन्द्रहास । इन्दुलोहक ।
राजरंग । दुर्वर्ण । धौत । कुप्य ।

पीतल—पित्तल । आरकूट । कपिलोह । सुवर्णक । रिरि ।
रीरी । रीति । पीतलोह । सुलोहक । ब्राह्मी । राज्ञी । कपिला ।
ब्रह्मरीति । महेश्वरी । पतिकावेर । द्रव्यदारु । रीति । मिश्र ।
आर । राजरीती । क्षुद्रसुवर्ण । सिंहल । पिंगल । पीतनक । लोह ।

* कार्तिकेय के वीर्य से ताँबे की उत्पत्ति है ।

† त्रिपुरासुर वध के समय महादेव जी के वामनेत्र से जो अश्रुपात
हुआ, उससे चाँदी की उत्पत्ति हुई ।

लोहितक । पिंगल लोह । पीतक । पिंग । पाकडुंडी । राजपुत्री ।
ब्रह्माणी । हरिलोह । कांची पीतल । पीतधातु ।

[नोट—पीतल उपधातु है । यह ताँबा और जस्ते के योग से बनता है ।]

काँसा—कांस्य । विद्युत्प्रिय । कंस । ताम्राद्ध । घोष ।
बंगशुल्बज । कंसास्थि । प्रकाश । घंटाशब्द । असुराह्वय । फूल ।
सौराष्ट्रकं । कांसीय । घोरपुष्प । वह्नि लोहक । दीप्तलोहक ।
घोरलोह । दीप्तलोह । कांसक । कांस । ताम्रत्रपुज । दीप्ति ।
काँसी । कस्कुट । फूल ।

[नोट—काँसा उपधातु है । यह ताँबा और राँगा के योग से बनता है ।]

सोना *—स्वर्ण । सुवर्ण । सुबरन । सोन । हाटक ।
पुरट । कञ्चन । काञ्चन । कनक । हेम । हरि । हिरण्य । जातरूप ।
चामीकर । कार्त्यस्वर । शातकुंभ । तपनीय । महारजत ।
अर्जुन । कर्बुर । रुक्म । भर्म । अष्टापद । जाम्बूनद । कलधौत ।
गारुड । गौर । चन्द्र । कुन्दन । कान्ति । सुर । सानसि । अमृत ।
अग्निशिख । अग्निबीज । द्राविड । भूरिपिंजर । गांगेय । करहाटक ।
ऋक्थ । अकुन्य । पिञ्जान । आपिञ्जर । तेज । दीप्त । अग्निभ ।
मनोहर । अग्नि । भास्कर । शतखण्ड । उज्वल । कल्याण ।
अभ्रक । मुख्यधातु । सारुक । चाम्पेय । भरु । अग्निबीज ।
भद्र । गैरिक । लोहवर । ऊर्ध्व । रेकन । कर्चूर । लोहोत्तम ।

* सप्तर्षियों की अत्यन्त सुन्दरी पत्नियों को देखकर अग्निदेव का जो
वीर्य पृथ्वी पर गिरा वह 'स्वर्ण' नाम से विख्यात हुआ ।

भूत्तम । दीप्तक । मङ्गल्य । सौमेरुक । भृङ्गार । जाम्बव ।
 आम्रेय । निष्क । तपनीयक । चण्ड । अय । पेश । कृशन ।
 लोह । मरुत । दत्र । चारुरत्न । पीतक । श्रीनिकेत । भूषणार्ह ।
 सूर्य्यनामक ।

जस्ता—जसद । वंगसदृश । रीतिहेतु । श्वेतपटल ।
 कंसास्थि । जस्त ।

राँगा—रंग । बंग । चक्रसंज्ञ । स्वर्णज । नाग जीवन ।
 मृद्वंग । गुरुपत्र । तमर । नागज । कस्तीर । आलीमक । सिंहल ।
 स्वषेत । नाग । त्रपु । त्रपुष । आप् । हिम । मधुर । कुरूप्य ।
 पिच्चट । पूतिगंध । चिप्पट । राँग । कलई ।

शीशा—सीस । सुवर्णक । चीन । पिष्ट । सिन्दूर कारण ।
 सीसक । सीसपत्रक । नाग । वध्र । योगेष्ट । वर्द्ध । गंडूपदभव ।
 स्वर्णारि । यवनेष्ट । चीर । वध्र । पिच्चट । सुवर्णारि । त्रपु । वध्रक ।
 महाबल । यामुनेष्टक । बहुमल । श्वेतरंजन । जड़ । भुजंगम ।
 उरग । कुरंग । परिपिष्टक । मृदुकृष्णायस । पद्म । तारशुद्धिकर ।
 शिरावृत्त । वयोरंग । चीनपिष्ट । चीनरंग । लेख्य । धातुमल ।
 पार्वत ।

पारा *—पारद । रस । रसराज । रसधातु । रसेन्द्र ।
 महारस । चपल । शिववीर्य्य । सूत । शिवाह्वय । महातेज ।

*पृथ्वी पर महादेवजी का वीर्य गिरा वही संसार में 'पारद' नाम से
 विख्यात हुआ । यह परमौषधि है । निघण्टुरत्नाकर में लिखा है कि
 "रसात् परतरं लिंगं न भूतं न भविष्यति" अर्थात् पारे के समान श्रेष्ठ गुण
 वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा ।

रसलेह । रसोत्तम । सूतराट् । जैत्र । शिवबीज । शिव । अमृत ।
लोकेश । दुर्द्धर । प्रभु रुद्रज । हरतेज । अचिन्तज । अवित्तज ।
खेचर । अमर । देहद । मृत्युनाशक । स्कन्द । स्कान्दांशक ।
देव । दिव्य रस । रसायन श्रेष्ठ । यशोद । सूतक । सिद्धधातु ।
रजस्वल । मूर्त्ति । पार । लोहेश । हेमनिधि । त्रिनेत्र ।
रोपण । स्वामी ।

गन्धक *—गौरी बीज । बलि । गन्धपाषाण । गन्धिक ।
गन्धाश्म । पामात्र । सौगन्धिक । सुगन्धिक । पामारि । गंधी ।
शुल्वारि । गन्धमोदन । वर । पूतिगन्ध । गंध । दिव्यगन्ध ।
सगन्ध । रस गन्धक । कुष्ठारि । क्रूरगन्ध । कीटघ्न । शरभूमिज ।
बलरस । गन्धमोहन । अतिगंध । पामागंध ।

हरिताल †—ताल । पित्तल । पिञ्जर । मनोज्ञ । हरि-
तालक । छत्राङ्ग । काञ्चनरस । गोदन्त । नटमण्डन । निम्बगन्धि ।
पीतक । हरिताल । कम्बूर । पीतन । हरिबीज । सिद्धधातु । पिंजल ।

* गन्धक चार प्रकार का होता है—यथा, सफेद, लाल, पीला
और नीला । सफेद गंधक व्रण आदि के काम में, लाल गंधक सुवर्ण
शुद्ध करने में, पीला पारदादि रसायन कर्म में तथा नीला गंधक सर्व श्रेष्ठ
और दुर्लभ है । यह सब प्रकार के रसायन कर्म में प्रयुक्त होता है ।

† हरिताल दो प्रकार का होता है । यथा—१. पत्र हरिताल वा
स्तबक वा तबकिया हरिताल । २. पिंड वा गोदन्त हरिताल ।

पुराणों के मतानुसार विष्णु के वीर्य से हरिताल, लक्ष्मी के रज से मैन-
सिल, शिव के वीर्य से पारा और पार्वती के रज से गन्धक की उत्पत्ति
मानी गई है ।

लोमहृत । वंशपत्रक । वर्णक । नटभूषण । अल । पीत । गोरोच । चित्राङ्ग । पिंजरक । वैदल । तालक । कनकरस । काञ्चनक । बिडालक । चित्रगंध । पिङ्ग । पिङ्गसार । गौरी ललित ।

अभ्रक*—अबरक । तवक । गिरिजाबीज । निर्मल । अच्द । गिरिजामल । ळ्योम । घन । शुभ्र । बाहु पत्र । घनाह्वक । गिरिज । अमल । गौर्यामल । गरजध्वज । अभ्र । भृङ्ग । अम्बर । अन्तरिक्ष । ख । अनन्त । गगन । गौरीज । गौरीजेय । आम । अबरख । भोडर । भोडल । मुरवल ।

[नोट—आकाश शब्द के जितने पर्याय हैं उनसे भी अभ्रक का अर्थ निकलता है ।]

मुरदासंग—स्वर्णवर्णक । ब्रणघ्न । नागसत्व । वोदार । मुरदाशिंग । वोदारशृंग । वेदारशृंगज ।

[वेदार नामक शृंग पर मुरदासंग उत्पन्न होता है । यह बहुत भारी और चमकीले पीले रंग का होता है, ब्रण आदि के काम में आता है]

रूपामाखी—तारमाक्षिक । माक्षिकश्रेष्ठ । विमल ।

* अभ्रक चार प्रकार का होता है, यथा—पिनाक, दर्दुर, नाम और वज्र । पिनाकाभ्रक खाने से महाकुष्ठ रोग, दर्दुर अभ्रक खाने से मृत्यु, नाग अभ्रक खाने से भगन्दर रोग होता है, तथा वज्राभ्रक के सेवन से सर्वरोग नाश, तरुणता, आयुष्य, बल, महावीर्य, और अत्यन्त पराक्रमी पुत्र की प्राप्ति होती है । वैद्यक मत से वज्र नामक अभ्रक सर्वोत्तम माना गया है ।

श्वेताक्ष । रूपामाक्षि । रौप्यमाक्षिक । रूपामाखी । तारामुखी ।
धातुमाक्षिक ।

[सफेद चमकदार को रूपामाखी और पीले चमकदार को सोनामाखी कहते हैं ।]

सोना माखी—माक्षिक । धातुमाक्षिक । ताप । स्वर्णाह्वय ।
स्वर्णमाक्षिक । सुवर्णमाक्षिक । तापिच्छ । आपीत । ताप्यक ।
पीतमाक्षिक । आवर्त्त । क्षौद्रधातु । माक्षिकधातु । कदम्ब ।
चक्रनामा । तापिंज । स्वर्णवर्ण । हेमद्युति । मधुधातु । अजनामक ।

खपरिया—चक्षुष्य । अमृतोत्पन्न । खर्परी । दार्विका ।
खर्पर । रसक । खर्परिका । तुथ्य । खर्परी तुथ्य । खर्परी तुथ्यक ।
यशदोषधातु । खापरिया । खापर ।

तूतिया—मूषातुथ्य । कांस्यनील । तुथ्यक । शिखिकण्टक ।
तुथ्य । हरिताश्म । नीलांगज । मयूर ग्रीवक । ताम्रगर्भ । अमृतोद्भव ।
मयूर तुथ्य । भृतक । शिखिकण्ठ । नील । तुत्थांजन । वितुन्नक ।
शिखिग्रीव । मयूरक । हेमसार । मृतामिद । तामोपधातु । नीला
थोथा । थोथा ।

[ताम्बे के कीट से भी तूतिया निकलता है]

कौसीस *—कासीस । धातुकासीस । खाचर । शोधन ।
धातुशेखर । पांसुकासीस । केसर । हंसलोमस । शुभ्र ।

* कौसीस दो प्रकार की होती है—१. 'धातुकासीस' जो भस्म के समान अम्ल मृत्तिका होती है, जो प्रायः सफेद या फिरोजी रंग की होती है । २. 'पुष्पकासीस' जो पीली होती है ।

नेत्रौषध । पुष्पकासीस । वत्सक । मलीमस । ह्रस्व । विशद ।
नीलमृत्तिका । हीराकस ।

गेरू (साधारण)—गिरिमृत । गैरिक । रक्तधातु ।
लोहितमृत्तिका । गिरिधातु । गवेधुक । धातु । गिरिमृद्भव ।
वनालक्त । गवेरुक । प्रत्यश्म । गिरिज । गैरेय । ताम्रधातु ।

स्वर्ण गैरिक (गेरू)—सुवर्ण गैरिक । स्वर्णधातु ।
सुरक्त । शिलाधातु । सन्ध्याभ्र । बभ्रुधातु । सुरक्तक ।

हिरौंजी—पाषाण गैरिक । कठिन । ताम्र वर्णक । हिरौंजी ।
पीत गैरिक । सोनगेरू ।

खड़िया (सेल खड़ी)—पाकशुक्ला । शिलाधातु । खटि ।
कठिनी । खड़ी । खटी । खटिनी । खटिका । धवल मृत्तिका ।
श्वेतधातु । पाण्डुमृत्तिका । सितधातु । पाण्डुमृत । कक्खदी ।
वर्णरेखा । वर्णलेखा । मृत्तिकानखा । अनीलाधातु । वर्णलेखिका ।
शुक्लधातु । धातुपल । कठिनिका । लेखनी । मकल । खरियामाटी ।
गौरखड़ी । चाखड़ी ।

मैनसिल—मनः शिला । गोला । मनोझा । नागजिह्विका ।
मनोगुप्ता । रोगशिला । नैपाली । कुनटी । शिला । मनः सिल ।
कुटली । मनोहा । नेपालिका । मनसिल । कल्याणिका । नागमाता ।
रसनेत्रिका । दिव्यौषधि ।

सुरमा * (स्रोतोंजन)—नदीज । बाल्मीक । स्रोतज ।

*सुरमा तीन प्रकार का होता है । १. स्रोतोंजन, २. सौवीराञ्जन ।
और ३. पुष्पाञ्जन ।

जयामल । स्रोतोद्भव । स्रोतोभव । सौवीर । सौवीरसार ।
कपोतांज । यामुन । पीतसारि । वारिभव । कपोतसार । बाल्मीकशीर्ष ।

सुरमा (सौवीराञ्जन)—सौवीरक । पार्वतेय । मेत्रक ।
नीलांजन । कृष्ण । नादेय । स्रोतोज । दुष्प्रद । सुवीरज । चक्षुष्य ।
वारिसम्भव । कपोतक । सुरमा । अंजन । श्वेतसुरमा ।
कालासुरमा ।

सुरमा (पुष्पाञ्जन)—कौसुम्भ । रीतिक । कुसुमाञ्जन ।
रीतिपुष्प । पुष्पकेतु । पौष्पक । सदञ्जन । रीतिकुसुम । माक्षिक ।
चाक्षुष्य । कृमिरसाञ्जन । धातु माक्षिक ।

हिंगुल (ईगुर) *—हंसपाद । रसस्थान । हिंगुल ।
रक्तपारद । हिंगुलि । हिंगुलु । रक्त । मर्कटशीर्ष । दरद । रस ।
उरु । उन्द । कपिशिर्षक । वर्वर । सुरंग । सुनर । रञ्जन ।
म्लेच्छ । चित्राङ्ग । चूर्णपारद । चर्म्मरक । रंजक । रसोद्भव ।
रसगर्भ । मनोहर । चर्म्मर । नानाशृंगारवर्द्धन । सिंगरफ ।
सिंगरिफ । ईगुर । इंगुर । हींगलु । शुकतुण्डक ।

सिंदूर—सिंदुर । सेंदुर । नागज । वीर । रक्त । शिव ।
सन्ध्यारुण । रक्तबालुका । रंगज । बंगज । शृंगारभूषण । अरुण ।

स्रोतोंजन देखने में नीला चमकदार, परन्तु घिसने में गेरू की भाँति
लाल होता है ।

* हिंगुल तीन प्रकार का होता है । (१) चर्म्मर—सफेद रंग का ।
(२) शुकतुण्डक—पीले रंग का, तथा (३) हंसपाद—लाल रंग का
होता है । यही शृंगार के काम में आता है ।

नाग रक्त । नाग सम्भव । रक्तचूर्ण । रक्तबालुक । रक्तशासन ।
भालदर्शन । नागरेणु । सीमन्तक । नागगर्भ । शोण । वीररज ।
गणेशभूषण । सन्ध्याराग । शृंगारक । सौभाग्य । मंगल्य ।
सीसज । सीसोपधातु । अरुण पराग । सौभाग्य चिन्ह । सोहाग ।

शिलाजीत *—शिलाजतु । अद्रिजतु । शैलनिर्यास
गैरेय । अश्मज । गिरिज । शैलधातुज । अर्ध्य । शिलाज । शैल ।
अगज । शैलेय । शीतपुष्पक । शिलाव्याधि । अश्मोत्थ ।
अश्मलाक्षा । अश्मजतुक । जत्वश्मक ।

बच्छनाग-विष †—काकोल । गरल । क्ष्वेड । विष ।

* उष्ण काल में सूर्य की किरणों से तप्त होकर पर्वत धातुओंके सार
को गोंद की भाँति छोड़ते हैं, उसी सार को शिलाजतु वा शिलाजीत कहते
हैं । यह धातुभेद से चार प्रकार का होता है । १. सौवर्ण, २. रजत,
३. ताम्र, और ४. आयस ।

‘सौवर्ण शिलाजीत’ सुवर्ण की खान का सार है, यह लाल रंग का होता है ।

‘रजत शिलाजीत’ चाँदी की खान का सार है, यह पाण्डु (पीले)
रंग का होता है ।

‘ताम्र शिलाजीत’ तँबे की खान का सार है, यह मोर की गर्दन के
रंग का होता है ।

‘आयस शिलाजीत’ लोहे की खान का सार है, यह काले रंग का होता
है । यही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । यह मत “भाव प्रकाश” का है ।

शुद्ध शिलाजीत की यही उत्तम पहचान है कि वह अग्नि में डालने
से लिंगाकार खड़ा हो जाता है और उसमें से धुँआ नहीं निकलता ।

—(निघण्टु रत्नाकर)

† वैद्यक मत से विष दो प्रकार का होता है । एक स्थावर विष है,

दारद । अमृत । सौराष्ट्रिक । शौककेय । ब्रह्मपुत्र । प्रदीपन । नील ।
आहेय । गरद । कालकूट । कसाकूल । हारिद्र । रक्तशृङ्गिक ।
गर । घोर । हालाहल । हलाहल । भुगर । शृङ्गी । जांगल । रस ।
तीक्ष्ण । रसायन । जंगुल । जांगुल । वत्सनाभ । प्राणहर । जहर ।
जीवनाघात । कृषल । जीवनान्तक । प्राणहर । बचनाग । माहुर ।

संखिया *—शतमल्ल । गौरीपाषाण । आखुपाषाण ।
लोहशंकरकारक । सोमलखार । मल्ल ।

फिटकिरी—स्फटी । स्फटिका । श्वेता । शुभ्रा । रंगदा ।
दृढरंगा । रंगदृढा । दृढा । रंगा । स्फटिकारि । स्फटिकारिका ।
रंगाङ्गा । सुरंगा । गतरंगा । फटकिरी ।

चुम्बक—चुम्बक पत्थर । कान्तपाषाण । अयस्कान्त ।
लौहकर्षक ।

गोपी चन्दन—आढ़तकी । सौराष्ट्री । तुवरी । पर्पटी ।
कालिका । सती । सुजाता । काक्षी । पार्वती । मसी ।
मृदाहाया । मृत् । मृत्स्ना । आसङ्ग । सुराष्ट्रजा । मृत्तालक ।

जो खान से उत्पन्न हो, अथवा किसी वृक्षादि के मूल-पत्र-फल-फूल-छाल-
दूध-सार गोंद आदि से उत्पन्न हो, अथवा किसी घातु से उत्पन्न हो, वा
कन्द का हो । दूसरा जंगम विष है, जो साँप, कीट, नेवले, जोंक, मकड़ी,
बिच्छी, मछली, चूहा, कुत्ता, सिंह, व्याघ्र, तेंदुआ, भेड़िया, श्याल, आदि
जन्तुओं के दाँत, मुँह, नख आदि में रहता है ।

*बच्छनाग और संखिया की गणना विष में है और सेहुड़ (थूहर),
मदार (आक), करियारी, धुँघची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा
और अफीम ये नौ उपविष संज्ञक हैं ।

काली । मृत्तिका । कंसोद्भवा । सुरमृत्तिका । स्तुत्या । सौराष्ट्रा ।
सोरठ की मिट्टी ।

बोल (बोर) *—गन्धरस । पिंड । निर्लोह । बर्बररस ।
पौर । सुगन्ध । नालक । रसगन्ध । रस । सौरभ । बर्बर ।
रक्तापह । मुण्ड । सुरस । पिण्डक । विष । महागन्ध । विश्व ।
शुभगन्धक । विश्वगन्ध । व्रणारि । प्राण । गोप । गोस ।
पिण्डगोस । शश । गोसशश । गान्धार । मसिवर्द्धन । बोलज ।
गोपरस । गोपक । पिण्डल । गोल । बीजाबोल । हीराबोल ।

जवाखार—पाक्य । क्षार । यावशूक । यवक्षार ।
यवाग्रज । यवलास । यवशूक । सारक । रेचक । यवनालक ।
तिर्य्य । तीक्ष्णरस । यवनालज । यवज । यवशूकज । यवाह्व ।
यवापत्य ।

सज्जीखार—स्वर्जिकाक्षार । कपोत । स्वर्जिका । स्वर्जि ।
शूलत्रि । सुखवर्चक । सौवर्चल । रुचक । सृज्जिकाक्षार ।
सर्जिका । क्षार । सज्जी । सुनर्चिकक । सुग्नी । योगवाही । स्वर्जिका ।
सुवर्चक । सुत्रिका । सर्जि । सर्जिक्षार । सुखोर्जिक । सुवर्जिक ।
सुवर्चि । सुवर्चा ।

सुहागा—टङ्क । लोहद्रावी । सुभग । धातुवल्लभ ।
पाचनक । मालती तीरज । लोहश्लेषण । रसशोधन । द्रावक ।

* यह लाल रंग का कड़ुवा पदार्थ गोंद के प्रकार का होता है । प्रसूता
स्त्रियों को खिलाया जाता है । इसके खाने से गर्भाशय तथा योनि दोष दूर
हो जाते हैं ।

रसाधिक । रसत्र । वर्तुल । कनक क्षार । मलिन । टंकण । रङ्गद ।
स्वर्णपाचक । टङ्ग । धातुसन्धिकर । सौभाग्य । श्वेतटंकण ।
टंकणक्षार ।

सेंधा नोन—सैन्धव । सिन्धुद्रव । माणिमन्थ । नादेय ।
लवणोत्तम । सितशिव । सिन्धूज । सिन्धुपल । वशिर । सिन्दुदेशज ।
माणिबन्ध । सिन्धुमन्थज । सिन्धुलवण । सिन्धूभव । शिव ।
सिद्ध । शिवात्मज । पथ्य । शुद्ध । सेंधा नमक ।

साँभर नोन—शाकम्भरीय । वसुक । रौमलवण ।
रौमक । गड़ाख्य । गड़लवण । शुभ्र । पृथ्वीज । गड़देशज ।
गडोत्थ । महारम्भ । साम्भर । सम्बरोद्भव । सामर ।

समुद्री नोन—सामुद्रिक । त्रिकूट । वशिर । लवणाब्धिज ।
वासर । कडक । सागरज । शिव । सामुद्रज । समुद्रनोन । पाँगा ।

संचर नोन (कटीला नोन)—विड । विडलवण ।
धूर्त । कृतक । विडगंध । काललवण । द्राविडक । खण्ड । क्षार ।
आसुर । सुपाक्य । खण्डलवण । कृत्रिमक । द्राविडक । पाक्य ।
विट । विरिया साँचर नोन । कटीला नोन ।

काला नोन—अक्ष । सौवर्चल । रुच्य । दुर्गन्ध । रुचक ।
शूलनाशन । कृष्णलवण । तिलक । हृद्यगन्ध । कोद्रविक । पाक्य ।
मेचक । चौहर कोड़ा । सोचर नोन ।

काँचिया नोन—त्रिकूट । पाक्याह्व । लवण । नील ।
काचसंभव । काचलवण । काचोद्भव । काचसौवर्चल । नीलक ।
पाकजका चेत्थ । ह्यगन्ध । काललवण । कुरुविन्द । काचमल ।
कृत्रिम । नीलकाचोद्भव ।

खारी नोन—औषरक । सार्वगुण । सार्वसंसर्गलवण ।
 ऊषरज । साम्भार । बहुलगुण । मिश्रक । ऊषरलवण । खारी ।
 खारी नूत ।

नौसादर—नरसार । क्षारश्रेष्ठ । अमृतक्षार । सादर ।
 चूलिकालवण । वज्रक्षार । विदारन । बजरखार ।

शोरा—सूर्यक्षार । अर्कक्षार । ताक्ष्य । तीक्ष्णरस । सोरा ।
 सुवर्चिका । सार्वसहा । औरिण । शिलाजतु । सूरखार । वाजी ।
 सूर्याखार ।



४. वनादि वर्ग

वन—अटवी । अरण्य । विपिन । कानन । कान्तार ।
जंगल । कुपथ । दुर्गमपथ । काटिका । कक्ष्यक । कुन्दिलवार्क्ष ।
वनी । गहन । घन । कच्छ । दुर्गम ।

महावन—महारण्य । अरण्यानी । महाटवी । तृणाटवी ।

उपवन—कृत्रिमवन । चित्रविपिन । आक्रीडा । उद्यान ।
बाग । बगीचा । बाटिका । निष्कुट । आराम । पुष्पोद्यान ।
पुष्पवाटिका । फुलवारी । कृतारण्य ।

पौधा—क्षुप । ह्रस्वशाखा । शिफ । लघुवृक्ष । पेड़ ।

वृक्ष—विटप । पादप । अगम । द्रु । द्रुम । कुट । तरु ।
शाल । शाखी । महीरूह । अनोकह । पलाशी । सुखआल । पत्री ।
दली । छदी । फली । इकपद । वर्हि । मधु । अनुत्त । नग ।
भूरूह । अद्रि । अग । कुज । विनद । पटल । द्विप । विरवा ।
पर्णा । अगल्ल । अंघ्रिप । दरख्त । पेड़ ।

लताबौर—बली । बल्लरी । वीरुध । व्रतति । लता ।
गुल्मिनी । उलप । प्रतान ।

बीज—बीज । बीया । दाना । बीजा ।

जड़—मूल । शिफा । अंधि । पाल । जटा ।

अंकुर—अंकुआ । अँखुआ । नवोद्भिद् । प्ररोह । गाभ ।

अँगुसा । डाम । कल्ला । कनखा । कोपल । आँख । प्रवाल ।

मंजरी—वाल । वाली । पुष्पिल ।

कली—मुकुलित पुष्प । कलिका । जालक । कोरक ।
मुकुल । कुहुमल । अस्फुटित पुष्प ।

फूल—पुष्प । पुहुप । सारंग । कुसुम । प्रसून । सुमन ।
सुम । समद । फलपिता । मञ्जरी । सुमनस् । सून । प्रसव ।
मणीचक ।

फूल का गुच्छा—गुच्छ । गुच्छा । गुच्छक । स्तबक ।
गुलुच्छ ।

पुष्प-रस—मकरन्द । मधु । पुष्पद्रव । पुष्पसार ।
पुष्पस्वेद । पुष्पज । पुष्पनिर्यासक । पुष्पाम्बुज ।

पुष्प-रज—रेणु । रज । पराग । धूलि ।

पत्र—पत्ता । पत्ती । पर्ण । दल । छद् । छदन । पल्लव ।
किसलय । पात । विसल । वहँ । पलास । विटपाभरण । पान ।
पतत्र ।

शाखा—डाली । साखा । स्कन्ध । काण्ड ।

टहनी—वृन्त । प्रशाखा ।

काँटा—काँट । कंटक । पँखुरी ।

छाल—वलकल । बकला । छिलका । छल्ली । त्वक् ।
त्वचा । ओलक । चोच । वल्क ।

बरोह—जटा । शिफा ।

गोंद—सार । मज्जा । लश । खपुर ।

फलयुक्त वृक्ष—सफल । फली । फलवान । फलिन ।
फलित वृक्ष ।

फलहीन वृक्ष—अफल । बन्ध्य । अवकेशी ।

फूला हुआ वृक्ष—कुसुमित । पुष्पित । प्रफुल्ल । उस्फुल्ल ।
संफुल्ल । फुल्ल । व्याकोश । विकच । स्फुट ।

कोटर—निष्कुह । निष्कुट ।

काठ—दारु । काष्ठ । शंकु । स्थाणु ।

जलाने की लकड़ी—ईधन । इध । इध्म ।

थाला—आलवाल । थावल । थाल ॥



५. धान्य वर्ग

अन्न—धान्य । अनाज । नाज । दाना । गल्ला । अमृत ।
सस्य । लवेटिका । वीज्य । बीज । त्रीहि । वरेणुक । त्रीहय ।
शाली । भोग्य । भोगार्ह । आद्य । जीवन धन । स्तम्बकारि ।
जीव साधन । स्तम्बकरि ।

धान (चावल) *—(देखो 'अन्न')

रक्तशालि । कलम । पाण्डुक । शकुनाहृत । सुगन्धक ।
कर्दमक । दूषक । पुष्पाण्डक । पुण्डरीक । दीर्घशूक । साठी ।
काञ्चनक । तण्डुल । तन्दुल । अक्षत । चाँवल । चाउर ।

[नोट—ये नाम साठी चाँवल के हैं । 'शालिग्राम
निघण्टु' के अनुसार साठी चाँवल १८ प्रकार के हैं, उनके
नाम ये हैं—रक्तशाली । महाशाली । कलमा । शष्टिका ।

* धान की अधिक खेती बंगाल में होती है । वहाँ इसके तीन भेद
हैं—आमन (अगहनी), आउस (भँदई) और बोरो (जेठी) । महीन
चाँवलों के भेद—बासमती, लटेरा, रामभोग, रानीकाजर, तुलसीबास,
मोतीचूर, समुद्रफेन, कनकजीरा, स्यामजीरा । साधारण धान—बगरी,
दुद्धी, साठी, सरमा, रामजवाइन ।

खंजरीटा । पसाही । जरिका । कपिञ्जला । सौन्धी । शूकला । विलवासी । गरुड़ा । कचोरका । रुक्मवन्ती । कलमा (दूसरा) वित्त्वजा । मागधी । पीता । प्रान्त भेद से चाँवलों के अगणित प्रकार हैं । कुल के नाम देने से एक अलग ही ग्रन्थ बन जायगा] ।

जव (जौ)—यव । मेध्य । सितशूक । दिव्य । अक्षत । कंचुकि । धान्यराज । तीक्ष्णशूक । तुरगप्रिय । शक्तु । ह्येष्ट । पवित्रधान्य । शितशूक । ह्य प्रिय । यवक । श्वेतशुंग । प्रवेट । शीतशूक ।

गोहूँ—गोधूम । बहुदुग्ध । अरूप । म्लेच्छ भोजन । क्षीरी । निस्तुष । रसाल । सुमन । सुमना । अपूप । निस्तुषक्षीर । श्लेष्मल । गोहूँ ।

चना—चणक । हरिमन्थ । वाजिमन्थ । जीवन । चण । हरिमन्थक । हरिमन्थज । सुगंध । कृष्णचंचुक । बालभोज्य । वाजिभक्ष्य । कंचुकी । बालभैषज्य । सकलप्रिय । छोला । बूट ।

मटर—कलाय । केराव । मुण्डचणक । हरेणु । रेणुक । सतीलक । खण्डिक । त्रिपुट । अतिवर्तुल । शमन । नीलक । कंटी । सतील । सतीन । हरेणुक । सतीनक ।

उड़द (उर्द)—उरदी । माष । कुरु विन्द । धान्यवीर । वृषांकुर । मांसल । बलाढ्य । पित्र्य । पितृभोजन । बीजरत्न । बली ।

लोबिया—राजमाष । महामाष । चपल । चवल । वर्वट । मरुत्कर । द्विजसप्त । नीलमाष । नृपमाष । नृपोचित । सितमाष ।

दीर्घवीज । निष्पावी । सुकुमार । दीर्घशिम्बी । क्षुधाभिजनक ।
लोविया । वोड़ा । चौरा ।

मसूर—मसूरिका । रागदालि । मङ्गल्य । पृथुवीजक ।
सूर । कल्याणवीज । गुरुवीज । मसूरक । मंगल्यक । मसुर ।
त्रीहिकाञ्चन । गभोलिक । ताम्बूलराग । हालासक । मसुरा ।
मसूरी । मसूरि । मंगल्या । मांगल्या ।

मूँग—मुग्द । सूपश्रेष्ठ । वर्णाहं । रसोत्तम । मुक्तिप्रद ।
ह्यानन्द । सुफल । वाजिभोजन ।

रहर—अरहर । अड़हर । आढ़की । तुवरी । बर्या ।
मृत्ताल । काक्षी । मृत्तालक । करवीरभुजा । वृत्तवीजा । सुराष्ट्रज ।
पीतपुष्पा । मृत्ना । तुवरिका । शणपुष्पिका ।

मोठ (मोथी)—मकुष्ठक । मकुष्ठ । वनमुग्द । अमृत ।
कृमिलक । अरण्यमुग्द । बल्लीमुग्द । मपष्ठ । राजमुग्द । वरक ।
मुकुष्ठक । निगूढक । कुलीनक । खण्डी । मुग्दष्टक । मुग्दष्ट ।
मुकुष्ठ । मयूष्ठ । मयष्ठक । मयष्ठ । मद्यक । मयुष्ठक । मयुष्ठ ।
वनमूँगिया ।

सावाँ—श्यामाक । श्यामक । श्याम । त्रिबीज । समा ।
अविप्रिय । सुकुमार । राजधान्य । तृण वीजोत्तम ।

कोदव (कोदो)—कोद्रव । कोरदूष । कारेदूषक ।
कुद्रव । कोरदुष्क । कोदार । कोदाल । कुदाल । मदनाग्रक । कोद्रव ।

मक्का—मकाई । मकाय । महाकाय । कटिज । कांडज ।
शिखालु । संपुटांतस्थ । मुट्टा । जोन्हरी ।

बाजरा—बजरी । बर्जरी । बजड़ी । नाली । नालिका । नील सत्य । साजक । अग्रधान्य । वर्जरीका । नीलकणा ।

ज्वार—ललिता । क्रोष्टुपुच्छा । श्री खंडी । सुगंधिका । कृष्णा । भाद्रपदी । मण्डा । जूर्णका । रक्तिका । यावनाल । श्वेता । कुञ्जिका । जुआर । (छोटी जोन्हरी के नाम से भी प्रसिद्ध है)

केसारी—खेसारी । कसूर । कस्सा । त्रिपुट । संडिक ।

ककुनी—कंगु । प्रियंगू । प्रियंगु । कंगुका । पीत तंडुल । कंगू । कंगुनीका । कंगूनी । चीनक । काँगनी । कँगनी । काकुन ।

[तृणान्न]

तीनी (तिन्नी)—नीवार । तिली । अरण्य धान्य । तीली । मुनिधान्य । तृणोद्भव । तृणधान्य । अरण्यशाली । प्रसाधिका । देवधान ।

कूटू—फाफर । कुलू । काटू । तुम्बा । कालातुम्बा । कसपत । कोटू ।

साबूदाना—सागू । सागूदाना ।

[अंग्रेजी शब्द “सैगो” से बना है । यह ताड़ के समान वृक्ष होता है ।]



६. तिलादि वर्ग

तिल—होमधान्य । पवित्र । पितृतर्पण । पापघ्न । जटिल ।
पूतधान्य । वनोद्भव । स्नेहफल । पूरफल । तैलफल ।

सरसों—सर्षप । कटुकस्नेह । भूतघ्न । रक्षिताफल ।
उग्रगंध । ग्रहघ्न । तन्तुभ । कदम्बक । सरिषप । कदम्बद ।
विम्बट । कदम्ब । तन्तुक । कटुस्नेह । राजक्षवक ।

राई—राजक्षवक । कृष्ण । तीक्ष्णफला । राजिका । राज्ञी ।
कृष्ण सर्षपा । राजसर्षप । कृष्णिका । सूरी । मुष्टक । व्यष्टक ।
कटुक । क्षव । क्षुताभिजनन । क्षुधाभिजनन । लाई । राजी ।
तीक्ष्णगन्धा । क्षुज्जनिका । आसुरी । कृमिक । कटु । असुरी ।
काकोदुम्बरिका । रक्तिक । रक्तसर्षप । अतितीक्ष्णा । मधुरिक ।
क्षवक । क्षुतक । ज्वलन्ती । ज्वलत्प्रभा ।

अलसी (तीसी)—अतिसी । अतीसी । पिच्छिला ।
देवी । उमा । मदगन्धा । मदोत्कटा । क्षुमा । हैमवती । सुनीला ।
नीलपुष्पिका । चणका । क्षौमी । रुद्रपत्नी । सुवर्चला । नीलपुष्पी ।
पार्वती । मसृणा । तैलोत्तमा । तीसी । मसीना ।

बोरें—वरटा । वरटी । कुसुमबीज । कुसुम फल । वरट्टिका ।

रेंडी—अरण्ड । एरण्ड । व्याघ्रपुच्छ । चित्रक । इष्ट ।
 त्रिपुटीफल । पंचाङ्गुल । शूलशत्रु । वातारि । दीर्घदन्तक । मंड ।
 रुचूक । गंधर्वहस्तक । उरुवुक । चंचुक । वर्द्धमान । एरण्डक ।
 अमंगल । तुच्छद्रु । ब्रणहा । त्रिपुटी । व्याघ्रदल । वुक । अमंड ।
 आमंड । व्यडम्बन । कान्त । तरुण । शुक्ल । दीर्घपत्रक ।
 चित्रबीज । स्नेहप्रद । इष्ट ।

तैल—स्नेह । सनेह । अभ्यञ्जन । म्रक्षण । तेल ।

खली—खरी । पिंडी । तिलपिण्डी । पिण्डा । पिण्याक ।
 पीना ।



७. शाक-भाजी वर्ग

बथुआ—बस्तूक । वास्तुक । क्षारपत्र । शाकराट् ।
पांशुपत्र । शाकश्रेष्ठ । शाकवीर । कंकेल । वास्तु । हिलमोचिका ।
बसुक । राजशाक । घनाघन ।

[नोट—लाल पत्ती के बथुआ के पर्याय—चिल्ली ।
चिल्लिका । तुनी । अग्रलोहिता । मृदुपत्री । क्षारदला । क्षारपत्रा ।
महदला ।

नोनियाँ—लोणा । लोणी । वृहल्लोणी । घोलिका ।
लोनी । कुलफा । पथरी । अश्मरी ।

[नोट—ये ही पर्याय 'कुलफा' के लिये भी प्रयुक्त हो
सकते हैं ।]

मरसा—मारिष । वाष्पक । मार्ष ।

चौराई—कंचट । पानीयतण्डुलीय । चौलाई । जलज ।

सोया—शतपुष्पादल । शतपुष्पिका । सितच्छत्रा ।
अतिच्छत्रा । मधुरा । मधुरिका । अवाक पुष्पी । कारवी । शताक्षी ।
शताह्वा । छत्रा । मिशी । मिसी । माधवी । घोषा । तालपर्णी ।
तालपर्णी । शालेया । शीतशिवा । शालीना । वनजा । पुष्पिका ।
सुपुष्पी । सुरसा । बल्या ।

पालक—पालक । पालंक्या । मधुरा । क्षुरपत्रिका । सुपत्रा । स्निग्धपत्रा । ग्रामिणी । ग्राम्यवल्लभा । क्षुरिका । वास्तुकाकारा । पालकी ।

पोय (पोई)—उपोदकी । कलम्बी । पिच्छिला । पिच्छिलच्छदा । मोहिनी । मदशाक । विशाला । बलिपोदकी । उपोदिका । उपोती । वृश्चिक प्रिया । अयोदिका । पूतिका ।

मेथी—मेथिका । मेथिनी । दीपनी । बहुपत्रिका । वेधनी । गन्धबीजा । ज्योति । गन्धफला । बहुरी । चन्द्रिका । मन्था । मिश्रपुष्पा । कैरवी । कुंचिका । बहुपर्णी । पीतबीजा । मुनीन्द्रिका ।

[नोट—ये ही शब्द मेथी के बीज के भी पर्याय हैं]

पेठा—कूष्माण्ड । पुष्पफल । पीतपुष्प । वृहत्फल । तिमिष । ग्राम्यकर्कटी । कुष्माण्डक । कर्कारू । शिखिवर्द्धक । कुम्हड़ा । कोंहड़ा । कुष्माण्डी । सुफला । कुंचफला । नागपुष्पफला ।

[नोट—ये सफेद कुम्हड़े के नाम हैं]

कुम्हड़ा—कूष्माण्ड । पीत कूष्माण्ड । पीत पुष्पा । ग्राम्या । पीतफला । गुणयोगफला । लाल पेठा । मिलया कद्दू । काशीफल । सफुरिया कुमार ।

लौकी (कद्दू)—अलाबू । तुम्बी । तुम्ब । तुम्बक । तुम्बा । पिण्डफला । महाफला । आलाबू । एलाबू । लाबु । लौआ । लाबुका । कदुआ ।

[नोट—यह दो प्रकार का होता है, एक लम्बा और दूसरा गोल]

तितलौकी—कटुतुम्बी । पिण्डफला । राजपुत्री ।
 नृपात्मजा । फलिनी । तिक्ततुम्बी । तिक्तका । कटुतिक्तका ।
 इक्ष्वाकु । कटुकालावु । कटुफला । दंतफला । तुम्बिका । तुम्बी ।
 महाफला । क्षत्रियवरा । कटु तुम्बिका । कडुवी तोंवी ।

ककड़ी—कर्कटी । लोमशी । व्यालपत्रा । बृहत्फला ।
 व्यालपत्री । लोमशा । तोयफला । स्थूला । हस्तिदन्त फला ।
 झर्दापनिका । पीनसा । मूत्रला । मूत्रफला । त्रपुषा । त्रपुषी ।
 हस्तपर्णी । लोमश काण्डा । बहुकन्दा । चिर्भटी । कर्कटाक्ष ।
 शान्तनु । बालुंगी । इर्वारु । उर्वारु ।

क्षीरा—त्रपुष । कंटकीफल । सुधावास । सुशीतल ।
 पीतपुष्पा । काण्डालु । कंटालु । त्रपुकर्कटी । बहुफला । कंटकिलता ।
 कोषफला । तुंदिलफला । सुधावासा । क्षीरा । बालमखीरा ।

फूट-ककड़ी—मृगाक्षी । श्वेतपुष्पा । मृगेर्वारु । चित्रा ।
 मृगादनी । चित्रवल्ली । बहुफला । कपिलाक्षी । मृगेक्षणा । पथ्या ।
 विचित्रा । मृगचिर्भटा । मरुजा । चिर्भिट । देवी । कुंभसी ।
 कटकला । लघुचिर्भटा । भकुर । कचरिया । सेंध । फूट ।
 ककड़ी । गोरख ककड़ी ।

खरबूजा—दशांगुल । खर्बूज । फलराज । अमृताह ।
 षडभुजा । मधुफला । षड्रेखा । वृत्तकर्कटी । तिक्ता । तिक्तफला ।
 मधुपाका । वृत्तेर्वारु । षण्मुखा ।

तरबूज—कालिंग । कृष्णबीज । कालिंद । सुवर्त्तुल ।
 मांसफल । चित्रफल । चित्रवल्लिका । चित्र । मधुरफल । वृत्तफल ।

णाफल । मांसल । अल्प प्रमाणक । सुखाश । राजतिनिष ।
लतापनस । नाटाम्र । मेट । शीर्णवृन्त । बृहद्रोल । सेट ।
गोडुम्ब । रक्तबीज । चेलान । मूलत्र ।

तोरई—कोशातकी । स्वादुफला । सुपुष्पा । कर्कोटकी ।
पीतपुष्पा । धाराफला । दीर्घफला । सुकोषा । धामार्गव । जालिनी ।
कृतवेधना । राजकोशातकी । राजिमफला ।

नेनुआ—महाकोशातकी । हस्तिघोषा । महाफला । घोषक ।
धामार्गव । ऐभी । महत्पुष्पा । सपीतिका । हस्तिपर्ण । घीयातोरई ।

चिचिंड़ा—चिचिंड । श्वेतराजी । सुदीर्घ । गृहकूलक ।
चिचुंड । वेश्यकूल । वृहत्फला । अहिफला । दीर्घफला । चचेड़ा ।
चीनकर्कटिका । चिचड़ा ।

परवल—पटोल । राजपटोल । स्वादुपटोल । स्वादु ।
स्वादिष्टा । जनवल्लभा । राजपूर्वा । सुशाकी । स्वादुपत्रफल ।
पर्वरा । परोरा । परवर ।

कुन्दुरू—बिम्बी । बिम्बा । बिम्बाफल । बिम्बक ।
बिम्बजा । रुचिरफला । तुंडिकेरी । तुंडी । झंडिकेशी । कर्मकरी ।
पीलुपर्णी । बिम्बिका । कन्दूरो । ओष्ठी । रक्तकला ।

खेवसा—कर्कोटकी । पीतपुष्पी । महाजाली । मनोज्ञा ।
मनस्विनी । अवन्ध्या । बोधनाजाली । ककोड़ा ।

करेला—कारवेली । वारिवल्ली । बृहद्वल्ली । चिरिपत्र ।
करका । कटिलका । सूक्ष्मवल्ली । तोपवल्ली । कण्डूर । कांडकटुक ।
पटु । सुकाण्ड । उग्रकाण्ड । सुषवी । करेली ।

ढेंडसा—डिंडिश । रोमशफल । मुनिनिर्मित । ढेंडश । ।

भिंडी—भेंडा । भिंडातिका । भिंड । भिंडक । क्षेत्रसंभव ।

चतुष्पद । चतुपुण्ड्र । सुशाक । पिच्छिल । भिंडीतक । अस्त्रपत्रक ।
करण । वृत्तबीज । भिंडा ।

बैगन (भाँटा)—वार्त्ताकी । कण्टवृन्ताकी । कंटालु ।

कंटपत्रिका । मांसलफला । निद्रालु । वृन्ताकी । महोटिका ।
चित्रफला । कंटकिनी । महती । कटफला । मिश्रवर्णफला ।
नीलफला । रक्तफला । नृपप्रियफला । सिंही । भंटाकी । वार्त्ता ।
दुष्प्रधर्विणी । वातिकुण । शाकविल्व । राजकुष्माण्ड । वङ्गण ।
अङ्गण । वेर । नीलवृषा । भांटिका । वृत्तान्तक । नीलकंटका ।
भटा । बैंगन । भंटा ।

ग्वालिन—ग्वार की फली । गोरणी । दृढबीजा ।

वाकुची । निशान्ध्यघ्नी । सुशाका । वक्रशिम्बो । गुआलिनी ।
ग्वारिणी । गोरक्षफलिनी ।

सेम—अंगुलिफला । नखनिष्पाविका । निष्पावी । ग्राम्या ।

वृत्तनिष्पाविका । नखपुंजफला । अशना । कपिकच्छुफला ।

साहिंजन—शोभांजन । शिशु । तीक्ष्णान्धक । सुपत्रक ।

मधुगुंजन । मोचक । बहुमूल । शुभांजन । कालीवक । उग्र ।
कोमल पत्रक । दंशमूल । उपदंश । क्षमादंश । कटुकन्द । आक्षीव ।
गंध । गंधक । सैजना ।

कचनार—कांचनार । कोविदार । कुदाल । कुदार ।

कुण्डली । कुली । आस्फोट । उद्दालक । चमरी । स्वल्पकेसर ।
कांचनाल । कबूँदार । पाकारि । आश्मन्तक ।



८. मूल-कन्द वर्ग

लहसुन—रसोन । अरिष्ट । स्लेच्छकन्द । महौषध । शुक्रकन्द । महाकन्द । वातारि । दीर्घपत्रक । रसुन । गृंजन । रसोनक । कटुकन्द । राहूच्छिष्ट । राहूत्सृष्ट । भूतन्न । उग्रगंध । यवनेष्ट । लहशुन । लहसन । काँदा ।

प्याज—राजपलाण्डु । यवनेष्ट । नृपाह्वय । राजप्रिय । महाकन्द । दीघपत्र । रोचक । नृपेष्ट । नृपकन्द । रक्तकन्द । राजेष्ट । पलाण्डु । पियाज ।

मूली—मूलक । हरिपर्ण । भूमिकाक्षार । नीलकंठ । महाकन्द । रुचिष्य । हस्तिदन्तक । राजालुक । करुकन्दक । हस्तिदन्त । मूलाह्व । दीर्घमूलक । दीर्घपत्रक । मृक्षार । कन्दमूल । सित । शंखमूल । रुचिर । दीर्घकन्दक । कुंजर । क्षारमूल । शिम्बीफल ।

बड़ी मूली—चाणक्यमूलक । वानेय । विष्णुगुप्तक । स्थूलमूल । महाकन्द । कौटिल्य । मरुसम्भव । शालामर्कट मिश्र । मूला । मूलक ।

गाजर—गर्जर । गृंजन । नारंगवर्ण । पिण्डमूल । पीतकन्द । सुमूलक । स्वादुमूल । सुपीत । नारंग । पीतमूलक । पिण्डीक । गजीड ।

सलजम (गोलगाजर)—शिखीमूल । यवनेष्ट । वर्तुल । ग्रन्थिमूल । शिखाकन्द । कंद । डिंडीरमोदक ।

सूरन—सूरण । कन्द । जिमीकन्द । ओल्ल । कन्दल ।
 अर्शोत्र । ओल । कंठाल । कंडुल । कंदी । सुकन्दी । स्थूलकन्दक ।
 दुर्नामारि । सुवृत्त । वातारि । अर्शारि । कन्दशूरण । तीव्रकण्ठ ।
 कदाह । कन्दवर्द्धन । बहुकन्द । रुच्यकंद । सूरणकन्द ।
 भूकन्द ।

[नोट—सूरन सभी कन्दों में श्रेष्ठ माना जाता है, बवासीर-
 रोग का नाशक है ।]

लाल कन्द—रक्तकन्द । रक्तपिण्डालु । रक्तालु ।
 रक्तपिण्डक । लौहित । रक्तकन्द । लोहितालु ।

शकरकन्द (सफेद)—पिण्डीतक । पिण्डकन्द ।
 रोमशकन्दक । कन्दग्रन्थि । पिण्डालु । पिच्छल । स्वादुकन्दक ।
 काँदू । शकरकंदी । रतालू । कंदा ।

अरबी (घुइयाँ)—आलुकी । आलुक । गजकर्ण ।
 हस्तिकर्ण । महापत्रालुक । तीक्ष्णकन्द । दीर्घनाल । घुइयाँ । आलू ।
 गजकर्णालु ।

[ये ही शब्द 'बंडा' के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

आलू—शुभ्रालु । महिषकन्द । लुलायकन्द । शुक्लकन्द ।
 सर्पाख्य । बनवासी । विषकन्द । नीलकन्द ।

सुथनी—मध्वालुक । मध्वालू । रोमालुकी ।

कसेरू—कसेरू । गुंडकन्द । क्षुद्रमुस्ता । कसेरुका ।
 सूकरेष्ट । सुगन्धि । सुकन्द । कसेरुक । राजकसेरुक ।



१. फल वर्ग

आम—आम्र । रसाल । सहकार । अतिसौरभ । कामाङ्ग । मधुद्रुत । माकन्द । पिकवल्लभ । चूत । चूतक । अम्र । फलश्रेष्ठ । अमृतफल । अमृत । मृषालक । षड्पदातिथि । वसन्तद्रु । पिकप्रिय । स्त्रीप्रिय । अलिप्रिय । गन्धवन्धु । शरेष्ट । पिकवन्धु । मदिरासख । केशवायुध । कोषी । कामशर । कामवल्लभ । मदाढ्य । मन्मथावास । सुमदन । प्रियम्बु । शुकप्रिय । मोदाख्य । कीरेष्ट । भृंगाभीष्ट । नूत ।

कलमी आम—राजाम्र । राजफल । स्मराम्र । मधुर । कोकिलोत्सव । टंक । कोकिलानन्द । कामेष्ट । नृपवल्लभ । आम्रात । कामाह्व । राजपुत्रक ।

आमडा—आम्रातक । पीतनक । कपिचूत । अम्लवाटक । वर्षपाकी । कपिचूड । तनुक्षीरी । कपिप्रिय । पीतन । कपीतन । मधुराम्लक । अम्रवाटिक । भृंगीफल । रसाढ्य । तनुक्षीर । अम्बरातक । अम्बरीष । आम्रात । अध्वगभोग्य । मर्कटाम्र । तुङ्गी । अमरा । आमला ।

अनार—दाडिम । दाडिमीसार । कुट्टिम । फलषाडव । करक । रक्तबीज । सुफल । दन्तबीजक । मधुबीज । कुचफल ।

शुकवल्लभ । मणिबीज । बल्कफल । वृत्तफल । पिण्डपुष्प ।
दाडिम्ब । पर्वरुट् । स्वाद्वम्ब । पिण्डीर । फलाशाडव । मुखवल्लभ ।
रक्तपुष्प । डालिम । शुकादन । फलसाडव । सुनील । नीलपत्र ।
नीलपत्रक । लोहितपुष्पक ।

केला—कदली । सुफला । रंभाफल । मोचा । रंभा ।
वारणवल्लभा । सुकुमारा । चर्मण्वती । तत्पत्री । नरौषधि ।
वारणवुसा । अंशुमत्फला । काष्ठीला । कदल । वारवुषा ।
वारणवुषा । सकृत्फला । गुच्छफला । हस्तिविषाणी । गुच्छदन्तिका ।
निःसारा । राजेष्ट्रा । बालकप्रिया । ऊरुस्तम्भा । भानुफला ।
वनलक्ष्मी । कदलक । मोचक । रोचक । लोचक । वारवृषा ।
आयतच्छदा । तन्तुविग्रहा । अम्बुसारा ।

नारियल—नारिकेल । दृढफल । लाङ्गली । कूर्चशीर्षक ।
जुङ्ग । स्कन्धफल । तृणराज । सदाफल । नारिकेर । नाडिकेल ।
रसफल । सुतुङ्ग । कूर्चशेषर । दृढनीर । नीलतरु । मङ्गल्य ।
उच्चतरु । स्कन्धतरु । दाक्षिणात्य । दुरारुह । शिराफल ।
त्र्यम्बकफल । करकाम्भा । पयोधर । मुत्कुण । कौशिकफल ।
फलमुण्ड । जटाफल । मुण्डफल । विश्वमित्रप्रिय । नाडीकेल ।
नारिकेर । सुभङ्ग । फलकेशर । वरफल । महाफल । सदाफल ।
तोयगर्भ । त्र्यक्षफल । खोपरा ।

खजूर (पिंडखजूर)—पिंड खजूरिका । पिंडखजूरी ।
राजजम्बू । पिण्डी । फलमुद्गरिका । दीप्या । मधुरस्रवा ।
सपिण्डा । फलपुष्पा । स्वादुपिंडा । ह्यभक्षा । दुष्प्रधर्षा । कषायी ।
हरिप्रिया । खजू । खरस्कन्धा । निःश्रेणी ।

ताड़ी-फल—मदाढ्य । दीर्घपादप । ध्वजद्रुम । आसवद्रुम ।
गुच्छपत्र । पत्री । तालफल । ताड़ी । पत्रला । फलपाकान्त ।
तृणद्रुम । तृणराज । ताल । लेख्यपत्र । भूमिपिशाच । दीर्घतरु ।
तन्तुगर्भ । मधुरस । चिरायु । शतपर्वा । द्रुमेश्वर । तरुराज ।

सेव—महाबदर । मुष्टिप्रमाण । बदर । सिंचितिकाफल ।
सेवित । सेवि ।

नाशपाती—अमृतफल । रुचिफल । महाबदर । नाशपाती ।

अमरूद—पेरुक । मांसल । पृथक् त्वच । मृदुफल ।
पीतफल । तुवर । मधुराम्लक । अमृतफल । सफरी-सफेद । वीह ।
सफरी-लाल । अमरूत ।

नारंगी—नारंग । नागरंग । त्वक्सुगन्ध । मुखप्रिय ।
नार्थग । नागर । ऐरावत । नागरुक । चक्राधिवासी । किर्मिर ।
सुरंग । किर्मिर त्वक् । वक्रवास । ओगरंग । वरिष्ठ । गन्धपत्र ।

नीबू (कागज़ी)—निम्बुक । अम्लजम्बीर । वहिबीज ।
वहीदीप्य । अम्लसार । दन्ताघात । शोधन । जन्तुमारी । निम्बूक ।
रोचन । मातुलुंग ।

नीबू (बिजौरा)—बीजपूर । मातुलुंग । फलपूरक ।
अम्लकेशर । बीजपूर्ण । सुकेशर । बीजक । सुफूर । बीजफलक ।
जन्तुघ्न । दन्तुरच्छद । पूरक । रोचनफल । रुचक ।

नीबू (जम्भीरी वा कमला)—जम्बीर । दन्तशट ।
जम्भ । जम्भीर । जम्भल । रोचनक । मुखशोधी । जाड्यारि ।
जन्तुजित । जम्भक । जम्भर । दन्तहर्षण । दन्तकर्षण । गम्भीर ।

जम्भिर । रेवत । वक्रशोधी । दन्तहर्षक । जम्भी । मीठा नीबू ।
कमला नीबू । बिहारी नीबू । कन्ना नीबू ।

इमली—अम्लिका । चुक्रिका । आम्री । चुक्रा । दंतशठा ।
अम्ला । चिंचका । चिंचा । तित्तिडिका । तित्तिडी । तित्तिडीक ।
तित्तिलिका । वृक्षाम्ल । अम्लीका । आम्लिका । तित्तिड ।
तित्तिर्ली । तित्तिका । आब्दिका चुक्रू । अत्यम्ला । मुक्ता । मुक्तिका ।
चारित्रा । गुरुपत्रा । पिड्डिला । यमदूतिका । चरित्रा । शाकचुक्रिका ।
सुचुक्रिका । सुतित्तिडी । पंक्तिपत्रा । सर्वाम्ला ।

कटहल—पनस । कंटकीफल । फणस । अतिवृहत्फल ।
अपुष्प । फलद । स्थूलकंटफल । कंटाकाल । आशय । पलस ।
मुरजफल । फलस । चम्पकालु । चम्पाकोष । मृदंगफल । चम्पालु ।
पानस । महासर्ज । फलिन । फलवृक्षक । स्थूल । कण्टाफल ।
मूलफलद । अपुष्पफलद । पूतफल । कटहर । कठैल ।

बड़हल—लकुच । क्षुद्रपनस । लिकुच । डहु । लकच ।
ऐरावत । अम्लक । निकुच । कषयी । दृढवल्कल । काश्य । शाल ।
शूर । स्थूलस्कन्ध । ग्रन्थिमत्फल । बड़हर ।

महुआ—मधूक । मधुवृक्ष । मधुष्ठील । मधुस्रव ।
गुडपुष्प । रोध्रपुष्प । वानप्रस्थ । माधव । मध्वग । डोलाफल ।
तीक्ष्णसार । महाद्रुम । मधु । मधुक । मधुवार । मध्वल ।

कैथा—कपित्थ । दधित्थ । कगित्थ । कवित्थ । कइत्थ ।
कपिप्रिय । पुष्पफल । दधिफल । दन्तशठ । ग्राही । मन्मथ ।
देवपादह्य । मालूर । मङ्गल्य । नीलमल्लिका । ग्राहीफल ।

चिरपाकी । ग्रन्थिफल । कुचफल । कपीष्ट । गन्धफल । दन्तफल ।
करभवल्लभ । काठिन्य फल । करञ्जफलक । अक्षसस्य ।

कमरख—कर्मरंग । कारुक । शुक्रप्रिय । शिराल ।
वृहद्दल । रुजाकर । कर्मार । कर्मरक । कर्मर । पीतफल ।
मुग्दर । धाराफल । कर्मरक ।

हरफा रेवड़ी—लवली । सुगंधमूला । पाण्डु । घना ।
कोमलवल्लला । स्निग्धा । स्कन्धफला ।

करौंदा—करमर्द । वनेक्षुद्रा । कराम्ल । करमर्दक ।
कृष्णपाकफल । अविन्न । सुषेण । करामर्द । कृष्णपाक । पाकफल ।
कृष्णफल । पाककृष्ण । फलकृष्ण । वनालय । वनालक । कराम्बुक ।
हणचूक । बोल । वश । करमर्दी । कराम्लक । कण्टकी ।
पाणिमर्द । अविन्न । सुपुष्प । दृढकण्टक । जातिपुष्प । क्षीरफल ।
डिंडिम । गुच्छी । क्षीरी । बहुदल ।

बैर—बदर । कोल । सौवीर । फेनिल । कुह । कर्कन्धु ।
कोलि । कुवल । बदरीच्छदा । पिच्छला । सौवीरक । बालेष्ट ।
फल शैशिर । वृत्तफल । घोण्टा । गोपघोण्टा । हस्तिकोलि ।
शृगालकोलि । वादिर । गूढफल । दृढबीज । कण्टकी । वक्रकण्टक ।
सुरस । सुफल । स्वच्छ । कर्कन्धू । कुबली । गृध्रनखी । कुकोल ।
कोकिल । अजामिया । उभयकण्टक ।

खिरनी—खिन्नी । खिरणी । राजादन । फलाध्यक्ष ।
राजन्या । क्षीरिका । राजफल । कपीष्ट । क्षीरवृक्ष । नृपद्रुम ।
निम्बबीज । मधुफल । माधवोद्भव । क्षीरी । गुच्छफल । भूपेष्ट ।
राजवल्लभ । श्रीफल । दृढस्कन्ध । क्षीरशुक्ल ।

फालसा—परूषक । गिरिपीलु । रोषण । नागदलोपम । परावत । नीलचर्म । नीलमण्डल । परापर । अल्पास्थि । मृदुफल । धन्वनच्छद । परूषा ।

शरीफा—सीताफल । गंडगात्र । वैदेहीवल्लभ । कृष्णबीज । अग्निमाख्य । आतृप्य । बहुबीजक । सरीफा । श्रीफल ।

अनन्नास—पारवती । आम । अनन्ताक्ष । कौतुकसंज्ञक । अनानास ।

मकोय—काकमाची । ध्वांक्षमाची । वायसी । घनाघना । काकमाचिका । काका । वायसाह्वा । सर्वतित्ता । बहुफला । कट्फला । रसायनी । गुच्छफला । काकमाता । स्वादुपाका । सुन्दरी । तित्तिका । बहुतित्ता । जवनेफला । काकिनी । कुष्ठनी । कवैया । मकोइया ।

आँवला—आमलकी । आमलक । पंचरसा । श्रीफली । धात्री । धात्रिका । शिवा । अकरा । अमृता । वयस्था । वृष्या । तिष्यफला । कायस्था । बहुफली । शान्ता । अमृतफला । वृत्तफला । रोचनी । कर्षफला । तिष्या । धात्रीफल । श्रीफल । अमृतफल । शिव । जातीफल । आमला । औरा ।

गूलर—उदुम्बर । क्षीरवृक्ष । हेमदुग्ध । सदाफल । अपुष्पफल सम्बन्ध । यज्ञाङ्ग । शीतवल्कल । कृमिकंट । कृमिकंटक । पाणिमुख । पुष्पहीना । जन्तुफल । यज्ञफल । यज्ञोदुम्बर । उदुम्बर । हेमदुग्धक । ब्रह्मवृक्ष । हेमदुग्धी । सुचक्षु । श्वेतवल्कल । कालस्कन्ध । यज्ञयोग्य । यज्ञीय ।

सुप्रतिष्ठित । शीतवल्क । यज्ञसार । पुष्पशून्य । पवित्रक ।
सौम्य । शीतफल । जघनेफल ।

शहतूत—तूत । सहतूत । तूद । ब्रह्मकाष्ठ । ब्रह्मदारु ।
यूष । मृदुसार । सुपुष्प । सुरूप । नीलरंगक । तूल । ब्राह्मणेष्ट ।
नीलवृन्तक । क्रमुक । विप्रकाष्ठ । मदसार । पूण । नूढ ।
पूष । ब्रह्मण्य । पलाशिक ।

लिसोड़ा—श्लेष्मान्तक । पिच्छिल । लेखशाटक । शैलु ।
शैलु । भूशैलु । गन्धपुष्प । शापित । बहुवारक । उद्दाल । बहुवार ।
भूतवृक्ष । द्विजकुत्सित । शीतफल । शाकट । कर्बुदारक । कर्बुदार ।
भूतद्रुम । श्लेष्मान्त । शीत । उद्दालक । सेलु ।

(छोटे लिसोड़े के नाम)—भूकर्बुदार । लघुश्लेष्मान्तक ।
लघुपिच्छिल । लघुशीत । लघुशैलु । सूक्ष्मफल । मधुभूतद्रुम ।
भूकर्बुदारक । निसोरा । लभेरा । भूशैलु ।

जामुन (छोटी जामुन)—जम्बू । सुरभिपत्रा ।
नीलफला । श्यामला । महास्कन्धा । राजार्हा । राजफला ।
शुकप्रिया । मेघमेदिनी । जम्बुल ।

जामुन (बड़ी जामुन)—फरेंदा । महाजम्बू ।
राजजम्बू । स्वर्णमाता । महाफला । शुकप्रिया । कोकिलेष्टा ।
महानीला । वृहत्फल । महापत्रा । फलेन्द्र । नन्द । सुरभिपत्र ।

बेल—बिल्व । महाकपित्थाख्य । श्रीफल । गोहरीतकी ।
पूतिवात । मंगल्य । मालूर । त्रिशिख । शाडिल्य । शैलूष । कपीतन ।
महाकपित्थ । महाफल । अतिमंगल्य । शल्य । हृद्यगन्ध । शलाटु ।
कर्कटाह्व । शिवेष्ट । शैलपत्र । त्रिपत्र । गन्धपत्र । लक्ष्मीफल ।

गन्धफल । दुरारुह । त्रिशाखपत्र । शिवद्रुम । सदाफल । सत्यफल ।
सुनीतिक । समीरसार । सत्यधर्म । अधरारुह । कण्टकाढ्य ।
सितानन । नीलमल्लिक । पीतफल । सोमहरीतकी ।

पपीता—स्थूलएरण्ड । महाएरण्ड । महापंचागुल ।

[सूखा फल—मेवा आदि]

झोहारा—छुहारा । गोस्तनाकारखर्जूरी । खर्जूरी ।
पिण्ड खर्जूरी ।

वाताम—वाताद । वातवैरी । नेत्रोपमफल । सुफल ।
वाताम ।

आलूबोखारा—आरुक । वीरसेन । वीर । वीरारुक ।
आलूक । मल्ल । भल्लूक । भल्ल । रक्त फल ।

अखरोट—अखरोट । पार्वतीय । फलस्नेह । गुड़ाशय ।
कोरेष्ट । कर्पराल । स्वादुमञ्ज । पृथक्छद् । रेखाफल । वृत्तफल ।
मदनाफल । अक्षोट । अक्षोटक । अखोट । आखोट । आक्षोड ।
आक्षोट । कन्दराल । आस्फोटक ।

सुपारी—पूग । पूगीफल । पुंगीफल । पूगी । खपुर ।
गुवाक । क्रमुक । घोण्टा । गुवाक । कपीतन । क्रमु । क्रमुकी ।
पूगवृक्ष । दीर्घ पादप । हृदवल्कल । वल्कतरु । चिकण । अकोट ।
तन्तुसार । सुरंजन । गोपदल । राजताल । छटाफल । करमट्ट ।
मुद्वेग । घोण्टाफल । सोपाड़ी । कषैली । कसैली । छालिया । डली ।

चिरौजी—प्रियाल । खरस्कन्ध । चार । बहुवल्कल ।
राजादन । तापसेष्ट । सन्नकद्रु । धनुषपट । अखट्ट । ललन । चारक ।
बहुवल्क । सन्नद्रु । तापसप्रिय । धनु । स्नेहवीज । उपवट ।

मोक्षवीर्य । द्रुसल्लक । राजतन । पियाल । पट । हसन्नक ।
पियालक । पियाज । ज्याज-मेवा ।

पिस्ता—चारुफल । निकोचक । सकोच । जलगोजक ।
पिस्त । मुकूलक ।

अंजीर—मंजुल । काकोदुम्बरिका फल ।

काजू—काजूतक । वृत्तफल । गुच्छपुष्प । पार्वती ।
स्निग्धपीत फल । पृथग्बीज । अरुष्कर । अग्निकृत । उपपुष्पिका ।

अंगूर—द्राक्षा । मधुरसा । स्वादी । कृष्णा । चारुफला ।
रसा । मृद्धीका । गोस्तनी । यक्ष्मत्री । तापसप्रिया । प्रियाला ।
गुच्छफला । रसाला । अमृतरसा । अमृतफला । स्वादुफला ।
हारहूरा । फलोत्तमा । सुफला ।

मुनक्का—काकलीद्राक्षा । जाम्बुका । फलोत्तमा । लघुद्राक्षा
सुवृत्ता । रुचिकारिणी । दाख । गोस्तनी (लाल मुनक्का) ।

किशमिश—गोस्तनी । कपिलफला । मधुवल्ली । मधूाल ।
हरिता । हराहूरा । मृद्धी । हिमोत्तरा । पथिका । हैमवती ।
शतवीर्या । काश्मीरी ।

मूँगफली—भूमिशिम्बिका । रक्तबीजा । त्रिवीजा ।
स्नेहबीजिका । मण्डपी । भूमिजा । भूस्था । भूचणका ।
चीनावादास ।

निर्मली—कतक । छेदनीय । श्लक्ष्ण । तोयप्रसादन ।
कात्थ । कतकरेणु । चक्षुष्य । शोधनात्मक । पायपसारी ।
लेखनात्मक । अम्बुप्रसाद । कत । तिक्तफल । रुच्य । गुच्छफल ।
तिक्तमरिच । पयःप्रसादी ।



१०. पुष्प वर्ग

चमेली (पीली)—सुमना । मालती । जाती । सुरप्रिया ।
चेतकी । स्वर्णजाती । सुरभिगन्धा । सुकुमारी । संध्यापुष्पी । मनोहरा ।
राजपुत्री । मनोज्ञा । तैलमालिनी । जनेष्टा । हृद्यगंधा । राजपुत्रिका ।
जातिका । प्रियंवदा । मालिनी । वासंती । प्रहसंती । सुवसन्ता ।
वसन्तजा । वार्षिका । स्वर्णजातिका । जाई । पीलीजाई ।

चमेली (सफेद)—उपजाती । सुवर्षा । सुरूपा । श्रीमती ।
वर्षापुष्पा । बलिहासा । वेशिका ।

बेला—वार्षिकी । शीतभीरु । मदयन्ती । प्रमोदनी ।
अतिगन्धा । गवाक्षी । भूपदी । वार्षिका । अष्टापदी । दन्तपत्रा ।
देवलता । श्रीपदी । षट्पदानन्दा । मुक्तबन्धना । दल कोषका ।
भद्रवल्ली । प्रिया । सौम्या । मल्लिका । वनचन्द्रिका । भूपदी ।
शीतभीरु । तृणशून्या । गौरी । नारीष्टा । गिरिजा । सिता ।
मल्ली । मल्लिका । मुद्गरक । गन्धराज । सप्तपत्र । विटप्रिया ।
मुद्गरा । राजपुत्री । वर्तुल । षट्पदप्रिया । गन्धसार । अति गंध ।
प्रिय । जनेष्ट । मृगेष्ट । मोगरा । वनमोगरा । घुघुरू मोतिया ।
मोतिया ।

[नोट—गुच्छे हुये गोल कली वाले फूल को मोतिया या मोगरा कहते हैं और लाँबी कली के फूल को बेला कहते हैं ।]

नेवारी—वासन्ती । प्रहसन्ती । सुवसन्ता । वसन्तजा । सुकमारा । शिखरिणी । नेपाली । वनमल्लिका । मधुगन्धा । गुच्छपुष्पा । ग्रैष्मिका । राजादनदला । वनजा । सूक्ष्मपुष्पिका । सप्तला । नवमालिका । देवलता । भद्रबर्म । गन्धनिलया । श्रीष्मभवा । अतिमोदा । ग्रैष्मी । श्रीष्मोद्भवा । शुचिमल्लिका । सुगन्धा । नेवाली । नेपाली । नेवाड़ी । नेमाली ।

जूही (सफेद)—यूथिका । यूथी । वासन्ती । वालपुष्पी । शिखण्डीनी । गणिका । अम्बष्ठा । मागधी । प्रहसन्ती । भृगनन्दा । बालपुष्पिका । पुण्यगन्धा । गुणोज्ज्वला । चारुमोदा । शिखंडी । हरिणी । शंखयूथिका । सुगन्धिका । यूथितरुणी । सुगन्धा । मोदिनी । बहुगन्धा । गजाह्वया ।

जूही (पीली)—सुवर्णयूथी । हेमपुष्पा । सुगन्धा । युवतीष्टा । हेमयूथिका । रक्तगन्धा । नागपुष्पिका । पीतयूथी । पौतिका । कनकप्रभा । हैमा । गन्धाढ्या । हेमपुष्पिका । सुवर्णाह्वा । व्यक्तगन्धा । पीतयूथी । सोनजूही ।

माधवी—अतिमुक्ता । सुवसन्ता । पराश्रया । अतिमुक्ता । कामुक । मण्डप । भ्रमरोत्सव । चन्द्र बल्ली । सुगन्धा । भृङ्गप्रिया । भद्रलता । भूमिमण्डप भूषण । वासन्ती । पुण्ड्रक लता । अतिमुक्ताक । माधविका । विमुक्ताक । माधवीलता । वसन्तदूती ।

मालती—सुमना । जाति । वासन्ती । युवती ।

गुलाब *—सेवती । रामतरुणी । कर्णिका । चारुकेसरा । कुमारी । सहा । शतपत्री । गन्धाढ्या । शिववल्गुमा । शृङ्गेष्टा । तरुणी । सुदला । बहुपत्रिका । शृङ्गवल्गुमा । शतपत्री । सौम्यगन्धा । सुवृत्ता । शतपत्रिका । महाकुमारी । लाक्षापुष्पा । अतिमंजुला । सुमना । सुशीता । शतदला । सुवृत्ता । कुञ्जक । भद्रतरुणी । वृत्तपुष्प । अतिकेसर । महासह । कण्टकाढ्या । खर्व । अलिकुल संकुल । वृहत्पुष्प । महासहावारिकण्टक । देवतरुणी । सेवती । कूजा ।

चम्पा †—चम्पक । सुकुमार । सुरभि । शीतल । चाम्पेय । हेमपुष्प । काञ्चन । सुकुमाधिराट् । हेमाह्व । सुभग । शीतलच्छद । कुसुमाधिय । वरलब्ध । उग्रगन्ध । कुट । हेमपुष्पक । पुण्यगन्ध । नागपुष्प । स्वर्णपुष्प । शृङ्गमोही । भ्रमरातिथि । दीपपुष्प । वनदीय । स्थिरगन्ध । अतिगन्धक । पीतपुष्प । स्थिरपुष्प ।

* सफेद गुलाब को सेवती तथा लाल या प्यार्जी रंगवाले गुलाब को 'कुञ्जक' या कूजा कहते हैं । एक पीले रंग का भी गुलाब होता है, जो भारतवर्ष का नहीं है । चैत म फूलने वाले चैती गुलाब को सबसे उत्तम माना गया है । इसी को गुलकंद, अर्क और अन्य औषधि प्रयोग में लाते हैं ।

† चम्पा पुष्प की गंध तीव्र होती है । इसके निकट भौरे नहीं जाते । सम्भवतः वे इसकी तीव्रता को सहन नहीं कर सकते । चम्पे के लिये यह दोहा प्रसिद्ध है—

“चम्पा तौमें तीन गुन, रूप-रंग और बास ।

अवगुन केवल एक है, भँवर न फटकत पास ॥”

मौलसिरी—वकुल । केसर । कण्ट । तैलाङ्ग । मधुपंजर । सिंहकेशर । मुकुल । वकूल । मकुल । वरलब्ध । सीधुगन्ध । दोहल । खोमुखमधु । मधुपुष्प । सुरभि । भ्रमरानन्द । शारदिक । करक । सिन्धुगन्ध । विशारद । गूढपुष्पक । धन्वी । मदन । मद्युमोद । चिरपुष्प । मौसरी ।

मुचुकुन्द—छत्रवृक्ष । चित्रक । प्रतिविष्णुक । दीर्घपुष्प । बहुपत्र । सुदल । हरिवल्लभ । सुपुष्प । रक्तप्रसव ।

कुन्द—कुन्द । माध्य । सदापुष्प । शुद्धपुष्प । दलकोष । वरट । वोरट । मकरन्द । महामोद । मनोहर । मुक्तापुष्प । तारपुष्प अहपुष्पक । दमन । वनहास । मनोज्ञ । शृङ्गबन्धु । मनोरम । अट्टहास । शृङ्गसुहृद् ।

कदम्ब—भूमिकदम्ब । भूनीप । भूमिज । शृङ्गवहभ । लघुपुष्प । वृत्तपुष्प । विषन्न । त्रणहारक । धाराकदम्ब । कदम । नृत्यनीप । ग्रीअंक । मदिरागंध । सुवाह । नीप ।

केवड़ा-स्फेद—केतकी । सूचिकापुष्प । क्रकचच्छद । जम्बुक । सूचिपुष्प । हलीन । जम्बुल । चामरपुष्प । तीक्ष्णपुष्पा । विफला । धूलिपुष्पिका । मेध्या । कण्टदला । शिवद्विष्टा । नृपप्रिया । क्रकचा । दीर्घपत्रा । स्थिरगन्धा । गन्धपुष्पा । इन्दुकलिका । दलपुष्पा । पांशुला ।

केवड़ा-पीला—स्वर्णकेतकी । लघुपुष्पा । सुगन्धिनी । कनकप्रसवा । हैमी । पुष्पी । छिन्नरुहा । विष्टरुहा । स्वर्णपुष्पी । कामखङ्गदला ।

कटसरैया-पीली—किंकिरात, कुरण्ट । पीतपुष्पक ।
कनक । पीताम्लान । सहचर । पीतसैरेयक । कुरण्टक । सहचरी
सहाचर । वीर । पीतपुष्प । दासी । पुर । कुरुण्टक ।

कटसरैया-नीली—नीलपुष्पी । नीलझिण्डी । वाण ।
आर्तगल । अर्तगल । वाण । नीलकुरण्टक । शैरीयक । शैरेय ।
वाला । नीलकुसुमा । कण्टार्तगला ।

कटसरैया-लाल—रक्ताम्लान । रक्तपुष्प । रामालिंगन ।
कामुक । रागप्रसव । सुभग । शोलझिण्टक । कुरबक । रक्तझिण्टी ।
रक्तझिण्टका । शोणझिण्टी ।

कटसरैया-सफेद—सैरेय । सैरेयक । कुरण्टक ।
कुरबक । सरैया । पियावासा ।

गुलदुपहरिया—बन्धूक । माध्यान्हिक । बन्धुजीव ।
रक्त । रक्तक । बन्धुजीवक । बन्धुक । बन्धु । बन्धुल । बन्धुली ।
बन्धुर । सूर्यभक्तक । ओष्ठपुष्प । अर्कवल्लभ । मध्यन्दिन ।
रक्तपुष्प । रागपुष्प । हरिप्रिय । ज्वरघ्न । शरत्पुष्प । सुपुष्प ।

गुलतुरी—सिद्धेश्वर । सिद्धनाथ । सिद्धाख्य ।

गुलपरी—शंखोदरी । बर्हपुष्पा । चिञ्चापत्रा । सुपुष्पा ।
अल्पकण्टकी । श्लाखापत्री । वनवासी । सुशिम्बिका । गुलतोरा ।

मखमली—भण्डू । स्थूलपुष्पा । झण्डूक । कलगा ।
लाल मुर्गा । गुलमखमल ।

लटकन *—सिन्दूरपुष्पी । सिन्दूरी तृणापुष्पी । जाफर ।

* इसका सूखा फूल मुनक्का के बीज के समान कड़ा होता है ।

रक्तबीजा । रक्तपुष्पी । वीरपुष्पा । करच्छदा । शोण पुष्पी ।
मुकोमला । सिन्दूरिया । जोगिया ।

हारसिंगार—प्राजक्त । पारिजात । परजाता । हारसृङ्गार
नालकुंकुम । रागपुष्पी । खरपत्रक ।

ओड़हुल—प्रातिका । जयाकुसुम । जवाकुसुम ।
ओड़पुष्प । ओड़्राख्या । रक्तपुष्पी । अर्क प्रिया । रागपुष्पी ।
अरुणा । त्रिसन्ध्या । हलहुल । गुड़हर ।

अगस्त्य—अगस्तिया । वङ्गपुष्प । मुनिपुष्प । अगस्ती ।
शोभ्रपुष्प । व्रणारि । दीर्घफलक । शुक्लपुष्प । सुरप्रिय । खरध्वंसी ।
पवित्र । वङ्गसेनक । कनली । वक्रपुष्प । हथिया । वोड़ीका फूल ।
हदगा ।

गुलदौना—दमनक । दान्त । मुनिपुत्र । तपोधन ।
गन्धोत्कट । ब्रह्मजट । विनीत । कुलपत्रक । पुष्पचामर । मदनक ।
दमन । मुनि । जटिला । दण्डी । पाण्डुराग । ब्रह्मजटा । पुण्डरीक ।
तापसपत्री । पत्री । पवित्रक । देवशेखर । कुलपत्र । तपस्वीपत्र ।
दौना ।

कनेर—(देखो 'वनौषधि वर्ग')

नोट—कमल । कुमुद आदि के नाम जलादि वर्ग में दिये
जा चुके हैं ।



पंसारियों की दूकान पर मिलता है । इसे पीसकर पकाते हैं और कपड़े
रँगते हैं । इसमें अच्छी भीनी सुगन्ध होती है । रंग सिन्दूरिया-जोगिया
होता है ।

११. वृक्ष वर्ग

बडु—बट । रक्तफलशुङ्गी । न्यग्रोध । स्कन्धज । ध्रुव ।
क्षीरी । वैश्रवणावास । बहुपाद । जटिल । पटीर । रक्तफला ।
नन्दी । शुङ्ग । वृहत्पाद । वैश्रवणोदय । वृक्षनाथ । भृङ्गी ।
यमप्रिय । कर्मज । भाण्डीर । जटाल । रोहिण । अवरोही ।
विटपी । स्कन्धरुह । मण्डली । महच्छाय । यक्षावास । यक्षतरु ।
पादरोहण । नील । शिफारुह । जटी । बरगद् । बर ।

पीपल—गजाशन । केशवालय । चैत्यद्रु । नागबन्धु ।
चैत्यवृक्ष । देवात्मा । महाद्रुम । कपीतन । अच्युतावास । पवित्रक ।
शुभद । याज्ञिक । श्रीमान् । क्षीरद्रुम । विप्र । मंगल्य । श्यामल ।
गुहापुष्प । सेन्य । सत्य । शुचिद्रुम । धनुर्वृक्ष । बोधिद्रुम ।
पिप्पल । अश्वत्थ । चलदल । चलपत्र ।

पाकर—प्लक्ष । जटी । पर्कटी । कर्परी । चारु दर्शिनी ।
भृङ्गी । वरोह शाखी । अश्वत्थी । पिंपरी । वटी । कमण्डलु तरु ।
कपीतन । क्षीरी । सुपाशर्व । कमण्डलु । गर्दभाण्ड । पीतन ।
दृढप्ररोह । प्लवक । प्लवंग । महाबल । कन्दरालु । पर्कटी ।
प्लक्षा । प्लीक्षा । पाकड़ । पकड़ी । पाखर । पिलखन ।

सिरस—सिरोस । शिरीष । भण्डिल । भण्डी । भण्डीर ।
 कपीतन । शुकपुष्प । शुकतरु । मृदुपुष्प । शुकप्रिय । कर्णपूर ।
 शुकद्रुम । भण्डील । भण्डिर । मूर्द्धपुष्प । विषघाती । शीतपुष्प ।
 भण्डिक । स्वर्णपुष्पक । वर्हपुष्प । उदानक । शुकतरु ।
 शंखिनी फल । लोमशपुष्पक । कलिंग । श्यामल । मधुपुष्प ।
 वृत्तपुष्प । प्लवग । श्यामवर्ण ।

शीशम—शिशपा । कृष्णसारा । पिपला । युगपत्रिका ।
 पिच्छला । धूम्रिका वीरा । कपिला । अगुरु शिशिपा । अगुरु ।
 युग्मपत्रिका । कालानु । सार्य । श्यामा । धीरा । मंडलपत्री ।
 तीव्रधूमका । भस्म गर्भा । पोता । कपिलाक्षी ।

शाल—शाल । सर्जकाय । अश्वकर्णिका । सस्यसम्बर ।
 अश्व कर्णक । शस्यशम्बर । उपमेत । दीर्घशाख । जलदाशन ।
 लतातरु । लताशंख । शंकुतरु । शंकुवृक्ष । सर्ज । सर्जरस ।
 कल । बल्लीवृक्ष । चीर पर्ण । रालकार्य । अजकर्णक । कषायी ।
 बस्तकर्ण । ललन । गन्धवृक्षक । वंश । दिव्यसार । सुरेष्टक । शूर ।
 अम्रिवल्लभ । यक्षधूप । सिद्धक । जरणद्रुम । ताक्ष्य प्रसव ।
 धन्य । दीर्घपर्ण । कुशिक । अश्वकर्ण । साखू । सखुआ । साल ।

सालई—शल्लकी । गजभक्षा । ह्वादिनी । महारुहा ।
 वसा । मोचा । सुरभी । सुरभीरसा । सिल्लकी । सुवहा ।
 महेरुणा । महेरणा । महारणा । अश्वपुत्री । कुम्भी । करका ।
 नागवधू । सुश्रीका । सालई । गन्धमूला ।

अर्जुन—फाल्गुन । पार्थ । धनंजय । किरीटी । पांडव ।
 धन्वी । वीर । वीरवृक्ष । धवल । कोह । कौह । ककुभ ।

विजयसार—बीजक । पीतसार । पीतसालक । प्रियक ।
 चन्धूकपुष्प । असन । पीतसाल । परमायुध । महासर्ज । सौरि ।
 बीजवृक्ष । आसना । आसन । असना । नीलक ।

खैर—खदिर । रक्तसार । गायत्री । दन्तधावन । कंटकी
 बालपत्र । बहुशल्य । याज्ञिक । बालतनय । निक्तसारा । यूपद्रुम ।
 खद्यपत्री । बालपुत्र । कर्कटी । जिह्वशल्य ।

पपड़िया खैर—श्वेतसार । कदर । सोमवृक्ष । सोमसार ।
 ब्रह्मशल्य । महावृक्ष । द्विजप्रिय । नेमिवृक्ष । श्यामसार ।
 सफेद खैर ।

बबूल—मालाफल । बब्बूल । युग्मकण्ट । दृढारुह ।
 कण्टकी । सूक्ष्मपत्र । पीतपुष्प । कषायक । किंकिरात । कण्टालु ।
 युगलाक्ष । तीक्ष्ण कण्टक । गोश्रृंग । कफान्तक । स्वर्णपुष्प ।
 पीतक । कीकर ।

रीठा—अरिष्टक । मांगल्य । कृष्णवर्ण । अर्थ साधन ।
 पीतफेन । फेनिल । गर्भपातन । गुच्छफल । अरिष्ट । कुंभबीजक ।
 प्रकीर्य । सोमवल्कल ।

तमाल—तापित्थ । कालस्कन्ध । अमृतद्रुम । लोकस्कन्ध ।
 नीलध्वज । नीलताल । तम । तार्पिज । तमा । महाबल ।
 श्यामतमाल ।

भोजपत्र—भूर्जपत्र । भूर्ज । चर्मा । बहुवल्कल ।
 सुचर्मा । छदपत्र । वल्कद्रुम । शिबि । विन्दुपत्र । बहुपट ।
 विद्यादल । छत्रपत्र । स्थिरच्छद । पद्मकी । भुज । मृदुत्वक् ।

पलास—पलाश । किंशुक । पर्ण । याज्ञिक । रक्त पुष्पक ।
क्षारश्रेष्ठ । वातपोथ । ब्रह्मवृक्ष । समद्विर । करक । त्रिपत्रक ।
पलाशक । पूतदु । ब्रह्मोपनेता । काष्ठद्रु । बीजस्नेह । कृमिघ्न ।
वक्रपुष्पक । सुपर्णी । ढाक । टेसू । केसू । धारा । कांकरिया ।

सेमल—शाल्मली । शाल्मलीनिर्यास । शाल्मलीवैष्टक ।
पिच्छ । मोचस्राव । मोचरस । मोचनिर्यास । मोचसार ।
मोचश्रुत । पिच्छिलखार । सुरस । मोचाक । वेश्मरस । सेमल ।
शाल्मल ।

धव—पिशाचवृक्ष । शकटाख्य । धुरन्धर । दृढतरु ।
गौर । कषाय । मधुरत्वक् । शुष्कवृक्ष । शुष्काङ्ग । पाण्डुतरु ।
धवल । पाण्डुर । घट । नन्दितरु । स्थिर । पीतफल ।
धौ । धावा ।

करील—करीर । गूढपत्र । शाकपुष्प । कटूफल । ग्रंथिल ।
तीक्ष्णसार । मरुभूरुह । क्रकर । क्रकच । निष्पत्रिका । करिर ।
तीक्ष्णकण्टक । मृदुफल । निष्पत्र । शोणपुष्प । विदाहिक ।
शतकुन्त । सुफल । उष्णसुन्दर । विष्वक्पत्र । कृशशाख ।

सागौन—शाक । क्रकचपत्र । खरपत्र । अतिपत्रक ।
महीरुह । श्रेष्ठकाष्ठ । स्थिरसार । गृहद्रुम । अनिल । अर्ण ।
महापत्र । शाकतरु । अर्जुनोपम । शरपत्र । अतिपत्र । द्वारदारु ।
योगी । हलीमक । गन्धसार । स्थिरक । ध्रुवसाधन । सागवन ।

समी—शमी । शक्तुफली । शान्ता । केशहन्त्री । शिवफला ।
मंगल्या । शुभदा । लक्ष्मी । पवित्रा । पापनाशिनी । शक्तुफली ।

शिवा । काननारि । तुंगा । कचरिपुफला । केशमथनी । ईशानी ।
तपनतनया । इष्टा । शुभकरी । हविर्गन्धा । मेध्या । दुरितदमनी ।
समुद्रा । वह्निगर्भा । समीर । सुरभि । पापशमनी । भद्रा । शङ्करी ।
सुपत्रा । सुखदा । शंकरा । शंकुफलिका । सुभद्रा । छोंकर ।
छींकर । सफेदकीकर ।

रुद्राक्ष—शिवाक्ष । शर्वाक्ष । भूतनाशन । पावन ।
शिवप्रिय । तृणमेरु । अमर । पुष्पचामर ।

अशोक—शोकनाशन । विचित्र । कर्णपूरक । कंकेली ।
हेमपुष्पक । पिण्डपुष्पक । अंगनाप्रिय । विशोक । बंजुलद्रुम ।
मधुपुष्प । अपशोक । केलिक । रक्तपल्लव । चित्र । कर्णपूर ।
सुभग । दोहली । ताम्रपल्लव । रोगितरु । वामांकपातन । नट ।
रामा । पल्लद्रु । कान्ताचरणदोहद । चक्रगुच्छ । शोकहर्त्ता ।
स्मराधिवास । दोषहारी । प्रपल्लव । वामांघ्रिघातक । अशोग ।

नीम—निम्ब । निम्बन । नियमन । नेता । पिचुमंद ।
अरिष्ट । सर्वतोभद्र । सुभद्र । पारिभद्रक । शुक्रप्रिय । शीर्षपर्णी ।
वरत्वच । छर्दन । हिंगु । निर्यास । पीतसार । रविप्रिय । मालक ।
पिचुमंद । पक्कृत । पूकमालक । कीटक । विवन्ध । निम्बक ।
कैटर्य । छर्दिन्न । कीरेष्ट । विशीर्णपर्ण । पीतसारक । शीत ।
राजभद्रक ।

[नोट—कई वृक्षों के नाम जो फलवाले हैं, नहीं दिये गये हैं । उनके जो नाम फलवर्ग में दिये गये हैं वे उनके वृक्ष के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]



१२. वनौषधि वर्ग

टैँटी *—विकंकत । ग्रंथिल । स्वादकंटक । सुवावृक्ष ।
व्याघ्रपाद ।

सोनापाढ़ा—डुंडुक । दीर्घवृन्त । श्योनाक । शुक्रनास ।
कटम्बर । मयूरजंघ । अरलुक । प्रियजीवी । कुटन्नंट । नट ।
मण्डूक पर्ण । पत्रोर्ण । कट्वाङ्ग । ऋक्ष । दीर्घवन्त । शोनक ।
अरल । स्योनाक । विषनुत । अध्वान्तशात्रव । पूतिवृक्ष । भण्डूक ।
भण्डुक । भूतपुष्प । शोण । अरदु । दीर्घवृन्तक । ध्वान्तशात्रव ।
वटु । स्वर्णवल्लकल । पृथुशिम्ब । शल्लक । शोषण । प्रियजीव ।
कुर्कट । कन्दर्प । पादवृक्ष । पारिपादप । कुनट । विरोचन ।
भ्रमरेष्ट । जंघनेत्र । निःसार ।

भटकटैया—कंटकारी । कुलीक्षुद्रा । कासघ्नी । स्पृही ।
कंटकारिका । धावनिका । व्याघ्री । दुःस्पर्शा । दुष्प्रघर्षिणी ।
कंटश्रेणी । निदिग्धिका । वृहती । प्रचोदनी । राष्ट्रिका । अनाक्रान्ता ।

* इसका पेड़ ब्रज में बहुत होता है । आगरा व मथुरा में इसके फल के अँचार बनाते हैं । यह स्वाद में कुछ कपैला और कड़ुआ होता है ।

भण्टाकी । सिंही । कुली । धावनी । चित्रफला । लघुकटाई । कटेरी । रेंगनी ।

गोरुखरू (बड़ा)—गोक्षुर । पलङ्कषा । इक्षुगंधा । श्वदंष्ट्र । स्वादुकण्टक । गोकण्टक । गोक्षुरक । वनशृंगाट । त्रिकंट । स्थलशृंगाट । त्रिपुट । कंटकफल । क्षुर । गोखुरि । त्रिक । त्रिकट । इक्षुर । भक्ष्यकंट । इक्षुगंधिका । क्षुरांग । भद्रकंट । व्यालदंष्ट्र ।

गोरुखरू (छोटा)—क्षुद्रगोक्षुर । त्रिकंट । कंटी । षडंग । बहुकंटकक्षुर । वनशृंगाटक । चणद्रुम । स्थल शृंगाटक । स्वादुकंट । इक्षुगंध ।

जीवन्ती—जीवनी । जीवा । जीवदा । सुखंकरी । रक्तगंगी । प्राणदा । भद्रा । मंगल्या । मृगराटिका । जीवनीया । स्रवा । मधुस्रवा । मंगल्यनामधेया । पयस्विनी । जीव्या । जीवदात्री । शाकश्रेष्ठा । जीवभद्रा । क्षुद्रजीवा । यशस्या । शृंगाटी । जीवपृष्ठा । कांजिका । शशशिम्बिका । सुपिङ्गला । पुत्रभद्रा । मधुस्वासा । जीववृषा । जीवपत्री । जीवपुष्पी । जीववर्द्धिनी । यशस्करी । डोडो ।

मदार (आक)—क्षीरदल । शुकफल । तूलफल । अर्क । अकौआ । सदासुम । प्रताप । क्षीरकाण्डक । विक्षीर । भास्कर । हरिदश्व । विवस्वान । अहर्मणि । अहर्बान्धव । अर्यमा । अहर्षपि । उष्णरश्मि । भानु । विकर्त्तन । गणरूप । मंदार । प्रभाकर । विभाकर । दिवाकर । सूनु । आस्फोट । वसुक । हिमराति । पुच्छी । क्षीरो । खजून्न । शीतपुष्पक । जम्भल । क्षीरपर्णी । विकोरण । सदापुष्प । सूर्याह । क्षीराङ्ग ।

सेहँड़—थूहर । स्नुही । समन्तदुग्धा । नागद्रु । महावृक्ष । बहुदुग्धिका । सुधा । वज्रा । शीहुण्डा । दण्डवृक्षक । सिहुण्ड । स्नुषा । स्नुहा । वज्र । वज्रद्रु । वज्रकण्टक । गुड़ । गुड़ा । गुड़ी । गुला । बहुशाल । कृष्णसार । निखिंशपत्रिका । नेत्रारि । शाखाकण्ठ । सिंहतुण्ड । काण्डशाख । काण्डरोहक ।

करियारी—कलिकारी । लाङ्गलिकी । दीप्ता । गर्भघातिनी । अग्निजिह्वा । वह्निशिखा । वह्निवक्रा । लांगुली । हलिनी । विशल्या । गर्भपातिनी । अग्निमुखी । नक्ता । हली । इन्द्रपुष्पिका । विद्युज्वाला । व्रणहृत् । पुष्पसौरभा । स्वर्णपुष्पा । इन्द्रपुष्पिका । शक्रपुष्पी । अनंता । गर्भनुत् । कलियारी । कलिहारी ।

दूब—दूर्वा । शष्प । शाद्वल । शतपर्वा । शीतकुम्भी । शीतला । वामिनी । शान्भवी । श्यामा । शीता । शतपर्विका । धूर्त्ता । अमृता । शतग्रन्थि । अनुवल्लिका । शिवा । शिवेष्टा । मंगल्या । जया । भूतहन्त्री । शतमूला । महौषधी । विजया । गौरी । शान्ता । रुहा । अनन्ता । भार्गवी । सहस्रवीर्या । शतवल्ली । गुणा । नन्दा । महावरा । हरसालिका । तिक्तपर्वा । दुर्मरा । हरिता । हरितालिका । हरिताली । कच्छरुहा । अमरी । अमरा । काण्डा । श्यामकाण्डा । गण्डदूर्वा । सूचिपत्रा । शकुलाक्षी । चित्रा । विद्या । शुभा । सुरवल्लभा । स्वच्छा । प्रचण्डा । कच्छान्तरुहा ।

तुलसी—वैष्णवी । वृन्दा । सुगन्धा । गन्धहारिणी । अमृता । पत्रपुष्पा । पवित्रा । सुरवल्लरी । सुभगा । तीव्रा । पावनी । सुरेज्या । विष्णुवल्लभा । सुरसा । कायस्था । सुरदुन्दुभी । सुरभि । बहुपत्री । मञ्जरी । हरिप्रया । विष्णुकान्ता । अपेतराक्षसी । श्यामा । गौरी ।

त्रिदशमंजरी । भूतत्री । भूतपत्री । प्रेतराक्षसी । पर्णास । कठिंजर ।
कुठेरक । पुण्या । माधवी । सुरवल्ली । सुवहा । ग्राम्या । सुलभा ।
विष्णुपत्नी । मालाश्रेष्ठा । लक्ष्मी । श्री । कृष्णवल्लभा ।

श्यामा तुलसी—कृष्णा । कृष्णतुलसी । कृष्णपर्णी ।
करालक ।

कनेर *—करवीर । श्वेतपुष्प । शतकुम्भ । अश्वमारक ।
प्रतिहास । शतप्रास । चण्डात । अश्वघ्न । हयघ्न । शीतकुम्भ ।
तुरङ्गारि । रंगारि । शातकुंभ । प्रचण्ड । वीर । शतकुन्द । कुन्द ।
अश्वरोधक । शंकुद्र । श्वेतपुष्पक । नखराह्व । स्थल कुमुद ।
दिव्यपुष्प । गौरीपुष्प । सिद्धपुष्प ।

धतूरा—धत्तूर । धस्तूर । मदन । उन्मत्त । कितव ।
कनकाह्वय । देविका । महामोही । शिवप्रिय । खरदूषण । धूर्त्त ।
मातुल । पुरीमोह । धूर्त्तकृत । घण्टिक । शठ । मातुलक । श्याम ।
शिवशेखर । खर्जून्न । कहलापुष्प । खल । कण्टफल । मोहन ।
कलम । मत्त । शैव । तूरी । धुस्तुर । देवता । मदनक । कंटफल ।
हरवल्लभ । कनक । सविष । मोहन । मदकर । घंटापुष्प ।

[नोट—जितने नाम सुवर्ण के हैं वे सब धतूरे के लिये भी
प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

अरूसा—वासक । वासिका । वासा । सिंहिका ।

* पुष्पभेद से कनेर पाँच प्रकार की होती है । सफेद, लाल, गुलाबी,
पीली और काली । कनेर एक प्रकार से उपविष की श्रेणी में है । इसको
खाने से घोड़े मर जाते हैं ।

रामरूपक । मातृसिंही । वैद्यमाता । वृष । कसनोत्पाटन । अटरूष ।
सिंही । सिंहास्य । वाजिदन्तक । आमलक । वाशा । वाशिका ।
वाजी । वैद्यसिंही । सिंहपर्णी । रसादनी । सिंहमुखी । कण्ठीरवी ।
सितकर्णी । वाजिदन्ती । नासा । पंचमुखी । सिंहपत्री ।
मृगेन्द्राणी । आटरूष । सिंहानन । अडूसा । विसोंटा ।

पित्तपापडा—पर्पट । वरत्तित्त । पर्पटक । पांशुपर्याय ।
कवचनामक । त्रियष्टि । तित्त । चरक । वरक । अरक । रेणु ।
तृष्णारि । शीत । शीतप्रिय । पांशु । कलपाङ्ग । वर्मकण्टक ।
कृष्णाशाख । प्रगन्ध । सुत्तित्त । रक्तपुष्पक । पित्तारि । कटुपत्र ।
नक्र । शीतवह्निभ । दवनपापडा ।

करञ्ज—नक्तमाल । पूतिक । पूतिपत्र । पूतिकरंज । कैडर्य ।
कलिमार । पूतिपर्ण । बद्धफल । रोचन । करज । करंजक ।
उदकीर्य । चिरवित्त्व । प्रकीर्य । षड्ग्रन्थ । वृत्तपर्ण । गुच्छफल ।
स्निग्धपत्र । तपस्वी । विषारी । घृतपर्णक । षड्ग्रन्था । हस्तिवारुणी ।
अंगारवल्ली । शार्ङ्गश्र । काकत्री । करभाण्डिक ।

केवाँच—कपिकच्छु । आत्मगुप्ता । शुक्रशिम्बा । कपिप्रभा ।
शुक्रपिण्डी । स्वयंगुप्ता । कण्डूरा । शुक्रशिम्बिका । जडा ।
अध्यण्डा । प्रावृषायणी । ऋष्यप्रोप्ता । मर्कटी । सद्यः शोथा ।
प्रावृषा । अजहा । वानरी । गात्रभंगा । कच्छूमती । कच्छुरा ।
ऋषभ । जटा । व्याघ्रा । लांगली । कुण्डली । चण्डा । दुरभिग्रहा ।
अजडा । बदरी । गुरू । आर्षभी । काशीलोमा । व्यङ्गा ।
वृष्या । कौँल ।

गुञ्जा (घुमची)—रक्तिका । गुञ्जिका । काकजंघा ।

शिखण्डिनी । कृष्णला । काकिनी । कक्षा । कनीचि । काकणन्तिका ।
काकचिची । शांगुष्ठा । काकादनी । अरुणा । ताम्रिका । शीतपाकी ।
उच्चटा । कृष्णचूडिका । रक्ता । काम्बोजी । भीलभूषणा । वन्या ।
श्यामलचूडा । वक्रशल्या । ध्वांक्षनखा । दुर्मोद्या । वायसादनी ।
चटकी । तुलाबीजा । अंगारवल्लरी ।

गुग्गुला-सफेद—श्वेतगुग्गुला । श्वेतकाम्बोजी । भिरिण्टिका ।
चक्रशल्या । चूडाला । चोदली । चिरमिटी । सफेद धुमची ।

बीजबन्द—बला । वाय्यपुष्पी । समांशा । ओदनिका ।
भद्रा । मोटापाटी । वाटिका । प्रहासा । खिरैटी । बरियारा ।

सहदेई—महाबला । पीतपुष्पी । सहदेवी । वर्षपुष्पा ।
देवसहा । गन्धवल्ली । महान्धा । मृगा । मृगरसा । वर्षपुष्पी ।
वाय्या । वाय्यायनी । सहदेवा । बृहद्रला । मङ्गलार्थ प्रसादनी ।

कपास—कार्पासी । तुण्डकेरी । समुद्रान्ता । वदरा । पटद ।
वादरा । सूत्रपुष्पा । वदरी । कार्पासिका । कर्पाससारिणी ।
कर्पासी । चव्या । तुला । गुड । मरुद्भवा । पिचु । वादर ।
पटलुन । छादन ।

बाँस—वंश । त्वक्सार । कर्मार । त्वचिसार । तृणध्वज ।
शतपवा । यवफल । वेणु । मस्कर । तेजन । किलाटी । पुष्पघाती ।
वृहत्तृण । किष्कुपर्वा । वन्य । सुपर्वा । तृणकेतुक । कंटालु ।
कंटकी । महाबल । दृढग्रन्थी । दृढपत्र । धनुर्दुम । धानुष्य ।
दृढकाण्ड । कीचक । कुक्षिरन्ध्र । षट्पदालय । कमठ । मृत्युबीज ।
वादनीय । फलान्तक । पर्वयोनि । दुरारुह ।

नर्कट—महानल । वन्य । देवनाल । नलोत्तम । स्थूलनाल । स्थूलदण्ड । सुरनाल । सुरद्रुम । नल । धमन । विभीषण । लालवंश । नट । नटी । नर्त्तक । नरसाल । नरसल ।

मूँज—भद्रमुञ्ज । मुञ्ज । शर । बाण । तेजन । मुञ्जात । स्थूलदर्भ । सुमेखल । मौंजी । तृणाख्य । ब्रह्मण्य । तेजनाह्वय । वानीरक । मुँजनक । शीरी । दुर्मूल । दृढतृण । बहुप्रज । रंजन । शक्रभंग । रामसर । मूज ।

कास—काश । सुकाण्ड । कासेक्षु । नादेय । नीरज । काकेक्षु । वायसेक्षु । इक्षुरस । शिरि । इक्षुगन्धा । काशी । काशा । अमरपुष्पक । इक्षारी । शारद । दर्भपत्र । काण्ड । कच्छलकारक । काँस ।

कुशा—कुश । दर्भ । बर्हि । सूच्यग्र । यज्ञभूषण । कुरब । पवित्र । याज्ञिक । ह्रस्वगर्भ । कुतुप ।

बिदारीकन्द—विदारी । क्षीरविदारी । इक्षुगन्धा । इक्षुवल्ली । क्षीरवल्ली । पयस्विनी । महाश्वेता । ऋक्षगन्धिका । ऋष्यगन्धा । क्षीरकन्द । क्षीरलता । पयःकन्दा । बिलैयाकन्द । बिलारीकन्द । दूधविदारी ।

मूसली—मुसली । खलनी । तालमूली । तालिक । अशोत्रि । ताली । सुबहा । तालपत्रिका । गोघापदी । हेमपुष्पी । भूताली । दीर्घकन्दिका । महावृष्या ।

[मुसली दो प्रकार की होती है, सफेद और स्याह ।]

सतावर—शतमूली । महाशीता । भीरुपत्री । शतावरी । बहुसुता । भोरु । इन्दीवरी । ऋष्यप्रोक्ता । नारायणी । अहेरु ।

अभोरु । महापुरुष दन्ता । रंगिणी । कांचनकारिणी । मद्भंजिनी । शतपत्रिका । स्वादुरसा । लघुपर्णिका । विश्वस्ता । वैष्णवी । कार्णवी । दुर्मना । तैलवल्ली । अर्धकण्टका । सुपत्रिका । महौषधि । फणिजिह्वा । जटा । मूला । सुवीर्या । महती ।

असगन्ध—अश्वगन्धा । कटुका । अश्वारोहक । हया । वाराहकर्णी । तुरगी । बल्या । बाजीकरी । काम्बुका । अश्वारोहा । बलजा । बाजिनी । पलाशपर्णी । वातघ्नो । काला । श्यामला । गन्धपत्री । पुण्या । वाराहकर्णी । वरगात्रकरी ।

जमालगोटा—जयपाल । सारक । तिन्तिडी फल । दन्तीबीज । मलद्रावी । रेचक । वीजरैचक । कुम्भिनी बीज । घंटाबीज । शोधनी बीज । चक्रदन्ती बीज ।

इन्द्रायन (इनारूफल) *—इन्द्रवारुणिका । चित्रा । विशाला । गजचिर्भिटा । मृगेर्वारु । क्षुद्रसहा । चित्रफला । ऐन्द्री । गवाक्षी । भरा । पिटंकोकी । मृगादनी । इन्द्रा । अरुणा । गवादनी । इन्द्रचिर्भिटी । सूर्या । विषत्री । गणकर्णिका । माता । सुकर्णिका । सुफला । तारका । वृषभाक्षी । पीतपुष्पा । इन्द्रवल्लरी । हेमपुष्पी । विषलता । अमृता । कपिलाक्षी ।

सनाय—कल्याणी । हेमपत्री । रेचनी । स्वर्णपत्रिका । मलहारिणी ।

* इन्द्रायन की बेल अधिकतर खारी भूमि में होती है । फल सूक्ष्म, काँटेदार लालरंग का होता है और इसका फूल पीले रंग का होता है । दूसरे प्रकार का इन्द्रायन पीले फल वाला भी होता है, जो रेतीली भूमि में उत्पन्न होता है ।

नील—नीली । नीलिनी । नीला । मेघवर्णा । कुत्सला ।
दूली । ह्रीतकिका । काला । नीलपुष्पिका । मधुपर्णिका । रंजनी ।
श्रीफली । तुत्था । तूणी । दोला । अङ्कोका । काली । श्यामा ।
शोधिनी । भद्रा । भारवाही । मोचा । कृष्णा । व्यञ्जनकेशी ।
चारटिका । गन्धपुष्पा । रंगपत्री । स्थिररंगा । वृन्तिका । विजया ।
स्थिररागा ।

सरफोंका—कण्ठपुंखा । कंठालु । शरपुंखा ।

गोरखमुंडी—महाश्रावणिका । भूकदम्बिका । लोचनी ।
कदम्बपुष्पिका । अव्यथा । तपस्विनी । मुण्डी । महामुण्डी ।
विकचा । क्रोडचूडा । पलंकषा । स्थविरा । लोतनी । अलम्बुषा ।
वृद्धा । द्विन्नग्रन्थिका । बोड़ा । मुड़ली ।

लटजीरा (ओंगा)—अपामार्ग । शैखरिक । धामार्गव ।
मयूरक । प्रत्यक्पर्णी । किणी । स्थलमंजरी । मर्कटी । दुरभिग्रह ।
वासिर । कंटी । अघाट । क्षुरक । पाण्डुकण्टक । कुञ्ज ।
चिरचिटा ।

तालमखाना—कोकिलाक्ष । काकेक्षु । इक्षुर । क्षुरक ।
क्षुर । भिक्षु । काण्डेक्षु । इक्षुवालिका । शृंखला । शूरक ।
पिच्छिला । त्रिक्षुर । शुक्रपुष्प । कुलाहक । कैलया ।

घीकार—सहा । घृतकुमारी । अफला । सुरमा । मृदु ।
स्थलेरुहा । अजरा । अमरा । वीरा । तरुणी । रामा । कपिला ।
अदला । मण्डला । माता । रसायनी । कण्टकीनी । घीगुवार ।
ग्वारपाठ । कुवारपाठा । घीकुआर ।

रामबाँस—क्षुद्रकेतकी । तृणकेतकी । रञ्जुदात्री ।
मध्यदण्डा । काककेतकी । रामवान ।

गदहपूरना—पुनर्नवा । नीला । श्यामा । नील पुनर्नवा ।
नीलिनी । विप खपरा । साँठ । नीली साँठ ।

भँगरैया—भृंगराज । नीलभृंगराज । नीलपुष्प । पावन ।
सुनीलक । कुकुर भाँगरा । केशराज । भाँगरा । भँगरा । महाभृंग ।

सन—शण । निशादन । पटसन । भुनभुनियाँ । सनई ।

सोमलता—सोमवल्ली । सोमक्षीरी । द्विजप्रिया । सोमा ।
चन्द्रवल्ली । महागुल्मा । गुल्मवल्ली । यज्ञवल्ली । सोमक्षीरा ।
यज्ञाङ्गा ।

आकाश वौर—अमर वेल । अकास वौर । दुःस्पर्शा ।
आकाश वेल ।

शंखाहली—शंखपुष्पी । मेध्या । सुपुष्पी । पीतपुष्पी ।
चण्डा । कौड़ियाली । वनमालिनी । विष्णुक्रान्ता ।

अंधाहली—अर्कपुष्पी । पयस्या । सूर्यवल्ली । क्षोरिणी ।
वक्रशल्या । दुराधर्षा । शीता । शीतला । सितपर्णी । दधियार ।

लज्जावन्ती—छुईमुई । लजाधुर । लाजवन्ती । लज्जालु ।
समङ्गा । रक्तपादी । ताम्रा । खदिरका । कन्दिरी । स्पृक्का ।
संकेचिनी । लज्जा । स्पर्शलज्जा । स्वगुप्ता । वशिनी । महौषधि ।

ब्राह्मी—वयस्था । मत्स्याक्षी । सुरसा । ब्रह्मचारिणी ।
सोमवल्ली । सरस्वती । सोम्या । सुरश्रेष्ठा । सुवर्चला । वैधात्री ।

कपोतवेगा । दिव्यतेजा । महौषधि । मण्डूकमाता । मेध्या ।
वीरा । भारती । वरा । परमेष्ठिनी । दिव्या । शारदा ।

गाजुबाँ—गोजिह्वा । गोभो । कुरसा । दार्विपत्रिका ।
दर्वी । अधःपुष्पी । खरपत्री । गोजिया ।

कुकरौंदा—कुकुन्दर । ताम्रचूड़ । सूक्ष्मपत्र । कुक्कुरद्रु ।

सुदर्शन—सुदर्शना । सोमवल्ली । चक्राङ्गी । मधुपर्णिका ।
चक्राह्वा । ध्यानी । वृषकर्णी ।

चाय—चाह । चाहा । चविका । चा ।

माजूफल—मायाफल । माइफल । माइका । छिद्राफल ।
मायि । माजूफर ।

तमाखू—सुरती । क्षारपत्रा । कृमिघ्नी । धूम्रपत्रिका ।

इसरगोल—ईषदगोल । श्लक्ष्णजीर । स्निग्धजीर ।
ईसबगोल ।

सालम मिश्री—अमृता । जीवनी । जीवा । सुधीमूली ।
वीरकन्दा । प्राणदा ।

लालामिर्च (मिरचा)—कटुवीरा । तीक्ष्णा । अजडा ।
कुमरिच । रक्तमरिच ।

मेहदी—रंजका । रंजिनो । नखरंजिनी । सुगन्धपुष्पा ।
रागांगी । यवनेष्टा । मेदिका । रागगर्भा । कोकदन्ता ।

बिधारा—वृद्धदारु । जीर्णदारु । जीर्णा । फंजी । अजरा ।
सुपुष्पिका । सूक्ष्मपत्रा ।

हर्र *—हर्रा । हर्रै । हरीतकी । अभया । पथ्या । पूतना । कायस्था । अमृता । हैमवती । अव्यथा । चेतकी । श्रेयंसी । विजया । शिवा । वयस्था । जीवन्ती । रोहिणी । भिषग्वरा । प्राणदा । सुधा । बस्या । पाचनी । प्रथमा । शाका । हरडा । शकस्तृष्टा ।

बहेड़ा—विभीतकी । कलिद्रुम । कल्पवृक्ष । संवर्त । अक्ष । विभीत । कर्षफल । बहेडुक । कासघ्न । तिलपुष्पक ।

आँवला—(देखो फल वर्ग)

सोंठ—शुण्ठी । महौषधी । विश्वा । शुष्कार्द । भेषज । नागर । विश्वौषध । कटूत्कटक ।

अदरक—आर्द्रक । शृङ्गवेर । कटुभद्र । कटूत्कटक । वर । कन्दर । सैकतेष्ट । अपाकृष्णक । राहुच्छन्न । शार्ङ्ग । मच्छाक । आर्दिका । आदी ।

* जाति भेद से हर्र सात प्रकार की होती है । विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी । हरड की प्रशंसा में तो यहाँ तक लिखा है कि—

“हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी ।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी ॥”

—(राजवल्लभ)

अर्थात् हर्रें मनुष्यमात्र को माता के समान सुख देनेवाली है । कदाचित् माता कुपित भी हो जाय, परन्तु उदर-स्थित हरीतकी कभी भी मनुष्य का अहित नहीं करती ।

मिर्च (काली)—मरिच । पवित । श्याम । वेणुज ।
यवनप्रिय । वल्लीज । धर्मपत्तन । कोल । ऊषण । शिरोवृत्त । मृष्ट ।
मिर्च (सफेद)—सित मिरच । शीतोत्थ । सितवल्लीज ।
वालक । बहुल । धवल । चन्द्रके ।

पीपल—पिप्पली । मागधी । कृष्णा । चपला । चंचला ।
कणा । उपकुल्या । वैदेही । तिक्त तण्डुला । उष्ण । शौण्डी ।
कोला । कटी । कटुबीजा । सूक्ष्म तण्डुला । पीपर । कोरंगी ।

पिपरामूल—पिप्पलीमूल । ग्रन्थिक । चटकाशिर ।
कणामूल । कोलमूल । चटिका । कटुमूल । पत्राख्य । मागध ।

चीता—चित्रक । अनलनामा । पाठी । व्याल । ऊषण ।
कृष्णवर्त्मा । जातवेदा । बर्हि । विभाकर । विभावसु । वृहद्भानु ।
वैश्वानर । शिखावान । सप्तार्चि । हिमाराति । हिरण्यरेता ।
अग्नि । शार्दूल । चित्र । माली । हवि । शम्बर । द्वीपी । शूर ।
कुट । पाची । दारुण । अतितीव्र । मार्जार ।

[नोट—अग्नि के जितने नाम हैं, वे सब चीता के भी पर्याय हो सकते हैं]

सौंफ—शतपुष्पा । मधुरिका । माधुरी । तापसप्रिया ।
गन्धाधिका । घोषवती । सुगन्धा । छत्रा । शालेय । सितच्छत्रा ।
अतिच्छत्रा । मिसी । घोषा । पोतिका । अवाकूपुष्पी । कारवी ।
मिश्रेया । वनपुष्पा ।

मेथी—मेथिका । मेथिनी । दीपनी । वेधनी । गन्धवीना ।
ज्योति । गन्धफला । वल्लरी । चन्द्रिका । मन्था । मिश्रपुष्पा ।
कैरवी । कुञ्चिका । बहुपर्णी । पीतबीजा । मुनीन्द्रिका ।

अजवायन—यवानी । दीप्यक । दीप्य । भूतिक ।
अजमान । यवानिका । यवाप्रज । उग्रगन्धा । यवाह्वा । ब्रह्मदर्भा ।
यवसाह्व । दीपनी । वातारि । यमानिका । उग्रा । अजमोदिका ।
अजमोदा ।

अजमोद—अजमोदा । खराश्या । मयूर । दीप्यक । मोदा ।
ब्रह्मकुशा । कारवी । लोचमस्तक । वस्तमोदा । मर्कटी ।
मोदिनी । ब्रह्मकोशी । विशल्या ।

जीरा-सफेद—शुक्लाजाजी । जाजी । जीरक । कणा ।
दीर्घक । कणजीरक । अजाजी । श्वेतजीरक । कणाह्वा । जीरा ।
मितदीप्य । सितजीरक ।

जीरा-स्याह—ऋष्णजाजी । जरणा । सुगन्धा । पटु ।
कालजीरक । वर्षाकाली । हृद्या । उद्गार । शोधिनी । भेदिनी ।
रुच्या । नीला । नीलकणा । काश्मीरजीरका । कालमेषी ।
ऋष्णजीरक ।

मगरैला—कालाजाजी । स्थूलजीरक । पृथिवी । पृथुका ।
कुञ्जिका । कुञ्ची । दिव्या । काला । स्थूलकणा । जीर्णा ।
तरुणी । सुषवी । पतिंवरा । भेषज । ऋष्णा । शाली । कालिका ।
वृहज्जीरक । कलौंजी । मगरइल ।

धनियाँ—धान्यक । धन्याक । धन्य । धनिक । छत्रा ।
कुस्तुम्बुरी । वितुन्नक । शाकयोग्य । सूक्ष्मपत्र । जनप्रिय ।
कुन्दी । धाना । वेधक । धान्यबीज । अल्लका । हृद्यगन्धा ।
वेशष । निःसार ।

कालीजीरी—वृहन्याली । क्षुद्रपत्र । अरण्यजीर । कण ।

हींग—हिङ्गु । शूलद्विट् । रमठ । जतुक । जतु । दीप्त । सहस्रवेधि । जन्तुन्न । सूपाङ्ग । सूपधूपन । हिङ्गुक । रामठ । पिण्याक । बाह्नी । गृहिणी । मधुरा । केसर । शूलहृत । भूतारि । रक्षोन्न । जरण । भेदन ।

वच—बालवच । उग्रगन्धा । गोलोमी । शतपर्विका । मंगल्या । जटिला । तीक्ष्णा । गालिनी । लोमशा । विजया । उग्रा । वच्या । कांगा । भद्रा । इक्षुपर्णी । स्मरणी । बोधनीया । भूतनाशिनी । जलजा । मेध्या । शुक्रा । भोगवती । कर्षिणी । वचा ।

कुलींजन—कुलञ्ज । गन्धमूल । तीक्ष्णमूल । कुलंजन ।

चोपचीनी—चोवचीनी । द्वीपान्तरवचा । अमृतोपहिता ।

अकरकरा—आकारकरभ । आकल्कक । अकल्लक । आकरकरा ।

वाधीरंग—वायविडंग । भस्मक । मोघा । विडंग । कैराल । केवल । वेल्ल । तण्डुल । विडंगा । क्रिमिकंटक । रसायन । पावक । गर्दभ । चित्रा । वातारि । गहरा । कापाली । वरा । वृषणासना । चित्रबीजा । भाभीरंग ।

वंशलोचना—तुगाक्षीरी । शुभा । वांशी । त्वक्क्षीरी । वंशलोचना । क्षीरा । वंशजां । तुगा । शुभ्रा । वैणवी । कर्मरी । श्वेता । कर्पूररोचना । तुंगा । पिङ्गा । वंशशर्करा । वंसरोचना । रोचनिका ।

तखुर (तवाखीर)—तधक्षीर । पयःक्षीर । यवज । गवयोद्भव । गोधूमज । पिष्टिका । तण्डुलोद्भव । तालसम्भूत । तालक्षीर ।

ममुद्रफेन—फेन । डिण्डर । अधिकफ । अर्णवज । सिन्धकफ । जलहास । फेनक । श्वेतधामा । बार्द्धिफेन । सुफेन । पयोधिज । सामुद्र । शुष्काशुल्क । विंध्याह । दधिफेन । सारमल ।

काकोली—शीतपाकी । पयस्या । क्षीरा । मेदुरा । वायसोलिका । वीरा । धीरा । शुष्का । स्वादुमांसी । वयस्था । जीवन्ती । मधुरा । पयस्विनी । कायस्थिका ।

क्षीरकाकोली—पयस्या । महावीरा । पयस्विनी । अष्टमी । क्षीरशुष्का । सुकोली । क्षीरविषाणिका । जीववल्ली । जीवशुष्का । क्षीरवल्ली । क्षीरमधुरा ।

मुलेठी—मधुयष्टी । यष्टी । यष्ट्याह । यष्ट्याहिका । मधुक । यष्टिका । यष्टीक । क्लीतक । यष्टि । मधुस्रवा । क्लीतन । मधुम । मधुवली । मधूली । मधुरसा । अतिरसा । मधुरनाम । शोषापहा । सौम्या । स्थलयष्टी । मुलहठी । मुलैठिका । जलयष्टी ।

कबीला—कम्पिल । कम्पिल । कम्पिलक । कर्कश । चन्द्र । रक्ताङ्ग । रोचना । रेचनी । पिकाक्ष । लघुपत्रक । रेची । रञ्जक । लोहिताङ्ग । रक्तफल । बहुपुष्प ।

अमलतास—आरग्वध । राजवृक्ष । व्याधिघात । चक्रपरिव्याध । सम्यक् । चतुरंगुल । शम्याक । आरेवत । प्रमेह । कृतमाल । सुवर्णक । मन्थान । रोचन । दीर्घफल । स्वर्णपुष्प ।

हिमपुष्प । कण्डूत्र । महाकर्णिकार । ज्वरान्तक । अरुज । स्वर्णाङ्ग ।
कुष्ठसूदन । कर्णाभरणक । आरोग्यशिम्बी । आमहा । शोफालिका ।
नक्तमाल । घनबहेड़ा ।

कुटकी—तिक्ता । अरिष्टा । चक्राङ्गी । कटु । कटुका ।
शकुलादनी । कटुरोहिणी । जननी । मस्यपित्ता । शतपर्वा ।
द्विजाङ्गी । कृष्णा । कृष्णमेदा । महौषधि । अश्वनी । कटंबरा ।
केदारकटुका ।

चिरायता—भूनिम्ब । किरात । रामसेनक । किरातक ।
अनार्यतिक्त । चिरात्तिक्त । तिक्तक । चिराटिका । कैरात । हैम ।

इन्द्रजौ—यव । कलिंग । भद्रयव । कालिंगक । वत्सक ।
शक्रबीज । कुटज । भद्रज । इन्द्रयव ।

[नोट —कुटज के बीज को इन्द्रजवं कहते हैं । यह दो प्रकार का होता है । एक सफेद रंग का जो मीठा होता है और दूसरा काला जो कडुआ होता है ।]

मैन्फर—मदनफल । छईन । पिण्डीनट । करहाट । कण्ठ ।
मरुबक । शल्यक । विषपुष्पक । पिचुक । शल्य । रामच्छईनक ।
धाराफल । तगर । राठ । घण्टाल । करहर । मैन्फल । मयनफल ।

मालकङ्गुनी—ज्योतिष्मती । महाज्योतिष्मती । तीक्ष्णा ।
कङ्गुनी । तेजोवती । बहुरसा । कनकप्रभा । सुवर्णनकुली । लवणा ।
सुरलता । अग्निफला । अग्निगर्भा । शैलसुता । सुतैला । सुवेगा ।
बायसी । तीव्रा । काकाण्डी । गीर्लता । पोता । यशस्विनी ।
मेध्या । मेधावती । धीरा । उमीजिनी ।

पुष्कर मूल—पोहकर मूल । पौष्कर । पुष्कर । वीर ।
पद्मकर्ण । पद्मपर्ण । पुष्करणी । काश्मीर । ब्रह्मतीर्थ । मूलपुष्कर ।
पुष्कर जटा । पद्मपुण्य । सागर । शूर । सुमूलक । शूलन्न ।

केकड़ा सिंगी—कर्कटशृंगी । शृंगी । कुलिंगी । चक्रा ।
महाघोषा । कर्कटी । चक्राङ्गी । घोषा । शिखरी । नताङ्गी । वक्रा ।
विपाणिका । चन्द्रास्पदा ।

कायफर—कटफल । त्वक्फल । कुम्भी । कुमुदिका ।
श्रीपर्णिका । कैटय्य । काफल । कुम्भिपाकी । पुरुष । कुमुदी ।
सोमवल्क । सोमवृक्ष । रोहिणी । नासानु । भद्रारञ्जनक । भद्रा ।
लघुकाश्मर्य । श्रीपर्णी । कायफल ।

मजीठ *—मञ्जिष्टा । विकसा । जिङ्गी । समंगा । काला ।
कालमेधिका । मण्डूकपर्णी । भण्डीरी । योजनवल्ली । काण्डीरी ।
रञ्जनी । रक्ताङ्गी । रक्तयष्टी । रक्ता । भण्डी । लतायष्टी । जिङ्गी ।
हेमपुष्पी । भण्डिल । हरिणी । गौरी । वप्रा । रोहिणी । चित्रलता ।
चित्राङ्गी । विजया । मंजूषा । क्षत्रिणी । अरुणा । ताम्रवल्ली ।

लाही (लाह)—लाक्षा । कीटजा । राक्षा । क्षतघ्नी ।
रक्तमातृका । जतु । याव । अलक्त । गराधिका । खदरिका ।
रङ्गमाता । पलङ्कषा । द्रुमव्याधि । क्रिमिजा । जतुका । गर्णधका ।
लाख । पलाशी । गन्धमादिनी । रक्ता । दीप्ति । नीला । द्रवरसा ।

* यह लाल रंग की लकड़ी होती है । पहले जब कि रंगने की बुकनी
नहीं चली थी, तब इसीको लोग लाल रंग के लिये व्यवहार में लाते थे ।
इसको कूटकर पानी में भिगो देते हैं; फिर आग पर चढ़ाकर औटा लेने
पर पक्का लाल रंग तैयार हो जाता है ।

हलदी—हरिद्रा । निशाहा । पीता । युवती । हेमरागिणी । काञ्चनी । क्षणदा । गौरी । मेदघ्नी । वरवर्णिनी । गन्धपलाशिका । सुवर्णवर्णा । मङ्गलप्रदा । कावेरी । उमा । वर्णवती । पिञ्जा । पीतवालुका । रंजनी । निशा । बहुला । वर्णिनी । वराङ्गी । अनेष्टा । वर्षिणी । विषघ्नी । पिङ्गा । मङ्गल्या । मङ्गला । लक्ष्मी । भद्रा । शिफा । शोभा । शोभना । योषित्प्रिया । कृमिघ्नी । हरदी । हृद्विलासिनी । जयन्ती ।

[नोट—‘रात’ के जितने पर्याय हैं वे सब ‘हलदी’ के पर्याय हो सकते हैं ।]

आमा हलदी—अम्बाहलदी । दावीमेद । आम्रगन्ध । सुरभिदारु । सुरभि । पद्मपत्रा । सुरनायिका । कपूर हलदी । आमियाहलदी ।

[नोट—इसके लेप से अभिघात से उत्पन्न हुई सूजन दूर होती है ।]

दारु हलदी—दावी । दारुहरिद्रा । द्वितीयाभा । पर्जनी । कपीतक । पीतद्रुम । कलियक । हरिद्रु । पचम्पचा । मर्मरी । पीतिका । पीतदारु । स्थिररागा । कामिनी । कटंकटेरी । पर्जन्या । पीता । दारुनिशा । कामवती । हेमकान्ति । पीतत्वक । पीतचन्दन । निर्दिष्टा । काष्ठरजनी । हैमवती ।

रसवत—रसोत । रसांजन । तार्क्ष्यशैल । रसगर्म । रसाग्रज । कृतक । वीर्याञ्जन । अग्निसार ।

बाकुची—सोमराजी । कृष्णफला । बाकुची । सोमवल्ली । पूतिफली । बेजानी । कालमेषिका । अवल्गुज । सुवल्ली । कृष्णा ।

चन्द्रलेखा । पूतिफला । कालमेषी । बांगुजी । ऐन्दवी । शूलोत्खा ।
सिता । सितावरी । चन्द्री । सुप्रभा । वल्गुजा । काम्बोजी ।
शशिलेखा । असितत्वचा । बायंची । वावची ।

चक्रवँड—चक्रमर्द । प्रपुन्नाट । मेषलोचन । पद्माट ।
एडगज । चक्री । तर्किण । तर्किल । प्रपुन्नड । तर्बट । उरणाख्य ।
पवाड़ । पमाड़ ।

अतीस—अतिविष । अतिविषा । श्वेता । विषा । अरुणा ।
घुणवल्लभा । शृङ्गीका । विश्वा । शृङ्गी । श्वेतकन्दा । भृङ्गी ।
विपरूपा । विरूपा । श्वेतवचा । माद्री । भंगुरा । मृद्वी । शिशुभैषज्य ।
लोध—लोध्र । लोध्रक । तिरीटक । शावर । शुक्ल ।
गालव । मार्जन । तिन्दुक । लक्तकर्मा । बलिप्रिय । तिलक ।
काण्डनील । हेमपुष्पक ।

पठानी-लोध—पट्टिकालोध्र । क्रमुक । स्थूलवल्कल ।
पट्टी । जीर्णपत्र । लाक्षाप्रसादन । पट्टिका । जीर्णबुध्न । शावर ।
अक्षिभेषज ।

भिलावाँ *—भल्लातक । भल्लात । भेला । अरुष्कर ।
बह्निनामा । वीरतरु । भूतनाशन । शैलवीज । धनुर्वृक्ष । शोकनुत् ।
स्नेहवीज । रक्तहर । अग्नि ।

* 'अग्नि' शब्द के जितने पर्याय हैं वे सब 'भिलावाँ' के भी पर्याय हो सकते हैं । इसके अतिरिक्त गुण के अनुसार भी कितने पर्याय शब्द बना लिये जा सकते हैं, जैसे—वातारि (वायु को नाश करनेवाला), अशोहित (बवासीर में हितकारी), शोधहृत् (सूजन को दूर करने वाला) इत्यादि ।

भाँग—विजया । अजया । जया । शक्राशन । मत्कुणारि । भंगा । भंग । वीरपत्रा । चपला । आनन्दा । हर्षिणी । मोहिनी । भृङ्गी । धूर्तवधू । मातुलानी । मातुली । नीली । हरा । मनोहरा । योगिनी । ज्ञानदा । उन्मत्तिनी । कामाग्नि । ज्ञानवह्निका । शिवा । माया । मत्ता । हरप्रिया ।

गाँजा—गंजा । संविदा मंजरी । हर्षिणी । मादिनी । मोहिनी ।

पोस्त (अफीम का फल)—खसफल । खाखसफल । उल्लसत्फल । खसखस-फल । पोस्तकेडोरे ।

अफीम *—अहिफेन । अफेन । खसखस-रस । तिफेन । अहिफेनक । खसफलक्षीर । आफूक । नागफेन । पोस्तोद्भव । पोस्तरस । भुजंगफेन । आफू । अफ्यून ।

खसखस (पोस्ते के दाने)—खसवीज । खाखस-तिल । सूक्ष्म तण्डुल । सुवीज । सूक्ष्मवीज । तिलभेद । खसतिल । पोस्ता का दाना ।

* अफीम की गणना उपविषों में है । इसकी अधिक मात्रा खा लेने से मृत्यु हो जाती है । जारण, मारण, धारण और सारण नामों से अफीम चार प्रकार की होती है । सफेद रंग की अफीम को 'जारण' कहते हैं, यह शरीर को जीर्ण करती है । काले रंग की अफीम मृत्युकारक है, इसलिये इसको 'मारण' कहते हैं । पीले रंग की जरानाशक है, इसलिये इसको 'धारण' कहते हैं । चित्रवर्ण की अफीम मल को सारण करती है, इसलिये इसको 'सारण' कहते हैं ।

गुर्च (गिलोय)—गुडूची । अमृतवल्ली । कुण्डली ।
 चक्रलक्षणा । मधुपर्णा । सोमवल्ली । विशल्या । तन्त्री ।
 निर्जरा । वत्सादनी । छिन्नरुहा । तन्त्रिका । अमृता । जीवन्तिका ।
 गुडुर्ची । वातरक्तारि । उद्धारा । पित्तघ्नी । वरा । ज्वरारि ।
 श्यामा । सुरकृता । रसायनी । छिन्ना । भिषक्प्रिया । कुण्डलिनी ।
 वयस्था । नाग कुमारिका । छद्मिका । चन्द्रहासा । चक्रलक्षणिका ।
 धीरा । देव निर्मिता । चक्राङ्गी ।

पान—नागरबेल । नागबेल । नागवल्ली । ताम्बूल ।
 नागिनी । दिवाभीष्टा । पर्णलता । सप्तशिला । भक्षपत्रा । मुखभूषण ।

[नोट—सर्प शब्द के किसी पर्याय के साथ 'लता' वाचक पर्याय जोड़ देने से 'पान' का बोधक हो जायगा ।]



१३. गन्धादि वर्ग

कपूर *—कपूर । ओषधीश । सोमसंज्ञ । सिताभ्रक । शिला । हिमांशु । शीतांशु । चन्द्रभस्म । निशापति । तरुसार । रेणुसार । हनु । वेधक । शीतसरीच । विधु । शीतमयूख । घनसार । ग्लौ । हिमवालुका । इन्दु । गौर । स्फटिकाभ्र । हिमोपल ।

[नोट—‘चन्द्रमा’ शब्द के जितने पर्याय हैं वे सब ‘कपूर’ के भी पर्याय हो सकते हैं ।]

कस्तूरी—गन्धधूलि । मृगमद । मृगनाभिजा । अण्डजा । नाभी । मिश्रा । योजनगन्धिका । गन्धशेखर । मृगनाभि । मार्ग । मदलता । धूपसञ्चारी । वातामोद । मदनी । वेधमुख्या । सार्जारी । सुभगा । सहस्रवेधी । कामान्धा । मृगाण्डजा । ललिता । श्यामला । मोदिनी । सहस्रभित् ।

चन्दन—श्रीखंड । मलयज । भद्रश्री । गोशीर्ष । सर्पेष्ट । आम्य । रौहिण । पीतसार । महार्ह । तिलपर्ण । मङ्गल्य । चन्द्रद्युति । पावन । पटीर । एकाङ्ग । भद्राश्रय । भोगिवल्लभ । शीतल ।

* कपूर के १३ प्रकार हैं, यथा—पोतास (बरास), भीमसेन, सितकर, शंकरावास, पांशु, पिञ्ज, अब्दसार, हिमवालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पात्रिकाख्य ।

लालचन्दन—ताम्राभ । ताम्रसार । रक्तचन्दन । रञ्जन ।
रक्तसार । कुचन्दन । तिलपर्णी । क्षुद्रचन्दन । कुमोद । पत्राङ्ग ।
पतङ्ग । प्रवालफल । भास्करप्रिय ।

अगर—अगरु । क्रिमिज । लोह । राजार्ह । वंशिक ।
लघु । कृष्ण । वर्णप्रसादन । पातका । भृंगज । अनार्यक । असार ।
अभिकाष्ठ । प्रवर । योगज ।

देवदारु—सुरदारु । द्रुक्किलिम । भद्रदारु । देवकाष्ठ ।
पीतद्रु । शतपादप । किलिम । स्नेहवृक्ष । मस्तदारु । दारुक ।

तगर—कुटिल । लघुष । नत । जिह्व । दीपन । कुञ्चिन ।
चक्र । कालानुसारि । शठ । महोरग । पादिक । विनम्र ।
नहुषाख्य । दीन । तगरक ।

गुगुलु—गुग्गुलु । कालनिर्यास । पलंकष । महिषाक्ष ।
पुट । जटायु । कौशिक । धूर्त । देवधूप । शिव । पुर । कुम्भ ।
उल्लखलक । कुम्भोलु । कुम्भोलुखलक । सर्वसह । उष । कुम्भी ।
कुन्ती । उद्दीप्र । पवनद्विष्ट । भवाभीष्ट । निशाढक । जटाल ।
भूतहर । शाम्भव । दुर्ग । वायुघ्न । देवेष्ट । मरुदिष्ट । रक्षोहा ।
रूक्षगन्धक । दिव्य । गूगल । भैंसा गूगल ।

राल—धूना । सर्जरस । देवधूप । यक्षधूप । विरूप ।
वहिवल्लभ । कलकल । काल । कलयस । सर्वरस । बहुरूप ।
सालज । धूपन । धूनक । शालसार । शालवेष्ट । ललत । देवेष्ट ।
सुरभि । क्षण ।

गन्धाविरोजा—श्रीवास । सरलस्राव । वृक्षधूपक ।
श्रीवेष्ट । त्रेष्टसार । रसावेष्ट । श्रीपिष्ट । पद्मदर्शन । पायस ।

वृकधूप । सरलद्रव । रक्तशीर्षक । रसाह्व । यास । यवास ।
घृताह्वय । दध्याह्वय । क्षीराह्वय । श्रीरस । चितागन्ध । सरलांग ।
धूपाङ्ग । तिलपर्ण । विरोजा ।

लौंग—लवङ्ग । देवकुसुम । श्रीसंज्ञ । भृङ्गार । तीक्ष्ण ।
लव । वारिज । लवङ्गक । शेखर । प्रसून । श्रीपुष्प । दिव्य ।
तोयाधिप्रिय । वारिपुष्प । तीक्ष्णपुष्प । चन्दनपुष्प ।

जायफल *—जातीफल । फलजाती । सुमनःफल ।
कोषक । जातीकोष । जाती । राजभोग्य । जातिशस्य । शात्क ।
मालतीफल । मज्जसार । पुट । मदशौंड ।

जावित्री—जातिपत्रो । जातिकोषी । जातिकोषा । पत्रिका ।
सुमनपत्रिका । सौमनसायिनी । मालती ।

इलायची-बड़ी—एला । स्थूलएला । बहुला मलेया ।
बृहदेला । त्रिपुटा । त्रिदिवोद्भवा । सुरभित्त्वक् । महिला ।
कन्याकुमारी । कुमारिका । पृथ्वी । गोपुटा । कायस्था । कान्ता ।
धृताची । भद्रैला । एलीका । गर्भसम्भवा । ऐन्द्री । इन्द्राणी ।
निष्कुटी । बाला । गन्धालीगर्भ । पूर्वी इलायची । लाल इलायची ।

इलायची-छोटी—सूक्ष्मैला । वयःस्था । त्रुटि । द्राविड़ी ।
तीक्ष्णगन्धा । उपकुञ्चिका । कोरंगी । भृगपर्णिका । पुत्था ।
त्रिपुटा । छर्दिकारिपु । पुटिका । चन्द्रसम्भवा । कपोतवर्णा ।

* जायफल के वृक्ष जावा, सुमात्रा आदि टापुओं में होते हैं । इसके फल को जायफल तथा इसकी छाल के भीतर लाल गुच्छ होता है उसे जावित्री कहते हैं । सूखने पर जावित्री पीले रंग की हो जाती है ।

चन्द्रबाला । बहुला । निष्कुटी । कुनटी । गौरांगी । गर्भारा ।
गन्धफलिका । श्वेतैला । चन्द्रिका । गुजराती इलायची ।
सफेद इलायची ।

शीतलचीनी—कङ्कोल । कङ्कोलक । कोलक । कोषफल ।
फलक । तैलसाधन । कोरक । काकोल । कृतफल । कटुकफल ।
कटुक । काल । मरिच । माधवोचित । द्वेष्य । मागधोषित ।
द्वीपसम्भव । कबाबचीनी । कंकोला ।

नागकेशर—चाम्पेय । केशर । कनकाह्वय । राजपुष्प ।
भुजंगाख्य । इभाख्य । पुष्परेचन । केसरी । नागकिञ्जल्क ।
नागीय । रुक्म । हेम । पिञ्जर । फणिकेशर । पुत्रागकेशर ।
नागपुष्प । नागेश्वर । फलक ।

दालचीनी†—दारुचीनी । तज । शृङ्ग । वराङ्ग ।
रामष्ट । विञ्जुल । त्वच । उत्कट । चोल । गुडत्वच । सूतकट ।
हृद्य । मुखशोधन । शकल । सिंहल । वल्य । सुरस । कामवल्लभ ।
बहुगन्ध । वनप्रिय । लटपर्ण । वर । सैहल । दारुसिता ।

तेजपात—तेजपत्र । तज । पत्रक । गन्धजात । पत्र ।
पाकरंजन । दलाह्वय । राम । गोमेद । वसनाह्वय । छदन । दल ।
पालाश । अंकुश । वास । तापस । इष्टगंध । रोमश । तेजपत्ता ।
तमालक । पत्रज ।

† दालचीनी का पेड़ सिंहल, मालावार, कोचीन, चीन आदि देशों में अधिकता से होता है। इसकी पतली शाखाओं की छाल को ही दालचीनी कहते हैं। इसके फूल से तेल व इत्र बनता है।

बालछड़—जटामासी । जटी । पेपी । लोमशा । जटिला ।
मिसि । तपस्विनी । हिंसा । मिथिका । चक्रवर्तिनी । नलद ।
वह्निनी । किरातिनी । भूतजटा । क्रव्यादी । पिशिता । पिशी ।
पेशिनी । जटाला । माता । अमृतजटा । मृगभक्षा । पूतना ।
सेवाली । गौरी । कनुचर ।

खस—उशीर । उसीर । नलद । अमृणाल । समगंधिक ।
सेव्य । अभय । जलाशय । लामज्जक । लघुभय । अवदाह ।
इष्टकापथ । अवदात । इन्द्र । जलवास । वीरणमूल । गांडरमूल ।
शिशिर । सुगन्धिमूल । कम्भु । कटायन । वीरभद्र । वीर ।

गोरोचन *—गोरोचना । गोपित्त । वन्दनीया । शोभा ।
मनोरमा । वन्द्या । रुचिरा । शोभना । शुभा । गौरी । पिङ्गा ।
मङ्गल्या । मंगला । शिवा । पीता । गौतमी । गव्या । चन्दनीया ।
कांचनी । मेध्या । रामा । इयामा । भूतविद्राविणी । नंदिनी ।
गोपित्त सम्भवा । गोलोचन ।

नख—व्याघ्र नख । करज । व्याघ्रायुध । चक्रकारक ।
कूटस्थ । नखाङ्क । चक्री । चक्रनख । त्र्यस्रफल । द्वीपिनख । खपुर ।
व्यालायुध । व्यालबल ।

नखी—हतु । हट्ट विसासिनी । शुक्ति । शंख । कोलदल ।
खुर । नखरी । शंखनख । नागहतु । पाणिज । बदरीवच ।
रूप्य । पण्यविलासिनी ।

* गोरोचन गाय के मस्तक का पित्त होता है । इसका रंग पीला होता है । यह अनेक प्रकार से व्यवहार में आता है । इसका तिलक लगाकर वशीकरण करते हैं ।

सुगन्धबाला—बालक । वारिद । बाल । केश नामक ।
 हीवेर । कचामोद । वरपिङ्ग । बर्हिष्ठ । उदीच्य । वज्र । वारि ।
 [नोट—पानी तथा बाल (केश) के जितने पर्याय हैं, वे
 सब इसके भी पर्याय हो सकते हैं ।]

पद्मकाठ *—पद्मक । मलय । चारु । पीतरक्त । सुप्रभ ।
 पीत । पीतक । मालेय । शीतल । शुभ । केदारज । पद्मवृक्ष ।
 पद्मगन्धि । पद्मकाष्ठ । कैदार । पद्माक । पद्माख ।

नागरमोथा—गांगेय । कुरुविल्व । भद्रमुस्त । कुटन्नट ।
 भद्रमुस्ता । भद्रमुस्तक । गुन्द्रा । कक्षोत्था । वराही । ग्रन्थि ।
 भद्रकाशी । कशेरू । क्रोडेष्टा । कुरुविन्दाख्या । सुगन्धिग्रन्थिला ।
 हिमा । बल्या । कच्छोलो । अर्णोद । वारिद । अन्द । मोथा ।
 भद्रमोथा । नागरमुस्ता । नादेयी । वृषध्माक्षी । कच्छरुहा ।
 चूडाला । पिण्डमुस्तक । नागरोत्थ । कलापिनी । चक्राक्षा ।
 शिशिरा । चारु केसरा । उच्चटा । श्रीभद्रा ।

छरीला †—शैलाख्य । वृद्ध । गिरिपुष्पक । शीतशिव ।
 सुभग । शिलासन । शीतल । शैल । शैलज । कालानुसार्य ।
 शिलाद्रु । शिलेय । शैलक । गृह । स्थविर । पलित । जीर्ण ।
 भूरि छरीला ।

* पद्मकाठ का वृक्ष केदारजी वा हिमालय पर्वत पर होता है । इसको
 घिसकर पीने से गर्भ धारण हो सकता है । यदि गर्भपात होने को हो तो
 गर्भ स्थिर हो जाता है ।

† इसे पत्थर का फूल भी कहते हैं । यह पहाड़ों पर पाषाण में से ही
 उत्पन्न होता है । खूनी बवासीर की अकसीर दवा है ।

कचूर—कचूर । मुख्य । द्राविड । कल्पक । शठी । काश्य ।
दुर्लभ । गन्धमूलक । गन्धसार । जटाल ।

कपूर-कचरी—पलाशी । षडग्रन्था । सुव्रता । गन्धारका ।
ग्रन्थमूलिका । गन्धबधू । पृथुपलाशिका । गन्धमूली । कर्पूर ।
सटी । कर्बुर । सुगन्धासटी । गन्धोली । शठिका । पलाशिका ।
समुद्रा । तूणी । दूर्वा । गन्धा । कृष्णहरिद्रा । हिमोद्भवा । सौम्या ।
गंधपलाशी ।

पुदीना *—व्यञ्जन । वान्तिहारी । रुचिश्य । शाकशोभन ।
सुगन्धिपत्र । अजीर्णहर ।



* ये नाम पुदीना के गुणों के अनुसार हैं। वास्तव में ये पर्याय नहीं हैं। प्राचीन न होने के कारण इसका वर्णन प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों वा निघण्टुओं नहीं पाया जाता। केवल 'निघण्टु रत्नाकर' में जो कि नवीन ग्रन्थ है इसका वर्णन है।

१४. मधु वर्ग

मधु (शहद)*—माक्षिक । मधु । क्षौद्र । भृङ्गवात । कुसुमासव । सारघ । पित्र्य । माध्वीक । वरटीवात । मकरंदरस । मध । सहत । शहद ।

मोम—मधूच्छिष्ट । मयन । मधुशेष । सिक्थक । मादन । मध्वाधार । मदनक । मधूषित । शिक्थ । काच । विघस । उच्छिष्ट । क्षौद्रेय । पीतराग । स्निग्ध । द्रावक । मक्षिकाश्रय । मधूत्थित ।

काँजी—काजिक । कुण्डल । धान्यमूलक । कुल्माष । कुल्माभियुत । आरनालक । सौवीर । आवन्तिसोम । वीर । कुंजल । अभियुत । कांचिक । तुषाम्बु । संधान । गृहाम्बु । महारस । शुक्तचुक्र ।

मादिरा (शराव)—मद्य । प्रसवा । हाला । हलिप्रिया । अमृता । वीरा । माधवी । सुरा । परिश्रुत । वारुणी । इरा ।

* पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नाम की मक्खियों से क्रमशः चार प्रकार का शहद निकलता है । यथा—पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र तथा माक्षिक ।

कादम्बरी । मत्ता । प्रमत्ता । सीता । सन्धान । आसव । गुडारिष्ट ।
मध्वारिष्ट । मदिष्टा । हारहूर । कल्प । परिप्लुता । महानन्दा ।
मधुलिका । मदनी । मधूल । कल्या । अद्विजा । शुण्डा । मैरेय ।
बुद्धिहा । सिंदुर रसना । दारू । सिन्धुसुता । हेय । कश्य । अपूता ।
मार्द्वीक ।

[नोट—खजूर की मदिरा को खजूरी, ताड़ की मदिरा को ताड़ी कहते हैं । औषधियों के कढ़े से बनी हुई मदिरा को अरिष्ट कहते हैं, जिसका प्रयोग औषधि रूप से होता है ।]

ईरव—इक्षु । दीर्घच्छद । भूरिरस । गुड़मूल । असितपत्र ।
मधुतृण । मधुयष्टि । विपुलरस । गुड़दारु । कोशकार । रसाल ।
इक्षुर । असिपत्रक । पयोधर । कर्कोटक । वंश । कान्तार ।
सुकुमारक । अधिपत्र । वृष्य । मृत्युपुष्प । गन्ना । पौंडा । ऊख ।

गुड़—इक्षुसार । मधुर । रसपाकज । शिशुप्रिय । सितादि ।
रसज । अरुण । खण्डज । द्रवज । सिद्ध । अमृत सारज ।
मोदक । इक्षुरसकाथ । गण्डोल । मधुवीजक । स्वादुखण्ड ।
गुल । स्वादु ।

खाँड़—खण्ड । रसोद्भवा । शुक्ला । सुपिष्टा । पाण्डुरा ।
पंशुलका । शकर ।

चीनी—शर्करा । शुक्ला । मीनाण्डी । सिता । बालुकाःमजा ।
अहिच्छत्रा । सिकता । शुभ्रा । शुद्धा । सितोपला । शुक्लोपला ।
शार्क । श्वेता । मत्यण्डिका । गुडोद्भवा ।

[नोट—येही नाम मिश्री, कन्द आदि के भी हैं ।]



१५. गोरस वर्ग

दूध—दुग्ध । क्षीर । पय । स्तन्य । पीयूष । ऊधस्य ।
अमृत । दोहज । अवदोह । दोहापनय ।

दही—दधि । पयस्य । मङ्गल्य । विरल । दधिद्रप्स ।
घनेतर । क्षीरज ।

मलाई—क्षीरफेन । क्षीरसन्तानिका । साढ़ी । बालाई ।

खोआ—खोया । मावा । किलाट ।

छेना-पानी—मोरट । (फाड़े हुए दूध का पानी)

छेना—तक्रपिण्ड ।

मट्टा—तक्र । दण्डाहत । घोल । गोरसज । कटुर । द्रव ।
अमृ । कंकर । मथित । मलिन । भ्रमसंधिक । गोरस । कालशेय ।
विलोडित । छाछ । उदथित । माठा ।

मक्खन—म्रक्षण । नवनी । नवनीत । सरज । सार । नोनी ।
मन्थज । दधिसार । कलम्बुट । क्षीरसार । क्षीरसत्व । नवोद्धृत ।
माखन । लवनी । नैनू ।

घी—घृत । आज्य । हवि । सर्पि । पुरोडास । आज ।
नवनीतक । पवित्र । वह्निभोग्य । तैजस । अभिवारक । तोयद ।
पीथ । अमृत । होम्य । आयु । जीवन ।



तृतीय खण्ड

१. मनुष्य वर्ग

शरीर—कलेवर । गात्र । वपु । संहनन । वर्ष्म । विग्रह ।
काय । देह । मूर्त्ति । तनु । तनू । क्षेत्र । पुर । घन । अङ्ग ।
पिण्ड । भूतात्मा । स्वर्गलोकेश । स्कन्ध । पञ्जर । कुल । बल ।
आत्मा । प्राणागार । वपुष ।

अङ्ग—अवयव । प्रतीक । अपघन । गात्र । गात ।

शिखा—चूड़ा । केशपाशी । जूटिका । जुटिका । चुरकी ।
केशी । शिखण्डिका । चोटी । चुटैया । चुण्डी (चुन्दी) ।

सिर के बाल—कुन्तल । केश । बाल । शिरोरुह । कच ।
चिकुर । अलक । शिरसिज । मूर्द्धज । अस्र । वृजिन । श्याम ।

[स्त्रियों के सिर के बाल—केशपाश । केशसमूह । जूरा ।
जूटा (झोंटा) । घुँघराले बाल—कैट्यमलक । कुन्तल । कुञ्चित केश ।]

चोटी—धम्मिल । वेणी । कवरी । प्रवेणी ।

सिर—शिर । शीश । शीर्ष । मूर्द्धा । मस्तक । माथ ।
कपाल । खोपड़ी । उत्तमाङ्ग । मुण्ड । मुण्डिका । मूँड़ ।

ललाट—लिलार । माथा । अलिक । बेंदी । भाल । गोधि ।
भाग्यमणि । मस्तक ।

जटा—कपर्दक । बद्धकच । जूड़ा । जटाजूट । शटा ॥
जटी । जूट । जुटक । शट । कौटीर । जूटक । हस्त ।

[जटाधर, जटाटङ्क = शिव । जटाज्वाला = आग की लपट ॥
जटाधारी = ऋषि-मुनि ।]

कान—कर्ण । श्रवण । श्रुति । श्रोत्र । शब्दग्रह । श्रव ।

कनपटी—मलपट । कच्चा । गण्ड । गण्डस्थल ।

भौंह—ध्रू । तन्त्री । भृकुटी । भवँ ।

वरौनी—पक्ष्म । अक्षिलोम । नेत्रच्छदरोम । गरुत् । पक्षः ॥
नेत्रकिञ्जल्क । बरुनी ।

आँख—लोचन । नयन । नेत्र । अक्षि । ईक्षण । दृश् ।
दृष्टि । दृक् (दृग) । अम्बक । विलोचन । रक्षिणी । चख । चक्षु ॥

आँख की पुतली—तारकाक्षण । तारा । सितारा । पुत्तली ।
कनीनिका । गोलक । तारिका ।

आँख का गोला—बिड़ाल । कोया । नेत्रपिण्ड । गोलक ।

आँख का कोना—अपाङ्ग । कोण । नेत्रंत । कनखी ।
दृष्टिकोण ।

पलक—नेत्रच्छद । पपनी । निमेष । पल । निमीलन ।

गाल—कपोल । गण्ड ।

नाक—घ्राण । गन्धवहा । घोणा । नासा । नासिका । नस ॥

आँठ—होठ । ओष्ठ । सृक्निणी । अधर । रदनच्छद ।

ठुड्डी—चिबुक । हनु । ठोढ़ी । दाढ़ी ।

मूँछ-दाढ़ी—श्मश्रु । मुच्छ । मोंछ ।

मुँह *—आनन । मुख । आस्य । लपन । वदन । वक्र । तुण्ड ।

जीभ—जिह्वा । रसना । रसज्ञा । गिरा । वाणी । वाचा ।

दाँत—दन्त । रद । दशन । रदन । द्विज ।

जबड़ा—दंष्ट्रा । डाढ़ । जभा । चौहड़ । चौभड़ ।

तालु—तालू । काकुद । तारू ।

कंठ—गल । गला ।

गरदन—श्रीवा । शिरोधि । कंधर । कंध ।

[नोट—गरदन की हड्डियों को 'हँसली' कहते हैं]

कंधा—स्कंध । कंध । अंश । भुजमूल । भुजसंधि ।

घंटी (घाँटी)—कृकाटिका । घाड़ । घाटा । घाँटी ।

घेघा । गटई ।

छाती—वक्षस्थल । वक्ष । क्रोड़ । उर । वत्स । हृदय ।

स्तन—कुच । उरोज । पयोधर । वक्षोज । थन । उरज ।

वक्षोरुह ।

स्तन का अग्रभाग—चूचुक । चूची ।

काँख—कक्ष । बगल । कँखौरी । बाहुमूल ।

कमर—कटि । कट । श्रोणि । श्रोणिफलक । ककुच्चती ।

* मुख के मुख्यतः दो भाग हैं । एक तो 'मुखमण्डल' जिसमें नाक, ओठ, गाल, आँख, ललाट और मुख सम्मिलित हैं । दूसरा 'मुख-गह्वर' जिसमें दाँत, जबड़े, ओठ, जीभ, तालु, कण्ठ और गला सम्मिलित हैं ।

श्रोणिफल । श्रोणी । करभ । काञ्चीपद । कलत्र । कटीर । कटो ।
कटिपार्थ्व । पार्थ्व । लंक । मध्यांग ।

कुल्हा (कमर की हड्डी)—स्फिच । कटिप्रोथ ।
कुल्हा । कुल्हड़ ।

पेट—उदर । जठर । कुक्षी । कोंख । तुन्द (तोंद) ।
पिचण्ड । थौंद । कुछ्छ । गर्भ ।

नाभि—तुन्दकूपी । उदरावर्त । पेड्ड । बोड़ी । बोड़री ।
दूढ़ी (ढोढ़ी) ।

पीठ—पृष्ठ ।

पँसली—पार्थ्व । पँजरी । पञ्जरी । पञ्जर ।

लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)—शिश्न । शेफ । मेह् । मेहन ।
लांगु । ध्वज । रागलता । व्यङ्ग । कामाङ्कुश । साधन ।
स्वरस्तम्भ । उपस्थ । मदनङ्कुश । कन्दर्प मुषल ।

अण्डकोष—अण्ड । मुष्क । वृषण । (फोता) ।

योनि—भग । वराङ्ग । उपस्थ । काममन्दिर । रतिगृह ।
जन्मवर्त्म । अधर । अवाच्यदेश । प्रकृति । अपथ । स्मरकूप ।
अप्रदेश । प्रकृति । पुष्पी । संसारमार्गक । गुह्य । स्मरागार ।
रस्यङ्ग । रतिकुहर । कलत्र । अघ । कन्दर्पसन्धि । गर्भद्वार ।
गर्भमुख । गर्भस्थाया । कन्दर्प सम्बाध । स्त्रीचिह्न ।

नितम्ब—श्रोणी । चूतड़ । चूत ।

मलद्वार—गुद । गुदा । विष्ठा निर्गमद्वार । अपान । पायु ।
गुह्य । गुदवर्त्म ।

मलाशय—कोष्ठ । मलकोष्ठ । कोठा ।

मूत्राशय—वस्ति । पेडू ।

[यह नाभि के नीचे होती है ।]

जाँघ—जघन । जानु । सक्थि । ऊरु । जंघा । स्तम्भ ।
शरीरस्तम्भ ।

घुटना—जानु । गुल्फ । पादपृष्ठ (पदपीठ) । पादग्रन्थि ।
घुटिका । घुटिक । घुण्टक । घुण्ट ।

पैर—चरण । पाद । पद । अंग्रि । टाँग । टँगरी ।

एड़ी—पार्णि । एड़ ।

पैर का तलवा—पदतल । तरवा ।

पैर की उँगुली—पादाङ्गुली । पदपल्लव । प्रपद । पदाग्र ।

बाँह *—भुज । भुजा । बाहु । मंज । प्रवेष्ट । दो । दोप ।
बाह । बाहा [वैदिक पर्याय—आयती । च्यवना । अप्लवाना ।
अनीशू । विनंगुस । गभस्ति । कवस्र । भूरिज । क्षिपस्ती ।
शकरी । भरित्रे ।]

केहुनी—टिहुनी । कूर्पर । कफोणी ।

[केहुनी के ऊपर मुद्रक को 'प्रगण्ड' और केहुनी के नीचे
भाग को 'प्रकोष्ठ' कहते हैं ।]

* जो भुजाएँ घुटने के नीचे तक लटकती हों, वे 'आजानुबाहु' कही जाती हैं । उसका लक्षण 'गारुडी' अध्याय ६६ में इस प्रकार दिया है—
“निर्मासौ चैव भग्नल्पौ, श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ । आजानुलम्बिनौ बाहू
वृत्तौ पीनौ वृपेश्वरे ।”

हाथ—कर । हस्त । पाणि । पंचशाख । शय ।

हथेली—करतल । हस्ततल ।

हथेली के पीछे—करप्रष्टि । हस्तप्रष्टि । कर पृष्ठ ।

उँगुली—अँगुरी । करपल्लव । कररुहन । अँगुलीय ।

करशाखा । करज । अँगुली ।

[क्रम से पाँचों अँगुलियों के नाम—१. अंगुष्ठ (अँगूठा),
२. तर्जनी, ३. मध्यमा, ४. अनामिका, ५. कनिष्ठा ।]

गावा—अँगुलिसन्धि । गाई ।

अँगुली के पोर—पोरा । पर्व ।

नाखून—नँह । नख (नष) । पुनर्भव । करोरुह । नखर ।

इन्द्रिय *—गो । इन्द्री । हृषीक । गुणकरण । कृषि ।

विषयी । अक्ष । करण । ग्रहण ।

थप्पड़—चपत । चपेट । थपेड़ा । झापड़ । प्रहस्त ।

प्रतल । चाँटा ।

धूँसा—मुष्टिक । मुष्टिका । मुक्का (मूका) ।

गोद—क्रोड़ । अंक । अँकवार । गोदी । अङ्कम ।

रोम—लोम । तनूरुह । रोआँ ।

* पाँच कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पैर, मुँह, उपस्थ (लिङ्ग वा योनि),
और गुदा । पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, जिह्वा, नासिका, कान आर
त्वचा (स्पर्श) । चार प्रकार की अन्तरिन्द्रियाँ—मन, बुद्धि, अहङ्कार,
और चित्त ।

रोमाञ्च (खड़े रोयें)—पुलक । त्वक् पुष्प । त्वगङ्कुर ।
रोमोद्भेद ।

आँसू—नेत्राम्बु । वाष्प । अश्र । अश्रु । अस्त्र । अस्तु ।
चक्षुजल । रोदन । लोच ।

पसीना—स्वेद । स्वेदन । उष्मा । ताप । प्रस्वेद ।

चमड़ा—चाम । चर्म । त्वक् । त्वचा । स्त्रग्धरा ।

लोहू—रक्त । रुधिर । शोण । शोणित । कोणप । अस्त्रक ।
क्षतजात । लोहित ।

माँस—पलल । आमिष । मास । पिशित । तरस । क्रव्य ।
पल । अस्त्रज । जाङ्गल । कीर ।

चरबी *—वसा । वपा । मेद । मेदा ।

मज्जा †—अस्थिसार । शुक्रकर । अस्थिस्नेह । अस्थिज ।
अस्थिसम्भव । तेज । वीज । जीवन । देहसार ।

* जो मांस अपनी अग्नि से पकता है उसी से 'मेदा' की उत्पत्ति होती है । मनुष्य के पेट और हड्डियों में चरबी अधिक होती है । जिसका पेट बड़ा होता है उसमें अधिक चरबी समझनी चाहिये । भावप्रकाश में लिखा है कि—

“मेदोऽढि सर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषु स्थितम् ।

अतएवोदरे वृद्धिः प्रायो मेदस्विनो भवेत्” ॥

† हड्डी से उत्पन्न चरबी को मज्जा कहते हैं । भावप्रकाश में इसकी व्याख्या इस प्रकार है—

“अस्थि यत् स्वाग्निना पक्वं तस्य सारो द्रवो घनः ।

यः स्वेदवत् पृथग्भूतः सं मजे त्यभिधीयते ॥”

हड्डी की अग्नि से पके हुए सारभूत स्निग्ध पदार्थ को मज्जा कहते हैं ।

हड्डी—अस्थि । हाड़ । कीकस । कुल्य । मेदज ।
 वीर्य *—रेत । शुक्र । तेज । वीज । इन्द्रिय । जीवन । सार ।
 रज †—पुष्प । आर्त्तव । ऋतु स्त्राव । कुसुम । स्त्री धर्म ।
 मासिक धर्म ।

कलेजा—अग्रमांस । बुक्का ।
 वात ‡—(देखो पृष्ठ १६ में 'वायु' शब्द)
 पित्त +—अग्नि । तेज । मायु ।
 कफ ×—श्लेष्मा । (बलगुम) ।
 नस—स्नायु । स्नासा । वस्त्रसा । महुर ।
 नाड़ी—धमनी । शिरा ।

* सप्तधातु—रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र (वीर्य)—
 ये सातों मिलकर सप्तधातु कहे जाते हैं ।

† स्त्रियों को प्रायः बारह वर्ष की अवस्था में रज आरम्भ होता है और
 प्रतिमास स्त्राव होता रहता है । गर्भावस्था में यह स्त्राव बन्द हो जाता है ।
 प्रायः ५०-६० वर्ष की अवस्था में इसका पूर्ण क्षय हो जाता है ।

‡ वात—प्राण, उदान, समान, अपान और व्यान—ये पाँच प्रकार के
 शरीरस्थ वायु हैं ।

+ पित्त—पाचक, रंजक, साधक, आलोचक और भ्राजक—ये पाँच
 प्रकार के पित्त हैं ।

× कफ—क्लेदन, अवलम्बन, रसन, स्नेहन और श्लेष्मण—ये पाँच
 प्रकार के कफ हैं ।

[नोट—वात, पित्त और कफ, इन तीनों की त्रिदोष संज्ञा है ।]

लार (थूक)—लाला । खखार । सृणिका । स्यन्दिनी ।
कफ । श्लेष्मा । थूक ।

पिलही (तिह्नी)—प्रीहा । पीला । पिलई (पलही
वा पलई) । गुल्म । प्लिहा । तिह्नी । वापतिह्नी । वरवट ।

[नोट—वाम कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को प्रीहा कहते हैं ।]

यकृत—कालखण्ड । कालखञ्ज । कालेय । करण्डा ।
महास्नायु । कालक (जिगर) ।

[नोट—दक्षिण कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को यकृत
कहते हैं ।]

अँतड़ी—आँत । अंतड़ी । अन्त्र । पुरीत । आँती ।

फेफड़ा—फुफ्फुस । तिलक । छोम । धुकधुकी । हृदय ।

त्रिबली—पेटी (पेट के तीन बल) । रोमराजी ।

गर्भाशय—गर्भ । जठर । उदर । वच्चादानी । पेट ।

गर्भ (गर्भस्थित पिण्ड)—भ्रूण । गर्भपिण्ड ।
पातक । अर्भक । अर्भ ।

प्रसव—जनन । प्रसूत ।

कान का मैल—कर्णमल । पिञ्जूषा । खूँट ।

आँख का कीचड़ (मैल)—दूषिका ।

नाक का मैल—नासामल । सिङ्घाण । नकटी ।

विष्टा (मल)—मल । मैल (मैला) । पुरीष । विष्ट ।
गूथवर्चस्क । गुह । भाड़ा । पाखाना । बीट ।

ः—गौ के मल को गोबर, भेड़-बकरी आदि के मल
[मंगनी और घोड़ा आदि के मल को लीद कहते हैं]

मूत्र—मूत । प्रस्राव । उच्चार । (पेशाब) ।

पुरुष *—मर्द । पुमान् । नर । ना । पञ्चजन । जन ।
अर्थाश्रय । अर्थवान् । मानव । मर्त्य । मानुष । मनुष्य । मनु ।
मदन-सायकाङ्क । मन्मथ-सायक-लक्ष्य । अधिकारी । कर्माह ।
पूरुष । धव ।

स्त्री—योषिता । अबला । योषा । नारी । सीमन्तिनी ।
वधू । प्रतीपदर्शिनी । वामा । वनिता । महिला । तिय । तिया ।
कलत्र । मेहरी । दारा ।

सुन्दरी स्त्री—सुन्दरी । अङ्गना । भीरु । वामलोचना ।
कामिनी । प्रमदा । मानिनी । कान्ता । ललना । नितम्बिनी ।
रमणी । रामा । भामिनी । वरारोहा । उत्तमा । मत्तकाशिनी ।

* कामशास्त्रानुसार पुरुषों के चार भेद—शशक, मृग, वृषभ और
अश्व तथा स्त्रियों के भी चार भेद—पद्मिनी, चित्रिनी, हस्तिनी और शंखिनी
माने गये हैं ।

अवस्था भेद से पुरुष ६ प्रकार के माने गये हैं यथा—पाँच वर्ष तक
कुमार, तदुपरान्त १० वर्ष तक पौगंड, पश्चात् १५ वर्ष तक किशोर, इससे
ऊपर ३० वर्ष तक युवा, ३० वर्ष से ५० तक प्रौढ़, तत्पश्चात् वृद्ध कहा
जाता है । इसी प्रकार स्त्रियों के भी भेद ६ प्रकार के हैं—जन्म से
५ वर्ष तक कुमारी, १२ वर्ष तक कन्या, १५ वर्ष तक मुग्धा वा किशोरी,
२५ वर्ष तक युवती वा मध्या, ४० वर्ष तक प्रौढ़ा, तत्पश्चात् वृद्धा कही
जाती हैं ।

तन्वी । पुरन्धी । वरवर्णिनी । तनु । तन्वङ्गी (कृशाङ्गी) ।
 कुरङ्गनयना । भाविनी । विलासिनी । सुनेत्रा । अश्विभ्रु ।
 ललिता । वासिता । नताङ्गी । त्रिनता ।

पतिव्रता स्त्री—साध्वी । सुचरित्रा । सती । मनश्चिनी ।
 शुचिचित्ता । पतिभक्ता । पतिपरायणा ।

कुटुम्ब वाली स्त्री—कुटुम्बिनी । पुरन्धी ।

सधवा स्त्री—जीवस्पतिका । पतिव्रती । सभर्तृका ।
 सनाथा । सौभाग्यवती । सोहागिन । सोहगिल । विद्यमानपतिका ।
 सावित्री ।

विधवा स्त्री—विध्वस्ता । अधवा । जालिका । रण्डा ।
 राँड । यतिनी । यती । अनाथा । पतिहीना ।

रँडुआ (जिसकी स्त्री मर गई हो)—विधुर ।
 विकल । अपत्नीक ।

रजस्वला स्त्री—(१. प्रथम रजोदर्शन होने पर)—मध्यमा ।
 दृष्टरजा । (२. साधारणतः रजस्वला)—पुष्पवती । स्त्रीधर्मिणी ।
 रजोयुक्ता । अवी । आत्रेयी । मलिनी । ऋतुमती । उदक्या ।
 दुरि । पुष्पहासा । विफली । अवीरा । पुष्पिता । निष्फली । म्लाना ।
 पांशुला । सार्त्तवा । एक वस्त्रा ।

विगत रजा स्त्री—निष्कला । विगतार्त्तवा । शुद्धा ।
 गतार्त्तवा ।

स्वयंवरा स्त्री—वर्या । वरइच्छुका । पतिंवरा ।

पति-पुत्र हीना स्त्री—निष्पतिसुता । अवीरा ।

सती स्त्री—दुर्गा । देवी । सावित्री । साध्वी । पतिव्रता ।

प्यारी स्त्री—प्रिया । प्रेयसी । प्रणयिनी । प्राणदायिनी ।
ज्येष्ठा । दयिता । बल्लभा । इष्टा । प्राणवल्लभा । रामा । रमणी ।
वरा । श्यामा । चारुवर्द्धना ।

विवाहिता स्त्री—पाणिप्रहीता । पत्नी । सहधर्मिणी ।
भार्या । व्याही । विवाहिता ।

गर्भवती स्त्री—गर्भिणी । गुर्विणी । अन्तर्वह्नी । ससत्त्वा ।
आपन्नसत्त्वा । दोहदवती । गुर्वी । उदरिणी । दोपस्ता ।

प्रसूता स्त्री—जातापत्या । प्रजाता । प्रसूतिका । जननी ।
(जज्ञा) ।

वन्ध्या स्त्री—अफला । बाँझ । विफला । निष्फला ।
अवकेशी । वृषली । अपत्या । अप्रज ।

व्यभिचारिणी—कुलटा । भ्रष्टा । स्वैरिणी । नष्टा ।
दुष्टा । असती । ईश्वरी । खला । पुंश्र्वली । बंधकी । धर्षिणी ।
पांशुला । कलहिनी । कुभार्या । छिनाल । रंडी । (खानगी) ।
कामुका । कामातुरा । वृषस्यन्ती ।

कुटनी—कुट्टनी । शम्भली । दूती । सम्भली । माधवी ।
रङ्गमाता । अर्जुनी । कुम्भदासी । गणेरुका ।

बालक—शिशु । अर्भक । पोतक । शैशववान । बटुक ।
बटु । मुष्टिन्धय । किशोरक । शाव । शावक । डिम्भक । डिम्भ ।
अर्भ । पाक । हितक । गर्भ । माणव । अज्ञ । अबोध । किशोर ।
लङ्का । बेटा । पुत्री ।

बालिका (कन्या)—कन्या । कुमारी । कि
कन्यका । गौरी । रोहिणी । नमिका । लड़की । बेटी । पुत्री ।

युवा—जवान । युवक । पट्टा । तरुण । यून ।

युवती—तरुणी । बाला ।

प्रौढ़—पोढ़ । अधेड़ । प्रगल्भ ।

प्रौढ़ा—प्रगल्भा ।

वृद्ध—बूढ़ । वूढ़ा । बुढ़ा । स्थविर । जर । जरठ ।

मस्तिष्क—गोर्द । गोद । मस्तुलङ्गक । (भेजा । दिमाग । मयाज) ।

शब्द—स्वर । ध्वनि । निनाद । निनद । ध्वनि । ध्वान ।
रव । स्वन । स्वान । निर्घोष । निर्हाद । नाद । निस्वान । निस्वन ।
आरव । आराव । संराव । विराव । संरव । मुखर । घोष । कथन ।

[नोट—शब्द दो प्रकार के होते हैं, १. ध्वन्यात्मक—पशु-
पक्षी, मृदङ्गादि वाद्यों के शब्द, २. वर्णात्मक—जो वर्णों में
लिखे जा सकते हैं ।]

दृष्टि—आलोकन । अवलोकन । निरीक्षण । दर्शन । ताक ।
चितवन । कटाक्ष ।

गंध—महक । घ्राण । वू । बास ।

भूख—क्षुत् । क्षुधा । वुमुक्षा । अशनाया । जिघत्सा ।
भोजनेच्छा ।

प्यास—पिपासा । वृषा । वृष्णा । पानेच्छा । उदन्या ।
तर्ष । उपलासिका ।

जँभाई—जृम्भा । जृम्भ । जमुहाई ।

छींक—क्षुत् । क्षव ।

हँसी * —हास्य । हास । हस । हसन् । घर्घर । स्मित ।

हासिका ।

रोना—रदन । रोदन । क्रन्दन । विलाप । बिलखना ।

रोआई ।

हिचकी—हिका । हुचकी । हेंकटी ।

सुनना—श्रवण । श्रुति ।

स्वाद—आस्वादन । रस । सवाद । (जायका) ।

निद्रा—नींद । शयन । सुषोपति । स्वाप । सुप्त । स्वप्न ।

संवेश । सुषुप्ति । सुप्ति । स्वपन ।

ऊँघ—तन्द्रा । उँघाई । उपनिद्रा । आलस्य । अलसाई ।

आलिङ्गन—लिपटना । गले लगना । हिये लगना ।

अँकवार भरना । दबोचना । परिष्वंग । परिरंभन । संश्लेष ।

अङ्गपालि । श्लिषा । उपगूहन ।

चुम्बन—चूमा । चुम्मा । मुखसंयोग । अधरामृतपान ।

(बोसा) ।

* हँसी के ६ भेद—स्मित = मुपकुुराना । हसित = दाँत दिखलाते हुए हँसना । विहसित = कुल बोलते हुए हँसना । उपहसित = नाक फुला कर हँसना । अपहसित = सिर हिलते तथा आँसू निकलते हुए उद्धत हास । अतिहसित = शरीर कँपाते, ठठाकर ताली देकर अट्टहास हँसना ।

मैथुन—प्रसंग । स्त्रीप्रसंग । सहवास । रति । क्रीडा ।
सुरत । निधुवन । केलि । विलास । संभोग । भोगविलास ।
भोग । व्यवाय । ग्राम्यधर्म । ग्राम्यकर्म ।

जीव—प्राण । असु । जान ।

आत्मा—ब्रह्म । ब्रह्मरूप । दिव्य स्वरूप । सूक्ष्म देह ।
सूक्ष्म शरीर । ब्रह्मांश ।

मन—चित्त । चेत । हृदय । स्वान्त । हृत् । मानस ।
अङ्ग । अनङ्गक ।

बुद्धि—मनीषा । धिषणा । धी । प्रज्ञा । शोमुषी । मति ।
प्रेक्षा । उपलब्धि । चित् । सम्बित् । प्रतिपत् । ज्ञप्ति । चेतना ।
मन । मनन । प्रतिपत्ति । मेधा । धारणा । ज्ञान । बोध । पण्डा ।
प्रतिभा । संख्या । आत्मजा । विज्ञान ।

अहंकार—गर्व । अभिमान । मद । दर्प । स्मय । मान ।
अपलेप । चित्त समुन्नति । हम् ।

कबन्ध—अशिर । अमुंड । रुण्ड ।

सुर्दा—मृत । मृतक । शव । कुणप । क्षितिवर्द्धन ।

भाग्य—भाग । भागधेय । दैव । नियति । दिष्ट । विधि ।
सुदिन ।

अभाग्य—दुर्दैव । कुदिन । दुर्भाग्य । अदिष्ट ।
विधिवाम । कुसमय ।

(विशेषण बोधक शब्द)

प्रजा—अधीन । आश्रित । सन्तान । (रैयत) । जन । शासित ।

धनी—धनवान् । धनिक । ऐश्वर्यशाली । ऐश्वर्यवान् । धनाढ्य । लक्ष्मीसम्पन्न । प्रभु । महाजन । लक्ष्मीपति ।

दरिद्र—रङ्क । दीन । निर्धन । कंगाल । निस्व । बेबस । दुखिया । अकिञ्चन । भिखारो । भिक्षुक । खिन्न । बपुरा । दुर्गत । ररा । (शरीब) ।

चतुर—कोविद । प्रवीण । विज्ञ । अभिज्ञ । कुशल । कृती । पंडित । दक्ष । पटु । योग्य । शिक्षित । विदुष । निपुण । निष्णात । नागर । आगर । विशारद । विदग्ध । सयाना । (होशियार) ।

मूर्ख—गँवार । मूढ़ । अपढ़ । अज्ञानी । निर्वुद्धि । अबूझ । अबोध । अनजान (अजान) । असमझ । यथाजात । मुग्ध । जड़ । मूक (चुप्पा) । अज्ञ । अनभिज्ञ । अशिक्षित । अबुध । अयोग्य ।

मीठा—मिष्ट । मधुर । मृदु । स्वादु । प्रिय-स्वादु ।

खट्टा—अम्ल । चुक । खटरुस ।

नमकीन—चरपरा । सलोना ।

तीता—तिक्त । तीत । तीक्ष्ण । [यथा-लाल मिर्च आदि]

कडुआ—कटु । कटुक । [यथा-नीम, चिरायता आदि]

कसैला—कपाय । [यथा-हर्षा, अँवला आदि

ठंडा—शीतल । शीत । सीर । शान्त ।

गरम—उष्ण । तप्त । तपित । ज्वलन ।

रिक्त—खाली । खोखा । छूछा । खुक्खा । रीता ।

सजग—चैतन्य । सावधान । (होशियार) । सचेत ।

चघड़ ।

तैयार—प्रस्तुत । उपस्थित ।

तत्पर—सन्नद्ध । कटिबद्ध । मुस्तैद ।

पुष्ट—दृढ़ । कठिन । पोढ़ ।

नष्ट—भ्रष्ट । समाप्त । ध्वस्त । मृत । अपचित ।

भाग्यमान—सुकृती । पुण्यवान् । धन्य । भाग्यशाली ।

उदार—महाशय । महेच्छ । हृदयालु । सहृदय ।

पूज्य—मान्य । गण्य । गण्यमान्य । प्रतीक्ष्य । पूजनीय ।

आदरणीय । श्रद्धेय ।

परीक्षक—जाँचक । अन्वेषक । कारणिक ।

प्रसन्नचित्त—हर्षमाण । विकुर्वाण । प्रमन । हृष्टमानस ।

व्याकुलचित्त—विमन । दुर्मन । अन्तर्मन । व्यग्र ।

उत्कण्ठित—उन्मन । उत्क । अभिलषित । इच्छित ।

अभीच्छित । वाञ्छित । प्रलुब्ध । प्रेच्छित ।

सरलचित्त—दक्षिण । सरल । उदार । सीधा । साधु ।

सज्जन ।

स्वामी (मालिक)—अधिपति । नायक । अधीश्वर ।
पति । ईशिता । अधिभू । नेता । प्रभु । परिवृद्ध । अधिप । आर्य ।
अवमति । ईश । पालक । मालिक ।

स्वतन्त्र—अपावृत । स्वैरी । अनियन्त्रित । निस्वग्रह ।
निरयन्त्रिण । यथाकामी । निरर्गल । निरङ्कुश । स्वरुचि ।

पेटू (अपना पेट पालनेवाला)—आत्मम्भरि ।
कुक्षिभरि । स्वोदरपूरक । भुक्स्वङ्ग ।

विनीत—निभृत । प्रश्रित । नम्र । विनयी । विनयावनत ।

चुगुलखोर—कर्णेजप । सूचक । पिशुन ।

कूर—कर्कश । कठिन । निर्दय । निर्मोही । निष्ठुर । घोर ।
भयंकर । नृशंस । घातुक । पाप । निष्ठुर । कूर । टिर्पा ।

सज्जन—श्रेष्ठ । संत । साधु । भद्र । शिष्ट । सभ्य ।
उदार । महाशय । उपकारी । परोपकारी । आर्य । कुलीन ।
महाकुल । पुङ्गव ।

दुर्जन—दुष्ट । खल । पिशुन । असज्जन । कंटक । पोच ।
कपटी । पामर । नीच । बर्बर । असाधु । अपकारी । असभ्य ।
अशिष्ट । अनुदार । असन्त । अभद्र । पतित ।

भयभीत—त्रसित । कादर । कायर । डरपोक । शंकित ।
सशंक । क्षुब्ध । मोहित । असाहसी । अधीर । भीलुक । भीरुक ।
हीन ।

कामी—कामातुर । कामार्त्त । मस्त । मदोन्मत्त । कामुक ।
स्त्रेण । मेहरा ।

व्यभिचारी—कामी । विषयी । लम्पट । कुकूर्मी । नष्ट ।
कुमार्गी । कुपथगामी । कुत्सित । पतित । अधम । लुच्चा ।
स्त्रैण । परस्त्रीगामी । छिनरा ।

अधम—पतित । नीच । नष्ट । भ्रष्ट । हेय । निकृष्ट ।
पोच ।

['पतित' और 'दुर्जन' के पर्याय प्रायः समान अर्थवाची होते हैं ।]

उत्तम—श्रेष्ठ । उत्कृष्ट । पवित्र । श्रेयस्कर । ललित ।
रुचिर । चारु । कान्त । शोभायुक्त । शोभित । मनोरम । मञ्जु ।
मंजुल । सुष्टि (सुठि) । सुभग । सुदेश । सुष्ठु । सुहावन ।
सुघर । सुहाई । ललाम । नीक । सुन्दर । रुचिकर । सरस ।
कल । वर । प्रकृष्ट । छवीला । कलित । प्रमुख । प्रधान । मुख्य ।
वर्य्य । प्राध्य । प्रवर्ह । भद्र । रूर ।

भयंकर—उग्र । दारुण । भीषण । भीष्म । घोर । भीम ।
भयानक । प्रतिभय । रौद्र । तीव्र । कराल । विकराल । भैरव ।
भयक । दारुण ।

त्यागी—विरक्त । वैरागी । निस्पृह । विरागी । अतीत ।
निलोप ।

आलसी—मंद । बुद । अलस । अनुष्ण । शीतक ।
सालस । परिमृज ।

लम्बा—लम्ब । प्रलम्ब । दीर्घ । सुदीर्घ । दीर्घकाय ।

नाटा—ठिगना । ह्रस्व । [अत्यन्त नाटे को 'बौना' या
'वामन' कहते हैं]

मोटा—तुंदिल । पीन । पीवर । स्थूल । अंसल । मांसल ।
पृथुलाङ्ग ।

पतला—कृश । कृशांग । दुर्बल । क्षीणकाय । निर्बल ।
हीनाङ्ग । तनु । तन्वंग ।

आरोग्य—स्वस्थ्य । रोगहीन । पुष्ट । दृढ़ । (तन्दुरुस्त) ।

रोगी—रुजी । व्याधिग्रस्त । रुग्ण । क्षीण । सामय ।
आतुर । विकृत । ग्लान । म्लान । मन्द । अभ्यान्त । अभ्यमित ।
व्याधित ।

अन्धा—अन्ध । नेत्रहीन । अनेत्री । अदृक् । सूर ।

काना—काण । एकाक्ष ।

बहिरा—बधिर । अश्रुत । एङ् । कल । श्रवणापटु ।
उच्चैःश्रव ।

गूंगा—मूक । वाक्यरहित । अवाक् । चुप्पा ।

कुबड़ा—कुब्ज । कुवरा । गडुल ।

नाक-कटा—नकटा । अनासिकी । विगत नासिकी ।

बड़े कानवाला—दीर्घकर्ण । वृहत्कर्ण । लम्बकर्ण ।

कानकटा—बूचा । खण्डकर्ण । लघुकर्ण ।

लम्बी भुजावाला—दीर्घबाहु । आजानुभुज ।

छोटी भुजावाला—दूँठा । डूँठा । कुकर ।

हाथ-कटा—लूला । हथकट्टा । शोण ।

लँगड़ा—पंगु । पंगुल । अपंग । खंज । खोरा ।

सुन्दर—(देखो पृष्ठ १६७ 'उत्तम' शब्द)

कुरूप—दर । कुत्सितरूप । बदसूरत । कदाकार । भदेस ।

कुडौल ।

कठोर—दृढ़ । पुष्ट । जठर । कठिन । कड़ा ।

कोमल—सरल । सुकुमार । मृदु । मृदुल । मुलायम ।

नरम ।

साँवला—श्याम । नील । कृष्णवर्णी । श्यामल । काला ।

असित । मेचकवर्णी ।

गोरा—गौर । धवल । गौराङ्ग ।

सफेद—उज्वल । सित । श्वेत । शुभ्र । शुक्ल । पांडुर ।

अर्जुन । धवल । अवदात ।

लाल—रक्त । अरुण । आरक्त । लोहित (रोहित) ।

श्रोन । रुधिराभ ।

पीला—पीत । कपिस । पिङ्ग । पिंगल । कपिल । गौर ।

पिसंग । सुपीत । हरिद्राभ ।

चित्त कबरा—कर्बुर । चित्रक । कद्रू । कर्मीर । कल्माषक ।

हरा—हरित । पालास । कपि । हरे ।

छोटा—लघु । सूक्ष्म । ह्रस्व । अल्प । स्वल्प । क्षुद्र ।

न्यून । हीन । तुच्छ । ओछा । ऊन ।

बड़ा—दीर्घ । विशाल । बृहत् । विराट । महा । गुरु ।

गरु । ज्येष्ठ (जेठ) । श्रेष्ठ । बड़र (बड़) । महत् । वृद्ध ।

सूक्ष्म—तनु । अणु । त्रुटि । लवलेश । कण । क्षुल्लक ।
कृश । अनाक । स्तोक । ऋक्षण । अल्प । रंचक ।

नया—नवल । नूतन । प्रत्यग्र । अभिनव । नव । नव्य ।
नवीन ।

पुराना—पुरातन । प्राचीन । पुराण । चिरन्तन । दिनी ।
चिरकालिक ।

थोड़ा—किंचित् । लेश । कण । रंच । रचिक । थोर ।
थोरिक । कछु । कछुक । क्षुद्र । लघु । अणु । अल्प । परिमित ।
मित । मर्यादित । दभ्र ।

[नोट—‘छोटा’ शब्द के सभी पर्याय ‘थोड़ा’ अर्थ के
बोधक होंगे ।]

बहुत—अपार । अधिक । ढेर । भूरि । अति । अत्यन्त ।
अपरिमित । निस्सीम । असीम । अमर्यादित । बेहद । अतिशय ।
भृश । अत्यर्थ । उद्गाढ़ । तीव्र । नितान्त । गाढ़ । प्रगाढ़ ।
दृढ़ । अतीव । विशेष । प्रभूत । प्रचुर । बहुल । विपुल । अनेक ।
निबिड़ । घन । निपट । नाना । अदभ्र । अमित । प्रचण्ड । भूय ।
भूयिष्ठ । प्राज्य । अकुण्ठ । असंख्य । अगणित ।

पूर्णा—अशेष । अखण्ड । कृत्स्न । अन्नक । सर्व । पूरा ।
निश्शेष । अखिल । निखिल । समस्त । सकल । कुल । समग्र ।
सम्पूर्ण । सारा (सारी) । सब । सान्त । निष्पन्न ।

आधा—अर्द्ध । अर्धांश । अद्धा । (निष्क) ।

चौथाई—पाद । चतुर्थांश । चौथ । (चहारम) ।

चिकना—चिकण । स्निग्ध । पिच्छिल । सस्नेह । स्नेह ।
सनेह ।

सूखा—रूक्ष । खुरखुरा । खदरा । खसखसा । खुरदुरा ।
टेढा—कुटिल । खर्व । वक्र । अराल । कुञ्चित । भग्न ।
उर्मिमत् । नत । वेलित । जिह्न । अविद्ध ।

पवित्र—मेध्य । पूत । निर्मल । अमल । शुद्ध । शुचि ।
प्रयत । पावन । पुण्य । विमल । विशुद्ध ।

अपवित्र—अशुद्ध । मलिन । मलीन । कच्चर । दूषित ।
अशुद्ध । अशुचि । अशौच । अपावन । पाप । मली ।

आतिथि—पाहुन । मेहमान । अभ्यागत । गृहागत ।

धूर्त्त—दम्भी । कितव । व्याजी । छली । छद्मी । जिह्न ।

प्रिय—इष्ट । अभीष्ट । इच्छित । वाञ्छित । ईप्सित ।
प्यारा । अभिलषित । अनुकूल । अपेक्षित । आप्तुमिष्ट ।

पुरवासी—नागरिक । नगरवासी । शहरी । पौर । प्रज ।
प्रजन ।

ग्रामवासी—ग्रामीण । गवाँर । गवईहा । देहाती ।
ग्राम्य । ग्रामेयक । ग्रामस्थ ।

बटोही—पथी । पंथी । यात्री । पथिक । पाथ । अध्वग ।
अध्वनीन । अध्वन्य । मार्गी । राही । पान्थ । गन्तु । पथक ।
यात्रिक । पाथिल ।

थका—हारा । शिथिल । श्रमित । श्रान्त । श्रमी । प्रयासी ।

घृणित—घिनहा (स्त्री० घिनही) । घिनावन । घिन
बीभत्स । जुगुप्सित । विवृत्त ।

अद्भुत—विचित्र । चित्र । विस्मित । अजीब ।

शान्त—समथ । सुचित्त । समत्व । शमित । श्रान्त
जितेन्द्रिय । शमान्वित । उपशमित । दान्त ।

वीर—शूर । विक्रान्त । गण्डीर । तरस्वी ।

सधिा—सज्जन । सुहृत् । अवक्र । शुद्ध । प्रगुण । ऋजु
सरल चित्त । साधु । सौम्य । शान्त ।

पागल—विक्षिप्त । मतिभ्रष्ट । बौराह । बावला ।

मौनी—अवक्ता । अभाषी । चुप्पा । अनबोलता ।
तूष्णीम्भूत । मौनव्रती । मौनयुक्त । नीरव । तूष्णीक ।

दानी—दाता । उदार । दानशील । वदान्य । महान् ।
महाशय । दयालु । देनेवाला । दानकर्त्ता । दातार । वदन्य ।
बहुप्रद । दानशौण्ड । दानसागर । दारु । मुचिर । दानीय ।

सूम—कृपण । कंजूस । नीच । क्षुद्र । अनुदार । ठस ।
कदर्य । अदाता । किम्पच । मन्द । कीकट । मितम्पच ।

दानपात्र—दातव्य । दानार्ह । देनेयोग्य ।

सुरुद्य—प्रमुख । प्रधान । प्रवर । उत्तम । वरेण्य । प्रग्य ।
अग्र । अग्र्य । अग्रिय । सुतज्ञ । प्राग्य । प्रवर्ह । प्रवेक
अनवरार्ध्य । श्रेयान् । श्रेष्ठ ।

मतवाला—मदी । मत्त । उन्मत्त । क्षीव । उत्कट ।
शौंड ।

पराधीन—अधीन । परतन्त्र । अधीन । नाथवान् ।
परवश ।

दयावान्—दयालु । कृपालु । कारुणिक । सूरत ।

अपकारी—अनुदार । कृतघ्न । दुर्वृत्त । कुकर्मी । पीडक ।
अनिष्टसाधक ।

क्षमाशील—सहिष्णु । तितिक्षु । क्षमित । क्षम । सहन ।
क्षमावान् । क्षमी । शान्तियुक्त । क्षमिता । शक्त । सह । प्रभूष्णु ।

क्षमा-रहित—अक्षम । असमर्थ । क्षमाशून्य । अशक्त ।

अधीन—निन्न (निधिन वा निरधिन) । आयत्त । गृह्यक ।
अस्वच्छन्द । अधीन । परतंत्र । परवश ।

अगुञ्जा—अग्रसर । पुरस्सर । प्रष्ट । पुरोगम । पुरोगा ।
अग्रगामी ।

अशकुन—अपशकुन । असगुन । दुःशकुन । अशुभ ।
अमंगल ।

उचित—युक्त । ग्राह्य । श्रेयस्कर । योग्य । परिमित ।

अनुचित—अयुक्त । अग्राह्य । अयोग्य । अपरिमित ।

नंगा—नग्न । वस्त्रहीन । दिगम्बर । अनावृत्त ।

हिंजड़ा—नपुंसक । क्लीब । नामर्द । शंड । वर्षवर ।

शत्रु—विपक्षी । दुर्हृद् । रिपु । वैरी । आरात् । द्वेषी ।
परिपन्थी । शात्रव । द्विषण । सपत्न । कृतघात । अहित ।
प्रतिपक्षी । अपक्ष । अमित्र । (दुश्मन) ।

मित्र—सखा । सुहृत् । सहचर । संगी । संघाती । संघी ।
साथी । मेली । हित । हितू । हितैषी । सपक्ष ।

सखी—सहेली । संगिनी । गुडैयाँ । सजनी । आली ।
अली । सैरंध्री । सहचरी । वयस्था । हितू ।

नेता—संचालक । अगुआ । अप्रसर । मुखिया ।

कुलीन—महाकुल । कुलश्रेष्ठ । आर्य्य । सभ्य । भद्र ।
सज्जन । साधु । कुल्य । अभिजात । कौलेयक । जात्य । कौलेय ।
कुलज । साधुज । सुकुल । सत्कुलज । सद्वंशज । उत्तम ।

२. सम्बन्धी वर्ग

माता *—अम्बा । अम्बिका । अम्बालिका । सवित्री ।
जनी । जनित्री । जनयित्री । प्रसू । जननी । अक्का । अम्मा ।
माय । माई । मा । मातु ।

पिता †—तात । जनक । वत्ता । जनयिता । जन्मद ।
गुरु । जन्य । जनिता । बीजी । वप्र । सविता । बाप । बापू ।
(बावू) । वप्पा ।

पति ‡—अधिपति । स्वामी । ईश्वर । ईश । ईशिता ।

* सात प्रकार की मातायें—१. जन्मदात्री माता, २. गुरु की स्त्री,
३. ब्राह्मणी, ४. राजपत्नी, ५. गौ, ६. दूध पिलानेवाली वा सेवा करनेवाली
शाय, तथा ७. मातृभूमि ।

† सात प्रकार के पिता—“कन्यादाताऽन्नदाता च, ज्ञानदाताऽभयप्रदः ।

जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठ भ्राता च पितरः स्मृताः॥”

(ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ३५)

१. स्वगुरु, २. अन्न देनेवाला (पालनकर्ता), ३. ज्ञान देनेवाला, -गुरु,
४. अभय देनेवाला, ५. जन्म देनेवाला, ६. मन्त्रदीक्षा देनेवाला, ७. बड़ाभाई ।

‡ साहित्यशास्त्रानुसार पति चार प्रकार के माने गये हैं—१. अनुकूल,
२. दक्षिण, ३. धृष्ट और ४. शठ ।

अधिभू । नायक । नेता । प्रभु । परिवृद्ध । अधिप । धव ।
नेतार । भरता । भर्त्ता । भरतार (भतार) । इन्द्र । आर्य । विभु ।
इन । (खसम) ।

पत्नी—पाणिगृहीता । पाणिगृहीती । द्वितीया । भार्या ।
सहधर्मिणी । सहभार्या । जाया । दारा । सहधर्मिणी । दार ।
धर्मचारिणी । गृहिणी । सहचरी । गृह । क्षेत्र । बधू । बहू । जनी ।
परिग्रह । ऊढ़ा । कलत्र । मेहर । दयिता । प्राणप्रिया । वल्लभा ।
परिणीता । भूयिष्ठ । ग्रेहिणी । कुलवंती । कुलत्री । त्रिया । तिय ।
तिया । वामाङ्गी । वामा । आङ्गणा ।

पुत्र—आत्मज । तनय । सूनु । सुत । तनुज । तनूज ।
अपत्य । दायाद । कुलाधारक । नन्दन । आत्मजन्मा । दारक ।
स्वज । नन्द । बेटा । पूत । ज ।

पुत्री—कन्या । कन्यका । आत्मजा । दुहिता । तनुजा ।
सुता । अपत्या । पुत्रका । पुत्रिका । स्वजा । जा । तनया ।
तनजा । नन्दिनी ।

पौत्र (पुत्र का पुत्र)—नत्ता । नाती । पोता । पोतड़ा ।
पुत्रात्मज ।

पौत्री (पुत्र की पुत्री)—नप्ती । नातिनी । नातिन ।
पोती । पोतड़ी । पुत्रात्मजा ।

नाती (पुत्री का पुत्र)—दौहित्र । कुतप । नात ।
(नवासा) ।

नातिनी (पुत्री की पुत्री)—दौहित्रा । नातिन ।
(नवासी) ।

भाई (सगा)—सहोदर । सोदर । समानोदर । सगर्भ । सहज । भ्राता ।

भाई (ज्येष्ठ)—पूर्वज । अग्रज । अग्रिय । वर्य ।

भाई (छोटा)—अनुज । कनिष्ठ । लघुभ्राता । यवीन । जघन्यज । जविष्ठ । अवर्य ।

बहिन—भगिनी । स्वसा । सहोदरा । सहोदरी । बहनेली । (छोटी बहिन को—अनुजा । बड़ी बहिन को—जेष्टी, जेठी वा अग्रजा कहते हैं) ।

दादा (पिता के पिता)—पितामह । आर्यक । आज्ञा । बाबा ।

दादी (पिता की माता)—पितामही । आजी ।

चाचा—काका । ताऊ । कका । चचा । पितृव्य ।

चाची—काकी । चची । ताई ।

बुआ—पितृष्वसा । फूआ । फूफी ।

फुफेरा भाई—पितृष्वसेय । पितृष्वस्त्रीय ।

फुफेरी बहिन—पितृष्वसेयी । पितृष्वस्त्रीया ।

माँसी—मातृष्वसा । मासी । मातृभगिनी ।

माँसेरा भाई—मातृष्वसेय । मातृष्वस्त्रीय ।

माँसेरी बहिन—मातृष्वसेयी । मातृष्वस्त्रीया ।

नाना—मातामह । मातृमह । मातृपिता । नन्ना ।

नानी—मातामही । मातृमही । मातृमाता । आई । माता-महपत्नी ।

✓ **मामा**—मातुल । मामू ।

मामी—मातुलानी । माई । मातुला । मातुलपत्नी ।

भाञ्जा—भगिन्य । भैने । भगिना । भगिनेय । स्वस्त्रीय ।
बहनौता । भगिनिज ।

भाञ्जी—भगिन्या । भैने । स्वस्त्रीया । भगिनिजा ।

भतीजा—भ्रातृक । भ्रातृज । भ्रातृसुत । भतीज । भ्रातृव्य

भतीजी—भ्रातृजा ।

✓ **भौजाई**—भ्रातृजाया । भ्रातृजाया । भ्रातृभार्या । भाभी ।
भौजी । सहजग्रह । भ्रातृप्रेहिनी । प्रजावती ।

बान्धव—स्वजन । कुटुम्ब । ज्ञाति । गोत्रज । बन्धु ।
परिवार । सगोत्र । गोती । स्व । सकुल्य । समानोदक । अंशक ।
गंध । दयाद ।

पतोहू (बहू)—पुत्रवधू । श्रुषा । वधू । बहू । बहुरिया ।

सास—श्वश्रू । [पति वा पत्नी की माता]

साला—श्वशुर्य । श्याला । श्यालक । [पत्नी का भाई]

साली—श्याली । [पत्नी की बहिन] ।

बहनोई—ग्रामहासक । भगिनीपति । बहनेऊ ।

[प्राकृत में—बहिणीवइ]

दामाद—जामाता । दमाद । जामाई । जमाई (जँवाई व
जँवाय) । दुहितृपति ।

देवर—देवृ । पतिभ्राता ।

ननद—नन्द । ननदी । ननान्दा । नन्दिनी । नन्दा ।
पतिस्वसा । ननान्दरि ।

जेठ (स्त्री के पति का बड़ा भाई)—जेठउत ।
ज्येष्ठ । जेठउर । भसुर ।

पति-पत्नी—दम्पति । जायापती । भार्या-पती ।

सौत—सपत्नी । समानपतिका । सवत । सौतिन ।

उपपति—जार । यार ।

उपपति से उत्पन्न पुत्र *—जारज । कुण्ड । गोलक ।
दोगला । संकर ।

गोद बैठाया हुआ पुत्र—दत्तक पुत्र । पोष्य पुत्र ।
औरस । पोसपूत । (मुतवन्ना) ।

सन्तान—सन्तति । गोत्रजनन । अपत्य । लड़केवाले ।
वालबच्चे । (औलाद) । प्रजा । तोक । प्रसूति ।

समान अवस्था के—समवयस्क । स्निग्ध । सवय ।
समौरिया ।



* पति के जीते हुये उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'कुण्ड', तथा पति के मर जाने पर उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'गोलक' कहते हैं ।

३. जाति वर्ग

जाति—कुल । आस्पद । परिवार । कुटुम्ब । खानदान ।
बिरादरी । गोत्रिय । वंश । श्रेणी । वर्ग । पंक्ति ।

[नोट—जाति का 'जात' और पङ्क्ति का 'पाँत' तथा गोत्रिय का 'गोती' अपभ्रंश रूप हैं । अतः ये भी जाति के पर्याय हैं ।]

✓ **ब्राह्मण***—द्विज । विप्र । कुलश्रेष्ठ । अग्रजन्मा । भूसुर ।
द्विजाति । भूदेव । कुदेव । बाङ्गव । सूत्रकण्ठ । ज्येष्ठवर्ण । मैत्र ।
अग्रजातक । द्विजन्मा । वत्क्रज । वेदवास । नय । गुरु । ब्रह्मा ।
षट्कर्मा । द्विजोत्तम । शर्म । वामन । पंडित । महाराज ।

[नोट—पृथ्वी शब्द के पर्याय के साथ 'देव' शब्द जोड़ देने से भी ब्राह्मण का बोधक होगा ।]

ब्राह्मण-पत्नी †—ब्राह्मणी । बाभनी । पंडिताइन ।
महाराजिन ।

* ब्राह्मणों के छः कर्म—अध्ययन, यजन (यज्ञ करना) और दान—धर्म के विचार से, तथा अध्यापन, याजन (यज्ञ कराना) और दान लेना—व्यवसाय के विचार से हैं ।

† पंडिताइन का अर्थ है पंडित की स्त्री; किन्तु पंडिता का अर्थ है जो स्त्री स्वयं विदुषी हो, वह चाहे पंडित की स्त्री हो वा न हो ।

क्षत्री—क्षत्रिय । मूर्द्धाभिषिक्त । राजन्य । बाहुज । विराट ।
क्षत्र । द्विजलिङ्गी । राजा । नाभि । नृप । मूर्द्धक । पार्थिव ।
सार्वभौम । वर्म । विराज । बाहुज ।

क्षत्री-पत्नी—वीरस्तुपा । वीरमाता । वीरपत्नी । वीरा ।
राजपत्नी । रानी । महाराणी । क्षत्रिया । क्षत्रियाणी । क्षत्रिया ।
क्षत्राणी । क्षत्रिय-पत्नी ।

[नोट—पंजाव में क्षत्री जाति को 'खत्री' तथा क्षत्राणी को
'खतरानी' कहते हैं ।]

✓ **वैश्य**—वणिक । बनिया । बनजकार । विस । ऊरव्य ।
ऊरुज । अर्य । भूमिस्पृक् । द्विज । विट् । भूमिजीवी । व्यवहर्ता ।
वार्त्तिक । पणिक । साहु । मोदी । गुप्त । श्रेष्ठ (सेठ) । श्रेष्ठी (सेठी) ।

वैश्य-पत्नी—बनियाइन । सहुआइन । मोदिन(मोदियाइन) ।
वैश्या । अर्याणी । अर्या । अर्या ।

शूद्र—अवरवर्ण । वृषल । जघन्यज । पादज । दास ।
अन्त्यज । अन्त्यजन्मा । जघन्य । अन्त्यवर्ण । पज्ज । चतुर्थ ।
उपासक । सेवक । सूद्र । नीच ।

शूद्र-पत्नी—शूद्रा । सूदिन । अन्त्यजा । उपासिका ।
सेविका । दासी ।

चाण्डाल *—अन्त्यज । अस्पृश्य । श्वपच । जनंगम ।
पुक्कस । दिवाकीर्ति । मातंग । प्लव । अङ्घ्रत ।

* चाण्डाल जाति के अन्तर्गत—कोल, किरात, शबर, भील, केवट,
पासी, मुसहर, भंगी, डोम, चमार, धोबी, भर, दुसाध, व्याध, नट, वेणुक,
(बाँस काटने वाले) आदि । इन्हें अस्पृश्य वा अन्त्यज भी कहते हैं ।

धोबी—रजक । निर्णेजक । शौचेय । कर्मकीलक ।
धावक । बरेठा ।

धोबी की स्त्री—रजकी । रजकपत्नी । धोबिन ।
निर्णेजकी । शौचेयी । बरेठन । बरेठिन ।

चमार—चर्मकार । चर्मकारक । चर्मक । त्वचक ।
चम्मर । चम्मरु । कुरट । पादुकाकार ।

चमार की स्त्री—चमारी । चमारिन । चमाइन ।
चर्मकारिणी ।

भंगी—मेहतर । चूहड़ा । धरकार ।

धुनियाँ—धुनका । बेहना ।

जुलाहा—तन्तुवाय । तन्तुक । कुबिन्द । कोरी ।

अंग्रेज—फिरंगी । गौराङ्ग । गोरा । आङ्गलदेशी ।
आङ्गलीय ।

मुसलमान—यवन । मुच्छ । तुर्क (तुर्क) । इस्लामी ।
मुहम्मदी ।

कोलकिरात *—कोलि । शबर । भील । किरात । व्याध ।
[किरात की स्त्री को-किराती, किरातिनी, किरातिन कहते हैं ।]

* ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार लेट नामक पुरुष और तीवर नाम की कन्या से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति है जो छोटा नागपुर से मिरजापुर के जङ्गलों तक फैली हुई पाई जाती है। यह जंगली जाति बहुत प्राचीन काल से है। भील, शबर, किरात आदि इसी के भेद से जान पड़ते हैं।

लोहार—लोहकार । लोहकारक । व्योकार । अयस्कार ।
कर्मकार । कर्मार ।

बढ़ई—काष्ठकार । तक्षी । वर्धकी । स्यन्दनकार । तरुभेदी ।
सूत । सूत्रकार ।

कहार—स्कंधभार । गोंड । महरा । पनहारा । पनभरा ।

कहार की स्त्री—पनहारी । पनभरी । गोड़िन । महरी ।
कहारी । कहारिन ।

नाई—दिवाकीर्ति । मुंडी । क्षौरी । अन्तवसायी । क्षुरी ।
नापित । क्षौरकार । नाऊ । छत्री । वात्सीसुत । नखकुट्ट । ग्रामणी ।
चन्द्रिल । मुण्ड । भाण्डपुट । न्यायी । नाऊ ठाकुर ।

बारी—पत्राली । पत्राजीवी ।

ठठेरा—शौल्विक । ताम्रकुट्ट । ताम्राजीवी । तमेरा ।
कँसकुट्ट ।

अहीर—आभीर । गोप । ग्वाल । गोसंख्य । गोपाल ।
गोदुह । वल्लव । यादव ।

अहीर की स्त्री—आभीर पत्नी । अहिरिन । गोपी ।
गोपस्त्री । आभीरी । महाशूत्री ।

गड़ेरिया—अजपोषी । अजी । जावाल । अजाजीवी ।

कुम्हार—कुंभकार । घटक । घटजनन । कुलाल ।

कोइरी—काछी ।

[नोट—कोयर + ई = सागपात बेचने वाली जाति ।]

कुरमी—कुनबी । कूर्मवंशी । कूर्मीय ।

सोनार—स्वर्णकार । रुक्मकार । कलाद । नाडिधम । पश्यतोहर ।

तेली—धूसर । तैलकार । चाक्रिक ।

कलवार—कलाल । कलार । शुण्डी । शौण्डिक ।

छीपी—रंगरेज । छीपा । रंगक । रंगी । रंगकर । रंगाजीवी । (कपड़ा छापने वाले)

दरजी—सूचिक । सौचिक । सौचि । तुन्नवाय । छिपी । सूत्रभिद ।

चुड़िहारा—लाक्षक । आलक्तक । लखेरा । मनिहारा । (छो० मनिहारिन) ।

[नोट—ये ही पर्याय लाह से बने हुये आलता, महावर, रंग आदि बनाने वालों के लिये लग सकते हैं ।]

माली—मालाकार । मालाकर । मालिक । पुष्पाजीवी । बनार्चक । पुष्पलाव । पुष्पलावक ।

माली की स्त्री—मालिन । मालिनी । पुष्पलावो । मालिकी ।

बहेलिया—व्याध । मृगवधाजीव । मृगयू । लुब्धक । द्रोहाट । मृगजीवन । बलपांशुन । शिकारी । आखेटी । अहेरी । चिड़ीमार । मृगहा । जन्तुहा । वागुरिक । जीवान्तक । जालिक । शाकुनिक ।

केवट—[देखो पृष्ठ ५६ जलादि वर्ग ।]

नट—नर्त्तक । रङ्गावतारक । रङ्गजीव । भरतपुत्रक । शैलूष । जायाजीव । शैलालिन । कृशाश्वी ।

भाट—बन्दी । मागध । मगध । स्तुतिपाठक । बन्दीजन ।
लभ । बैतालिक । बैताल । भट्ट । पशबन्ध । प्रातर्गेय । सूत ।
मधुक । चारण ।

कसाई—मांसक । हिंसक । वैतंसिक । कौटिक । मांसिक ।
कौटिकिक । मांसविक्रेता ।

राजगीर—वास्तुकार । गृहकार । गृहकृत । राज ।

कारीगर—शिल्पी । शिल्पकार । कारु । शिल्पकी ।

चित्रकार—चित्रकर । रंगी । चित्रक । (मुसौव्वर) ।

तमोली—ताम्बूली । बरई । ताम्बूलिक ।

हलवाई (रसोइया)—सूपक । सूपकार । बल्लव ।
आरालिक । आन्धसिक । सूद । गुण । पाचक । पाकुक ।
भक्ष्यङ्कार । पाककर्त्ता । औदनिक । (बाबरची) । रसोइया । स्वार ।

[नोट—ये नाम सब प्रकार की रसोई बनाने वालों के हैं ।]

किसान—कृषक । हालक । क्षेत्री । कर्षक । कृषिक ।
खेतिहर । कृषीबल । कृषिजीवी ।

गवैया—गायक । गाता । गाथक । गायन । कथक ।

बजानेवाले—वादक । उपवाद्य । महावाद्यकी । वार्तवह ।
वेणुपिक । वंशस्फोट ।

बंशी बजानेवाले—वैणविक । वेणुधम ।

मृदंग बजानेवाले—मार्दंगिक । मौर्जिक । मृदंगिया ।
पखावजी । तबलची । ढोलकी ।

नाचनेवाले पुरुष—नर्तक । नट । पोटगल । चारण ।
केलक । तालरेचनक ।

नाचनेवाली स्त्री—नर्तकी । नटी । चारणी । लस्या ।
लसिका ।

वेद्या—वारस्त्री । गणिका । पतुरिया । रंडी । (कस्बी) ।
वारवधू । कंचनी । वाराङ्गना । रामजनी । सामान्या । (तवायफ) ।
रूपाजीवा । क्षुद्रा । शालभञ्जिका । झर्झरा । शूला । वारविलासिनी ।
भण्डहासिनी । लज्जिका । वसुन्धरा । कुम्भा । कामरेखा । बर्वटी ।
पण्याङ्गना । पणाङ्गना । भुजिष्या । भोग्या । सर्ववह्मभा । पुरवामा ।
मङ्गलामुखी ।

वेद्याओं के गुरु—पीठमर्द । रामजना । (उस्तादजी) ।
कथक ।

महन्त—मठाधीश । पीठाधीश । अध्यक्ष । कुलपति ।

पुरोहित (पण्डा)—पुरोधे । पोधा । पौरोहित ।
पण्डा । सख्यावान । प्रोहित ।

पहरेदार—ड्योढीदार । प्रहरी । पौर । प्रतीहार ।
द्वारपाल । दौवारिक । स्थितदर्शक । वेत्रक । वेत्रधार । द्वारस्थ ।

दूत—संदेशहर । धावन । धापक । चर । चार । प्रणिधि ।
चटुक । अपिसर्पक । संदेशिया ।

दास—सेवक । श्रुत्य । किंकर । चेटक । गोप्यक । प्रैष्य ।
नियोज्य । भुजिष्य । परिचारक । प्रेष्य । प्रेष । प्रैष । परिकर्मा ।

परिचर । सहाय । उपस्थाता । अभिसर । अनुग । अनुचर ।
अनुगामी । वृषल ।

दासी—परिचारिका । किंकरी । अनुचरी । अनुगामिनी ।
सहाया । भृत्या । चारि । वृषली । विधिकरनी । बाँदी ।

बाजीगर (जादूगर)—ऐन्द्रजालिक । प्रतीहारक ।
इन्द्रजालकारक । मायाकारक । कौसुतिक । मायावी । व्यंसक ।
मायी । मायिक ।

चौर—चौर । तस्कर । दस्यु । साहसिक । एकागारिक ।
मोषक । मलिम्लुच । पाटञ्चर । रात्रिचर । परास्कंदी । गूढनर ।
प्रतिरोधी । स्तेन । स्तैन्य । प्रच्छन्नजन । कुम्भिल । खनक ।
शङ्कितवर्ण । खानिक । तृपु । तक्का । रिभ्वा । रिक्का । विहाया ।
तायु । वनर्गु । वृक । अद्यशंस ।

ठग—छली । धूर्त । धोखेवाज । वंचक । प्रतारक ।
चाइयाँ । गिरहकट ।

कैदी—प्रतिग्रह । प्रग्रह । उपग्रह । बन्दी ।

जुआरी—सभिक । सभिक । द्यूतकार । अक्षधूर्त ।
द्यूतक्रीडक । धूर्त । अक्षदेवी । कितव । द्यूतकृत । ज्वारी ।

कवि (पण्डित)—पण्डित । कोविद । सुधी । कवीश ।
कवीन्द्र । कविराज । छान्दस । कृति । श्रोत्रिय । धीमान् । प्राज्ञ ।
मनीषी । विदग्ध । ज्ञ । ज्ञानी । सूजान । सूरि । विचक्षण । सन् ।
आचार्य । दूरदर्शी ।

लेखक (मुहरिर्)—अक्षरचण । लिपिकर । अक्षरचंचु ।

ज्योतिषी—कार्तान्तिक । मौहूर्तिक । सांवत्सर । दैवज्ञ ।
गणक । मौहूर्त । विज्ञ ।

शास्त्री—शास्त्रज्ञ । तान्त्रिक । तत्वज्ञ । ज्ञात । सिद्धान्त ।

नौकर—सेवक । दास । टहलुआ । अनुजीवी । अर्थी ।
चाकर ।

न्यायाधीश—अक्षदर्शक । प्राड्विवाक । न्यायक ।
(मुन्सिफ) । धर्मराज ।

धर्माध्यक्ष—अक्षपाटक ।

व्यास—कथावाचक । सूत । पौराणिक ।

यज्ञकर्त्ता—याज्ञिक । याजक ।

वेदान्ती—ब्रह्मवादी । तत्ववादी ।

नैयायिक—तार्किक । अक्षपाद ।

मीमांसज्ञ—जैमिनीय ।

वेदपाठी—श्रोत्रिय । छान्दस । वैदिक । श्रोत्री ।
वेदाध्यायी ।

शिक्षक—पाठक । उपाध्याय । अध्यापक । उपदेशक ।
गुरु । आदेशक । आदेश्टा । उपदेश्टा । तत्वबोधक ।

अध्यापिका—उपाध्याया । उपाध्यायी । गुरुआनी ।
आचार्या ।

शिष्य—शैक्ष । छात्र । दीक्षित । विद्यार्थी ।

वैद्य *—रोगहारी । अगदङ्कार । भिषक् । चिकित्सक ।
आयुर्वेदी ।

विष-वैद्य—गारुडिक । विषन्न । विषमारक । जाङ्गुलिक ।

महाजन—श्रेष्ठि । धनी । सभ्य । प्रमुख । साधु ।

हाकिम—अधिकारी । शासक । शास्ता । शासनकर्त्ता ।
देशक । शासिता ।

जासूस—चर । गुप्तचर । स्पश । चार । प्रणिधि ।।
अपसर्प । गूढ़पुरुष । यथार्हवर्ण ।

चक्रवर्ती राजा—सार्वभौम । सम्राट् । जगदीश्वर ।
('सम्राट्' का स्त्रीलिङ्ग 'सम्राज्ञी' है)

महाराजाधिराज—अधिराज । अधीश्वर । राजराजेश्वर ।

राजा—राज । नृप । भूप । पार्थिव । महीपति ।
नृपेश । नरपति । नरपाल । राजेश्वर । मण्डलेश्वर । नरेश ।
भुआल । भूपति । अवनीपति । अवनीश । क्षितिपाल । प्रजापति ।
पार्थ । नाभि । दण्डधर । भूसुक् । स्कन्ध । राट् । क्षमाभृत् ।

पटरानी—राज्ञी । महारानी । रानी । महिषी ।
अर्धासनी । राजपत्नी ।

* 'वैद्य' नाम की एक जाति जो बङ्गाल में अधिक है, अपने को
'अम्बष्ठ' का वंशज मानती है । चार प्रकार के वैद्य माने गये हैं, यथा—

१. रोगचिकित्सक, २. विषचिकित्सक, ३. शल्यचिकित्सक (सर्जन),
४ कृत्याहार ।

मंत्री—सचिव । अमात्य । धीसचिव । धीसख । दीवान ।
सामवायिक । बजीर ।

पारिषद् (दरबारी)—सभासद् । सभ्य । सभास्तार ।
सामाजिक । परिषद्वल । पर्षद्वल । पार्षद् । परिसभ्य । साधु ।

सेना*—चमू । ध्वजिनी । वाहिनी । पृतना । अनीकिनी ।
वरूथिनी । बल । सैन्य । चक्र । अनीक । वाहना । पूतना ।
गुल्मिनी । वरचक्षु ।

सिपाही (योद्धा)—सैनिक । भट । योद्धा । समवेत ।
योध । योद्धार । प्रहरी ।

सेनापति—सेनानी । वाहिनीपति । सेनाध्यक्ष । सेनप ।
चमूपति । चमूप ।

प्यादा (सैनिक)—पद्ग । पदाति । पत्ती । पद्ग ।
पदिक । पादात ।

रथी (सैनिक)—स्यन्दनारोह । रथारूढ़ । रथारोही ।

घोड़सवार—अश्वारोही । तुरगारूढ़ । सवार । सादी ।
अश्ववह । अश्ववार । तुरगी ।

महावत—फीलवान । हाथीवान । गजारोह । हस्तिपक ।
निषादी । पद्मीक । आधोरण । इभपालक । गजाजीव ।

* सेना चार प्रकार की होती है १. पैदल, २. घोड़सवार, ३. हाथी-
सवार, ४. रथी । चारों प्रकार की संयुक्त सेना का नाम “चतुरङ्गिनी”
सेना है ।

कोचवान (सारथी)—नियन्ता । प्राजिता । सूत ।
दक्षिणस्थ । सारथी ।

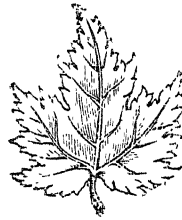
ब्रह्मचारी—व्रती । संयमी । यमी । वटु । वर्णी ।
प्रथमाश्रमी ।

गृहस्थ—गृही । कुटुम्बी । ज्येष्ठाश्रमी । गृहमेधी । स्नातक ।
गृहपति । सत्री । गृह्याय । गृहाधिप । गृहायनिक ।

वानप्रस्थी—वैषानस ।

सन्यासी—(देखो स्वर्गादिवर्ग पृष्ठ २०।)

भिक्षुक—भिक्षाजीवी । भिखमंगा । मंगन । याचक ।
अर्थी । वनीयक । याचनक । मार्गण । भिक्षोपजीवी ।



४. भावादि वर्ग

प्रेम—रति । अनुराग । प्रीति । प्रियता । स्नेह । हार्द ।
राग । प्यार । लगन । रमण । आसक्ति ।

[नोट—शृंगार रस का स्थायी भाव]

शोक—मन्यु । शुच् । शोचन । खेद ।

[नोट—करुण रस का स्थायी भाव]

उत्साह—उद्यम । अध्यवसाय । सूत्र । उबाल । जोश ।
उमंग । उछाह । साहस ।

[नोट—वीर रस का स्थायी भाव]

भय—दर । त्रास । भीति । भी । साध्वस । प्रतिभय ।

आतङ्क । आशङ्का । डर । भिया । भयानक । भयङ्कर ।

[नोट—भयानक रस का स्थायी भाव]

क्रोध—कोप । अमर्ष । रोष । रिस । प्रतिघ । भीम ।

हेल । हर । हृणि । त्यज । भाम । एह । ह्वर । तपुषी । जूर्णि ।
मन्यु । व्यथि ।

[नोट—रौद्र रस का स्थायी भाव]

घृणा—धिन । (नफरत) ।

[नोट—बीभत्स रस का स्थायी भाव]

शान्ति—शम । स्थिरता । प्रशम । उपशम । शमथ ।
प्रशान्ति । तृष्णाक्षय । निर्वेद ।

[नोट—शान्त रस का स्थायी भाव]

भक्ति *—भजनासक्ति । अनुराग । प्रेम । भजनरति ।

[नोट—‘रति’ के सभी पर्याय ‘भक्ति’ के अर्थबोधक हो सकते हैं, क्योंकि सेवक-सेव्य भाव में जो रति होती है, वही ‘उत्तम रति’ भक्ति कहलाती है ।]

त्याग—वैराग । निस्पृहा । अस्पृहा । निर्वेद । वर्जन ।

ग्लानि—क्षय । हर्षक्षय । नाश । शेष । मूर्छन । म्लानि ।

वात्सल्य—सौहार्द । स्नेह । हृदयद्राव ।

शंका—सन्देह । अनिर्णय । संशय । शक । त्रास । डर ।

डाह—राग । जलन । कुढ़न । ईर्ष्या । असूया । मात्सर्य ।

द्वेष—शत्रुता । वैर । विरोध । विद्वेष । खार । द्वेषण ।

श्रम—परिश्रम । मेहनत । उद्योग ।

श्रद्धा—आदर । प्रेम । सम्मान (गुरुजनों के प्रति प्रेम भाव) ।

मद—नशा । विकार । गर्व । अहङ्कार । मादकता ।

धीरज—धैर्य । टाढ़स । धीरता । सन्तोष । मनस्थिरता ।
तोष । अचञ्चलचित्तता ।

* नवधा भक्ति—१. श्रवण, २. कीर्तन, ३. स्मरण, ४. पादसेवा,
५. अर्चन, ६. वन्दन, ७. दास्य, ८. सख्य, ९. आत्मनिवेदन ।

आलस्य—मन्दता । मान्द्य । अलसता । तन्द्रा । आलस ।
कौसीद्य । अलस । कार्यप्रद्वेष । शीतक । अनुष्ण ।

दुःख (विषाद)—विषाद । अवसाद । जड़ता । साद ।
मूर्खता । पीड़ा । विषण्णता । ह्येश । बाधा । व्यथा । कृच्छ्र ।
कष्ट । संकट । शूल । शोक । ग्लानि । दरद । करक । क्षोभ ।
खँभार । शाल । यातना । अमंगल । असमंजस । आर्त्त । पीर ।

चिन्ता—चिन्तना । चिन्तन । आध्यान । चिन्तिया ।
आध्या । स्मृति । शोच (सोच) । (फिक्र) । विसूर । उद्वेग । ध्यान ।
भावना । उत्कण्ठा । विषाद । कातरता । भय । त्रास । अनमन ।

मोह (अज्ञानता)—अज्ञानता । मूर्खता । ममत्व ।
समता । माया । मूढता । आज्ञानान्धकार ।

स्वप्न—निद्रा । शयन । नींद । सपन ।

ज्ञान—बोध । विशोध । अबोध । चेतनता । प्रकाश ।

स्मृति—स्मरण । चिन्तन । सुधि (सुध) । चेत । याद ।
ध्यान । विचार ।

सहनशीलता—सहिष्णुता । क्षमा । अक्रोध ।

असहनशीलता—अमर्ष । अमर्षण । असहिष्णुता ।
क्रोध । रिस ।

उत्कण्ठा—लालसा । चाव । उत्सुकता । औत्सुक्य ।
चाह । आकुलेच्छा । अत्यन्त इच्छा । प्रबलेच्छा । तीव्राभिलाषा ।

न्योछावर—बलिहार । उत्सर्ग । त्याग । दान । समाप्ति ।
प्रदान । समर्पण । अर्पण ।

उत्सव—उल्लाह । मंगलकार्य । धूमधाम । (जलसा) ।
त्योहार । पर्व । समैया । आनन्द । बिहार । बधाव ।

दीनता—दैन्य । कार्पण्य । दारिद्र्य । अधीनता । दुःख ।
सिधाई ।

हर्ष (सुख)—आनन्द । प्रसन्नता । सुख । सौख्य ।
मोद । प्रमोद । संमद । प्रीति । प्रमद । आमोद । शर्म ।

लज्जा—त्रीड़ा । संकोच । शर्म । मन्दाक्ष । मन्दास्य ।
लज्या । त्रीड़ । हीस्व । त्रीड़न । लाज । (हया) । मर्यादा ।

उग्रता—उग्रत्व । चण्डता । प्रचण्डता । (तपाक) ।
(तेज्जी) ।

व्याधि—रोग । रुज । उपद्रव । पीडा । सन्ताप ।
ताप । व्यथा ।

भ्रम—धूर्णन । भ्रान्ति । चक्रावर्त्त । घूर्णि । भ्रमि ।
धोखा । चक्कर । फेर । भूल ।

आवेग—त्वरा । शीघ्रता । आतुरता । चपलता । वेग ।
जल्दी । लाघव । लघुता । अचिरता । पटुता । स्फूर्ति । तेजी ।

अभाव—कमी । न्यूनता । क्षीणता । हीनता । खुटाव ।
अनुपस्थिति ।

परिक्रमा—प्रदक्षिणा । परिक्रमण । परिभ्रमण । फेरी ।
फेरा । घुमरी । चक्कर ।

हृद्—पराकाष्ठा । चरम । सीमा । इति । सोमान्त ।
अन्त । छोर । अशेष । समाप्ति ।

समाप्ति—सिद्धि । सम्पूर्णता । अन्त । निष्पत्ति ।
(खत्म) । पूरा । पूर्णता । समापन । पूर्त्ति ।

अकस्मात्—अनायास । सहसा । अचानक । एकाएक ।
एकवएक । हठात् । सद्यः । सपदि । तत्क्षण । अतर्कित ।

अकाल—असमय । अप्रशस्त काल । अशुद्ध काल । दुकाल ।
महर्घ । महँगी । मन्दी ।

तारतम्य—न्यूनाधिक । कमवेश । थोड़ाबहुत । घटबढ़ ।

समूह—वृन्द । निकर । ढेर । झारि । जूट । कुल ।
स्तोम । थोक । ग्राम । बरूथ । पटल । निकाय । संचय । हार ।
समाहार । समुच्चय । कलाप । कदंब । यूह । यूथ । पुञ्ज । चय ।
राशि । गण । ओष । संघ । समवाय । व्रज । समुदाय । संदोह ।
चक्र । टोली । परिकर । पूग । प्रसर । प्रचय । सानु । मंडली ।
गोष्ठी । व्यूह । दल । जाल । कषाल । निवह ।

उन्माद—पागलपन । मतिभ्रंश । उन्मना । विक्षिप्ति ।
लहर । चित्तविभ्रम । चित्तविप्लव । सनक । भूक । जक ।

शाप (गाली)—गाली । अभिशाप । अकृपा । कोप ।
आक्रोश । अभिसम्पात । अवग्रह । अश्लील वचन ।

न्याय—निर्णय । विवेक । (इन्साफ) ।

जड़ता—जाड्य । अपाटव । अपटुत्व । स्तैमिति । स्तब्धता ।
शून्यता । स्थिरता । शीतलत्व । मूर्खता । अज्ञानता । अचेतनता ।
मूढ़ता ।

चपलता—चंचलता । शीघ्रता । त्वरित । विकलता ।
अशांति । तरलता । तारल्य । चाञ्चल्य ।

क्षण—समय । घड़ी । मुहूर्त । बेला । विरियाँ । छिन ।
छन । काल । दण्ड । अवसर । प्रसङ्ग । निमेष । पल । अदिष्ट ।

धीरे—सहज । धीमे । मन्दगति । हरुए । आहिस्ते । शनैः ।

अवकाश—समय । मौका । छुट्टी । फुरसत ।

शीघ्र—त्वरित । लघु । क्षिप्र । द्रुत । चपल । तूर्ण । अर ।
सत्वर । आशु । अविलम्ब । वेग । वेगि । जल्द । सपदि । सहसा ।
अविरत । हरद् । सद्य । अचिर । तरसा । जव । अविराम ।
झटित । हाल । उत्ताल । स्पद् । तुरन्त । हौले । पटु । फौरन् ।
स्फूर्ति । (फुर्ती) । तेज्र । आतुर । झटपट । तत्क्षण ।

व्यतीत—गत । विगत । अवसान । अतिवाहन । निष्पत्ति ।
निष्पन्न । क्षेपण । यापन । बिताना । समाप्त । समापन । अन्त ।
सम्वरण । सिद्ध । इति । मिरान । ठंडा पड़ना । (खतम) ।

वितर्क—तर्क । अनुमान । विकल्प । विचार । अनुभव ।
बोध । अटकल ।

निर्लज्जता—अमर्यादा । (बेशर्मी) । (बेहयाई) ।
निस्संकोच ।

मूर्छा—सम्मोहन । मोहन । अचेतन । (बेहोशी) । मोह ।
कश्मल । मूर्च्छन ।

मान (आदर)—आदर । गौरव । प्रतिष्ठा । सम्मान ।
(इज्जत) । मर्यादा । यश । कीर्ति । प्रतिपत्ति । प्रागल्भ्य ।

मान (हठ)—हठ । रोष । रूठना । कोहाना । कोह ।
कोप । जिद्द । मचलाई । अड़ । टेक । ऐंठ । आन । बात । आर ।
शान ।

अपमान—अनादर । अप्रतिष्ठा । अपयश (वेइज्जती) ।
गौरवहीनता । अमान । अवज्ञा । परीहार । परिहार । पराभव ।
तिरस्कार । अवहेला । अवहेलन । अमर्यादा । धिक्कार । क्षेप ।
अतिपात ।

मानता—मनौती । मन्नत । प्रण । प्रतिज्ञा ।

स्वभाव—प्रकृति । निसर्ग । स्वरूप । भाव । सर्ग ।
संसिद्धि ।

काम (कामना)—वासना । कामना । चाह । वृषा ।
तृष्णा । प्यास । मनोर्थ । मनोऽभिलाष । आकांक्षा । अभिलाषा ।

लोभ—लालच । वृषा । तृष्णा । लिप्सा । स्पृहा । कांक्षा ।
आकांक्षा । गर्द्धः ।

पाखण्ड—कपट । छल । छद्म । दम्भ । धूर्त्तता । जाल ।

प्रमाद्—असावधानी । अनवधानता । भ्रम । भूल ।
अव्यवस्थितचित्तता । (लापरवाही) । (बेखबरी) । (बेफिक्री) ।

अभिप्राय (विचार)—अभिलाषा । इच्छा । कांक्षा ।
विचार । आकांक्षा । आशय । तात्पर्य । स्पृहा । कामना । सम्मति ।

सन्तोष—तृप्ति । तोष । हृष्टि । आनन्द ।

स्नेह—राग । अनुराग । प्रेम । प्रीति । सौहार्द । हार्द ।

उपवास—औपवस्त । लंघन । अनाहार । निराहार ।
अनशन । भोजनाभाव । व्रत ।

आज्ञा—आदेश । निदेश । अनुमति । शासन । शिष्टि ।
अववाद । निर्देश ।

जीवन (जीवनकाल)—अवस्था । आयु । वयःक्रम ।
जीवनकाल ।

मृत्यु—मरण । पञ्चत्व । निधन । अत्यय । विनाश ।
नाश । प्रलय । मृति (मौत) । दिष्टान्त । कालधर्म । अन्त ।
देहान्त । देहावसान । शरीरान्त । निपात ।

कल्याण—कुशल । मंगल । क्षेम । सुख । आनन्द । श्वः ।
श्रेयस् । शिव । भद्र । शुभ । भावुक । भविक । भव्य । शस्त । शं ।

आचार—चरित्र । चारित्र । व्यवहार । वृत्त । शील ।

क्रूरता—कर्कशता । निर्दयता । काठिन्य (कठिनता) ।
निर्मोह । निर्ममता । निष्ठुरता । पाप । भयंकरता ।

पाप—अघ । अपवाद । अपकर्म । अपकृति । अपधर्म ।
अधर्म । विधर्म । कुधर्म । कुकर्म । दुर्दृष्ट । पङ्क । कित्विष । कल्मष ।
मल । कलुष । वृजिन । एन । अह । दुरित । दुष्कृत । पातक ।
तूस्त । कण्व । शल्य । पापक ।

पुण्य—धर्म । शुभादृष्ट । श्रेय । सुकृत । वृष । पावन ।
सुगन्धि । शोभन । सत्कर्म ।

अपराध—भाग । मन्तु । अकार्य । दुष्कर्म ।

[नोट—'पाप' के सभी पर्याय 'अपराध' के पर्याय हो सकते हैं ।]

सत्य—सच । तथ्य । यथार्थ । शपथ । ऋत । सम्यक् ।
भवितथ । भूत । तथोक्त । तद्वत् ।

भ्रूठ—असत्य । मृषा । मिथ्या । वितथ । अनृत । अतथ्य ।

हाव * (नाज)—आह्वान । शृंगार भाव । नखरा ।
(नखड़ा) । चोंचला । पुकार । बुलाहट ।

यात्रा—भ्रमण । परिभ्रमण । ब्रज्या । प्रब्रज्या । पर्यटन ।
अस्थान । गमन । गम । प्रस्थिति । यान । प्राणन ।

दण्ड—साहस । दम । (सजा) । दमन ।

व्यवहार—वर्त्ताव । सलूक । साम्न । साम । सात्वमथ ।

कीर्त्ति †—सुख्याति । समज्ञा । समाज्ञा । समाख्या ।
समज्या । अभिख्या । श्लोक । वर्णा । कीर्त्तना । यश । गुणावलि ।

अपयश—अपकीर्त्ति । अकीर्त्ति । अयश । अपवाद । निन्दा ।

[नोट—‘निन्दा’ वाचक सभी शब्द ‘अपयश’ के पर्याय हैं]

अपकार—द्रोह । अनुपकार । असद्व्यवहार । अत्याचार ।
बुराई । खुटाई । अपकर्म । दुष्क्रिया । मन्दकर्म । द्वेष । अपकृति ।

उपकार—भलाई । नेकी । हितसाधन । उद्धार । उपकृति ।

मधुर-वचन (अर्थ प्रयोग में)—प्रियवचन । सूनृत ।

मञ्जुभाषण । शांत्व । समंजस । संगत । हृदयंगम ।

* संयोग समय में स्त्रियों की स्वाभाविक अज्ञादि चेष्टाओं को ‘हाव’ कहते हैं । काव्यशास्त्र में हाव १२ प्रकार के माने गये हैं । यथा—
१. लीला, २. हेला, ३. ललित, ४. विभ्रम, ५. विहृत, ६. विलास,
७. विच्छिति, ८. विव्वोक, ९. किलकिञ्चित, १०. मोद्वहृत, ११. कुट्टमित ।
१२. बोधक ।

† दानादि से जो ख्याति होती है उसे ‘कीर्त्ति’ तथा शौर्यादि से जो ख्याति होती है उसे ‘यश’ कहते हैं । यथा—“दानादिप्रभवा कीर्त्तिः शौर्यादि प्रभवं यशः ।”
—इति माधवी ।

दुर्वचन—अश्लील । ग्राम्य । परुष । निष्ठुर । कठोर ।
तब्ध । कर्कशवचन ।

नीति—न्याय । व्यवहार । उचित । यथार्थ । नय ।

स्तुति—प्रशंसा । नुति । स्तोत्र । प्रस्तुति । स्तव । शस्त ।
ईलित । पणायित । वर्णित ।

कृपा—अनुग्रह । अनुकम्पा । मया । दया । अनुक्रोश ।
अनुकंपना ।

कपट—छद्म । छल । दम्भ । पाखण्ड । शाठ्य ।
कैतव । व्याज ।

कलंक—दोष । दाग । लाञ्छन । अपवाद । पंक । मसि ।
किञ्जल्क । निर्वाद । लक्ष्म । मलीन । मली ।

शपथ (कसम)—सौगन्ध । सौंह । कसम । आन ।
अभिषङ्ग । सत्य । शाप । शप । शापन । प्रत्यय ।

कंजूसी—कृपिणता । कृपणता । कार्पण्य । दैन्य । दीनता ।
दरिद्रता । कादरता । अनुदारता । क्षुद्राशयता ।

जय- (विजय)—विजय । जीत । उन्नति । वृद्धि । विभव ।

हार (पराजय)—पराजय । अजय । पराभव । भङ्ग ।
अवनति ।

आशीर्वाद—आशी । अशीर्वचन । शुभवचन ।

बचपन—बालपन । कौमार । शैशव । बालकत्व । शिशुत्व ।

जवानी—यौवन । युवावस्था । तारुण्य । तरुणता । ज्वानी ।

अधेङ्—प्रौढत्व । प्रौढावस्था । पक्की उम्र ।

बुढ़ापा—जरा । जीर्णावस्था । वृद्धावस्था । वृद्धत्व ।
जरत्व । वृद्ध । जरठपन । जरठत्व । जीर्ण ।

सुन्दरता—सौन्दर्य । सुरूपता । रूपता । लावण्य ।
(खूबसूरती) ।

[नोट—'शोभा' शब्द के पर्याय भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

कुरूपता—कदर्य । अरूपता । अपरूपता ।

प्रार्थना—विनती । विनय । नम्रता । दीनता । आर्तवचन ।
अभ्यर्थना । (खुशामद) ।

उत्पात—उपद्रव । अशुभ । अमंगल । विघ्न । बखेड़ा ।
झगड़ा । टंटा । ऊधम ।

सूचना—समाचार । निवेदन । कथन । आवेदन । सूचन ।

हँसीठट्टा—परिहास । परीहास । क्रीड़ । देवना । बर्करा ।
विजल्पन । (मजाक) । दिल्ली ।

प्रलाप—जक । बक-बक । मिथ्यालाप । अनर्थभाषण ।
जल्प । दुर्वाद ।

संस्कार *—संशोधन । शुद्धि । प्रतिगलन । शोधन ।
शुद्धता । परिशोधन ।

* हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के कुल १६ संस्कार माने
गये हैं । यथा—१. गर्भाधान । २. पुंसवन । ३. सीमन्त । ४. जातकर्म ।
५. नामकरण । ६. निष्क्रमण । ७. अन्नप्राशन । ८. चूड़ाकरण (मुण्डन) ।
९. कर्णवेध । १०. उपनयन । ११. वेदारम्भ । १२. समावर्तन । १३.
विवाह । १४. गृहस्थाश्रम । १५. वानप्रस्थाश्रम । १६. सन्यासाश्रम ।

विद्या *—ज्ञान । तत्वबोध । बोध । शिक्षा । शास्त्र ।
यथार्थज्ञान ।

व्यसन †—टेव । लत् । बान । आसक्ति । अभ्यास ।
खोटी आदत ।

बहाना—व्याज । मिष (मिस) । छल । कपट ।

कला ‡—कारिगरी । शिल्पनैपुण्य । शिल्पकर्म ।

* विद्या १८ प्रकार की मानी गई है । यथा—१. शिक्षा । २. कल्प ।
३. व्याकरण । ४. निरुक्त । ५. ज्योतिष । ६. छन्द । ७. ऋग्वेद ।
८. यजुर्वेद । ९. सामवेद । १० अथर्वणवेद । ११. मीमांसा । १२. न्याय ।
१३. धर्मशास्त्र । १४. पुराण । १५. आयुर्वेद । १६. धनुर्वेद ।
१७. गान्धर्व वेद । १८ अर्थशास्त्र ।

† व्यसन १८ प्रकार के होते हैं । यथा—१. मृगया, २. जुआ खेलना,
३. दिन में सोना, ४. दूसरे का दोष कहना, ५. स्त्रियों में आसक्ति,
६. नशेबाजी, ७. बाजा बजाना, ८. नाचना, ९. गाना और १०. व्यर्थ
घूमना । ये दस कामज व्यसन हैं । तथा ११. चुगलीखाना, १२. दुस्साहस,
१३. द्रोह, १४. ईर्ष्या, १५. असूया (द्वेष), १६. दूसरे की वस्तु
हरण १७. कटुभाषण और १८. अत्यन्त ताड़ना देना । ये आठ
क्रोधज व्यसन हैं ।

‡ कला के ६४ भेद हैं । यथा—१. गायन (गीत) । २. वाद्य
(बजाना) । ३. नृत्य (नाचना) । ४. चित्रकारी । ५. तिलक काढ़ना ।
६. तण्डुल कुसुमावली (चावलों से पुष्पादि काढ़ना) । ७. पुष्पातरण
(पुष्प का शृङ्गार रचना) । ८. अङ्गराग (शृङ्गार) । ९. मणिभूमिका कर्म
(सोने के लिये स्थान रचना) । १०. शयन रचना । ११. उदक वाद्य
(जलतरंग आदि बाजे) । १२. उदकाघात (पिचकारी छोड़ना) ।

सुगन्धि—सौरभ । सुगन्ध । परिमल । आमोद ।
सद्गन्ध । खुशबू ।

१३. चित्र योग (प्रकृति में रासायनिक परिवर्तन) । १४. माल्य ग्रन्थन ।
१५. शेखरक (बाल गूथना), आपीड (चोटी गूथना) । १६. नेपथ्य-
प्रयोग । १७. कर्णपत्रभङ्ग । १८. गन्धयुक्ति । १९. अलङ्कारयोग
(आभूषणादि धारणविधि) । २०. ऐन्द्रजाल (जादूगरी) । २१. कौचु-
मार योग (स्वरूप रचना) । २२. हस्तलाघव (शीघ्र काम करना) । २३.
सूपकर्म (रसोइयादारी) । २४. पानकादि भोजन (रस, शर्बत, आस्रव
आदि बनाना) । २५. सूचीकर्म (सिलाई का काम) । २६. सूत्रक्रिया
(कर्सीदा काढ़ना) । २७. वीणा—डमरू वाद्य । २८. प्रहेलिका । २९.
प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी) । ३०. कूटक-योग (कूटक शब्दों का प्रयोग) ।
३१. पुस्तक-वाचन (खर सहित पुस्तक पढ़ना) । ३२. नाट्यकला ।
३३. समस्यापूर्ति । ३४. पाटिकावान विकल्प (मेज-कुरसी-पलंग आदि
बनाना) । ३५. तक्ष कर्म (मरम्मत करना) । ३६. तक्षण (बर्दई का
काम) । ३७. वास्तुकर्म (गृह-निर्माण-कला) । ३८. धातुपरीक्षा (सोना,
चाँदी आदि परखना) । ३९. धातुवाद (विविध धातुओं का मिश्रण) ।
४०. मणिरागज्ञान (रत्नादि का ज्ञान) । ४१. वृक्षायुर्वेद योग (वाग्बानी) ।
४२. सजीव द्यूत (तीतर, बटेर, मुर्ग, मेढा आदि लड़ाना) । ४३. शुक-
सारिका प्रलापन (चिड़ीबाजी) । ४४. उत्सादन (तैलमर्दन आदि) ।
४५. अक्षर मुष्टिकाकथन (संक्षेप में बातचीत करना) । ४६. म्लेच्छित्त
विकल्प (साङ्केतिक अर्थ समझना) । ४७. देश भाषा विज्ञान । ४८. पुष्प-
शकटिका । ४९. निमित्त ज्ञान (शुभाशुभ ज्ञान) । ५०. यन्त्रमंत्रिका ।
५१. धारणमंत्रिका । ५२. सम्पाद्य । ५३. मानसी । ५४. काव्यक्रिया ।
५५. अभिधान कोष । ५६. छन्दोज्ञान । ५७. क्रियाकल्प । ५८. छलित (ठगी) ।

दुर्गन्धि—दुर्गन्ध । दुष्टगन्ध । पूतिगन्ध । पूतिगंधि । पूति ।

निश्चय—निर्णय । निर्णयन । निचय । ठीक । तय ।
पक्का । सिद्ध ।

सिद्धान्त—राद्धान्त । दृढसम्मति । पक्की राय । दृढमत ।
स्थिरमत । प्रधान लक्ष्य । (उसूल) ।

स्वीकार—अङ्गीकार । (मंजूर) । ग्राह्य । मान्य ।

पवित्रता—शुचित्व । शुचिता । शौच । शुद्धता । पूतत्व ।
स्वच्छता । अदूषण । निर्दोषत्व । निर्दोषिता । निर्मलता ।

मधुर शब्द (शब्दप्रयोग में)—मृदुवचन । सुभाषण ।
मधुभाषा । सुवाणी । सुवचन ।

अपभ्रंश—भ्रष्ट । ग्राम्य । प्राकृत । ठेंठ ।

पर्याय—आवृत्त । अनुपूर्वा । अनुक्रम । परिपाटी ।
प्रकार । एकार्थ । एकार्थबोधक (वाचक) । समानार्थक ।

विपर्यय—व्यतिक्रम । विपर्यास । व्यत्यास । व्यत्यय ।
विपर्याय । उलटफेर । विपरीत । अयन । प्रतिकूल ।

ओंकार—प्रणव । बीजमन्त्र । वेदमाता । आद्या ।

इतिहास—इतिवृत्त । प्राचीनकथा । पुरावृत्त । पूर्ववृत्तान्त ।
पुराण ।

प्रबन्ध—निबन्ध । लेख । रचना ।

आख्यान (कथा)—कथा । कहानी । किस्सा । वृत्तान्त ।
वर्णन । बयान ।

५९. वल्लगोपन । ६०. द्यूतक्रीडा । ६१. आकर्ष क्रीडा (चौपड
पासे) । ६२. बालक्रीडनक । ६३. वैनयिकी (नम्रता) । ६४.
वैजयिकी वा व्यायामकी (लडाई, कुश्ती, कसरत आदि) ।

आख्यायिका *—उपन्यास । प्रसिद्ध कथा ।

पहेली—प्रहेलिका । प्रवह्लिका । प्रवह्ली । प्रहेली । प्रभदूती ।

गल्प—उपकथा । गप्प । छोटी कहानी ।

चाटुकारी—चापलूसी । लल्लोपत्तो । अनुनय । स्तुति ।

(खुशामद) ।

संगीत—गान । गाना । गायन । गेय । कीर्तन ।

राग †—ध्वनि । लय ।

नाच ‡—नृत्य । लास्य । नर्तन । तांडव । नृति । नटन ।

नृत । लास । लास्यक ।

प्रतिध्वनि—प्रतिशब्द । झाँई । प्रतिनाद । प्रतिश्रुत । प्रतिध्वान ।

विदित—अवगत । व्यक्त । प्रतिपन्न । प्रकट (प्रगट) ।

(जाहिर) । ज्ञात ।

* वह कथा जो पुराणादि के आधार पर रची गई हो । जिस आख्यायन में पात्र भी अपने मुँह से अपना कुछ २ वर्णन करता है, उसे “आख्यायिका” कहते हैं ।

† किसी ध्वनि में बैठायें हुये स्वर जिनके उच्चारण से गान होता है, ‘राग’ कहलाता है । भरत के मत से राग ६ प्रकार के हैं । यथा—
१. भैरव, २. कौशिक, ३. हिन्दोल, ४. दीपक, ५. श्री, ६. मेघ ।

‡ पुरुष के उद्धत नाच को ‘ताण्डव और स्त्रियों के नाच को ‘लास्य’ कहते हैं । भाव बतलाते हुये नाच को ‘नृत’ तथा ताल-स्वरके आधार पर नाचने को नृत्य कहते हैं ।

—“सञ्जीत दामोदर”

नाटक *—रूपक । प्रहसन । नाच-गाना । नृत्यसंगीतादि ।
दृश्य-काव्य । प्रदर्शन । नाट्यकलाप्रदर्शन ।

सेवा—परिचर्या । चर्या । शुश्रूषा । टहल । (खिदमत) ।
चाकरी । नौकरी ।

विघ्न—व्याघात । अन्तराय । प्रत्यूह । विघात ।

व्यर्थ—वेकाम । निष्प्रयोजनीय । निरर्थक । निष्फल ।
बादि । मोघ । वृथा । अकाम । निष्काम । अकारथ । असार ।

प्रतिज्ञा—पण । प्रण । संविद । पैज । वचन । प्रतिज्ञात ।
नियम । आश्रव । संश्रव । प्रतिश्रय । नेम । करार । कौल ।

संयोग—मेल । मिलाप । साथ । संग ।

वियोग—विछोह । विरह । विप्रलम्भ । विप्रयोग । जुदाई ।

प्रकार—भेद । सादृश्य । किस्म ।

* नाटक—किसी रङ्गमञ्च पर पात्र और पात्रियों द्वारा दृश्यकाव्यानुसार किया जाने वाला अभिनय नाटक वा रूपक कहलाता है । यह १० प्रकार का होता है । १. नाटक, २. प्रकरण, ३. भाण, ४. व्यायोग, ५. समवकार, ६. डिम, ७. इहामृग, ८. अंक, ९. बीथी १०. प्रहसन ।

इसी प्रकार उपरूपक के १८ भेद होते हैं—१. नाटिका, २. त्रोटक, ३. गोष्ठी, ४. सटक, ५. नाट्यरासक, ६. प्रस्थानक, ७. उल्लाप्य, ८. काव्य, ९. रासक, १०. प्रेखण, ११. संलापक, १२. श्रृंगारित, १३. शिल्पक, १४. विलासिका, १५. दुर्मल्लिका, १६. प्रकरणिका, १७. हल्लीश, और १८. भाणिका ।

रूपक और उपरूप के ये भेद भी 'नाटक' के पर्याय हो सकते हैं ।

शोभा—दीप्ति । कान्ति । छवि । द्युति । द्युती । छवि ।
अभिल्या । शुभा । भा । श्री । भासा । सुषमा । छाया । विभा ।
भाति । कमा । रमा । आभा । रुचि । रोचिष । प्रभा । त्विष ।
छटा । सुन्दरता । चमक । दमक ।

श्रीहृत—कान्तिहीन । प्रभाहीन । अप्रभ ।

संकेत—प्रज्ञप्ति । परिभाषा । शैली । आकार । उदाहरण ।

[नोट—गुप्तस्थान को भी संकेत कहते हैं जिसका पर्याय
“सहेट, अँगोट, एकान्त, निर्जन” है ।]

अतिरिक्त—समधिक । अधिक । सिवाय । अलावा ।

समता—साम्य । समत्वभाव । एकता (ऐक्य, एकत्व) ।
समैक्य । बराबरी । जोड़तोड़ ।

विषमता—असाम्य । अनैक्य । अनेकता । बेमेल ।
बेजोड़ । वैषम्य । छिट-फुट ।

बलात्कार—हठात्कार । हठ । बलप्रयोग । प्रसभ ।

[नोट—आजकल ‘बलात्कार’ शब्द का प्रयोग किसी स्त्री
के सतीत्व को जबरदस्ती भ्रष्ट करने के अर्थ में किया जाता है ।]

उपहार—पुरस्कार । भेंट । उपायन । उपढौकन । प्राभृत ।
प्रदेशन । उपग्राह्य । उपदा ।

विरमय—आश्चर्य । अचरज । विचित्रता । संभ्रम ।

उल्लंघन—विरोध । अवमानना । अतिक्रमण । व्यत्ययन ।
व्यतिक्रमण ।

प्यार—मनुहार । दुलार । स्नेह । प्रीति । प्रेम ।

प्रतीक्षा—आसरा । (इन्तजारी) । राह देखना । अपेक्षा ।
बाट जोहना ।

प्रभाव—प्रताप । रोबदाब । तेज । असर । शक्ति ।

प्रस्ताव—निवेदन । प्रसङ्ग निवेदन । अवसर । प्रसङ्ग ।
स्तुति । कथन । प्रकरण । वृत्तान्त निवेदन । कथानुष्ठान ।

परिस्थिति—दशा । अवस्था । अवसर । (मौका) । समय ।
हालत ।

अन्वेषण—जाँच । खोज । अनुसन्धान । गवेषण ।
अन्वेषण । परीष्टि । पर्य्येषण ।

[नोट—खोज करने वाले व्यक्ति को 'अन्वेष्टा' कहते हैं
जिसका पर्याय है—'आनुपद्य' ।]

कुण्ठित—मन्द । हीन । संकुचित ।

व्यङ्ग्य—उलटा । टेढ़ा । ताना ।

धूस—उत्कोच । प्राशृत । ठौकन । लम्बा । कोशलिक ।
उपाच्चर । प्रदा । आनन्दा । हार । ग्राह्य । अयन । उपदानक ।
अपप्रदान ।

विपरीत—उत्क्रम । व्यतिक्रम । अक्रम ।

समर्थन—मण्डन । अनुमोदन । पोषण । संप्रधारण ।

फुटकर—पृथक्-पृथक् । भिन्न-भिन्न । छिट-फुट ।

तन्मय—लीन । तल्लीन । दत्तचित्त । लवलीन ।

लक्ष्य—निशाना । उद्देश्य ।

शैली—ढंग । ढब । चाल । परिपाटी । प्रणाली । तरीका ।

क्लिष्ट—दुस्तर । कठिन । संकुल । पराहत । झिषित ।

उजाला—प्रकाश । दीप्ति । द्योत । आतप । प्रभा । विभा ।
आलोक । तेज । भोज । त्विषा ।

अन्धेरा—अन्धकार । अप्रकाश । ध्वान्त । तमिस्र ।
तम । तिमिर ।

[व्यापक अन्धेरा = सन्तमस । महान्धकार = अन्धतमस ।
अल्पान्धकार = अवतमस ।]

बदला (अपकार के बदले अपकार)—प्रतिशोध ।
वैरशुद्धि । वैरनिर्यातन । चिकित्सा । कसर । खार चुकाना । वैर ।



५. रोगादि वर्ग

रोग—रुज । गद । उपताप । व्याधि । आमय । आम ।
अपाटव । आतङ्क । भय । उपघात । भङ्ग । अर्ति । तमोविकार ।
श्लय । अनार्जव । मृत्यु-भृत्य । मान्द्य । आकल्प ।

ज्वर—जूर्ति । आतङ्क । महागद । रोगपृष्ट । ताप ।
तापक । सन्ताप । जूड़ी । (बुखार) ।

दोष—पाप । अपराध । विकार ।

[नोट—वात-पित्त-कफ, ये ही प्रधान दोष माने गये हैं, जिनके विकृत हो जाने पर अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है । इन तीनों दोषों को 'त्रिदोष' कहते हैं ।]

दाह—जलन । तपन ।

शीत—ठण्ड । सरदी । जाड़ा ।

पीनस—नाकड़ा । प्रतिश्याय । (जुकाम) ।

[नोट—जुकाम के बिगड़ जाने से नाकड़ा हो जाता है । इसमें गाढ़ा जुकाम होकर दुर्गन्धि पैदा कर देता है । कुछ काल के अनन्तर घ्राण-शक्ति भी नष्ट होने लगती है ।]

क्षय—छई । यक्ष्मा । राजयक्ष्मा । दिक् । तपेदिक् । शोष ।
रोगराज । गदाग्रणी । उष्मा । अतिरोग । नृपामय ।

खाँसी—कास । क्ष्वथु ।

सूजन—शोथ । शोफ । श्वयथु । सूज ।

बेवाई—बेवाय । बिमाई । पादस्फोट । विपादिका । स्फुटी ।
स्फुटि । पादस्फोटो ।

सेहुआ—सिध्म । किलास ।

[नोट—सात प्रकार के महाकुष्ठ रोग के अन्तर्गत एक प्रकार का कुष्ठ रोग, जिसमें शरीर का ऊपरी चमड़ा निकल जाता है और चकत्ते पड़ जाते हैं ।]

शीतला—चेचक । माता । विस्फोट । मसूरिका ।
पापरोग । रक्तवटी । मसूरी । वसन्तरोग ।

दाद—दिनाय । पामा । दद्रू । विचर्चिका । पाम । खसरा ।

खाज—खुजली । कंड़ू । खजू ।

[नोट—दाद, खाज, खसरा, उकवत, अपरस, सेहुआ, अगियासन् आदि कुष्ठ के अन्तर्गत रोग हैं । इनके रोगी को सूर्य भगवान की उपासना पूजा आदि करनी चाहिये । रूक्ष और क्षारयुक्त (नमकीन) भोजन का त्याग तथा सादा, अलोना और स्निग्ध भोजन का ग्रहण श्रेयस्कर है ।]

फोड़ा (फुन्सी)—फोट । विस्फोट । फुड़िया । पिटक ।
पिटका । विटक । विटका । स्फोट । स्फोटक । ईर्म ।

घाव—व्रण । चीरा । ईर्म । अरुस ।

पीब—क्षतज । मलज । पूयन । प्रसित । पूय ।

कोढ़—कुष्ठ । फूल । कोठ । मण्डलक । व्याधि । वाप्य ।

पारिभव्य । पाकल । उत्पल ।

फलि-पाँव—श्लीपद । पादवल्मीक । हाथी पाँव ।

सोजाक—पूयमेह । मधुमेह ।

बवासीर—बयेसी । अर्श । दुर्नामक । दुर्नाम । गुदकील ।

गुदाङ्कुर । अनामक ।

पथरी—अश्मरी ।

मृगी—अपस्मार । अङ्गविकृति । लालाध । भूतविक्रिया ।

उपदंश (गर्मी)—अवदंश । गरमी । (आतशक) ।

फिरंग रोग ।

अतिसार—अन्नगन्धि । उदरामय । अतीसार । (पेचिश) ।

आँव—आम । मलवैषम्य रोग । आमातिसार ।

[नोट—शरीर में आम पक जाने पर जब सारे शरीर में शोथ हो जाता है, तब उसे 'आमवात' कहते हैं) ।

संग्रहणी—प्रवाहिका । ग्रहिणी । गुध्वाहि ।

वमन—कय । प्रच्छर्दिका । छर्दि । वमि । वमथु ।

ओकलाई ।

कञ्ज—मलावरोध । मलबद्ध । कोष्ठबद्ध ।

प्रमेह—मूत्रदोष । बहुमूत्र ।

मन्दाग्नि—अल्पाग्नि ।

अजीर्ण—अपच । अनपच ।

हैजा—विसूची । विसूचिका । विशूचिका । महाजीर्ण ।

कामला—पाण्डु । कँवल । काँवला ।

[नोट—इस रोग में यकृत (पिलही) बढ़ जाती है । अग्नि मंद हो जाने से रस का शुद्ध पाक नहीं होता । शरीर पीला पड़ जाता है । आँख के कोये भी पीले हो जाते हैं । जब थूक, मूत्र तक पीले रंग के हों, तब इस रोग का उग्र रूप जानना चाहिये ।]

श्वास—साँस । (दमा) ।

क्षीणता—दुर्बलता । कृशता । सुखंडी ।

तृष्णा—(देखो 'प्यास' शब्द—'मनुष्यवर्ग' पृष्ठ १६१)

मूर्छा—(देखो 'मूर्च्छा' शब्द,—भावादि वर्ग पृष्ठ १९७)

मूत्रकृच्छ्र—कड़क ।

आमवात—आँव बात ।

हिस्टीरिया (अं०)—अपतंत्रक । मूर्च्छा ।

आक्षेपक—शून्य वायु ।

उदावर्त्त—गुदग्रह । [मल—मूत्र—वायुरोधक रोग]

आँतवृद्धि—अन्त्रवृद्धि । पानी उतरना । आँत उतरना ।

फोता बढ़ना ।

गरुडमाला—गलगण्ड । कंठमाला ।

अर्बुद—मांसकील । मांस पुरुष ।

[छोटे अर्बुद को 'इला' वा 'गोखरू' कहते हैं]

शूकरोग—लिङ्गवृद्धि रोग ।

अम्लपित्त—मचली । जी मचली । (मतली) ।

विसर्प—विसर्पि । सचिवाभय ।

मुखपाक—पाका । मुँहपाका । निनावॉ । छाला ।

गंज रोग—इन्द्रलुप्तक । इन्द्रलुप्त । केशघ्न । केशनाशक रोग ।

शिर-पीड़ा—सिर दर्द । आधीसीसी । अधकपारी ।

[नोट—आधे सिर की पीड़ा दो प्रकार की होती है एक तो जो प्रातः आरम्भ होकर सायंकाल को समाप्त होती है उसे 'सूर्यावर्त्त' और दूसरी जो सायंकाल को प्रारंभ होकर रातभर रहती हुई प्रातः जाती है, उसे 'चन्द्रावर्त्त' कहते हैं ।]

प्रदर—खीरोग । विदार । क्षीणता । धातुक्षय ।

[यह रोग 'श्वेत प्रदर' और 'रक्त प्रदर' नाम से दो प्रकार का होता है ।]

गुल्म—वायुगोला । रजोग्रन्थि । गोला ।

योनि कन्द—योनिस्त्राव । योनिभङ्ग । योनिव्रण ।

स्तन पाक—थनैल ।

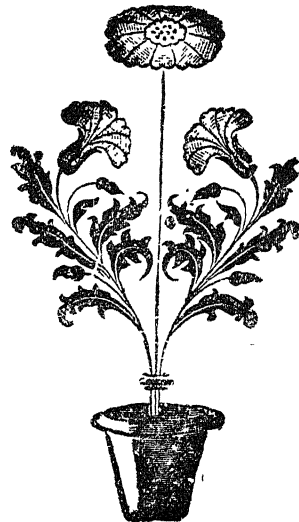
सूतिका रोग—प्रसूति ज्वर ।

पूतना—दुर्दर्शना । दुर्गन्धा । मेघकालिका । बालमातृका ।

[नोट—यह रोग छोटे बालकों को तीसरे दिन, तीसरे महीने वा तीसरे वर्ष होता है । इसमें प्रायः बच्चे नहीं बचते ।]

पक्षाघात—पक्षघात । शून्यवात (सुन्नवाई) । लकवा ।
(फालिज) ।

[नोट—इस रोग में शरीर का एक अंग दहिना वा बायाँ शून्य हो जाता है । शिरा, स्नायु के रक्त का शोषण होकर सन्धियों में चर्बी का नाश हो जाता है । सन्धियों की संचालन-क्रिया बन्द हो जाती है । धीरे धीरे वह अंग शिथिल और अचेतन होने लगता है । इस रोग के विशेष प्रकोप से मृत्यु तक सम्भव है । कहा जाता है, यह रोग भयंकर पापों का फल है ।]



६. भोजनादि वर्ग

उपकरण—सामग्री । सामान । उपकारक द्रव्य । परिच्छेद ।
तन्त्र । परिवर्ह ।

[नोट—किसी कार्य-विशेष के लिये उपयुक्त सामग्रियों को उपकरण कहते हैं । जैसे भोजन के लिये भोजन पदार्थ, भोजन पात्रादि; राजा के लिये छत्र-चामरादि; रोगी के लिये औषधि-अनुपानादि ।]

भोजन *—आहार । अशन । स्वदन । निगर । निघस ।
विघस । जेमन (जेवन) । भक्षण । खाना ।

* (क) रस-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है—१. मधुर (मीठा); २. लवण (नमकीन); ३. तिक्त (तीता); ४. कषाय (कसैला जैसे आँवला आदि); ५. कटु (कडुवा जैसे नीम, कड़वी लौकी आदि); ६. अम्ल (खट्टा) ।

(ख) पदार्थ-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है । यथा १. भक्ष्य (जो निगल कर खाया जाय, जैसे हलुवा, खीर, मलाई आदि); २. भोज्य (जो दाँतों से कुचल कर खाया जाय, जैसे दाल-रोटी, पूरी आदि); ३. चर्व्य (जो चबा कर खाया जाय, अर्थात् खाने की सूखी वस्तु जैसे चबैना, दालमोठ, माठ, मठरी आदि); ४. चोष्य (जो चूस कर खाया

दाल—पहित । पहिती । सूप ।

भात—भक्त । अन्न । ओदन । चाँवल । भिष्मा । भिस्सा ।

माँड—मासर । आचम । निश्राव । मण्ड ।

कढ़ी—तेमन । निष्ठान । कलायल (करायल) । कथित ।
परेह । परोह ।

रोटी—चपाती । बेली । फुलकी (फुलका) । पनेथी
(हाथ की बनी मोटी रोटी) । रोट (बड़ी रोटी) । करपट्टिका ।

लिट्टी वा बाटी—अंगार कर्कटी । टिकरी । टिकड़ ।

पूरी—पूड़ी । सोहारी । पूलिका । शष्कुली ।

कचौरी—माषगर्भा-शष्कुली । माषगर्भा ।

हलुआ—सीरा । मोहनभोग । लप्सिका । लपसी ।

मालपुआ—मल्लपूप । पूआ , पूप । पिष्टक । अपूप ।

पोलाव—पलान्न । पुलाक । पुलाव । मांसोदन ।

तरकारी—भाजी । शाक । सालन ।

खीर—क्षीर । पायस ।

मीठाभात—गुडान्न । बखीर ।

सिखरन—श्रीखण्ड । रसाला । मार्जिता । शिखरिणी ।

चबैना—चर्वण । चर्व्य । चबैनी । दाना (भुना हुआ) ।

जाय, जैसे आम, सँहिजन की फली, ईख आदि); ५. लेह्य (जो चाट कर खाया जाय, जैसे सिरका, चाशनी, शहद, चटनी, आदि); ६. पेय्य (जो पिया जाय, जैसे दूध, शर्बत आदि) ।

लावा—लाजा । खील । धान-खील । अक्षत ।

चिउड़ा—चिपिटक । पृथुक । चिउरा । चीड़ा । चिपिट ।

चटनी—लेह्य । लेहन पदार्थ । खांडव (नौरतन-चटनी) ।

रसाला । मार्जिता । चक्षुण ।

राघता—रायतो । राजिकाक्त । मार्जिता ।

अचार—सन्धान । संधितद्रव्य । सन्धित ।

मुरवा—राग खांडव । पाग ।

पन्ना—पानक । पना ।

फुलौरी (पकौड़ी)—बटिका । चाणकी ।

[नोट—पत्तों की पकौड़ी = रिकवँच, रिकूछ, रक्छ, पतौड़ ।]

बरी—बटी । माषेंडरी । बटिका ।

मुंगौरी—मुद्रबटी । मुद्रबटिका । माषरंगी ।

धुंधुरी—कुल्माष । छोला ।

बड़ा—बटका । बरा । बारा । पिष्टक । पिष्टबटका । पूष ।

इमली के पन्ना का बड़ा—पानक-बटका ।

दही-बड़ा—तक्र-बटका ।

[नोट—इसी प्रकार सूरन के बड़े को 'सूरण-बटक', कुम्हड़े के बड़े को 'कूष्माण्ड-बटका' कहते हैं ।]

पापड़—पर्पट । चरक ।

भरता—भरित्र । चोखा ।

चिखना—[मद्यपानादि के बाद रोचक भक्ष्य पदार्थ]—

मद्यपाशन । चक्षुण । चखना । चाट । चटपटा ।

पराठा—ग्राम्ठे । पोलिका । परोठा । परावठा । चौपती ।
बेढई—बेढमिका ।

[नोट—उड़द या चने की पीठी भर कर जो रोटी तैयार की जाती है, उसे बेढई कहते हैं ।]

पूरन-पूड़ी (मीठी पूड़ी)—पूर्णपूलिका । पूरनपोली ।
पूर्णगर्भापूलिका ।

सेवई—सैमई । सेविका ।

अनरसा—इन्दुरसा । अँदरसा । शालि-पूप ।

गुभिया—संयाव । गूम्हा । पेड़किया ।

खाजा—खजला । खाझा ।

चूरमा—चूरमोदक ।

जलेबी—कुंडलिनी । गुडूची । जिलेबी ।

लड्डू—मोदक । बिन्दुमोदक ।

मोतीचूर के लड्डू—मुक्तामोदक ।

मूँग के लड्डू—मुद्गदल । मगदल । मगद । मुद्ग-मोदक ।

फेनी—फेनिका । सूतफेनी ।

घेवर—घृतपूर । घृतवर । घातिक ।

गुलाबजामुन—दुग्धकूपिका ।

शक्करपाला—खुरमा । सकरपाला । शंखपाल ।

खिचड़ी—कृशरान्न । कृशरा ।

सचू—सक्तू । सतुआ (सतुवा) ।

हावुस—ओलंबी ।

[नोट—गेहूँ, जौ, चने, आदि की अधपकी फलियाँ भून कर फिर उसकी भूसी साफ करके तैयार करते हैं उसे 'हाबुस' कहते हैं ।]

बघार—छौंकन । वासित । छौंक ।

कौर—कवल । घास ।

बटुआ—पिठर । बटलोही । स्थाली ।

कुण्ड । हण्डीष ।

तवा—पिष्टपचन । ऋजीष । ऋचीष । तव । पृष्टिपच ।

कड़ाही—कदाही । टोकनी ।

कलछी—करछुलि । दर्वी । कम्बी । खजाका । चमचा ।
कलछुल । करछुल । कर्छी ।

काठ की कलछी—तर्दू । दारुहस्तक ।

कटोरा, कटोरी—खोरा । पानपात्र ।

कंस (कंश) । कांस्य । खोरवा ।

करवा (लोटा)—गडुआ । कर्करी । आलु । आल ।

आरु । गलन्तिका । लोटा ।

गिलास—जलपात्र । लुटिया । (आबखोरा) । खोरिया ।

घड़ा (गगरी)—घट । कुम्भ । कुट । निप । घटी ।
कलश । कलशी । कलसा ।

घड़े का ढक्कन—शराव । सरवा । कसोरा । परई ।
मलैया ।

मटका—(कुंडा)—कमोरा । मटकी । मणिक । अलिंजर ।
अलंजर ।

धाली—भोजनपात्र । टाठी । थाल । थारी ।

चकला—चौका । होरसा ।

पथरी—पथरौटा ।

सिल—सिलौटी ।

बट्टा—लोढ़ा । लोढ़िया । बटिया ।

भरना—पौना । झन्ना ।

कठवत—कठौती । कठौता ।

वरतन—पात्र । भाण्ड । अमत्र । भाजन । वासन ।
आवपन ।

तेल की कुप्पी—कुतू । कुतुप । स्नेहपात्र ।

चौकी—चतुष्की । तरुता । तरुत ।

पीढ़ा—पिढ़ई । आसन । पीठ । पाटा ।

सूप—शूर्प । प्रस्फोटन । फटकन । बेरमा ।

चलनी—चालनी । तितरु । अँगिया ।

ओखली—उलूखल । उदूखल । ऊखल । ओखरी ।

मूसल—मुषल । मूसर ।

चूल्हा—चुल्ली । उष्मान । उद्धार । अश्मन्त । अन्तिका ।
अधिश्रयणी । अन्दिका ।

चक्की—जाँत । चकिया । चकरी । जाँता ।

दौरा-दौरी—पिटक । पेटक । पिट । काण्डोल । कुरई ।
डेलवा ।

झाँपी—कट । किलिञ्जक । करंडा । पेटारा । पेटारी ।
ओना । मोनियोँ ।

अँगोठी—अंगारधानिका । हसन्ती । हसनी । अंगारधानी ।
अंगारशकटी ।

लुआठ (जलती हुई लकड़ी)—लुकाष्ट (लुकाठ) ।
अलात । उल्मुक ।

खपड़ी (चबैना भूनने का पात्र)—अम्बरीष ।
आष्ट । खपरा । कड़ाह ।

भट्टी (भाड़)—कन्दू । स्वेदनी (शराब चुआने की
भट्टी) । भाड़ ।

उपला (कंडा)—गोहरा । गोहरी । कंडा । उपरी ।
चिपरी । करीष ।

राख—क्षार । छार । (खाक) ।

जूठा भोजन—उच्छिष्टान्न । उच्छिष्ट । फेला । फेली ।
जूठन ।



७. वस्त्राभरण वर्ग

उबटन—उद्वर्तन । चिक्कस (चीकस) । उच्छादन ।
उत्सादन । वुकवा ।

तैलमर्दन—अभ्यङ्ग । स्नेहन ।

स्नान—आप्लाव । आप्लव । नहाना (हनाना) ।

चन्दनादिलेपन—चर्चा । चार्चिक्य । विलेपन ।

महावर—लाक्षा । आलक्तक (आलता) । जतु । याव ।
जावक । जतुरस । राग । जननी । सम्पद्या । अलक्तक ।
चक्रवर्तिनी ।

पुष्पमाला—माला । मालिका । स्रक् ।

[नोट—चोटी में लपेटी माला = आपीड़ । शेखर ।]

वस्त्र—कपड़ा । आच्छादन । वास । चैल । चेल । वसन ।
अंशुक । पट । परिधान । अंबर । दुकूल । चीर । निचोल ।
कर्पट ।

रेशमी-वस्त्र—पाटपट । पाटम्बर । कौशेय दुकूल ।
कुमिकोशोत्थ । कोसा ।

ऊनी-वस्त्र—रोम-पट । राङ्गव ।

नया-वस्त्र—नवाम्बर । कोरा कपड़ा । मड़िहारा कपड़ा ।

नूतन पट । तन्त्रक । निष्प्रवाणि ।

छालटी—बल्कल-वस्त्र । क्षौमी । शाण (सन के बने हुये कपड़े) । दुकूल ।

धोया-वस्त्र—स्वच्छ वस्त्र । धौत वस्त्र । उद्गमनीय ।

पुराना-वस्त्र—जीर्ण वस्त्र । पटच्चर ।

मोटा-कपड़ा—स्थूल शाटक । गज्जी । मोटऊ ।

फटा-कपड़ा—चिथड़ा । कर्पट । नक्तक । गूदड़ ।

पगड़ी—पाग । पगिया । मुरैठा । सेला । साफा । समला ।

दुपट्टा (चादर)—दुकूल । चादर । प्रावर । प्रावार ।
उत्तरासंग । बृहतिका । संख्यान । उत्तरीय । उपवस्त्र । वृहती ।

जामा—अंगरखा । कुरता ।

धोती—अर्धशुक । परिधान । अन्तरीय । उपसंव्यान ।

[जनानी धोती = साड़ी ।]

फतुही—बनियान । गंजी । बंडी । सदरी । कुरती ।

चोली—अंगिया । चोलिया । छोटा कपड़ा । खण्ड ।

चोल । कूर्पासक ।

कमरबन्द—कटि-फेट । फेटा । पटुका । इजारबन्द ।

लहंगा—आप्रपदीना । आप्रपदीन । चण्डातक । पटवास ।

रजाई—नीशार । ओढ़ना । (लिहाफ ।)

[नोट—ऊनी कम्बल को 'रङ्गक' कहते हैं ।

तोशक—बिछौना । गद्दा । तूलिका । तुराई ।

तकिया—उपधान । गलसुआ । गलसुई । उपवर्ह ।

[नोट—बड़ी तकिया = मसनद । छोटी तकिया = गेण्डुक, कन्दुक ।]

चँदवा—वितान । उझोच । (शामियाना) । चन्द्रातप ।

परदा—यवनिका (जवनिका) । कनात । प्रतिसीरा । तिरस्करणी । पटल । पट ।

ओहार—परदा । अच्छदपट । निचोल । निचुल । पटल ।

कुरसी (मचिया)—आसन्दी ।

पलँग—सेज । शयनीय । पर्यक । शैया । मंच । खट्टा । खटिया । चारपाई । तल्प । पलँगरी ।

छड़ी—यष्टी । लगुड़ । लकुटी । बेंत । दण्ड । दण्डिका । लाठी । सोंटा । डंडा । लकुट । गोजी ।

जूता (खड़ाऊँ)—उपानह । पादत्राण । पादुका । पादू । पादुक । पादपीठ । पनही ।

छाता—छत्र । छत्ररी । आतपत्र । छायामित्र । पटोटज । आतप वारण ।

कंधी—कंकती । कंकतिका । असाधन । केश-प्रक्षालिका । कँगही ।

दर्पण—मुकुर । आइना (ऐना) । आदर्श । शीशा ।

पंखा—व्यजन (विजन) । बेना । पंखी ।

पिकदान—प्रतिग्राह । पतग्रह । पीकदानी । आचमनक ।
श्रोण्ट । कटकोल । पद्ग्रह । निष्ठीवनपात्र । ओगालदान ।

दीपक—दीप । प्रदीप । आलोक । प्रकाश । (रोशनी) ।

डब्बा—सम्पुटक । समुद्रक । सम्पुटी ।

आभूषण—अलङ्कार । भूषण । आभरण । परिष्कार ।
विभूषण । मण्डन । भूषा । अलंकरण । कलाप ।

[नोट—अलंकारयुक्त व्यक्ति = अलंकृत । भूषित । मण्डित ।
प्रसाधित । परिष्कृत ।] ।

शृङ्गार*—भूषा । अलंक्रिया । साज । ठाठ । सिंगार ।

मुकुट—किरीट । मकुट । (ताज) ।

शिरफूल—चूड़ामणि । शिरोरत्न ।

बंदी वा टीका—ललाटिका । सिरबंदी । बंदी । टीका ।

पत्रपाश्या ।

कर्णफूल—तरकी । तरौना । तालपत्र । कर्णिका । ऐरन ।
(अं० इयर-रिंग) ।

कुण्डल—कर्णवेष्टन ।

कंठा—कंठी । ग्रैवेयक । कण्ठभूषा ।

[नोट—लम्बी कंठी को ललन्तिका वा प्रालम्बिका कहते हैं ।]

* शृंगार १६ हैं—१. शौच, २. उबटन, ३. स्नान, ४. केशबन्धन,
५. अङ्गराग, ६. अञ्जन, ७. जावक (महावर), ८. दन्तरजन, ९. ताम्बूल,
१०. वसन, ११. भूषण, १२. सुगन्ध, १३. पुष्पहार, १४. कुंकुम,
१५. माल-तिलक, १६. चिबुक-विन्दु ।

मोती का हार—मुक्ताहार । उरसूत्रिका । हार मुक्तावली ।
 नत्थ—नक्वेसर । बेसर । नथिया । नथुनी (छोटी नथ) ।
 नाक की कील—फूल । लौंग । कील ।
 विजायठ—बाजूबन्द । केयूर । अंगद । भुजबन्द ।
 पहुँची—बलय । कटका । पारिहार्य । आपावक । प्रकोष्ठाभरण ।
 कड़ा वा कंकण—कंकण । करभूषण । कंगन (कँगना) ।
 अँगूठी—अंगुलि-मुद्रा । अंगुलीयक । उर्मिका । मुद्रा ।
 मुँदरी । गोल । छल्ला ।
 करधनी—मेखला । कांची । सप्तकी । रसना । शृंखला ।
 किङ्किणी । क्षुद्रघंटिका ।
 घुँघुर्—किङ्किणी । क्षुद्रघण्टिका ।
 पायजेब—पादकण्टक । हंसक । मंजीर । मंजील ।
 नूपुर—बिछिया । गुँगिया । छल्ला । गूँगी । पादांगुद ।
 हंसक । पादकटक । मञ्जीर । तुलाकोटि ।



८. ब्रह्मचारी वर्ग

पुस्तक—पोथी । किताब । ग्रन्थ । पुस्तिका ।

पत्रा—पत्रा । पत्र । (वक्र) । कागज । कागद ।

कलम—लेखनी ।

स्याही—काली । मसि । रोशनाई । मेला । अञ्जन ।
पत्राञ्जन । रञ्जनी । मलिनाम्बु । मशी ।

दावात—मसिपात्र । मसिदानी । मसिधानी । मसिमणि ।
मस्याधार । मेलान्धु । वर्णकूपिका । मेलानन्दा । मसिधान ।
मसिकूपिका । बोरकना ।

पट्टिया—तखती । पट्टी । पाटी । पट्ट ।

काला तखता—श्याम-पट्ट । श्याम-पट । असित-पट्ट ।

नकशा—मान चित्र । देश चित्र । राष्ट्र चित्र ।

अध्ययन—पठन । पढ़ना । अभ्यसन । स्वाध्याय ।

अध्यापन—पाठन । पढ़ाना । निपाठ । शिक्षण ।

मनन करना—गुनना । बोध करना (होना) ।
अवधारण करना । अभ्यास करना । हृदयङ्गम करना ।
चिन्तन करना ।

हवन—(देखो स्वर्गादिवर्ग 'यज्ञ' शब्द पृष्ठ १९)

शाकल्य—शाकला । हवि । सान्नाय ।

आचमन—उपस्पर्श । आचम । शुचिप्रणी ।

प्रणाम—नमस्कार । अभिवादन । पादग्रहण । चरण स्पर्शन ।
पायलागन । दण्डवत् ।

भूमिपर सोनेवाले—भूमिशायी । स्थण्डिल ।

ब्रह्मचारी का दण्ड—(पलास का दण्ड) = आषाढ ।
(बाँस का दण्ड) = राम्भ । वैणय । वेणुदण्ड ।

ब्रह्मचारी का पात्र—कमण्डलु । कमण्डल । कुण्डी ।
पञ्चपात्र ।

मृगचर्म—अजिन । चर्म । कृत्ति ।

नित्य-कर्म—यम ।

[नोट—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, और ब्रह्मचर्य—इनको
यम कहते हैं ।]

संस्कार-भ्रष्ट—त्रात्य । संस्कारहीन ।

जनेऊ—उपवीत । यज्ञोपवीत । यज्ञसूत्र । ब्रह्मसूत्र ।

कौपीन (लंगोटी)—कछनी । कच्छा । धटी । कक्षा ।
लँगोट । लँगोटी । काछा । भगई । भगवा । (फा० कफनी) ।

आसन—(देखो भोजनादि वर्ग 'पीढ़ा' शब्द पृष्ठ २२२) ।

मुण्डन कर्म—क्षौर । भद्राकरण । वपन ।

होम का ईंधन—समिधा ।

पवित्री—पैती । कुशमुद्रिका । कुसपैती ।

[नोट—कुश के दलों की बनी हुई मुद्रिका जो श्राद्ध तर्पणादि में अनामिका में धारण की जाती है ।]

विवाह *—परिणय । उद्वाह । उपयाम । पाणिपीडन । पाणिग्रहण । दारकर्म । उपयम । करग्रह । निवेश । व्याह । शादी । मँगनी । सगाई । कुड़माई । परिभवन ।

वर (बर)—दुलहा (दूल्हा) । (नौशा) । बर ।

[नोट—सम्बन्धी वर्ग पृष्ठ १७५ 'पति' शब्द के पर्याय वाले सभी शब्द इसके पर्याय हो सकते हैं ।]

बरात (बारात)—वरयात्रा । जनेत ।

बराती—वरयात्री । जनेती ।



* मनु के अनुसार विवाह आठ प्रकार के माने गये हैं । यथा—
 १. ब्राह्म । २. दैव । ३. आर्ष । ४. प्राजापत्य । ५. आसुर । ६. गान्धर्व ।
 ७. राक्षस । ८. पैशाच । —मनुस्मृति अ० ३-२१.

प्रत्येक विवाह का विस्तृत रूप मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक २३ से ३४ तक में वर्णित है ।

९. राज वर्ग

राजधानी—कोट । राजधानिका । रियासत । स्कन्धावार ।
राज्य *—मण्डल । जनपद । देश । प्रदेश । राष्ट्र ।
विषय । उपवर्त्तन । (मुल्क) । (बादशाहत) ।
राज्य-व्यवस्था—राजनियम । नीति । (कानून) ।
राज्याभिषेक—राजगद्दी । राज्यारोहण ।
दुन्दुभी—नौबत । नगाड़ा । भेरी । आनक । ढक्कन ।
पटह । पटहा । डंका । दमामा ।
छत्र—ककुद । राजलक्ष्म । आतपत्र ।
चँवर—चामर । प्रकीर्णक । चौरी । चामरा । चामरी ।
रोमगुच्छक । बालव्यजन ।
पूर्णकलश—वटपूर्ण । भद्रकुम्भ । पूर्णकुम्भ ।

* राज्य के आठ अंग माने गये हैं, जिन्हें राज्याङ्ग वा प्रकृति कहते हैं ।
यथा—१. राजा, २. अमात्य (मंत्री) । ३. सुहृत् । ४. कोष (खज़ाना) ।
५. राष्ट्र (प्रजा) । ६. दुर्ग (किला) । ७. बल (शक्ति, सेनादि) ।
८. पौरश्रेणी (पुरवासियों का समूह) ।

खेमा (पड़ाव)—शिविर । डेरा । निवेश । पटवास ।
सेना-निवास ।

पहरा (गश्त)—सज्जन । उपरक्षण । चौकी । फेरी ।
गारद ।

क़ैद—कारावास-दण्ड । कारागृह-दण्ड । दण्ड । सज़ा ।
बन्धन । जेल की सज़ा । बन्ध ।

कोड़ा—चाबुक । बेंत । दुर्गा । साँटा । कवर ।

देश निकाला की सज़ा—निर्वासन । कालापानी ।
डामन (डामल) ।

फाँसी की सज़ा—प्राणदण्ड । मृत्युदण्ड ।

महसूल—शुल्क । लगान । (टैक्स) ।

राजगद्दी—नृपासन । भद्रासन । सिंहासन ।

हाथी—गज । हस्ती । करी । वारण । भातङ्ग । गजेन्द्र
(गयन्द) । कुंजर । सिंधुर । इभ । शुंडाल । कुंभी । नाग ।
पुष्करी । पद्मी । व्याल । दंती । द्विरद (दुरद) । द्वीप ।
वितुण्ड । (हाथी का बच्चा = कलभ) ।

हाथिनी—बसा । वरेणुका । करिणी । धेनुका । वासिता ।

मदवाले हाथी—मदोत्कट । मदकल । मत्त । प्रभिन्न ।

हाथी की सूड़—शुंड । तुण्ड । कर । शुंडादण्ड ।

हाथी का सिक्कड़—शृंखल । निगड़ । सांकल । अलान ।
अन्दुक ।

हाथी का मद—मद । दान ।

हाथी का अंकुश—आँकुस । शृणी । अंकुश ।

हाथी की बोली—चिष्वाड़ । गर्जन ।

घोड़ा—घोटक । अश्व । घोट । पीती । वीति । तुरंग
(तुरग) । बाजी । वाह । हय । सैन्धव । गन्धर्व । अर्वा । हरी ।
धाराट । जवन । जवी । श्रीभ्राता । अमृतसोदर । वातायन ।
शालिहोत्री । मरुद्रथ । चामरी । एकशफ । आशु । सुपर्णा ।
विमानक । अरुष ।

घोड़ी—वामी । अश्वा । बड़वा । घोटकी ।

घोड़े की गर्दन के बाल—अयाल । आल ।

घोड़े की खुर—खुर । क्षुर । शफा सुम ।

घोड़े की बोली—हिनहिनाना ।

घोड़े की लगाम—बाग । बागडोर । लगाम ।

घोड़े की चाबुक—कषा । सुट्कुनी । कोड़ा । चमोटी ।
चाबुक ।

रथ (लड़ाई के लिये)—स्यन्दन । शताङ्ग ।

हवाई-जहाज—पुष्प रथ । पुष्पक विमान । विमान ।
व्योमयान ।

जनाना-रथ—कर्णरथ । प्रवहण । ह्यन । डयन ।

गाड़ी—शकट । गान्त्री । गन्त्रीक ।

पालकी—शिविका । याम्ययान ।

डोली—दोला । प्रेंखा । हिंडोल ।

बरुतर—कवच । तनत्राण । वर्मा । दंशन । कंकटक ।
जगर । कटक । योग । सनाह (सनाह) । कंचुक । उरच्छद ।

टोप—शिरस्त्रान । कुंडी । शीर्षण्य । शीर्षक ।

गेंद—कन्दुक । गेण्डुक । गेंदा ।

धनुर्धर—धन्वी । निषंगी । धनुष्मान् । धानुष्क ।
धनुर्भृत् । तीरन्दाज ।

बर्द्धीबाज—शाक्तिक ।

लट्टबाज—याष्टिक । लट्टैत । लाठीबाज ।

धनुष—चाप । शरासन । कोदण्ड । कार्मुक । गुणी ।
तारक । धनु ।

धनुष की डोर—गुण (गुन) । मुर्वी । शिंजिनी ।
प्रत्यञ्चा । मौर्वी । चिल्ला ।

बाण—विशिख । शर । नाराच । खग । आशुग ।
कलम्ब । पत्री । इषु । शायक । अजिह्वग । मार्गण । असुप ।
काण्ड । प्रषत्क । शिलीमुख । पुंख । क्षुर । इक्षुप्र । सायक ।

तरकश—तूण । तूणीर । निषङ्ग । इषुधि । तूणी ।

तलवार—खड्ग । चन्द्रहास । करपाल । कृपाण । असि ।
रिष्टि । करवाल । मण्डलाग्र । कौचेयक । सायक । शायक ।

ढाल—चर्म । फलक । फल । फर ।

गुसी—ईली । करपालिका । खाँड़ा ।

छुरी—छुरिका । असिपुत्री । असिधेनुका । कत्ती ।

युद्ध—लड़ाई । आयोधन । विदारण । आस्कंदन । समर
अनीक । रण । विग्रह । कलह । संप्रहार । अभिसम्पात । संयुग ।

अभ्यामर्द । समाघात । आहव । आनाह । विदार । दारण ।
आनर्त्त । मार काट । मार । दंगा । जूझ ।

तोप—तुपक । गोला । शतप्री ।

बन्दूक—गोली । अग्न्यास्त्र ।

भाला—शेल । शल्य । शङ्कु । दीर्घायुध । शल । कुन्त ।
विषाङ्कुर ।

वध—घात । हिंसा । प्रमापण । निवर्हण । निकारण ।
निशारण । प्रवासन । परासन । निसूदन । निर्हिसन । निर्वासन ।
निर्ग्रन्थन । अपासन । निहनन । क्षणन । मारण । हनन ।
प्रतिघातन । उद्वासन । प्रमथन । क्रथन । आलम्ब । पिञ्ज ।
विशर । विदारण । पात । परिघ । परिघातन । कदन । निवारण ।
समाघात । उत्पात । मार । संघात । निधन ।

चिता—चित्या । काष्ठ मठी । चैत्य । चिताचूडक ।
चित्य । चिति ।



१०. व्यवसाय वर्ग

जीविका—आजीव । वृत्ति । वर्त्तन । जीवन । वार्त्ता ।
जीव । जीवनोपाय । जीवन-मार्ग । रोज़ी । व्यापार । रोज़गार ।
काम । व्यवसाय । धंधा । पेशा । पर्युद्भवन ।

ऋण—उद्धार (उधार) । कर्ज़ा ।

सूद—व्याज । कुसीद । कुषीद । अर्थवृद्धि । अर्थप्रयोग ।
वृद्धिजीविका । वृद्ध्याजीवन ।

सूद-खोर—कुसीदक । वृद्ध्याजीवी ।

खेती—कृषि । कृषिकर्म । अनृतकर्म । किसानी ।

खलियान—खल-स्थान । खलाधान । खरिहान ।

कुदार—कुदाल । खनित्र । अवदारण ।

हँसुआ—दात्र । लवित्र । दातरी । हँसिया ।

हर—हल । हाल । लांगल । सीर । गोदारण ।

हरिस—ईषा । लांगल । दण्ड ।

हर का-फाल—निरीष । कूटक । फाल । कृषिक । कृषिका ।

बैल—वृषभ । बलीवर्द । उक्षा । भद्र । वृष । बरधा ।

साँड—षण्ड । गोपति । विट्चर ।

कोठार—कुठला । कोठिला । भंडार । कोठा । बखार ।
रस्सी—दाम । दामा । रज्जु (लेजुर) । पशुरज्जु । दामनी ।
रसरी ।

मथानी—रई । छोदी । वैशाख । मन्थ । मन्थान ।
मन्थदण्डक ।

मूलधन—नीवी । परिपण । पूँजी ।

नफा—मुनाफा । लाभ । फल ।

लेन-देन—विनिमय । निमय । विमय । परिवर्त ।
प्रतिदान । अदल बदल । एराफेरी ।

धरोहर—उपनिधि । गिरों । गिरवी । न्यास । थाती ।

विक्री की वस्तु—विक्रेय । पणितव्य । पण्य । क्रय्य ।

बेंचना—विक्रय । विपण ।

तौल वा मान—परिमाण । मान । यौतव । यौवत ।
पाय्य । मान ।

तराजू—तुला । तौली । काँटा ।

तराजू का पलड़ा—पल्ला । तुलापट । डाल । डल्ला ।
डलिया ।

डाँड़ी—डॉड़ । बेंट । डंडा । काँटा ।

बाट—बटखरा । बटक ।

नकद—नगद । तत्काल-धन ।

उधार—(देखो “ऋण” शब्द पृष्ठ २३७)

सस्ता—स्वस्थ । किफायत ।

महँगा—महर्घ । कीमती । महँग । मंदा ।

दुकान—पण्यशाला । पण्य ।

धन—सम्पत्ति । वित्त । द्रव्य । ऋक्थक (रिक्थ) ।
अर्थ । विभव । भोग्य । लक्ष्मी । वसु । हिरण्य । काञ्चन ।
भोग । वृद्धि ।

जुआ—घूत । कैतव । पण । अक्षवती ।

वेतन—मजूरी । दक्षिणा । विधा । कर्मण्या । भरण्य ।
भरण । मूल्य । पुरस्कार । भर्म । पण । आजीव । जीवन ।
वृत्ति । (तनखाह) । मेहनताना । कमाई ।

सलाई—शलाका । सिक्चा । सीक । सीका । तीली ।

दिया-सलाई—दीपशलाका ।

भाथी—भस्त्रा । चर्मप्रसेविका । धौकनी ।

कूँची (ब्रश)—तूलिका । इशिका । ईषिका ।

घरिया (धातु गलाने का घटिका)—मूषा । कुल्हिया ।
घरिया । घड़िया ।

कसौटी—कष । निकष । क्षाण । कस् ।

रेती—पत्रपरशु । ब्रश्चन ।

बरमा (छेदनेवाला)—बेधनी । बेधनिका । आविध ।
आस्फोटनी ।

कतरनी—कृपाणी । कर्तरी । कैँची ।

टाँकी—पाषाणदारण । टङ्क ।

आरा—क्रकच । करपत्र ।

खूँटी—भारयष्टी । मेख । काँटा । टँगनी ।

बहँगी—विहङ्गिका । विहङ्गिमा ।

सिकहर—छीका । शीका । शीक्य । काच ।

जाल—बागुर । बन्धनी । मृगबन्धनी ।

फन्दा—कूटयन्त्र । उन्माथ ।

गुड़िया—पुत्रिका । पुत्तलिका । पाञ्चालिका । पुतली ।

गुडुआ । गुडुई ।

बाँक (टँगारी)—टँगारा । वृक्षभेदी । वृक्षादन । गैटा ।

कुल्हाड़ी ।

चौपड़—शारि फल । अष्टापद ।

[नोट—शतरंज की गोटियों के भी ये ही नाम हैं ।]

पासा—पाशन । अक्ष । देवन ।

अस्तूरा—क्षुरा । क्षुरिका । उस्तरा । छूरा ।

जामिन—प्रतिभू । लग्नक ।

खन्ती—स्तम्बघ्नी । स्तम्बहननी ।

सूई—शूचि ।

तागा—धागा । सूत । डोरा । डोर ।

सिकड़ी—साँकल । जंजीर ।

ताला—तलक । कुल्फ ।

ताली—कुंजी । चाबी ।

कुंडी—कुंडा । कोंदा । कड़ी ।



११. स्वर-तालादि वर्ग

स्वर *—सुर । आवाज । बोल । ध्वनि । शब्द ।

ताल †—ठेका । करतलध्वनि ।

* संगीत शास्त्रानुसार स्वर के सात भेद हैं, यथा—१. षड्ज । २. ऋषभ । ३. गान्धार । ४. मध्यम । ५. पञ्चम । ६. धैवत । ७. सप्तम । इन्हीं सातों स्वरों को 'सरगम' कहते हैं ।

† तालके मुख्य प्रकार अष्ट, रुद्र, ब्रह्म, ईन्द्र और चतुर्दश ये पाँच हैं ।

(१) अष्टताल के भेद—१. आड़ । २. दोज । ३. ज्योति ।

४. चन्द्रशेखर । ५. गज्जन । ६. पञ्चताल । ७. रूपक । ८. समताल ।

(२) रुद्रताल के भेद—१. वीर विक्रम । २. विषम समुद्र ।

३. धरण । ४. वीर दशक । ५. मण्डूक । ६. कन्दर्प । ७. डाँशपाहिड़ ।

८. ध्रुव चरण । ९. दशकोषी । १०. गजेन्द्रगुर । ११. छटका ।

(३) ब्रह्मताल के भेद—१. ब्रह्म । २. विराम ब्रह्म । ३. षटकला ।

४. सप्तमात्रा ।

(४) इन्द्रताल के भेद—१. देवसार । २. देव चाली । ३. मदनदोला ।

४. गुरु गन्धर्व । ५. पञ्चाली । ६. इन्द्रभाष ।

(५) चतुर्दश ताल के भेद—१. चिन्हताल । २. चन्द्रमात्रा ।

३. देवमात्रा । ४. अर्द्ध ज्योतिका । ५. स्वर्गसार । ६. क्षमाष्ट ।

मधुर-स्वर—कल । काकली । मंद स्वर । सूक्ष्म स्वर ।
 धीर-स्वर—गम्भीर स्वर । मन्द्र । मद्र ।
 उच्च-स्वर—तार स्वर । तीव्र स्वर ।
 चढ़ाव—आरोहण । आरोहन । प्ररोहण ।
 उतार—अवरोहण । अवरोहन । अवतरण । अधोगमन ।
 बाजा *—वाद्य । वादित्र । आतोद्य ।
 वीणा—वीन । वल्लकी । विपञ्जी । परिवादिनी ।
 मृदङ्ग—मुरज । पखावज ।
 ढोल—पणव । पटह । ढक्का । ढोलक ।
 डमरू—डिंडिम ।

७. धराधरा । ८. वसन्त वाक् । ९. काक कला । १०. वीर शब्दा ।
 ११. ताण्डवी । १२. हर्ष धारिका । १३. भाषा । १४. अर्द्धमात्रा ।

—“सङ्गीत दामोदर” ६

* बाजों के दो भेद हैं—१. जो स्वर निकालते हैं और २. जो ताल देते हैं । पुनः बाजों के चार भेद माने गये हैं—१. तत, २. आनद्ध ३. सुषिर, और ४. घन ।

(१) तत—वीणा, सितार, आदि तार वाले बाजे । (२) आनद्ध—
 मृदङ्ग, ढोल, तबला आदि ताल देने वाले बाजे । (३) सुषिर वा श्वाषिर—
 बंशी, तुरही, शंख आदि मुँह से बजाने वाले बाजे । (४) घन—घंट्या,
 मजीरा, झाँझ, भेरी आदि घातु के बने हुये घनघनाने वाले बाजे ।

तबला—ठेका । डुगो । दुक्कड़ ।

सारंगी—चिकारा । सरंगो ।

वंशी—बंसी । बाँसुली । मुरली । वेणु । मुरलिका ।

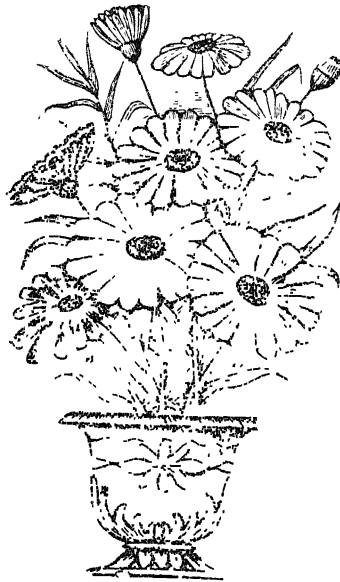
तुरही—शृङ्गो । सिंघा । मुरचंग (मुँहचंग) । विषाण ।

मजीरा—मञ्जीर । जोड़ी ।

शाहनाई—पिपिहरी । नफीरी । रौशन चौकी ।

झाँझ—झाल । झहरी ।

डफला—डफ । चंग ।



चतुर्थ खण्ड

१. पशु वर्ग

पशु *—जानवर । चतुष्पद । चौपाया । मृग ।

सिंह—हरि । केसरी । केशरी । हर्यक्ष । मृगेन्द्र ।
मृगराज । पञ्चास्य । पारीन्द्र । श्वेत पिङ्गल । कण्ठीरव ।
पंचशिख । शैलाट । भीमविक्रम । सटांक । केशी । महावीर ।
इभारि । मृगारि । क्रव्याद । नखी । मानी । विक्रान्त । बहुबल ।
दीप्तपिङ्गल । नखरायुध । पुण्डरीक । पञ्चानन । शेर । बबर ।

बाघ—व्याघ्र । द्वीपी । शार्दूल । पृदाकु । वनश्व ।
चित्रक । पुण्डरीक । हिंस्रक । श्वापद । पंचनख । व्याल ।
गुहाशय । तीक्ष्णदंष्ट्र । भीरु । नखायुध ।

व्याघ्र-नख—व्याडायुध । करज । नख । नखी ।
बघनखा । नखाङ्क ।

* चार पैरों से चलने वाले, सींग-पूछ वाले जीव को पशु कहते हैं ।
इनमें सभी पशुओं को सींग नहीं होती, परन्तु पूँछ सभी के होती है ।

नोट—'हाथी' और 'घोड़ा' के पर्याय इस वर्ग में नहीं दिये गये हैं ।
इनके लिये पृष्ठ २३३, २३४ देखिये ।

चिता—तरक्ष । मृगादन । तरक्षु । तर्क्षु । तरक्षुक ।
चित्रक । चित्रकाय । उपव्याघ्र । मृगान्तक । शूर । चित्र व्याघ्र ।
क्षुद्र शार्दूल ।

सूअर—शूकर । वराह । घृष्टी । कोल । किरी । किति ।
दंष्ट्री । घोणी । स्तब्धरोमा । क्रोड़ । भूदार । पोत्री । दन्तायुध ।
पृथुस्कन्ध । पोत्रायुध । वहूपत्य । वन्यस्य । रोमश ।

भेड़िया—वृक । ईहामृग । कोक । वात्सादन । विरुक ।
झाग भोजी । जनाशन । हुँडार । बीघ । बग्घा । लकड़बग्घा ।

गैँडा *—गण्डक । खड़ी । खड़ । गण्डा ।

भालू—रीछ । ऋक्ष । भल्ल । भल्लूक । अच्छ भल्ल ।
अच्छ ।

भैंसा—महिष । लुलाय । लुलाप । कासर । सैरिभ ।
वाहद्विष । यमवाहन । विषज्वर । वंशभीरु । रजस्वल । आनूप ।
रक्ताक्ष । अश्वारि । कलुष । मत्त । विषाणी । गवली । बली ।

ऊँट—क्रमेलक । महाङ्ग । मय । दीर्घगति । बलो । करभ ।

* गैँडा—भैंसे के आकार का एक बड़ा पशु होता है, जो जंगलों में नदी के किनारे के दलदलों में पड़ा रहता है । जंगली झाड़ियों की जड़ों और कोपलों को खाता है । इसके पैरों में तीन तिन अँगुलियाँ होती हैं । इसका चमड़ा बिना बाल का अत्यन्त मोटा और कड़ा होता है, जिससे ढाल बनाई जाती है । इसकी नाक पर पैनी सींग होती है, जिससे यह चोट करता है । गंगासागर के पास सुन्दर वन में गैँडे बहुत मिलते हैं ।

—“हिन्दी शब्द सागर” ।

धूसर । लम्बोष्ठ । रवण । महाजंघ । जवी । जांधिक । दीर्घ ।
 शृंखलक । महाप्रीव । महानाद । महाध्वग । महापृष्ठ । वलिष्ठ ।
 दीर्घ जंघ । ग्रीवी । धूम्रक । शरभ । कण्टकाशन । बहुकर ।
 भीली । अध्वग । मरुद्विप । वक्रप्रीव । वासन्त । कुलनाश ।
 मरुप्रिय । दुर्ग लंघन । भूतघ्न । दासेर । दीर्घ ग्रीव । उष्ट्र ।
 केलि कीर्ण ।

गदहा—रासभ । गर्दभ । खर । वैशाख-नन्दन । चक्रीवान् ।
 शीतलावाहन । वालेय । राशभ । शङ्ककर्ण । भूरिगम् । धूसराह्वय ।
 वेशव । धूसर । चिरमेही । चारपुंख । चारट । ग्राम्याश्व ।

[नोट—गदहे और घोड़ी के संयोग से 'खच्चर' जाति को
 उत्पत्ति होती है । यह बहुत दीर्घायु और परिश्रमी होता है ।]

सियार (गीदड़)—शृगाल । शिवा । गीदड़ । फेरु ।
 मृगधूर्त्क । वश्वक । जम्बुक । जम्बूक । भूरिमाय । गोमायु । फेरव ।
 मूत्रमत्त । कुरव । श्वधूर्त्क । वनश्वा । घोर वासन । शालावृक ।
 गोमी । कटस्वादक । शिवालु । फेरण्ड । व्याघ्रनायक । निष्ठुर ।
 खल । भीरु ।

हरिण *—मृग । कुरङ्ग । अजिनयोनि । सारङ्ग ।
 भीरुहृदय । वातायु । ऋश्य । कुरङ्गम । चारुलोचन । सुरभी ।

* मृग के भेद—१. कृष्णसार । २. रुरु । ३. न्यंकु । ४. रंकु ।
 ५. शंवर । ६. रौहिष । ७. गोकर्ण । ८. पृषत । ९. ऐण । १०. ऋश्य ।
 ११. रोहित । १२. चमर ।

तथा हरिण के भेद—१. गन्धर्व । २. शरभ । ३. राम । ४. सुमर ।

मृग-चर्म—अजिन । ऐण ।

बन्दर—वानर । शाखामृग । मर्कट । कपि । पुवङ्ग । प्रवग । कीश । वलीमुख । वनौका । मर्क । पुव । प्रवङ्ग । प्रवग । पुवङ्गम । गोलाङ्गूल । कपित्थास्य । हरि । नगाटन । भम्पी । केलिप्रिय । शालावृक । किखि ।

गाय—माहेयी । सुरभी । गोरू । शृंगिर्णा । अधन्या । अर्जुनी । रोहिणी । गौ । उस्त्रा । धेनु ।

गाय का बद्धवा वा बद्धिया—वत्स । सकृत्करी । बद्धवा (बद्धिया) ।

गायों का समूह—गोधन । गोकुल ।

भेंड़ा—मेष । वृष्णि । एडक । मेढ् । उरभ्र । उरण । ऊर्णायु । भेंड । हुड़ । शृंगिण । अवि । लोमश । बली । रोमश । भेंडक । मेंटक ।

बकरा—अज । छाग । छगलक । वस्त । स्तुभ । छगल । तभ । स्तभ । शुभ । बर्कर । क्रयसद् । पर्णभोजी । लम्बकर्ण । मेनाद् । अल्पायु । पयस्वल । छगड़ी । अबुक । मेध्य । पशु ।

साही—श्रावित् । शल्य ।

५. गवय । ६. शश । 'बारहसिंगा' नामक हरिण भी हरिण की एक जाति विशेष है, इसकी सींग के बीच से शाखा रूप में कई सींगें निकलती हैं ।

सुमर = साँभर, चीतल । गवय = नीलगाय । शश = खरहा । ये सब मृग के ही भेद हैं ।

साही के रोम (काँटे)—श्राविध । शलल । शल ।
शलली ।

बिलार—बिड़ाल । बिल्ली । बिलैया । मार्जार । मार्जारी
(स्त्री०) । वृषदंशक । आखुभुक् । विराल । विलाल । दीप्ताक्ष ।
जाहक । विडारक । त्रिशङ्कु । जिह्वाप । मेनाद । सूचक । मायावी ।
शालावृक । दीपलोचन ।

कुत्ता *—कुकुर । श्वान । श्वा । शुनक । शुनि । भाषक ।
कौलेयक । सारमेय । मृगदंशक । भषण । भल्लूक । वक्रलाङ्गूल ।
वृकारि । रात्रिजागर । कालेपक । ग्राम्यमृग । मृगारि । शूर ।
शयालु ।

[नोट—कुतिया = सरमा, शुनी, कुक्कुरी, भषी आदि ।]

खरहा—खरगोश । शश । शशक । शसा । -

चूहा—मूषक । उन्द्ररु । मूषीक । बभ्रु । पिंग । आखनिक ।
वृष । वृश । नखी । खनक । बिलकारी । धान्यारि । आखु ।
बहुप्रज । मूसा ।

[नोट—छोटी चूहियों को बालमूषिका, गिरिका, चुहिया, मुष्टी-
वा मुसटी कहते हैं ।]

* कुत्ते के ६ गुण—बह्वाशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः ।

प्रभुभक्तश्च शूरश्च षडेते च शुनो गुणाः ॥

—‘चाणक्यनीति’ ।

बहु भोजी, स्वरूप सन्तोषी, खूब सोनेवाला, शीघ्र चैतन्य होजाने वाला,
प्रभु भक्त और शूर ये छः गुण कुत्ते में होते हैं ।

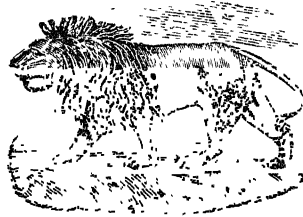
छद्मन्दर—दीर्घतुण्डिका । गंधमुखी । गंधमूषिका ।

नेवला—नकुल । पिङ्गल । सर्पहा । बभ्रु । सूचीवदन ।

सर्पारि । लोहितानन ।

गिलहरी—गिलाई । चेखुर । गिल्ली । गिरि ।

[नोट—यह रोयेंदार पूँछवाला जानवर चूहे की एक विशेष जाति है, जो वृक्षों पर विशेषतः रहती है ।]



२. सरीसृप वर्ग

शेषनाग—अहिराज । सहस्रानन । फणीश । धरणीधर ।
अहीश । नागराज । पन्नगेश । शेष । अनन्त । सर्पपति ।
महाअहि । सहसमुख । महिधर ।

सर्पराज—वासुकी । वासुकेय ।

सर्प—भुजग । भुजंग । नाग । फणी । द्विरसन । व्याल ।
अहि । उरग । पन्नग । साँप । दर्पी । चक्षुश्रा । भोगी । पवनाशन ।
हरि । सारंग । आशीविष । गूढपद । विषधर । करदर्प ।
लेलिहान । जिह्वण । मणिधर । फणधर । चक्री । काल । बिलेशय ।
कुण्डली । दीर्घपृष्ठ । काकोदर । दन्तशूक । दर्वीकर । तक्षक ।
गोकर्ण । कुम्भीनस । कञ्चुकी । पृथाकु ।

गोनस-सर्प—गोनस । तिलित्स ।

अजगर-सर्प—शयु । वाहस ।

डेड़हा-सर्प—जलव्याल । अलगर्द । आनगर्द । अलिगर्द ।

दोमुँहा-साँप—राजिल । डुण्ड ।

करैत-साँप—मालुधान । मातुलाहि । करइत ।

साँप का शरीर—भोग ।

साँप का फन—फण । फटा । फणा । फट । स्फट ।
दर्वी । फटी । स्फुट ।

साँप का केंचुल—कञ्चुक । निर्मोक । केंचुली ।

साँप का दाँत—अहिदंष्ट्र । आशी ।

साँप का विष—क्ष्वेड । गरल । विष । गर ।
(जहर) ।

विष—गरल । कालकूट । माहुर । जहर । हलाहल ।
मार । संगर । गर । वत्सनाभ । सौराष्ट्रकी । काकोल । प्रदीपन ।
ब्रह्मसू । शौलिककेय ।

साँप पकड़नेवाला—सँपेरा । मदारी । व्यालप्राह ।
गारुड़ी । अहितुंडिक ।

बिच्छू—बीछी । अलि । द्रोण । वृश्चन । अरुण । आली ।

कान खजूरा—कर्णसूचिका । शतपदी । गोजर ।
कर्णजलौका ।

बिल—कुहर । सुषिर । विल । छिन्न । सुषि । निर्व्यथन ।
रोक । श्वभ्र । दर । विवर । छेद । बया । सूरस्र ।

गोह—निहाका । गोधिका ।

केचुआ—गण्डूपद । किञ्चुलुक । शिली । गण्डूपदी ।
शूककीट ।

गिरगिट—सरट । कृकलास । गिरगिटान ।

छिपकिली—गृहगोलिका । गृहगोधी । गृहगोधिका ।
मुषली । गृहालिका । विषतुड्या । पल्ली ।

३. पक्षी वर्ग

पक्षी—खग । विहङ्ग । विहग । विहङ्गम । विहाया । शकुनि । शकुन्ति । शकुन्त । शकुन । द्विज । पत्री । पतत्री । पतग । पत्ररथ । अण्डज । नगौका । वाजी । विकिर । नीढोद्भव । गरुत्मान् । नभसङ्गम । नभचर । नाडीचरण । पतङ्ग । चंचुभृत् । छुरण्ड । सरण्ड । युग । चिड़िया । चिरई । चिरैया । पंछी ।

मोर—मयूर । वर्ही । वर्हिण । नीलकण्ठ । भुजङ्गभुक् । शिखाबल । शिखी । चन्द्रकी । सितापाङ्ग । ध्वजी । मेघानन्दी । केकी । कलापी । शिखण्डी । चित्रपिच्छिक । मेघनादानुशासक । भुजगभोगी ।

मोर-शिखा—बर्हिचूड़ा । शिखिनी । शिखालु । शिखा । सुशिखा । शिखाबला । केकीशिखा ।

मोर-चन्द्रिका—मेचक । चन्द्रक । चन्द्रिका ।

पपीहा—चातक । स्तोकक । सारङ्ग । मेघजीवन । हरि । लोकक । पपीहरा । पपैया ।

हंस—राजहंस । कलकण्ठ । सितच्छद् । सितपक्ष । सरःकाक । पुरुदंशक । धवलपक्ष । मानसालय । श्वेतगरुत् । मानसौक ।

बगुला—बलाका । विसर्कठिका ।

बत्तख—कादम्ब । कलहंस । पूव । कारण्डव ।

सारस—लक्ष्मण । लक्षण । सरसीक । पुष्कराह । गोनर्द ।
नाङ्कुर । सरसीक । सरोत्सव । रसिक । कामी ।

[नोट—मादा सारस = सारसी, लक्ष्मणा ।]

कुररी—कुरर । उत्क्रोश । कुरल । खरशब्द । क्रौञ्च ।
पंक्तिचर । टिट्टिभ । टिट्टिह । टिट्टिहरी । टिट्टी ।

चकवा—कोक । चक्र । रथाङ्ग । भूरिप्रेमा । द्वन्द्वचारि ।
सहाय । कान्त । कामी । कामुक । रात्रिविश्लेषगामी ।

गरुड—गरुत्मान् । ताक्षर्य । वैनतेय । खगेश्वर । विष्णुरथ ।
नागान्तक । सुपर्ण । पन्नगाशन । महावीर । पक्षिसिंह । शाल्मली ।
हरिवाहन । अमृताहरण । खगेन्द्र । भुजगान्तक । तरस्वी । ताक्षर्यनायक ।

खञ्जन—खिड़रिच । खञ्जरीट । कणाटोन । काकच्छर्दि ।
खञ्जखेल । तातन । मुनिपुत्रक । भद्रनामा । रत्ननिधि । खञ्जखेट ।
गूढ़नीड । तण्डक । चर । काकच्छद् । नीलकण्ठ । कणाटीर ।
कणाटारक ।

कोयल—कोकिल । परभृत । पिक । वनप्रिय । परपुष्ट ।
काल । वसन्तदूत । ताम्राक्ष । गन्धर्व । मधुगायन । वासन्त ।
कलकण्ठ । कामन्ध । काकलीरव । कुहूरव । मत्त । मदनपाठक ।

आड़ी—शराली । आटी । आठी । शराडी । शराटी ।
शराती ।

गिद्ध—गृद्ध । दूरदर्शन । दाक्षाय्य । वज्रतुण्ड ।

चील—चिह्न । आतायी । आतापी । पिह्न ।

कौआ—काक । काग । करट । अरिष्ट । बलिपुष्ट । ध्मांक्ष ।
आत्मघोष । बलिभुक् । वायस । दीर्घायु । कृष्ण । पिशुन । ग्रामीण ।
कटखादक । सूचक । काण । धूलिजंघ । कौशिकारि । मुखर ।
खर । महालोल । चिरंजीवी । चलाचल । करटक । नागवीरक ।
सकृत्प्रज । गाढमैथुन । श्रावक । रतज्वर ।

डोमकौआ—द्रोण काक । काकाल । द्रोण । कालकंटक ।

चमगादर—जतुका । जतूका । चमगुदरो । परोष्णी ।
तैलपायिका । अजिन पत्रा । चर्मचटिका । चमगीदर ।

हारिल—हरीत । हारिल सुग्गा ।

सुग्गा वा तोता—शुक । कीर । वक्रतुण्ड । मेधावी ।
रक्ततुण्ड । दाडिमप्रिय । वक्रचञ्चु । चिमि । चिमिक । शूक ।
प्रियदर्शन । मञ्जुपाठक ।

मैना—सारिका । सारी । पीतपादा । गोराटी । शारिका ।
गोकिराटिका । चित्रलोचना । मधुरालापा । पूती । मेधाविनी ।
गोराण्टिका । गोकिराटी । गोरिका । कलह प्रिया । धड़वा ।

तीतिर—तिचिरी । तैतिर । तीतुर । तीतल । कुक्कुभ ।
याजुषोदर ।

बटेर—वर्तका । वर्त्तिका । वर्त्तिक ।

नीलकंठ—चाष । चास । किकीदिवी । किकीदिव ।

भुजंगा—कलिंग । भुंग । धूम्याट । नौवा ।

कठफोरा—शतपत्रक । दावाघाट ।

उत्तलू—घुग्घू । उल्लूक । कौशिक । तामस । घूक । कुशि ।
दिवान्ध । नक्तञ्चर । निशार । काकारि । घोरदर्शन । लक्ष्मी-वाहन ।

बाज—श्येन । शशादन । पत्री । कपोतारि । पतद्भीरु ।
घाति पक्षी । ग्राहक । पक्षी । शशाद । क्रव्याद । क्रूर । बेगी ।
खगान्तक । करग । नीलपिच्छ । लम्ब कर्ण । रणप्रिय । रणपत्री ।
पिच्छवाण । स्थूल नील । भयंकर । शशघातक । कुही ।

लवा—भरदूल । भरद्वाज । भरुई । व्याघ्राट । लव ।
भरद्वाजक । कोरक ।

कबूतर—कपोत । पारावत । गृहकपोत । कलरव । छेद्य ।
पारापत । गृहकुक्कुट । रक्तलोचन ।

रुआ *—कर्करेट्टु । करेट्टू । ररुई । कौड़िला ।

टिटिहरी—टिट्टिभी । कोयष्टो । टिटिही ।

मुर्गा—ताम्रचूड़ । अरुणशिखा । कुक्कुट । चरणायुध ।
कुकवाकु । कालज्ञ । नियोद्धा । विष्किर । नखरायुध । रात्रिवेद ।
उषाकर । वृताक्ष । काहल । दक्ष । यामनादो । शिखण्डिक ।
कुक्कुड़ ।

गौरैया—चटक । कलविंग । चित्रपृष्ठ । गृहनीड़ ।

* कहते हैं कि रुआ पक्षी जिस किसी का नाम सुन पाता है, वह उसी नाम की रट लगाने लगता है । जिससे उस मनुष्य की मृत्यु हो जाती है । यह निचाट रात में बोलता है । इसकी बोली कर्कश होती है और अशुभ मानी जाती है ।

वृषायण । कामुक । नीलकण्ठक । कालकण्ठक । काम चारी ।
कला विकल ।

चकोर—चन्द्रिकापायी । कौमुदीजीवन । चकोरक ।
कोरक ।

काका कौआ—काकातूआ । तूआ ।

चोंच—चञ्चु । ठोर । टोंट । त्रोटि । चंचू । चंचुका ।
सृपाटिका । तुंड ।

अंडा—पेशी । कोष । पेशीकोष । डिम्ब ।

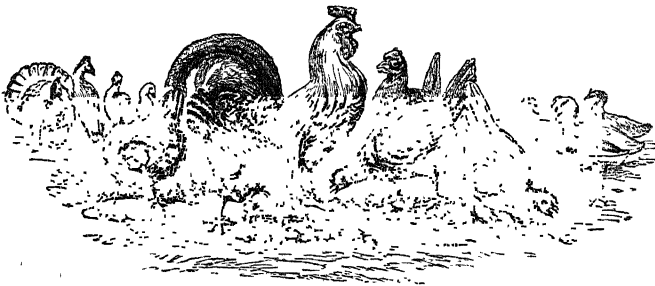
घोंसला—नोड़ । कुलाय । खोता ।

पंख—पखना । पर । डैना । पक्ष । पत्र । छद् । पतत्र ।

गरुत् ।

चिड़ियों के बच्चे—पोत । पोतक । शावक । अर्भक ।

पाक । डिम्भ । पृथुक । शिशु । पोआ । गेदा ।



४. कीट-पतङ्गादि वर्ग

मक्खी—मक्षिका । माखी । माछी । मच्छी । भम्भ ।
माचिका । पतंगिका । पुत्तिका । अमृतोत्पन्ना । वमनीया । नीला ।
पलङ्कषा । वर्वणा ।

मच्छर—मच्छड़ । डाँस । दंश । सूक्ष्ममक्षिक ।
वज्रतुण्ड । सूच्यास्य । मसा । (मासा) । वनमक्षिका ।

भौरा—भ्रमर । अलि । मधुकर । मधुव्रत । मधुलिट् ।
मधुप । द्विरेफ । पुष्पलिट् । भृंग । षट्पद । अली । कालालाप ।
शिलीमुख । मधुकृत् । द्विप । भसर । चञ्चरीक । सुकाण्डी ।
मधुलोलुप । इन्दिन्दिर । मधुपर । लम्ब । पुष्पकीट । भृंगराज ।
मधुमारक । मधुसूदन । मधुलेही । रेणुवास ।

मधुमक्खी—मधुमक्षिका । सरघा । शहद की माखी ।
मछोह । भौर ।

[नोट—शहद की मक्खी चार प्रकार की होती है—
पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा, मक्षिका ।]

बरै—भिड़ । ततैया । वरट । वरटा । गन्ध मक्खी ।
गन्धोली । भिरै ।

[नोट—लाल बरें को 'हड्डा' वा 'हाड़ा' कहते हैं । इनके डंक मारने पर डँसा हुआ स्थान प्रायः पक जाता है और जब तक उसके अन्दर से टूटे हुये डंक के आर नहीं निकल जाते तब तक घाव अच्छा नहीं होता ।]

भृंगुर—फिह्री । फिल्लरी । भृंगारी । भीरुका । चीरी । झीरिका । फिल्लिका । चिल्लिका । चीलिका ।

फर्तिंगा—दीपपतङ्ग । शलभ । पतङ्ग । फनगा ।

टिड्डा-टिड्डी—शलभ । पत्रांग । पत्राङ्क । पतंग । फनगा ।

[नोट—चपड़ा, फनगा आदि अनेक प्रकार के फर्तिंगों के भी ये ही पर्याय होंगे ।]

जुगुनु—खद्योत । ज्योतिरिङ्गण । प्रभाकीट । उपसूर्य्यक । तमोमणि । दृष्टिवन्धु । तमोज्योति । ज्योतिरिग । निमेषक । खज्योति । सोनकिरवा । पटवोजना ।

मकड़ी—लूता । तन्तुवाय कीट । मर्कटक । ऊर्णनाभ । मर्कट । लूतिका । शनक । मकरी ।

खटमल—खटकीरा । खटमल । उद्दंश । उडुँस । मत्कुण । कोणकुण । उत्कुण । किटिभि । रक्तपायी । मश्वकाश्रय ।

चीलर—चिल्लड़ । चैलकीट । चैलारि ।

जूँ—जूँआ । ढील । लीख (लीक) । लिष्का । लिक्का । लिष्किका । यूका । केशकीट । पाली । बालकृमि । स्वेदज । षट्पद ।

घुन—घुण । काष्ठभेदक । काष्ठकृमि । काष्ठवेधक ।

चींटी—च्यूटी । पिपीलिका । पिपील । पीलक । पिपीली ।

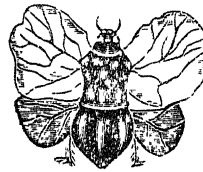
चींटा—च्यूंटा । चिमटा ।

लाल चींटा—बेमटा । माटा ।

[नोट—यह लालरंग का चींटा होता है जो कि आम, इमली, अमरूद, आदि मीठे फलवाले वृक्षों पर अधिक रहता है । यह बहुत तेज काटता है ।]

वीरबहूटी—वीरवधूटी । इन्द्रवधूटी । मखमली कीड़ा ।
वैराट । इन्द्रगोप । अग्निरज । तितिभ । अग्निक । वर्षाभू । रक्तवर्ण ।

[नोट—यह छोटी मकड़ी के आकार का लाल मखमल जैसे मुलायम चमड़ेवाला कीड़ा बरसात के आरम्भ में खेतों और बगीचों में बहुधा पाया जाता है । यह एक प्रकार का उष्मज कीड़ा है, जो वनस्पतियों और भूमि की उष्मा से उत्पन्न होता है ।]



५. क्रियादि वर्ग

अकुलाना—व्याकुल होना । घबड़ाना । अधीर होना ।
आकुल होना । उकताना । ऊबना । अफरना । खिझाना ।

अगोरना—रखाना । रखवाली करना । सुरक्षित रखना ।
यत्न से रखना । चौकी देना ।

अघाना—वृष होना । पेट भरना । सन्तुष्ट हो जाना ।
छकना । पूर्ण हो जाना । अफरा उठना । अफराना । हिया भरना ।
जी भर जाना ।

अँगेजना—वरदाश्त करना । सहना । ओज लेना । ओजना ।

अचवना—मुँह धोना । कुल्ली करना । आचमन करना ।
अचवन करना ।

अटना—समाना । भरजाना । भरना । पथ्याप्त होना ।

अटकना—रुकना । ठहरना । टिकना । अड़ना । फँसना ।
बभ्रना । उलभ्रना । अरुभ्रना ।

अटकाना—रोकना । ठहराना । टिकाना । अड़ाना । छेकना ।
वारण करना । रुकावट डालना । फँसाना । उलभ्राना । बभ्राना ।

अठिलाना—इतराना । ऐँठना । चोंचलाना (चोंचला

करना) । नखरा करना । ठसक दिखाना । मन्दान्ध होना ।
 ऐंठ दिखाना । इठलाना । मटकाना । चमकाना ।

अपनाना—अङ्गीकार करना । स्वीकार करना । अँगेजना ।
 आश्रय देना ।

अराधना—सेवना । पूजना । जपना । सुमिरना
 (स्मरण करना) ।

अलमाना—सुस्ती करना । ऊँघना । तन्द्रित होना ।
 मंद होना । ठंडे पड़ना । सुस्ताना । झपकना । प्रमत्त होना ।

अवगाहना—थहाना । मथना । घंघोरना । निमज्जना ।
 खँगारना । हिलोरना ।

अवमानना—अनादर करना । अपमान करना ।
 निरादर करना । तिरस्कार करना । अवहेलना करना ।

अवराधना—[देखो 'अराधना' शब्द]

अलापना—गाना । राग काढ़ना । राग अलापना ।

आँकना—अन्दाजना । अनुमान करना । निरखना ।
 समझना ।

आना—आगमन होना । उपविष्ट होना । उपस्थित होना ।
 हाजिर होना ।

उटकना—(बात) ओटना । बारबार कहना । नंगई करना ।
 बात खोलना । (सं० उत्कथन) ।

उकताना—चिढ़ना । चिढ़ाना । ऊबना । उबाना ।
 खीभना । खिझाना । घबड़ाना ।

उकसना—चढ़ना । उठना । उभड़ना । उमड़ना । तनना ।
ऊपर आना । उचकना । उझकना । उछलना । कूदना ।

उकेलना—उधेड़ना । खोलना । उकिलना । उसिलना ।
उलटना । उतिनना ।

उखड़ना—निकलना । उकसना । उभड़ना । उमड़ना ।

उगना—उरोहना । उत्पन्न होना । निकलना । अँकुराना ।
उभड़ना । बढ़ना । अँखुआना ।

उगलना—निकालना । थूकना । कै करना । उलटना ।
उलटी करना । वमन करना । बाहर करना । ओकाना । प्रकट
करना । आगे रखना । ओकलाना । छाँट करना ।

उगाहना—वसूल करना । उतारना । तहसीलना ।
इकट्टा करना । एकत्र करना ।

उधारना—खोलना । नंगा करना । परदा खोलना ।
व्यक्त करना । प्रकट करना । उद्घाटित करना । जाहिर करना ।

उचटना—उखड़ना । टूटना । बिछलना । बिचलना ।
बिखरना । खिन्न होना । उच्चाट होना । विचलित होना ।

उचाड़ना—नोंचना । खसोटना । नकोटना । निकोटना ।
उधेड़ना । निकालना । अलगियाना ।

उछलना—कुदकना । कूदना । उछाल मारना ।

उजड़ना—उखड़ना । विनाश होना । विलटना । नष्ट होना ।

उभिलना—उँडेलना । उलटना । ढालना । उलिचना ।
उदहना । उछिलना । निकालना ।

उतरना—धँसना । नीचे आना । अवतरित होना । घटना । आजाना ।

उतराना—ऊपर आना । तैरना । पैरना । थिराना । पौड़ना ।

उतारना—नीचे लाना ।

[नोट—दूसरे अर्थ में देखो “उकेलना” पृष्ठ २६५]

उथलना—उलटना । औँधाना । नीचे ऊपर करना ।

उद्धारना—मुक्त करना । छुटकारा देना । स्वतन्त्र करना । बचाना । तारना । पार लगाना ।

उपटना—दाग पड़ना । निशान पड़ना । उभर आना । उपट आना ।

उफनना—उबलना । खौलना । गरमा जाना । गरम होना । उथलना । जोश में आना ।

उधालना—गरमाना । पकाना । औँटाना । खौलाना । जोश लाना । औँटना ।

ऊँघना—भ्रमकी लेना । तन्द्रित होना । अलसाना । सुस्त पड़ना । पलक मारना । झेंपना ।

ऐँठना—उभेठना । मरोरना । मरोड़ना । मुर्ती देना । अकड़ना ।

ओढ़ना—पहनना । धारण करना । लपेटना ।

ककोरना—खुरचना । छीलना । खोदना । उखाड़ना । खुरेदना । कुरेदना । करोना । खींचना ।

कचरना—रूंधना । गूँथना । रौँदना । कूँचना । माड़ना ।
सानना । मसलना । कूटना । मलना । दबाना ।

कतरना—काटना । छाँटना । काट-छाँट करना ।

करकना—खटकना । गड़ना । चुभना । पीड़ा देना ।
दुखना । कसकना ।

कहना—कथना । वर्णन करना । निवेदन करना । बोलना ।
कथन करना । वयान करना । उच्चारण करना । भाषण करना ।
बतराना । बताना । बतलाना । उचारना । संलाप करना ।

काटना—कतरना । मारना । तोड़ना । अलग करना ।
टुकड़े करना ।

काँचना—चुभाना । धँसाना । गड़ाना । गोदना । गुफाना ।
बीँधना । भोंकना । गुभाना । खोंसना । घुसेड़ना ।

कोसना—अपवाद करना । बुराभला/कहना । सरापना ।
गाली देना । बदकारना । निन्दा करना । शाप देना । जी दुखाना ।
जलाना । कुढ़ाना । दुःखी करना ।

खाना *—भोजन करना । जेंवना । भोग लगाना ।
भोजन पाना । प्रसाद पाना ।

खिसकना—टसकना । टलना । हटना । आगे बढ़ना ।
धिसकना । चम्पत होना । भाग जाना । रफूचकर होना ।

* छः प्रकार के भोजन पदार्थों के अनुसार क्रमशः खाने के लिये
पर्याय शब्द—भक्ष्य, भोज्य = खाना, भोजन करना । चर्व्य = चबाना ।
चोष्य = चूसना । लेह्य = चाटना । पेय = पीना ।

खेलना—क्रीड़ा करना । मौज करना । आनन्द करना ।
खेल करना । मन लुभाना । बहलना । खेल-कूद करना ।

गढ़ना—निर्माण करना । बनाना । रचना । ठोंकना ।
सुधारना । सँवारना ।

गन्धाना—बसाना । महकना । सड़ना । बदबू करना ।
दुर्गन्ध करना ।

गर्जना—गाजना । चिग्याड़ना । गुर्राना । घड़घड़ाना ।
गर्जन करना ।

गलना—पिघलना । द्रवीभूत होना । द्रवित होना । घुलना ।
आर्द्र करना । नरमाना ।

गिरना—पतित होना । पात होना । लुढ़कना । पड़ना ।
नीचे आ जाना । पतन होना ।

गूथना—सीना । टाँकना । पोहना । गुत्थी करना । लगाना ।
परोहना ।

गूँधना—[देखो पृष्ठ २६७ 'कचरना' शब्द]

घिनाना—घृणा करना । नफरत करना । मुँह फेरना ।
निन्दा करना । जुगुप्सा करना ।

घिरना—आवृत होना । छेका जाना । घेर जाना । बझना ।
बँध जाना । फँस जाना । फँसना ।

घिसना—रगड़ना । रगड़ जाना । संघर्षण होना । मलना ।
खियाना ।

घुसना—पैठना । प्रविष्ट होना । चुभना । भीतर जाना ।
धँसना । गड़ना ।

घोंटना—चिकनाना । साफ करना । चमकाना ।

[नोट—'रगड़ना' के अर्थ में भी 'घोंटना' शब्द का प्रयोग होता है ।]

चपाना—दाबना । थोपना । लजाना । दबाव डालना ।
विवश करना ।

चभोरना—डुबकी देना । डुबाना । बुड़ाना । बोरना ।
भिगोना । तर करना । सराबोर करना ।

चमकना—दमकना । प्रकाश होना । चमचमाना । बलना ।
झलकना । लौकना । लहकना ।

चलना—गमन करना । आगे बढ़ना । पधारना । पदार्पण
करना । विचलित होना । चलायमान होना । बढ़ना । प्रस्थान
करना । स्थगित होना । कढ़ना । निकलना । जाना ।

चसना—मरना । नष्ट होना । मसकना । फटना । गड़ना ।
बिगड़ना । टूट-फूट जाना । कसकना ।

चहकना—खुश होना । चहचहाना । शोभित होना ।
प्रसन्न होना । किलकिलाना । खिल उठना ।

चहलना—कचरना । माड़ना । काँड़ना । कुचलना ।
कूचना । गींजना ।

चालना—छानना । पछोरना । झारना । फटकना ।

चिढ़ना—कुढ़ना । खीझना । चिड़चिड़ाना । झलाना ।
अप्रसन्न होना ।

चिताना—बतलाना । बताना । जताना । जतलाना ।
सूचित करना । सावधान करना । चौकस करना । याद दिलाना ।
चेत धराना । चैतन्य करना ।

चिल्लाना—चीत्कार करना । शोर करना । हल्ला मचाना ।

चिलकना—चमकना । टीसना । टीस मारना । दर्द
होना । टपकना ।

चुभना—धँसना । गड़ना । घुसना । गुदना । कोंचाना ।
पैठना । छिड़ना । बिंधना ।

चुराना—हरना । अपहरण करना । चोरी करना । ठगना ।
लूटना । मूसना । तस्करी । बटमारी करना । गिरहकट्टी करना ।
छलना । डाका मारना वा पड़ना । डकैती करना । झटकना ।

चूकना—भूलना । गलती करना । भ्रम करना ।

छजना—शोभना (सोहना) । शोभा देना । सजना ।
जँचना ।

छिड़कना—सींचना । तर करना । छींटना । भिगोना ।
आर्द्र करना । छिड़काव करना ।

छिपना—लुकना । हटना । गुम होना । दबक रहना ।
गुप्त रहना वा होना । लुका जाना । अप्रकट होना । आड़ करना ।
अप्रकाशित होना । ओट में होना ।

छूना—स्पर्श करना । हाथ लगाना । परसना ।

छेदना—वेधना । पार करना । छिद्र करना । गोदना । गड़ाना । चुभाना । धँसाना । बिल करना ।

जनना—जनाना । उत्पन्न करना । प्रसव करना । जन्म देना ।

जमाना—(१)—बोना । वपन करना । उत्पन्न करना ।
(२)—गाढ़ा करना । तह लगाना । थोक करना ।

जागना—उठना । चैतन्य होना । सजग होना । जगना । सावधान होना ।

जगाना—उद्बोधित करना । चैतन्य करना । उठाना । सजग होना । सावधान करना ।

जलना—भस्म होना । खाक होना । स्वाहा होना । नष्ट होना । बरबाद होना । आग लग जाना । दहना । दग्ध होना । बरना (बलना) सुलगना ।

जाना—[देखो पृष्ठ २६९ 'चलना' शब्द]

जानना—समझना । पहचानना । परिचय करना । चीन्हना ।

जुटाना—जोड़ना । भिड़ा देना । मिलाना । एकत्र करना । इकट्ठा करना । जमाना । सँजोवना ।

जोहना—आशा देखना । राह ताकना । आशावान् होना । राह देखना । समझना । प्रतीक्षा करना । ताकना । ताक लगाना । जोवना । चितवना । बाट देखना ।

भ्रकोरना—हिलाना । हिलोड़ना । कँपाना । भोरना । झकझोरना ।

भ्रखना—पछताना । पश्चात्ताप करना । अनुताप करना । रोना । शींखना ।

भ्रगड़ना—बकभक्त करना । विवाद करना । लड़ना । कलह करना । भ्रगड़ा करना । लड़ाई करना । वाद-विवाद करना । सरबर करना । भिड़ना । मुहाँ मुहीं करना । मुहँजोरी करना ।

भ्रभ्रकारना—फटकारना । दुत्कारना । तिरस्कार करना । उपटना । डाँटना । हटाना । अवलना करना । अनादर करना । अश्रद्धा करना । अवज्ञा करना । भिड़कना । भटकना ।

भ्रटकना—(१) छीनना । मार लेना । लूट लेना । (२) दूसरे अर्थ में “झझकारना” के पर्याय के अनुसार । उचक लेना ।

भ्रड़ना—झरना । टूटकर गिरना । गिरना । पतन होना । खलित होना । विचलित होना । टपकना । चूना (चूपड़ना) । विचलना ।

भ्रझाना—चिड़बिड़ाना । खीझना । चिढ़ना । कुढ़ना । किटकिटाना ।

भ्रँसना—मुलावा देना । भटक लेना । झाँसा पट्टी देना । फुसलाना । बहकाना । ठगना । धोखा देना ।

भ्राड़ना—(१) साक करना । बुहारना । बटोरना । झारना । झाड़ू देना । (२) गिराना । टपकाना । चुआना ।

निचोलना । (३) फूक डालना । मन्त्र फूँकना । (भूतादि बाधा)
उतारना । झाड़फूक करना । टोना-टोटका करना ।

भुराना—सूखना । सुखाना । मुरझाना । शुष्क होना ।
भुलसना ।

भूमना—काँपना । हिलना । डोलना । लहराना ।
भोका खाना ।

भोंकना—फेंकना । ढकेलना । घुसेड़ना । डालना ।

टकराना—टकर खाना । टकर मारना । धक्का खाना ।
चोट खाना ।

टघलना—टघरना । पिघलना । गलना । द्रवीभूत होना ।

टिकना—बसना । ठहरना । रहना । रुकना । अड़ना ।
अड़कना । थँभना ।

टेकना—आश्रय लेना । थाँभना । आड़ना । सहारा लेना ।
आड़ लगाना । ओट लगाना । टेक लगाना ।

टेवना—तेज करना । सान चढ़ाना । पैना करना ।
तीखा करना । धार देना ।

टोहना—टोह लेना । पता लगाना वा लेना । खोजना ।
अनुसन्धान करना । ढूँढ़ना । अन्वेषण करना ।

ठगना—भुलावा देना । लूटना । लूट लेना । भुलाना ।
प्रतारण करना ।

ठठना—सजना । रचना । सवँरना । सजधज करना ।

ठिठुरना—सर्दियाना । काँपना (सर्दी से) । थरथराना ।
अकड़ना । जड़ाना । शीत लगना । जमना वा जमजाना ।

डगमगाना—लड़खड़ाना । चंचल होना । डोलना ।
डावाँडोल होना । काँपना । हिलना । इधर-उधर होना । विचलित होना ।

ढकेलना—ठेलना । आगे बढ़ाना । रेलना । धक्का देना ।

ढाकना—तोपना । झाँपना । मूँदना । बन्द करना ।
अव्यक्त करना ।

तरसना—लालायित होना । ललकना । ललचना ।
लोभ करना । उत्कण्ठित होना ।

तरसाना—प्रलोभन देना । ललचाना । ललकाना ।
व्यर्थ लालच देना । लोभाना (लुभाना) ।

तरेरना—तीक्ष्ण दृष्टि से देखना । लाल आँखें करना ।
घूरना । आँखें दिखाना । त्योरी चढ़ाना । त्योरी बदलना । आँख-भौं
चढ़ाना ।

त्यागना—छोड़ना । तजना । त्याग देना । अलग करना ।

दहलना—शंकित होना । आतंकित होना । काँपना ।
शंकाक्रान्त होना । डरना । भयभीत होना । थराना ।

देखना—ताकना । अवलोकन करना । दृष्टिगोचर करना ।
निहारना । दर्शन करना । अवलोकना । निरखना । लखना ।
निरीक्षण करना । घूरना । दृष्टिगत होना । नजर आना ।
साक्षात् होना । प्रत्यक्ष होना । पेखना (प्रेक्षण) ।

देना—प्रदान करना । दान करना । सौंपना । उत्सर्ग करना ।

निर्वपण करना । वितरण करना (बाँटना) । समर्पण करना ।
उत्सर्जन करना ।

दौड़ना—(सं० धोरण) । भागना । पराना (पलायन) ।
प्रधावित होना । गतिमान होना । सवेग चलना । धावना ।
भजना । वेगवान् होना । भाजना ।

धड़कना—हिलना । दहलना । डरना । कँपना । थराना ।
थरथराना । धुकधुकाना । धड़धड़ाना । फड़कना ।

धधकना—भभकना । जल उठना । प्रज्वलित होना ।

धमकाना—डराना । धमकी देना । भय दिखाना । डाँटना ।
झिड़कना । घुड़कना ।

धिक्कारना—फटकारना । तिरस्कार करना । निन्दा करना ।
अपवाद करना ।

धोना—साफ करना । पखारना । शुद्ध करना । सँघालना ।
प्रक्षालन करना ।

नकारना—अस्वीकार करना । न मानना । मुकरना ।
इन्कार करना ।

नाघना—लॉघना । उल्लंघन करना । छलॉंग मारना ।
डाकना । फलॉंग मारना ।

निकालना—बाहर करना । खदेड़ना । भगाना । काढ़ना ।
बहिष्कृत करना । दुरदुराना ।

निग्वारना—उजराना । साफ करना । स्वच्छ करना ।
धोना । खँगारना । थिराना ।

निगलना—लील जाना । घोंट जाना । गटक जाना । गटकना । गपक जाना । (गले के नीचे) उतार जाना । घूटना ।

निथारना—पसाना । निचोड़ना । गारना । फरियाना । साफ़ करना ।

निवाहना—निर्वाह करना । पूरा करना । सिद्ध करना । समाप्त करना ।

नियराना—नगिचाना । निकट आना । समीप आना । पास आना ।

निहुरना—भुकना । नवना । नमित होना । नत होना । मुड़ना । दबना । प्रणत होना ।

निवारण करना—मना करना । रोकना । दूर करना । वर्जना । बचाना । हटाना । वारण करना ।

निस्तारना—उद्धार करना । बचाना । छुटकारा देना । उबारना । मुक्त करना । त्राण करना ।

पकना—सीकना । रँधना । पक होना । सिद्ध होना । चुरना ।

पकाना—रींधना । सिद्ध करना । चुराना । सिझाना । उवालना । जोश देना ।

पगना—भिनना । डूबना । निमज्जित होना । मग्न होना । रस में डूबना ।

पगुराना—जुगाली करना । जुगलाना । चबाना । रोमन्थ करना ।

पढ़ना—अध्ययन करना । स्मरण करना । याद करना ।
रटना । अभ्यास करना ।

पढ़ाना—अध्यापन करना । रटाना । अभ्यास कराना ।

पलना—पोस पाना । पालित होना । पोषित होना । बढ़ना ।
प्रतिपालित होना । पनपना ।

पलोटना—दबाना । कुचलना । मींजना । सेवना ।

पहनना—परिधान करना । धारण करना । लपेटना ।

पहचानना—परिचय पाना । जानना । चीन्हना ।

पाना—प्राप्त करना । उपलब्ध करना । लहना ।

पालना—रक्षा लरना । पोसना । रखना । पालन करना ।
पोषण करना । भरण करना । प्रतिपालन करना ।

पिचकना—सिमिटना । सिकुड़ना । पचकना । दबना ।
धँसना । चुचुकना । बिचिकना ।

पिछलना—बिछलना । फिसलना । गिर पड़ना । पड़ना ।
गिरना । सकिलना । सरकना । (सं० पिच्छल) ।

पीना—पान करना । आचमन करना । अँचवना ।

पुकारना—गोहराना । बुलाना । हाँक लगाना । हाँक
मारना । डाँकना । आह्वान करना ।

पैरना—[देखो पृष्ठ २६६ “उतराना” शब्द]

पोसना—[देखो “पालना” शब्द]

प्रकट होना—प्रकाशित होना । प्रत्यक्ष होना । अवतरित होना । आना । आ जाना । व्यक्त होना । प्रसिद्ध होना । जाहिर होना । विदित होना । स्पष्ट होना । साक्षात्कार होना वा करना । साक्ष्य होना ।

फँदना—फँसना । अटकना । उलभना । वझना । रुकना ।

फरकना—चमकना । फड़कना । दमकना । छटकना । थिरकना । फुदकना । उछल-कूद करना । इधर उधर होना ।

फूलना—(१) खिलना । हुलसना । प्रफुल्लित होना । आनन्दित होना । प्रसन्न होना । प्रस्फुटित होना । विकसित होना । कुसुमित होना । पुष्पित होना । (२) सूजना ।

फेंकना—दूर करना । प्रक्षेपण करना । निकाल देना । त्यागना ।

फैलना—पसरना । बिथरना । बिखरना । छिंटाना । इधर-उधर होना ।

फैलाना—पसारना । छिंटाना । बिथारना । बिखेरना । प्रचार करना । प्रकाश करना ।

बकना—अकबक करना । जल्पना । बकझक करना । बकवाद करना ।

बटोरना—संग्रह करना । संकलन करना । एकत्र करना । जुटाना । इकट्ठा करना ।

बनाना—प्रस्तुत करना । रचना । तैयार करना । ठीक करना । निर्माण करना ।

बरजना—मना करना । वारण करना । निषेध करना ।
वर्जन करना ।

बरना—(१) वरण करना । स्वीकार करना । व्याह
करना । चुनना । निमंत्रण करना । (२) बलना । सुलगना ।

बहाना—प्रवाह करना । भसाना । फेंकना । चलाना ।
बहा देना ।

बहाना करना—बातें बनाना । भुलाना । भुलावा देना ।
बात बदलना । छिपाव करना । छिपाना । दुराव करना ।

बहलाना—फुसलाना । बहलाव करना । प्रसन्न करना ।
मनोरञ्जन करना ।

बाँटना—(१) भाग करना । हिस्सा लगाना । बखरा
लगाना । बाँट करना । विभाजित करना । विभक्त करना ।
(२) पीसना । रगड़ना । घिसना ।

बासना—सुवासित करना । बसाना । सुगंधित करना ।
महकाना । गमकाना । गंधाना ।

बिचकना—भड़कना । सतर्क होना । सावधान होना ।

बिचलना—बिचलित होना । फिसलना । बिछलना ।
खसकना । स्वलित होना । टरकना । टलना । हटना ।

बिछुड़ना—जुदा होना । अलग होना । वियोग होना ।
पृथक् होना ।

विदारना—विदीर्ण करना । फाड़ना । चीरना । करना ।

बीधना—डसना । डंक मारना । डौंस मारना । आर
धँसाना ।

बिलसना—(१) भोगना । उपभोग करना । चमकना ।
आनन्द करना । मौज उड़ाना । (२) शोभा देना । प्रकाशित होना ।

बीतना—समाप्त होना । पूरा होना । व्यतीत होना ।
गुजरना । अवसान होना ।

बूकना—पीसना । कूटना । चूर्ण करना । सफूफ करना ।

बेधना—गड़ाना । चुभाना । गोदना । कोचना । धसाना ।

बैठना—उपविष्ट होना । उपवेशन करना । विराजना ।
आसन लगाना वा जमाना । विराजमान होना । स्थिर होना ।
आसन ग्रहण करना । स्थापित होना । बैसना ।

बोलना—[देखो पृष्ठ २६७ “कहना” शब्द]

भकुआना—अकचकाना । भुलाना । चकित होना ।
कर्तव्य विमूढ़ होना । स्थकित होना । सन्न होना ।

भगाना—हटाना । दूर करना । हँकाना । खदेड़ना ।
खेदना । दुरदुराना ।

भजना—(१) भजन करना । स्तुति करना । रटना ।
विनय करना । आराधना करना । स्मरण करना । उपासना करना ।
पूजना । अर्चना । ध्याना । गुणानुवाद करना । कीर्तन करना ।
जपना । लव लगाना । (२) भागना । दूर हटना । बिलग होना ।

भटकाना—भुलावा देना । धोका देना । वहकाना ।
भुलाना । भ्रमित करना । भ्रम में डालना ।

भड़काना—चमकाना । चौंकाना । झिझकाना । उचाटना ।
जी हटाना ।

भरमाना—ठगना । वञ्चन करना । छलना । धोखा देना ।
मुलवा देना ।

भसाना—[देखो पृष्ठ २७९ “बहाना” शब्द]

भागना—[देखो पृष्ठ २७५ “दौड़ना” शब्द]

भाना—अच्छा लगना । सुहावना लगना । सोहाना ।
प्रिय लगना । जँचना ।

भासना—विदित होना । प्रकाशित होना । ज्ञात होना ।
शोभित होना । [भास् = शोभा, प्रकाश]

भुनना—भुँजाना । सेंकना । भर्जन करना ।

भुलाना—प्रतारण करना । फुसलाना । धोखा देना ।
छलना । मुलवाना ।

भूलना—चूकना । विस्मरण होना । विसरना ।
विस्मृत होना ।

भेजना—पठाना । पहुँचाना । प्रस्थापित करना ।

भेंटना—मिलना । भेंट होना वा करना । मुलाकात करना ।

भोंकना—गोदना । चुभाना । घुसाना । घुसेड़ना । टूँसना ।

मचलना—हठ करना । घमंड करना । दुराग्रह करना ।
झिड़ करना । रूठना । चिढ़ना । मटकना । नंगई करना ।

मटकाना—कटाक्ष करना । आँख चमकाना । विराना
(विड़ाना) ।

मथना—महना । बिलोना । विलोड़ना ।

मनाना—प्रसन्न करना । मिन्नत करना । मनौती करना । प्रसादन करना । राजी करना ।

मरना—निधन होना । प्राणान्त होना । समाप्त होना । अवसान होना । मृत्यु होना । निपात होना । देहान्त होना ।

मलना—रगड़ना । मीजना । मसलना । साफ करना । घँसना । मर्दन करना ।

मानना—स्वीकार करना । मान जाना । राजी होना ।

माजना—स्वच्छ करना । उजराना । निर्मल करना । धोना । (सं० मार्जन) ।

मारना—(१) प्राणान्त करने के अर्थ में पृष्ठ २३६ “वध” शब्द के पर्याय के साथ ‘करना’ जोड़ देने से बोध हो जायगा ।

(२) पीटना । ताड़ना । ठोंकना । ठठाना । पीठपूजा करना ।

मिटाना—बिगाड़ना । नष्ट करना । मेट देना । मेटना ।

मिलना—प्राप्त होना । उपलब्ध होना । लाभ होना । पाना । जुड़ना (जुटना) । हाथ लगना ।

मीचना—ढाकना । ढाँपना । मूँदना । बन्द करना । तोपना ।

मुड़ना—धूमना । फिरना । झुकना । टेढ़ा होना । ऐँठना । बल खाना । मुर्ती पड़ना ।

मुरझाना—सूखना । शुष्क होना । कान्तिहीन होना । मलीन होना । उदास होना । निष्प्रभ होना ।

मूड़ना—(१) ठगना । ऐंठना । छलना । धोखा देना । फुसला कर ले लेना । (२) सिंर घोंटना । बाल मूँड़ना । बाल काटना ।

मूसना—चोरी करना । लूटना । सर्वस्व चोरी जाना । खसोटना ।

रचना—निर्माण करना । बनाना । सजाना । तैयार करना । प्रस्तुत करना । विधान करना ।

रमना—(१) रमण करना । क्रीड़ा करना । आनन्द करना । जी लगना । मौज उड़ाना । खेलना-कूदना । (२) घूमना । पर्यटन करना । स्वेच्छया यात्रा करना । भ्रमण करना ।

रहना—वसना । टिकना । ठहरना । होना । स्थिर होना । स्थान ग्रहण करना । स्थापित होना ।

रिसाना—क्रोध करना । रोष करना । रूसना । कोपना ।

रीझना—प्रसन्न होना । प्रेम करना । मोहित होना । मुग्ध होना ।

रूठना—अप्रसन्न होना । रूसना । कोहाना । भगड़ना । बिगाड़ करना । अनबन होना ।

रोकना—कीलन करना । रोक करना । प्रतिषेध करना । थाम्हना । ठहराना । कीलना । प्रतिरोध करना । अटकाना । हटकना । वरजना (वर्जन) ।

रोना—रुदन करना । विलाप करना । विलपना । कल्पना । राग काढ़ना । आँसू बहाना । प्रलाप करना । दाढ़ें मारना ।

रोपना—(१) (पेड़) लगाना । बोना । वपन करना । (२) ठान ठानना । आरम्भ करना ।

लखना—पहचानना । ताड़ना (ताड़ जाना) ।

देखभाल लेना । जानना ।

लजाना—लाज करना । हया करना । ब्रीड़ा करना ।
शर्माना । सकुचाना । संकोच करना ।

लटपटाना—लड़खड़ाता । विचलित होना । डिगना ।
हिलना ।

लपेटना—ओढ़ाना । बाँधना । बेंठन लगाना ।

ललचाना—तरसाना । लुभाना । लालच दिखाना । लहकाना ।

लहना—लगना । ठहरना । जँचना ।

लहकना—[देखो पृष्ठ २७९ “चकमना” शब्द]

लहकाना—(१) उभाड़ना । चिट्टा देना । ताल देना ।
शह देना । बहकाना । (२) बालना । सुलगाना । जलाना । धधकाना ।

लहलहाना—खिलना । फूलना । विकसना । उमगना ।
विकसित होना । हराभरा होना ।

लादना—बोझना । भरना ।

लिपटना—चिपकना । सटना । गले लगना । गले पड़ना ।
चिमटना । अँगोजना । भिड़ना । चिपटना । जुटना ।

लिपटाना—सटाना । भिड़ाना । युक्त करना । गले लगाना ।
चिपकाना । चिमटाना । अङ्ग लगाना । आलिङ्गन करना ।

लुटाना—उड़ाना । दे देना । गँवाना । बाँट देना । खोना ।
अरबाद कर डालना ।

लुकना—छिपना । गुप्त रहना । ओट देना । आड़ में आना । हट जाना ।

लुटना—हर जाना । छिन जाना । अपहृत होना । नष्ट होना । बरबाद हो जाना ।

लेना—ग्रहण करना । स्वीकार करना । अङ्गीकार करना । प्राप्त करना ।

लेटना—सोना । शयन करना । ढरकना । पोठ लगाना । पौढ़ना । विश्राम करना ।

लौटना—फिरना । पलटना । घूम पड़ना वा जाना । घूमना । वापस आना । मुड़ना ।

संचना—जुटाना । जुगाना । बटोरना । संग्रह करना । एकत्रित करना । संचय करना ।

सँवारना—सजाना । सिंगारना (श्रृंगार करना) । बनाना । ठठाना । चमकाना ।

सकाना—शंकित होना । भयभीत होना । डरना । त्रास पाना ।

सकारना—स्वीकार करना । मान लेना । मंजूर करना । हामी भरना ।

सड़ना—बसियाना । उबसना । गलना । बजबजाना ।

सधना—सिद्ध होना । सिम्नना । बनना । होना । ठीक होना ।

समाना—अँटना । घुसना । पैठना । प्रविष्ट होना । भरना ।

समेटना—सिकोड़ना । बटोरना । संकोच करना ।

सँभालना—सुधारना । सँवारना । बनाना । प्रबंध करना । थाँभना ।

सराहना—प्रशंसा करना । सराहना करना । बखानना । बड़ाई करना ।

सहसना—डरना । भय खाना । संकुचित होना ।

सहलाना—खुजलाना । सहराना । हाथ फेरना ।

सहेजना—सौंपना । सुपुर्द करना । सँभाल करा देना । देख-भाल करना । देखना-भालना । समझ-बूझ लेना । जाँच कर लेना ।

सालना—भिदना । चुभना । गड़ना । टीस मारना । टीसना ।

सिझाना—[देखो पृष्ठ २७६ “पकाना” शब्द]

सिधारना—जाना । चले जाना । प्रयाण करना । हट जाना । दूर होना ।

सिमिटना—सिक्कड़ना । बटुरना । जुटना ।

सिराना—(१) बन पड़ना । हो सकना । होना ।
(२) जुड़ाना । ठंडा होना वा पड़ना ।

सिहरना—कँपना । थराना । डर जाना । घबड़ा जाना ।

सीचना—तर करना । सिंचन करना । पानी देना । छिड़कना । छिड़काव करना । भिगाना ।

सीना—सिलाई करना । तुरपना । टाँकना । तागना । गाँथना । गूँथना ।

सुनना—कर्णगोचर करना । श्रवण करना ।

सूँघना—बास लेना । घ्राण लेना । महक लेना ।
गँध लेना ।

सोना—शयन करना । निद्रित होना । खुराटे लेना ।
नींद लेना ।

सौंपना—समर्पण करना । सुपुर्द करना । रखना । दे देना ।

हँकाना—आगे बढ़ाना । चलाना । बढ़ाना । रेंगाना ।

[नोट—“हँकाना” का प्रयोग पशुवर्ग के लिये ही होता है ।]

हँसना—स्मित होना । प्रसन्न होना । बत्तीसी दिखाना ।
खिलखिलाना । हास्य करना । हास करना ।

हकबकाना—घबड़ाना । व्याकुल होना । उद्विग्न होना ।
भौचक्का होना । सन्न होना ।

हकलाना—तुतलाना । हकारना ।

हटकना—मना करना । निषेध करना । प्रतिषेध करना ।
रोकना । थाम्हना । अटकाना । बाधा डालना ।

हटना—(१) अलग होना । पृथक् होना । विलग होना ।
विलगाना । किनारे होना वा रहना । किनारा कसना । दूर रहना ।
दूर भागना । पीछे होना । पीछा दिखाना । मुँह मोड़ना ।
मुँह चुराना वा लुकाना । जी चुराना । सरक जाना । टलजाना ।
खसक जाना । (२) बात से हटना = सुकरना । नकारना ।
बात बदलना ।

हटाना—दूर करना । अलगियाना । अलग करना ।
डाल देना ।

हराना—थकाना । जीतना । पराजित करना । हार देना ।

हड़पना—हजम कर लेना । मार लेना । खा डालना ।
ले लेना ।

हारना—(१) पराजित होना । विजित होना ।
अजयी वा अजित होना । पराभूत होना । अवनत होना ।
नत होना । (२) बात हारना = वचन देना । बात देना ।
वचन-बद्ध होना ।

हिचकना—आगा पीछा करना । अटकना । रुकना ।
सन्देह में पड़ना । संशयित होना । हिचकिचाना ।

हिलोरना—घँघोरना । खँगारना । हिलाना । छानना ।
हलकोरना । लड़राना ।

हुलसना—प्रसन्न होना । आनन्दित होना । हर्षित होना ।
आनन्द विभोर होना ।

होना—विद्यमान होना वा रहना । उपस्थित रहना ।
वर्तमान रहना वा होना । रहना ।

समाप्त



अकारादि क्रम-सूची

—०—

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
		अभिकण	१६
अकरकरा	१२८	अग्निज्वाला	११
अकस्मात्	१९६	अग्निसंताप	११
अकाल	११	अधाना	२७३
अकुलाना	२६३	अँचवना	११
अखरोट	१०१	अँचार	२१९
अगर	१३७	अजमोदा	१२७
अगस्त्य (ऋषि)	२४	अजगर सर्प	२५३
अगस्त्य (पुष्प)	१०८	अजवायन	१२७
अगुभा	१७३	अजीर्ण	२१४
अँगुली के पोर	१५४	अटना	२६३
अँगूठी	२२८	अटकना	११
अँगोठी	२२३	अटकाना	११
अँगोजना	२६३	अँटारी	४९
अगोरना	११	अँठिलाना	२६३
अग्नि	१५	अंतड़ी	१५७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
अतिथि	१७१	अपकार	२००
अतिरिक्त	२०८	अपयश	"
अतिसार	२१३	अपवित्र	१७१
अतीस	१३३	अपकारी	१७३
अदरख	१२५	अपमान	१९८
अधम	१६७	अपराध	१९९
अधिकमास	४०	अपभ्रंश	२०५
अधीन	१७३	अप्सरा	५
अधेङ्	२०२	अफीम	१३४
अँधेरी रात	३९	अभ्रक	६९
अँधेरा	२१०	अभाग्य	१६३
अध्ययन	२२९	अभाव	१९५
अध्यापन	"	अभिप्राय (विचार)	१९८
अध्यापिका	१८८	अभिमन्यु	२५
अनरसा	२२०	अभिजित	३६
अन्न	८१	अमलतास	१२९
अनन्नास	९९	अमरूद	९६
अनार	९४	अमृत	२१
अनिरुद्ध	२३	अमावास्या	३९
अनुपस्थित	४१	अम्लपित्त	२१५
अनुराधा	३६	अयोध्या	२६
अनुचित	१७३	अरवी (घुह्यौ)	९३
अन्वेषण	२०९	अर्जुद	२१४
अद्भुत	१७२	अर्जुन (पाण्डुपुत्र)	२५
अपनाम	२६३	अर्जुन (वृक्ष)	११०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
भराधना	२६४	आँकना	२६४
भरूसा	११७	आख्यान (कथा)	२०५
अलसी (तीसी)	८५	आख्यायिका	२०६
अलसाना	२६४	आँख	१५०
अवकाश	१९७	आँख की पुतली	११
अवगाहना	२६४	आँख का गोला	११
अवमानना	११	आँख का कोना	११
अवराधना	११	आँख का कीचड़	१५७
अवशिष्ट	४१	आक्षेपक	२१४
अशकुन	१७३	आगे	२९
अश्लेषा	३६	आगामी	४१
अश्विनी	३५	आँगन	४८
अश्विनीकुमार	१८	आचार	१९९
अशोक	११२	आचमन	२३०
असहनशीलता	१९४	आज्ञा	१९८
असगंध	१२१	आड़ी	२५६
असुर	४	आत्मा	१६३
अस्तूरा	२४०	आँत वृद्धि	२१४
अहीर	१८३	आदि	३०
अहीर की स्त्री	११	आधा	१७०
अहीरों का गाँव	४८	आँधी	१८
अहंकार	१६३	आना	२६४
	आ	आभूषण	२२७
आकाश	३१	आम	९४
आकाश बौर	१२३	आमड़ा	११

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
आमाहलदी	१३२	इन्द्र का हाथी	५
आमबात	२१४	इन्द्र का वज्र	६
आरा	२३९	इन्द्र का विमान	"
आरोग्य	१६८	इन्द्र-धनुष	३२
आर्द्रा	३६	इन्द्र जौ	१३०
आर्यावर्त देवा	४६	इन्द्राणी	५
आलस्य	१९४	इन्द्रायन (इनारु फल)	१२५
आलसी	१६७	इन्द्रिय	१५४
आलापना	२६४	इमली	९७
आलिंगन	१६२	इमली के पन्ना का बड़ा	२१९
आलू	९३	इलायची-बड़ी	१३८
आलूबोखारा	१०१	इलायची-छोटी	"
आँव	२१३	इसरगोल	१२४
आँवला	९९, १२५	ईख	१४४
आवेग	१९५	ईश्वर	३
आश्विन	४०		
आशीर्वाद	२०१	उकटना	२६४
आषाढ़	४०	उकताना	"
आसन	२३०	उकसाना	२६५
आँसू	१५५	उकेलना	"
		उखड़ना	"
		उगाना	"
		उगलना	"
		उग्रता	१९५
		उगाहना	२६५

इ-ई

उ-ऊ

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
उंगुली	१५४	उत्तरना	२६६
उघारना	२६५	उथलना	"
उचटना	"	उदार	१६५
उच्चस्वर	२४२	उदावर्त	२१४
उचाड़ना	२६५	उघार	२६८
उचित	१७३	उद्धारना	२६६
उछलना	२६५	उन्माद	१९६
उजड़ना	"	उपकरण	२१७
उजाला	२१०	उपकार	२००
उँजाली रात	३९	उपजाऊ भूमि	४६
उझिलना	२६५	उपटन	२२४
उडुद	८१	उपदंश	२१३
उत्तम	१६७	उपपति	१७९
उतरना	२६६	उपपति से उत्पन्न पुत्र	"
उतराना	"	उपला	२२३
उत्तर	२८	उपवास	१९८
उत्तरा फाल्गुनी	३६	उपवन	७८
उत्तरापाद	"	उपटना	२६६
उत्तराभाद्रपदा	३७	उपस्थित	४१
उत्कण्ठित	१६५	उपहार	२०८
उत्साह	१९२	उपासना	१९
उत्कण्ठा	१९४	उफनना	२६६
उत्सव	१९५	उबालना	"
उत्पात	२०२	उल्लू	२५८
उतार	२४२	उल्लंघन	२०८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
ऊँष	१६२	अंग्रेज	१८२
ऊँघना	२६६	अंजीर	१०२
ऊँट	२४८	अंडकोष	१५२
ऊनी बख	२२५	अंडा	२५९
ऊपर	२९	अंत	३०
ऊसर देश	४६	अंतःपुर	५०
	ऋ	अंधा	१६८
ऋण	२३७	अंधाहुली	१२३
	ए-ऐ-ओ-औ		क-क्ष
एकान्त	२९	ककड़ी	८९
एड़ी	१५३	ककुनी	८४
एँठना	२६६	ककोरना	२६६
ओंकार	२०५	कचनार	९१
ओखली	२२२	कँचिया नोन	७६
ओट	२९	कचूर	१४२
ओँठ	१५०	कचौरी	२१८
ओढ़हुल	१०८	कचरना	२६७
ओढ़ना	२६६	कछुआ	५७
ओसारा	४८	कटहल	९७
ओहार	२२६	कटसरैया-पीली	१०७
ओषभालय	५०	” -नीली	”
	अं	” -लाल	”
अंकुर	७९	” -सफेद	”
अंग	१४९	कटोरा-कटोरी	२२१
अंगूर	१०२	कठवत	२२२

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कठफोरा	२५७	कमल-दण्ड	५९
कठोर	१६९	कमल की जड़	११
कडुआ	१६४	कमल-केशर	११
कड़ाही	२२१	कमल-रस	११
कंठा वा कंकण	२२८	कमल-धूलि	११
कड़ी	२१८	कमल-बीज	६०
कतरनी	२३९	कमरख	९८
कतरना	२६७	कमर	१५१
कदम्ब	१०६	कमला	२१४
कनपटी	१५०	कमर बन्द	२२५
कन्या	३७	कर्ण	२५
कनेर (पुष्प)	१०८	कर्ण फूल	२२७
कनेर (पौधा)	११७	कर्क	३७
कपट	२०१	करकना	२६७
कपड़े का बाजार	४७	करौंदा	९८
कपास	११९	करील	११२
कपूर	१३६	करियारी	११६
कपूर कचरी	१४२	करञ्ज	११८
कफ	१५६	करवा	२२१
कबीला	१२९	करधनी	२२८
कब्ज	२१३	करेला	९०
कबन्ध	१६३	करैत-साँप	२५३
कवूतर	२५८	कलवार	१८४
कमल	५८	कल्याण	१९९
कमल-दल	५९	कलंक	२०३

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कलमी आम	९४	काठ	८०
कला	२०३	कान	१५०
कलियुग	४१	कानखजूरा	२५४
कलछी	२२१	कानकटा	१६८
कली	७९	कान का मैल	१५७
कलम	२२९	काना	१६८
कलेजा	१५६	कामदेव	१८
कवि	१८७	कामधेनु	२१
कसाई	१८५	कामी	१६६
कसौटी	२३९	काम (कामना)	१९८
कसेरु	९३	कायफर	१३१
कस्तूरी	१३६	कारागार	५१
कसैला	१६५	कारीगर	१८५
कहार की स्त्री	१८३	कार्तिक	४०
कहना	२६७	कार्तिकेय	१४
कहार	१८३	कालानॉन	७६
काका कौआ	२५१	काला तखता	२२९
काकोली	१२९	कालीजीरी	१२८
काँख	१५१	काशी	२६
काँच	६४	काँसा	६२
काजू	१०२	कास	१२०
काँजी	१४३	किन्नर	४
काँटा	७९	किवाड़	४९
काटना	२६७	किला	५०
काठ की कलछी	२२१	किशमिश	१०२

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
किसान	१८५	कुरमी	१८३
क्लिष्ट	२१०	क्रूरपता	२०२
कीच	५५	कुण्ठित	२०९
कीर्ति	२००	कुण्डल	२२७
कुकुरौदा	१२४	कुरसी	२२६
कुटकी	१३०	कुदार	२३७
कुटनी	१६०	कुंडी	२४०
कुटुम्ब वाली स्त्री	१५९	कुररी	२५६
कुत्ता	२५१	कूट	८४
कुबेर	६	कूटहा	१५२
कुबेर का पवत	६	क्रूर	१६६
कुबेर का ऐश्वर्य	७	क्रूरता	१९९
कुबेर का खजाना	७	कूँची	२३९
कुम्भ	३७	कृत्तिका	३५
कुँआ	५५	कृष्णपक्ष	३९
कुमुद	५९	कृष्ण	२२
कुम्हड़ा	८८	कृपा	२०१
कुन्द	१०६	केतु	३५
कुँदुरू	९०	केकड़ा	५७
कुलीजन	१२८	केवट	५६
कुलीन	१७४	केदार (कुंकुम)	६०
कुशा	१२०	केसारी	८४
कुबड़ा	१६८	केला	९५
कुरूप	१६९	केवड़ा-सफेद	१०६
कुम्हार	१८३	केवड़ा-पीला	११

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कैवाच	११८	कौर	२२१
केकड़ासिंगी	१३१	कौसीस्र	७०
केहुनी	१५३	कंधी	२२६
केवट	५६	कंजूसी	२०१
केचुआ	२५४	कंठ	५१
कैथा	९७	कंठा	२२७
कैदी	१८७	कंदरा	५२
कैद्	२३३	कंधा	१५१
कोचवान (सारथी)	१९१	क्षण	१९७
कोट (महल)	५०	क्षत्री	१८१
कोटर	८०	क्षत्री-पत्नी	”
कोदव (कोदो)	८३	क्षमाशील	१७३
क्रोध	१९२	क्षमा-रहित	”
कोमल	१६९	क्षय	२१२
कोल-किरात	१८२	क्षीणता	२१४
कोइरी	१८३	क्षीरकाकोली	१२९
कोढ़	२१३		
कोड़ा	२३३		
कोठार	२३८		
कोथल	२५६		
कोंचना	२६७		
कोसना	”		
कौआ	२५७		
कौपीन (लँगोटी)	२३०		
कौड़ी	५८		
		ख	
		खजूर	९५
		खटमल	२६१
		खट्टा	१६४
		खड़िया	७१
		खपरिया	७०
		खपड़ी	२२३
		खरबूजा	८९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
खरहा	२५१	खैर	१११
खलिहान	२३७	खोआ	१४३
खली	८६	खंभा	४९
खस	१४०	खंती	२४०
खसखस	१३४	खंजन	२५६
खाई	५६		
खान	६२	गंगा	२३
खाँड	१४४	गंजरोग	२१५
खाज	२१२	गंडमाला	२१४
खाँसी	”	गड्ढा	५२
खाजा	२२०	गडेरिय	१८३
खाना	२६७	गढ़ना	२६६
खारी नौन	७७	गणेश	१४
खिड़की	४९	गत	४१
खिरनी	९८	गदहा	२४९
खिचड़ी	२२०	गदहपूरना	१२३
खिसकना	२६७	गन्ध	१६१

ग

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
गर्भवती स्त्री	१६०	गुगुल	१३७
गर्भाशय	१५७	गुग्गुलिया	२२०
गरुड	२५६	गुग्गु (घुमची)	११८
गलना	२६८	गुग्गु-सफेद	११९
गल्प	२०६	गुड	१४४
गवैया	१८५	गुडिया	२४०
गाजर	९२	गुडी	२५१
गाजुवाँ	१२४	गुर्च	१३५
गाँजा	१३४	गुल्म	२१५
गाड़ी	२३४	गुल दुपहरिया	१०७
गाय	२५०	गुलतुरी	"
गाय का बछवा वा बछिया	"	गुलपरी	"
गायों का समूह	"	गुलदौना	"
गायत्री	२३	गुलाब	१०५
गाल	१५०	गुलाब जामुन	२२०
गावा	१५४	गूँगा	१६८
गाँव	४८	गूलर	९९
ग्रामवासी	१७१	गेंद	२३५
ग्लानि	१९३	गेरू (साधारण)	७१
ग्वालिन	९१	गेहूँ	८१
गिद्ध	२५६	गैंडा	२४८
गिरगिट	२५४	गोखरू (बड़ा)	११५
गिलहरी	२५२	गोखरू (छोटा)	"
गिलास	२२१	गोद	१५४
ग्रीष्म	४१	गोंद	८०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
गोद बैठाया हुआ पुत्र	१७९	छुँछुरू	२२८
गोनस सर्प	२५३	छुटना	१५३
गोपीचंदन	७४	छुड़साल	५०
गोमेद	६३	छुन	२६१
गोरखमुण्डी	१२२	छुसना	२६९
गोरोचन	१४०	घूस	२०९
गोरा	१६९	घूँसा	१५४
गोशाला	५०	घृणा	१९२
गोह	२५४	घृणित	१७२
गौतम बुद्ध	२३	घेवर	२२०
गृहस्थ	१९१	घोंघा	५८
गृहद्वार	४८	घोंटना	२६९
		घोड़सवार	१९०
घड़ा	२२१	घोड़ा	२३४
घड़ेका ढक्कन	"	घोड़ी	"
घर	४८	घोड़े के गर्दन के बाल	"
घर की दीवाल	"	घोड़े का खुर	"
घरिया	२३९	घोड़े की बोली	"
घाव	२१२	घोड़े की लगाम	"
विनाना	२६८	घोड़े की चाबुक	"
घिरना	"	घोंसला	२५९
घिसना	"	घंटी (घाँटी)	१५१
घी	१४३		
घीकार	१२२	चकला	२२२
छुँछुरी	२९१	चकँवड़	१३३

च

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चकवा	२५६	चमार	१८२
चक्की	२२२	चमार की छी	,,
चक्रवर्ती राजा	१८९	चमारों का गाँव	४८
चकोर	२५८	चमेली-पीली	१०३
चटनी	२१९	चमेली-सफेद	,,
चढ़ाव	२४२	चरबी	१५५
चतुर	१६४	चलना	२६९
चदवा	२२६	चलनी	२२२
चन्दन	१३६	चँवर	२३२
चन्दनादि लेपन	२२४	चसना	२६९
चन्द्रमा	३३	चहकना	,,
चन्द्र-मण्डल	३४	चहलना	,,
चन्द्र-चिन्ह	,,	चाचा	१७७
चन्द्रमा की छी	,,	चाची	,,
चन्द्रकान्त मणि	६४	चाटुकारी	२०६
चना	८१	चाण्डाल	१८१
चन्द्रिका (चाँदनी)	३४	चाँदी	६५
चपलता	१९६	चाय	१२४
चपाना	२६९	चालना	२६९
चबैना	२१८	चिकना	१७१
चभोरना	२६९	चिखना	२१९
चमकना	,,	चिचिंडा	९०
चमगादर	२५७	चिढ़ियों के बच्चे	२५९
चम्पा	१०५	चिढ़ना	२७०
चमड़ा	१५५	चितकबरा	१६९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चिता	२३६	चूल्हा	२२२
चिताना	२७०	चूहा	२५१
चित्रकार	१८५	चैत्र	३९
चित्रा	३६	चौच	२५९
चिन्ता	१९४	चोटी	१४९
चिरायता	१३०	चोपचीनी	१२८
चिरौंजी	१०१	चोर	१८७
चिलकना	२७०	चोली	२२५
चिल्लाना	”	चौकी	२२२
चिवड़ा	२१९	चौथाई	१७०
चींटा	२६२	चौपड़	२४०
चींटी	”	चौराई	८७
चीता (औषधि)	१२६	चौराहा	४७
चीता (जानवर)	२४८		
चीनी	१४४	छ	
चील	२५७	छहूँदर	२५१
चीलर	२६१	छजना	२७०
सुगुलखूर	१६६	छड़ी	२२६
सुदिहा	१८४	छत्र	२३२
सुभना	२७०	छरीला	१४१
सुम्बक	७४	छाजन	४९
सुम्बन	१६२	छाता	२२६
सुरमा	२२०	छाती	१५१
सुराना	२७०	छाल	७९
चूकना	”	छालटी	२२५
		छिड़कना	२७०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
छिपकली	२५४	जमाना	२७१
छिपना	२७०	जमालगोटा	१२१
छींक	१६२	जय	२०१
छीपी	१८४	जल	५३
छुरी	२३५	जलना	२७१
छूना	२७०	जल की गहराई	५४
छेदना	२७१	जलप्रचुर देश	४६
छेना	१४५	जलाशय	५३
छेना-पानी	,,	जल-विन्दु	५४
छोटा	१६९	जलाशय का किनारा	,,
छोटी भुजावाला	१६८	जलाशय के बीच का स्थलभाग	,,
छोहारा	१०१	जल कुम्भी	६०
		जलाने की लड्की	८०
		जलेबी	२२०
		जव	८१
		जवाखार	७५
		जवानी	२०१
		ज्वर	२११
		जस्ता	६७
		जहाज	५६
		जागना	२७१
		जाँव	१५३
		जाति	१८०
		जानना	२७१
		जाना	,,

ज

जगन्नाथ पुरी

२६

जगाना

२७१

जटा

१५०

जड़

७९

जड़ता

१९६

जनक

२५

जनना

२७१

जनाना-रथ

२३४

जनेऊ

२३०

जप

१९

जबड़ा

१५१

जँभाई

१६२

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
जानकी	२२	जू (लीक)	२६१
जामवन्त	२५	जूठा भोजन	२२३
जामा	२२५	जूता	२२६
जामिन	२४०	जूही-सफेद	१०४
जामुन (छोटी जामुन)	१००	जूही-पीली	,,
जामुन (बड़ी जामुन)	,,	जेठ	१७९
जायफल	१३८	ज्येष्ठ	४०
जाल	२४०	ज्येष्ठा	३६
ज्वार	८४	जोंक	५७
जावित्री	१३८	ज्योतिषी	१८८
जासूस	१८९	जोहना	२७१
ज्ञान	१९४		
जीभ	१५१		
जीरा-सफेद	१२७	झकोरना	२७२
जीरा-स्याह	,,	झखना	,,
जीव	१६३	झगड़ना	,,
जीवन्ती	११५	झझकारना	,,
जीवन	१९९	झटकना	,,
जीविका	२३७	झड़ना	,,
जुभा	२३९	झरना (झन्ना)	२२२
जुभाखाना	५१	झरना (निक्षर)	५२
जुभारी	१८७	झलाना	२७२
जुगुनू	२६१	झाँझ	२४३
जुटाना	२७१	झाड़ना	२७२
जुलाहा	१८२	झाँपी	२२३
		झाँसना	२७२

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
श्रीगुर	२६१	ठठना	२७३
श्रींसी	३२	ठठेरा	१८३
छुराना	२७३	ठंडा	१६५
झूठ	१९९	ठिठुरना	२७४
झूमना	,,	ठुठ्ठी	१५०
झोंकना	,,		
झोपड़ी	५०	डगमगाना	२७४
	ट	डफला	२४३
टकराना	२७३	डब्बा	२२७
टवलना	,,	डमरू	२४२
टहनी	७९	डाह	१९३
टाँकी	२३९	डेड़हा-सप	२५३
टिकना	२७३	डोम कौआ	२५७
टिटिहरी	२५८	डोली	२३४
टिड्डा-टिड्डी	२६१		
टेकना	२७३	ढकेलना	२७४
टेढ़ा	१७१	ढाँकना	,,
टेवना	२७३	ढाल	२३५
टैंटी	११४	ढेड़सा	९०
टोप	२३५	ढोल	२४२
टोला	४७		
टोहना	२७३	तकिया	२२६
	ठ	तगर	१३७
ठग	१८७	तत्पर	१६५
ठगना	२७३	तन्मय	२०९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
तप	१९	ताल	२४१
तपस्वी	२०	ताल मखाना	१२२
तबला	२४३	ताला	२४०
तमाखू	१२४	तालाब	५५
तमाल	१११	ताली	२४०
तमोली	१८५	तालु	१५१
तरकश	२३५	तितलौकी	८९
तरकारी	२१८	तिल	४५
तरङ्ग	५४	त्रिबली	१५७
तरबूज	८९	तीखुर (तवाखीर)	१२९
तरसना	२७४	तीता	१६४
तरसाना	,,	तीतिर	२५७
तराजू	२३८	तीनी (तिन्नी)	८४
तराजू का पलड़ा	,,	तुरही	२४३
तराजू की डाँडी	,,	तुलसी	११६
तरेरना	२४७	दुला (राशि)	३७
तलवार	२३५	तूतिया	७०
तवा	२२१	तृष्णा	२१४
तागा	२४०	तेजपात	१३९
त्याग	१९३	तेल	८६
त्यागना	२७४	तेल का बाजार	४७
त्यागी	१६७	तेलकी कुप्पी	२२२
ताड़ी-फल	९६	तेली	१८४
ताँबा	६५	तैयार	१६५
तारतम्य	१९६	तैल मर्दन	२२४

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
तोप	२३६	दाँत	१५१
तोपई	९०	दाद	२१२
तोशक	२२६	दादा	१७७
तौल या मान	२३८	दादी	”
	थ	दान	१९
थका	१७१	दान-पात्र	१७२
थप्पड	१५४	दानव	८
थाला	८०	दानी	१७२
थाली	२२२	दामाद	१७८
थोड़ा	१७०	दारुहलदी	१३२
	द	दाल	२१८
दक्षिण	२८	दालचीनी	१३९
दण्ड (घटी)	३८	द्वारकापुरी	२६
दण्ड (सज़ा)	२००	दावात	२२९
दयावान	१७३	दास	१८६
दरजी	१८४	दासी	१८७
दर्पण	२२६	दाह	२११
दर्शन	२०	दिग्पाल	२८
दर्शन योग्य	”	दिग्गज	२९
दरिद्र	१६४	दिगन्तर	२८
दशरथ	२५	दिन	३८
दहलना	२७४	दियासलाई	२३९
दहिना	२९	द्वितीया का चन्द्रमा	३४
दही	१४५	दिशा	२८
दही-बड़ा	२१९	दीनता	१९५

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
दीपक	२२७	देशनिकाला की सजा	२३३
दुकान	२३९	देहली	४८
दुःख (विषाद)	१९४	दो मुहाँ साँप	२५३
दुर्गन्धि	२०५	दोष	२११
दुर्गा	१३	दौड़ना	२७५
दुर्गम मार्ग	४७	दौरा-दौरी	२२२
दुर्जन	१६६	द्रौपदी	२५
दुन्दुभी	२३२	ध	
दुपट्टा	२२५	धड़कना	२७५
दुर्वचन	२०१	धतूरा	११७
दूत	१८६	धधकना	२७५
दूध	१४५	धन	२३९
दूब	११६	धनियॉ	१२७
दूर	३०	धनिष्ठा	३६
दृष्टि	१६१	धनी	१६४
देखना	२७४	धनु (राशि)	३७
देना	,,	धनुर्धर	२३५
देवता	३	धनुष	,,
देवदारू	१३७	धनुष की डोर	,,
देव-नदी	२१	धमकना	२७५
देव-मंदिर	५०	धर्म	२०
देवर	१७८	धर्मशाला	५१
देव-वृक्ष	२१	धर्माध्यक्ष	१८८
देव-सभा	४	धरोहर	२३८
द्वेष	१९३	धव	११२

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नागरमोथा	१४१	निगलना	२७६
नाधना	२७५	नितम्ब	१५२
नाच	२०६	नित्य	४१
नाचनेवाले पुरुष	१८६	नित्यकर्म	२३०
नाचनेवाली स्त्री	„	निथारना	२७६
नाटक	२०७	निद्रा	१६२
नाट्यशाला	५१	निबाहना	२७६
नाटा	१६७	नियराना	„
नाड़ी	१५६	निर्मली	१०२
नाती	१७६	निर्लज्जता	१९७
नाना	१७७	निवारण करना	२७६
नानी	„	निश्चय	२०५
नाभि	१५२	निस्तारना	२७६
न्याय	१९६	निहुरना	„
न्यायाधीश	१८८	नीचे	२९
न्यायशाला	५१	नीति	२०१
नारद	२४	नीवू	९६
नारंगी	९६	नीवू बिजौरा	„
नारियल	९५	नीवू जम्भीरी वा कमला	„
नाव की डौंडी	५६	नीम	११२
नाव की उतार्ई	„	नील	„
नाव खींचनेवाली रस्सी	„	नील कमल	५९
नाशपाती	९६	नीलकण्ठ	२५७
निकालना	२७५	नीलम	६३
निखारना	„	नूपुर	२२८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नृसिंह	२३	पढ़ना	२७७
नेता	१७४	पढ़ाना	"
नेनुआ	९०	पतला	१६८
नेवारी	१०४	पथर	५२
नेवला	२५२	पतवार	५६
नेयायिक	१८८	पति	१७५
नोनियाँ	८७	पति-पत्नी	१७९
न्योछावर	१९४	पत्नी	१७६
नौकर	१८८	पतिव्रता स्त्री	१५९
नौका	५६	पति-पुत्र-हीना स्त्री	"
नौसादर	७७	पतोहू	१७८
		पत्र	७९
	प	पत्रा	२२९
पकना	२७६	पथरी (रोग)	२१३
पकाना	"	पथरी (पथरका पात्र)	२२२
पगना	"	पद्मकाठ	१४१
पगड़ी	२२५	पन्ना (पानक)	२१९
पगुराना	२७६	पन्ना (रत्न)	६२
पक्ष	३९	पपड़िया खैर	१११
पक्षाघात	२१६	पपीता	१०१
पक्षी	२५५	पपीहा	२५५
पंख	२५९	पथर्याय	२०५
पंखा	२२६	परदा	२२६
पटरानी	१८९	परवल	९०
पटिया	२२९	पर्वत	५१
पठानी लोध	१३३		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पर्वत-शिखर	५२	पहुँची	२२८
परशुराम	२२	पहेली	२०६
पराठा	२२०	पाकर	१०९
पराधीन	१७३	पाखण्ड	१९८
परिक्रमा	१९५	पागल	१७२
परिस्थिति	२०९	पाठशाला	५०
परीक्षक	१६५	पाताल	५२
पल	३८	पान	१३५
पलक	१५०	पानी का चक्र	५४
पलंग	२२६	पानी फेकने की कड़ाही	५६
पलना	२७७	पाप	१९९
पलास	११२	पापड़	२१९
पलोटना	२७७	पायजेब	२२८
पवित्र	१७१	पार्वती	१२
पवित्रता	२०५	पारा	६७
पवित्री	२२९	पारिषद्	१९०
पश्चात्	४२	पालक	८८
पश्चिम	२८	पालकी	२३४
पशु	२४७	पालना	२७७
पँसली	१५२	पाला	३२
पसीना	१५५	पासा	२४०
पहचानना	२७७	पिचकना	२७७
पहनना	”	पिछलना	”
पहरा	२३३	पित्त	१५६
पहरेदार	१८६	पित्तपापड़ा	११८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पिता	१७५	पुरोहित	१८६
पिपरामूल	१२६	पुल	५६
पिलही	१५७	पुष्कर मूल	१३१
पिस्ता	१०२	पुष्ट	१६५
पीकदान	२१७	पुष्प रज	७९
पीठ	१५२	पुष्प-रस	”
पीढा	२२२	पुष्प-माला	२२४
पीतल	६५	पुष्य	३६
पीनस	२११	पुस्तक	२२९
पीना	२७७	पूज्य	१६५
पीपर (वृक्ष)	१०९	पूजा	१९
पीपल (औषधि)	१२६	पूतना (रोग)	२१५
पीला	१६९	पूर्ण	१७०
पीला-कमल	५९	पूर्णकलश	२३२
पीब	२१३	पूर्णमासी	३९
पुकारना	२७७	पूर्णमासी का चन्द्रमा	३४
पुण्य	१९९	पूर्व	२८
पुत्र	१७६	पूर्वा फाल्गुनी	३६
पुत्री	”	पूर्वा भाद्रपदा	३७
पुदीना	१४२	पूर्वाषाढ़	३६
पुनर्वसु	३६	पुरनपूड़ी	२२०
पुरवासी	१७१	पूरी	२१८
पुराना	१७०	पृथ्वी	४५
पुराना वस्त्र	२२५	पेट	१५२
पुरुष	१५८	पेट की भक्षि	१६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पेट्ट	१६६	प्रतिज्ञा	२०७
पेठा	८८	प्रतिध्वनि	२०६
पैर	१५३	प्रतीक्षा	२०९
पैर का तलवा	"	प्रदर	२१५
पैर की उँगुली	"	प्रबन्ध	२०५
पैरना	२७७	प्रभाव	२०९
पोखराज	६३	प्रमाद	१९८
पोय	८८	प्रमेह	२१३
पोलाव	२१८	प्रयागराज	२६
पोसना	२७७	प्रलय काल	४१
पोस्त	१३४	प्रलाप	२०२
पौत्र	१७६	प्रसव	१५७
पौत्री	"	प्रसव-गृह	४९
पौधा	७८	प्रसन्नचित्त	१६५
पौष	४०	प्रसूता स्त्री	१६०
पौसरा	५१	प्रस्ताव	२०९
प्याज	९२	प्रहर	३८
प्यादा (सैनिक)	१९०	प्रातःकाल	"
प्यार	२०८	प्रार्थना	२०२
प्यारी स्त्री	१६०	प्रिय	१७१
प्यास	१६१	प्रेम	१९२
प्रकट होना	२७८	प्रौढ़	१६१
प्रकार	२०७	प्रौढ़ा	"
प्रजा	१६४		
प्रणाम	२२९	फटा कपड़ा	२२५

फ

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
फतिंगा	२६१	फैलना	२७८
फतुही	२२५	फैलाना	”
फँदना	२७८	फोड़ा-फुन्सी	२१२
फन्दा	२४०		
फरकना	२७८	ब	
फलयुक्त वृक्ष	८०	बकना	२७८
फलहीन वृक्ष	”	बकरा	२५०
फाल्गुन	४०	बकुची	१३२
फालसा	९९	बख्तर	२३४
फाँसी की सज़ा	२३३	बगुला	२५६
फिटकिरी	७४	बगली द्वार	४८
फिरोजा	६४	बघार	२२१
फीलपाँव	२१३	बच	१२८
फुटकर	२०९	बचपन	२०१
फुफेरा भाई	१७७	बचलनाग	७३
फुफेरी बहिन	”	बजानेवाले	१८५
फुलौरी	२१९	बटा	२२२
फूट-ककड़ी	८९	बटुआ	२२१
फूल	७९	बटेर	२५७
फूल का गुच्छा	”	बटोरना	२७८
फूलना	२७८	बटोही	१७१
फूला हुआ वृक्ष	८०	बड़	१०९
फँकना	२७८	बड़वानल	१६
फेनी	२२०	बड़हल	९७
फेफड़ा	१५७	बड़ा	१६९
		बड़ा (बरा)	२१९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बड़ीमूली	९२	बहमीक	४६
बड़े कानवाला	१६८	बलात्कार	२०८
बढ़ई	१८३	बवासीर	२१३
बत्तख	२५६	वंशलोचन	१२८
बधुआ	८७	वंशी	२४३
बदला	२१०	वंशी बजाने वाले	१८५
बन्दर	२५०	वंसी (कँटिया)	५६
बन्दूक	२३६	बहूँगी	२४०
बन की अग्नि	१६	बहनोई	१७८
बनाना	२७८	बहलाना	२७९
बबूल	१११	बहाना (मिस)	२०३
बरछीबाज	२३५	बहाना (क्रि०)	२७९
बरतन	२२२	बहाना करना	"
बरजना	२७९	बहिरा	१६८
बरतनों का बाजार	४८	बहिन	१७७
बरना (वरण करना)	२७९	बहुत	१७०
बरमा	२३९	बहेड़ा	१२५
बरात	२३१	बहेलिया	१८४
बराती	"	बाँक	२४०
बरी	२१९	बाघ	२४७
बरें (तेलहन)	८६	बाज	२५८
बरें (हाड़ा)	२६०	बाजरा	८४
बरोह	८०	बाजा	२४२
बरौनी	१५०	बाजार	४७
बलराम	२३	बाजीगर	१८७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बाट	२३८	बिजायठ	२२८
बाँटना	२७९	बिजुली	३१
बाण	२३५	बिदारना	२७९
बात	१५६	बिदारी कंद	१२०
बादाम	१०१	बिधारा	१२४
बाँव	५५	बिना उपजाऊ भूमि	४६
बान्धव	१७८	बिल	२५४
बाबीरंग	१२८	बिलसना	२८०
बायाँ	२९	बिलार	२५१
बारी	१८३	बीज	७८
बालक	१६०	बीजबन्द	११९
बालछद्द	१४०	बीणा	२४२
बाल्मीकि	२४	बीतना	२८०
बालिका	१६१	बीधना	११
बालुका प्रचुरदेश	४६	बीरबहुटी	२६२
बालू	५५	बुधा	१७७
बावली	५५	बुढ़ापा	२०२
बाँस	११९	बुध	३४
बासना	२७९	बुद्धि	१६३
बाँह	१५३	बूकना	२८०
बिक्री की वस्तु	२३८	बेंचना	२३८
बिचकना	२७९	बेंदई	२२०
बिचलना	"	बेंत	६१
बिछुड़ना	"	बेंदी (टीका)	२२८
बिच्छू	२५४	बेधना	२८०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बेल	१००	भगाना	२८०
बेला	१०३	भंगी	१८३
बेवाई	२१२	भजना	२८०
बैगन (भाँटा)	९१	भटकटैया	११४
बैठक	४९	भटकाना	२८०
बैठना	२८०	भट्टी	२२३
बैर	९८	भडकाना	२८१
बैल	२३७	भतीजा	१७८
बोल (बोर)	७५	भतीजी	,,
बोलना	२८०	भय	१९२
बृहस्पति	३५	भयभीत	१६६
ब्रह्मचारी	१९१	भयंकर	१६७
ब्रह्मचारी का दण्ड	२३०	भरता	२१९
ब्रह्मचारी का पात्र	,,	भरणी	३५
ब्रह्मत्वभाव	२०	भरमाना	२८१
ब्रह्मज्ञानी	,,	भसाना	,,
ब्रह्मा	९	भाई-सगा	१७७
ब्रह्मा का वाहन	,,	भाई-ज्येष्ठ	,,
ब्राह्मण	१८०	भाई-छोटा	,,
ब्राह्मण-पत्नी	,,	भागना	२८१
ब्राह्मणी	१२३	भाग्य	१६३
		भाग्यमान	१६५
भ		भाँग	१३४
भकुभाना	२८०	भांजा	१७८
भक्ति	१९३	भांजी	,,
भँगरैया	१२३		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
भाट	१८५	भौकना	२८१
भात	२१८	भोजन	२१७
भाथी	२३९	भोजपत्र	१११
भाद्रपद	४०	भौजाई	१७८
भाना	२८१	भौरा	२६०
भाला	२३६	भौह	१५०
भालू	२४८	भ्रम	१९५
भासना	२८१		
भिक्षुक	१९१	म	
भिडी	९१	मकड़ी	२६१
भिर्लोवा	१३३	मकर	३७
भीलों का गाँव	४८	मका	८३
भीष्मपितामह	२५	मकोथ	९९
भुजंगा	२५७	मक्खी	२६०
भुनना	२८१	मक्खन	१४५
भुलाना	॥	मखमली	१०७
भूख	१६१	मखाना	६०
भूमि पर सोनेवाले	२३०	मगर	५७
भूलना	२८१	मगरैला	१२७
भोजना	॥	मंगल	३४
भेंटना	॥	मधा	३६
भेंड़ा	२५०	मचलना	२८१
भेड़िया	२४८	मच्छर	२६०
भैरव	१५	मछली	५७
भैंसा	२४८	मछली का बाजार	४७
		मछली पकड़ने का जाल	५६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
भच्छली रखने का पात्र	५७	मधुरवचन (अर्थ प्रयोग में)	२००
भंजरी	७९	मधुरशब्द (शब्द प्रयोग में)	२०५
भज्जा	१५५	मधुर स्वर	२४२
भज्जीठ	१३१	मन	१६३
भज्जीरा	२४३	मनन करना	२२९
भटकना	२८१	मनाना	२८२
भटका	२२१	मरना	”
भटर	८१	मरसा	८७
भट्टा	१४५	मलद्वार	१५२
भण्डल	२९	मलना	२८२
भतवाला	१७२	मलाई	१४५
भंत्री	१९०	मलाशय	१५३
भथना	२८२	मसूर	८३
भथानी	२३८	मस्तिष्क	१६१
भथुरा	२६	महंगा	२३८
भद	१९३	महन्त	१८६
भदवाले हाथी	२३३	महसूल	२३३
भदार	११५	महादेव	१०
भदिरा	१४३	महाजन	१८९
भद्यगृह	५१	महाराजाधिराज	”
भन्दाभि	२१३	महावत	१९०
भध्व	३०	महावन	७८
भयान्ह काल	३९	महावर	२२४
भधु	१४३	महुआ	९७
भधुमक्खी	२६०	माघ	४०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
माजना	२८२	मिथुन	३७
माजूफल	१२४	मिर्च-काली	१२६
माँडू	२१८	मिर्च-सफेद	"
माणिक	६३	मिलना	"
माता	१७५	मीचना	"
माधवी	१०४	मीठा	१६४
मान (आदर)	१९७	मीठा भात	२१८
मान (हठ)	"	मीन	३७
मानता	१९८	मीमांसज्ञ	१८८
मानना	२८२	मुकुट	२२७
मामा	१७६	मुक्ति	२०
मामी	"	मुखपाक	२१५
मारना	२८२	मुख्य	१७२
मालपुआ	२१८	मुँगौरी	२१९
मालकँगुनी	१३०	मुखकुन्द	१०६
मालती	१०४	मुड़ना	२८२
माली	१८४	मुण्डन कर्म	२३०
माली की स्त्री	"	मुनका	१०२
मार्ग	४७	मुनि	२०
मार्गशीर्ष	४०	मुरझाना	२८२
मास	३९	मुरब्बा	२१९
मांस	१५५	मुर्गा	२५८
मिटाना	२८२	मुर्दा	१६३
मिष्ट्री	४६	मुर्दासंग	६९
मित्र	१७४	मुलेठी	१२९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मुसलमान	१८२	मेथी	८८, १२६
मुँह	१५१	मेढक	५८
मूँग	८३	मेघ	३७
मूँग के लड्डू	२२०	मेहँदी	१२४
मूँगफली	१०२	मैथुन	१६३
मूँगा	६१	मैनफर	१३०
मूँछ-दाड़ी	१५१	मैनसिल	७१
मूँज	१२०	मैना	२५७
मूड़ना	२८३	मोटा	१६८
मूत्र	१५८	मोटा कपड़ा	२२५
मूत्र कूच्छ	२१४	मोठ (मोथी)	८३
मूत्राशय	१५३	मोती	६१
मूखँ	१६४	मोती का हार	२२८
मूच्छा (भाव)	१९७	मोतीचूर के लड्डू	२२०
मूच्छा (रोग)	२१४	मोम	१४३
मूल	३६	मोर	२५५
मूलधन	२३८	मोर-चन्द्रिका	"
मूली	९२	मोर-शिखा	"
मूसना	२८३	मोह	१९४
मूसल	२२२	मौनी	१७२
मूसली	१२०	मौलसिरी	१०६
मेघ	३१	मौसी	१७७
मेघ-गर्जन	"	मौसेरा भाई	"
मेघनाद	२५	मौसेरी बहिन	"
मेघ-पंक्ति	३१	मृगशिरा	३६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द
मृगचर्म	२३०, २५०	रज
मृगतृष्णा	३२	रजस्वला स्त्री
मृगी	२१३	रजाई
मृत्यु	१९९	रँडुभा
मृदंग	२४२	रणभूमि
मृदंग बजानेवाला	१८५	रतिगृह
म्लेच्छ देश	४६	रथ
	य	रथी (सैनिक)
यकृत	१५७	रमना
यम	७	रस घत
यमुना	२७	रस्सो
यज्ञ	१९	रसोईं गृह
यज्ञकर्त्ता	१८८	रहना
यज्ञशाला	५०	रहर
यज्ञोदा	२३	राई
यात्रा	२००	राक्षस
युद्ध	२३५	राक्षसी
युधिष्ठिर	२४	राख
युवती	१६१	राग
युवा	”	राँगा
योनि	१५२	राजगद्दी
योनिकंद	२१५	राजगीर
	र	राजधानी
रक्त कमल	५९	राजमहल
रचना	२८३	राजमार्ग

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
राज्य	२३२	रेवती	३७
राज्याभिषेक	"	रेशमी वस्त्र	२२४
राज्य-व्यवस्था	"	रोकना	२८३
राजा	१८९	रोग	२११
रात्रि	३९	रोगी	१६८
राधा	२३	रोटी	२१८
रामचन्द्र	२२	रोना	१६२, २८३
रामबाँस	१२३	रोपना	२८३
रायता	२१९	रोम	१५४
राल	१३७	रोमाञ्च	१५५
रावण	२५	रोहिणी	३६
राशि	३७		
राष्ट्र	४६	ल	
राहु	३५	लक्ष्मण	२५
रिक्त	१६५	लक्ष्मी	१२
रिसाना	२८३	लक्ष्म	२०९
रीक्षना	"	लखना	२८४
रीठा	१११	लँगड़ा	१६८
रुआ (पक्षी)	२५८	लज्जना	२८४
रुद्राक्ष	११२	लज्जा	२९५
रुखा	१७१	लज्जावन्ती	१२३
रुठना	२८३	लटकन	१०७
रूपामाखी	६९	लटजीरा (ओंगा)	१२२
रेंडी	८६	लटपटाना	२८४
रेती	२३९	लटुबाज	२३५
		लड्डू	२२०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
लता-बौर	७८	लिपटना	२८४
लपेटना	२८४	लिपटाना	"
लम्बा	१६७	लिसोड़ा	१००
लम्बी भुजावाला	१६८	लुभाठ	२२३
ललचाना	२८४	लुकना	२८५
ललाट	१४९	लुटना	"
लवा	२५८	लुटाना	२८४
लहकना	२८४	लेखक	१८७
लहकाना	"	लेटना	२८५
लहंगा	२२५	लेनदेन	२३८
लहना	२८४	लेना	२८५
लहलहाना	"	लोध	१३३
लहसुन	९२	लोबिया	८१
लहसुनियाँ (वैदूर्य मणि)	६३	लोभ	१९८
लादना	२८४	लोहा	६४
लार-थूरु	१५७	लोहार	१८३
लाल	१६९	लोहू	१५५
लालकन्द	९३	लौकी	८८
लालचन्दन	१३७	लौंग	१३८
लालचौंटा	२६२	लौटना	२८५
लालमिर्च (मिरचा)	१२४		
लावा	२१९	वध	२३६
लाही	१३१	वन	७८
लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)	१५२	वन्ध्या स्त्री	१६०
लिट्टी वा बाटी	२१८	वमन	२१३

व

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वर	२३१	विवेक	२०
वर्ष	३९	विश्वकर्मा	२४
वर्षा	४१	विश्वाभिन्न	"
वरुण	६	विशाखा	३६
वशिष्ठ	२४	विष	२५४
वस्त्र	२२४	विषमता	२०८
वसन्त (ऋतु)	४१	विष-वैद्य	१८९
वाःसख्य	१९३	विष्टा	१५७
वानप्रस्थी	१९१	विष्णु	९
वायु	१६	विष्णु का षोड़ा	१०
वायुवेग	१८	विष्णु का वाहन	"
विगत-रजा स्त्री	१५९	विस्मय	२०८
विघ्न	२०७	विसर्प	२१५
विजयसार	१११	वीर्य	१५६
वितर्क	१९७	वीर	१७२
विद्या	२०३	वेतन	२३९
विदित	२०६	वेद	२१
विधवा स्त्री	१५९	वेदान्ती	१८८
विनीत	१६६	वेदपाठी	"
विपरीत	२०९	वेदया	१८६
विपर्यय	२०५	वेदयाओं के गुरु	"
विमुख	२९	वैद्य	१८९
वियोग	२०७	वैशाख	४०
विवाह	२३१	वैश्य	१८१
विवाहिता स्त्री	१६०	वैश्य-पत्नी	"

शब्द	
वृद्ध	
वृक्ष	
वृश्चिक	
टष	
टष्टि	
व्यतीत	
व्यङ्ग्य	
व्यर्थ	
व्यवहार	
व्यसन	
व्यभिचारी	
व्यभिचारिणी	
व्याकुल चित्त	
व्याघ्र-नख	
व्याधि	
व्यायामशाला	
व्यास (मुनि)	
व्यास (कथा वाचक)	
व्रत	
श	
शकरपाला	
शकरकन्द	
शंका	
शंख	
शंखाहुली	

पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१६१	शतभिषा	३७
७८	शत्रु	१७३
३७	शत्रुघ्न	२५
३७	शानि	३५
३२	शपथ (कसम)	२०१
१९७	शब्द	१६१
२०९	शयनगृह	४९
२०७	शरत्	४१
२००	शरीफा	९९
२०३	शरीर	१४९
१६७	शास्त्रालय	५१
१६०	शहतूत	१००
१६५	शहनाई	२४३
२४७	शाकलय	२३०
१९५	शाखा	७९
५१	शान्त	१७२
२४	शान्ति	१९३
१८८	शाप (गाली)	१९६
१९	शाल	११०
	शास्त्र	२१
२२०	शास्त्री	१८८
९३	शिक्षक	”
१९३	शिखा	१४९
५८	शिरपीढा	२१५
१३०	शिरफूल	२२७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
शिवपञ्चाला	५१	श्रीहत	२०८
शिलाजीत	७३	शवास	२१४
शिशिर	४१	श्वेतकमल	५८
शिष्य	१८८	शमशान	५१
शीघ्र	१९७	शृङ्गीऋषि	२४
शीत	२११	शृङ्गार	२२७
शीतला	२१२		
शीतल चीनी	१३९	स	
शीशम	११०	सकाना	२८५
शीशा	६७	सकारना	"
शुक्र	३५	संकीर्णमार्ग	४७
शुक्र-पक्ष	३९	संकेत	२०८
शूकरोग	२१५	सखी	१७४
शूद्र	१८१	संखिया	७४
शूद्र-परनी	"	संगीत	२०६
शेषनाग	२५३	संग्रहणी	२१३
शैली	२१०	संचना	२८५
शोक	१९२	संचरनोंन	७६
शोभा	२०८	सजग	१६५
शोरा	७७	सज्जन	१६६
श्यामातुलसी	११७	सज्जीखार	७५
श्रद्धा	१९३	सड़ना	२८५
श्रम	"	सतयुग	४१
श्रवण	३६	सत्य	१९९
श्रावण	४०	सतावर	१२०
		सती स्त्री	१६०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सत्तू	२२०	समुद्रफेन (औषधि)	१२९
सधना	२८५	समुद्री नौन	७६
सधवा स्त्री	१५९	सम्मुख	२९
सन	१२३	समूह	१९६
सनाय	१२१	संयोग	२०७
सन्तान	१७९	सर्प	२५३
सन्तोष	१९८	सर्पराज	”
सन्यास	१९	सरफोंका	१२२
सन्यासी	२०, १९१	सरसों	८५
ससाह	३९	सरथू	२७
सफ़ेद	१६९	सरस्वती	१२
सँभालना	२८६	सरलचित्त	१६५
सभा-भवन	५०	सराहना	२८६
समय	३८	सलई	११०
समता	२०८	सलज्जम	९२
समर्थन	२०९	सलाई	२३९
समान अवस्था के	१७९	सँवारना	२८५
समाना	२८५	संस्कार	२०२
समाप्ति	१९६	संस्कार-भ्रष्ट	२३०
समेटना	२८५	संसार	४५
सभी	११२	सहदेई	११९
समीप	२९	सहनशीलता	१९४
समुद्र	५३	सहमना	२८६
समुद्र-मथ्याद	५४	सहलाना	२८६
समुद्र-फेन		सहिजन	९१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सहेजना	२८६	सिकहर (छीका)	२४०
सस्ता	२३८	सिखरन	२१८
सागौन	११२	सिँघाड़ा	६०
साँड	२३७	सिन्धाना	२८६
साँप का शरीर	२५३	सिंदूर	७२
साँप का फन	२५४	सिंधारना	२८६
साँप का केलुल	"	सिद्धान्त	२०५
साँप का दाँत	"	सिपाही (थोढा)	१९०
साँप का विष	"	सिमिटना	२८६
साँप पकड़नेवाला	"	सिथार (गीदड़)	२४९
साबूदाना	८४	सिर	१४९
साँभर नौन	७६	सिर के बाल	"
सायंकाल	३९	सिरस	११०
सारंगी	२४३	सिराना	२८६
सारस	२५६	सिल	२२२
सालम मिश्री	१२४	सिंह (राशि)	३७
सालना	२८६	सिंह (जन्तु)	२४७
साला	१७८	सिहरना	२८६
साली	"	सींचना	"
साँवला	१६९	सीढ़ी	४९
साँवाँ	८३	सीधा	१७२
सास	१७८	सीना	२८६
साही	२५०	सीपी (साधारण)	५७
साही के रोम	२५१	सीपी (मोती वाली)	"
सिकड़ी	२४०	सुगन्ध बाला	१४१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सुगन्धि	२०४	सूम	१७२
सुग्गा वा तोता	२५७	सूरन	९३
सुथनी	९३	सूर्य	३२
सुदर्शन	१२४	सूर्य के पारिपार्श्वक	३३
सुन्दर	१६९	सूर्य का सारथी	"
सुन्दरता	२०२	सूर्य का मण्डल	"
सुन्दर मार्ग	४७	सूर्य किरण	"
सुन्दरी स्त्री	१५८	सूर्य-प्रकाश	"
सुनना	१६२, २८७	सूर्य के घोड़े	"
सुनारों का बाजार	४७	सूर्यकान्त-मणि	६३
सुपारी	१०१	सँधा नौन	७६
सुरमा-स्रोतोजन	७१	सेना	१९०
सुरमा-सौवीराञ्जन	७२	सेनापति	"
सुरमा-पुष्पाञ्जन	"	सेम	९१
सुहागा	७५	सेमल	११२
सूअर	२४४	सेव	९६
सूई	२४०	सेवई	२२०
सूक्ष्म	१७०	सेवा	२०७
सूँधना	२८७	सेवार	६०
सूचना	२०२	सेहुँआ	२१२
सूजन	२१२	सेहुँड	११६
सूतिका रोग	२१५	सोजाक	२१३
सूद	२३७	सोंठ	१२५
सूद खोर	"	सोना (धातु)	६६
सूप	२२२	सोना (शयन करना)	२८७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सोना पादा	११४	स्वर्णाचल	२१
सोना माखी	७०	स्वाती	३६
सोनार	१८४	स्वाद	१६२
सोमलता	१२३	स्वामी	१६६
सोया	८७	स्वीकार	२०५
सौत	१७९		
सौपना	२८७	हकबकाना	२८७
सौफ	१२६	हकलाना	"
स्तन	१५१	हँकाना	"
स्तन का अग्रभाग	"	हटना	"
स्तनपाक	२१५	हटकना	"
स्तुति	२०१	हटाना	"
स्त्री	१५८	हड़पना	२८८
खान	२२४	हड्डी	१५६
स्नेह	१९८	हथिनी	२३३
स्फटिक मणि	६४	हथेली	१५४
स्मृति	१९४	हथेली के पीछे	"
स्याही	२२९	हह	१९५
स्वतन्त्र	१६६	हनुमान	२४
स्वप्न	१९४	हर	२३७
स्वभाव	१९८	हरका फाल	"
स्वर्ध्वरा स्त्री	१५९	हरताल	६८
स्वर	२४१	हर	१२५
स्वर्ग	३	हरफा रेवड़ी	९८
स्वर्ण गैरिक	७१	हरा	१६९

शब्द	पृष्ठांक	शब्द	पृष्ठांक
हराना	२८८	हाथी की सूँड	२३३
हरिण	२४९	हाथी खाना	५०
हर्ष (सुख)	१९५	हाबुस	२२०
हरिस	२३७	हार (पराजय)	२०१
हलदी	१३२	हारना	२८८
हलवाई	१८५	हार सिंगार (फूल)	१०८
हलुआ	२१८	हारिल	२५७
हवन	२३०	हाव	२००
हवाई जहाज़	२३४	हिंगुल	७१
हंस	२५५	हिचकना	२८८
हंसना	२८७	हिचकी	१६२
हँसी	१६२	हिंजड़ा	१७३
हँसीठट्टा	२०२	हिरौजी	७१
हँसुआ	२३७	हिलोरना	२८८
हस्त (नक्षत्र)	३६	हिस्टीरिया	२१४
हाकिम	१८९	हींग	१२८
हाथ	१५४	हीरा	६२
हाथकटा	१६८	हुलसना	२८८
हाथी	२३३	हेमन्त	४१
हाथी का सिकड़	"	हैजा	२१४
हाथी का मद्	"	होना	२८८
हाथी का अंकुश	"	होम का हँधन	२३०
हाथी की बोली	२३४		

सस्ती बाल-साहित्य की पुस्तकें

कहने को तो यह बालकोपयोगी हैं, पर इनसे आबाल, युवा और वृद्ध सबको लाभ पहुँचेगा। मनोरंजकता और ऐतिहासिक सरलता से पुस्तकों की प्रत्येक लाइन सराबोर है। नाम और दाम देखिये—

सचित्र महाभारत भाषा	३१	महारानी सीतादेवी	॥१
बाल महाभारत	११	देवी पार्वती	॥१
बाल रामायण	११	गल्पाञ्जली	॥१
भारत के ब्रह्मर्षि	॥११	श्रवणकुमार नाटक	॥१
वीर लवकुश	॥११	वीर अभिमन्यु	॥१
महाराणा प्रताप नाटक	॥११	नानखताई	॥१
परशुराम	॥११	नमकीन	॥१
नलदमयन्ती	॥१	मिठाई	॥१
		छात्र-विनोद	॥१

मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट,

बनारस सिटी।

रामचरितमानस-सातो काण्ड

नवाह, मास पारायण पाठ-विधि सहित

जिसको श्री १०८ माधोदासजी रामायणी तथा १०८ बा० रामदासजी की सम्मति से श्री बाबा रामबालक दासजी महाराज जिनकी कृपा इस दास के ऊपर है उन्हीं से पठन-पाठन कराकर काशीनिवासी दास पूरणभक्त रामायणी ने संशोधन किया ।

❀ उसीको ❀

भार्गव पुस्तकालय काशी ने

निज भार्गवभूषण प्रेस में बढ़िया कागज और खूब मोटे मोटे अक्षरों में मुद्रित कर प्रकाशित किया । आशा करते हैं कि प्रत्येक रामायण भक्त इस शुद्ध संस्करण की एक एक प्रति अपने पास रखकर लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रम को सफल करेंगे । पुस्तक बहुत मोटे अक्षरों में चिकने कागज पर छापी गई है । जिल्द कपड़े की होते हुए भी मूल्य रक कागज का ३।। तथा ग्लेज का ४) बिना कमीशन लागत मात्र रक्खा गया है ।

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट,

बनारस सिदा ।

ठहरिये ! इसको पढ़िये !! तब खरीदिये !!!

हम अच्छी तरह जानते हैं कि, आपको पान खाने का शौक है। फिर भी बढ़िया सामान न मिलने के कारण आपको जितना चाहिये उतना आनन्द नहीं मिलता, इस प्रकार के दुःखित अनेकों भाइयों और बहिनों तथा माताओं के कष्ट निवारणार्थ यह **भार्गव केशरी जर्दा; कार्यालय गायघाट, बनारस सिटी** में खोला गया है। इस कार्यालय से सस्ती तथा बढ़िया आनन्ददायक जर्दा सुती, आदि के अलावा संसार प्रसिद्ध भार्गव पुस्तकालय, काशी की पुस्तकें, काशी सिल्क की चदर, डुपट्टे, धोतियाँ आदि तथा काशी के लकड़ी के खिलौने, मूर्तियाँ पीतल की, आसन, पुजापाठ की, चीजें इत्यादि जो कुछ भी आपको चाहिए, पत्र लिख कर आजहीं मँगाकर परीक्षा अवश्य करें। मैं डंके की चोट देकर फिर भी सावधान करके कह रहा हूँ कि यदि किफायत, सचाई और बाजार भाव पर माल मँगाने की आपकी इच्छा है तो आप उक्त कार्यालय से ही एक बार अपना सम्बन्ध स्थापित करें। कुछ चीजों का नाम और दर नीचे लिखा जाता है। आशा है कि आप मुकाबिला बिना किए अपना पसा मुफ्त न खोवेंगे। थोक खरीदारों को खास रियायत रहेगी। आकर मिलें या पत्र व्यवहार करें।

केशरी पत्ती लाल व पीली १), २), ४), ८), १६), ३२) फी सेर
 दाना जर्दा काला मसालेदार १), २), ४), ८), १६), ३२), ६४),
 बढ़िया गाली ४), ८), १६), फी सेर
 केशरी सुपारी लच्छेदार ३), चिकनी सुपारी ८), १६) फी सेर
 पान का उत्तम पीला मसाला ८), १६), किमाम ८), १६), ३२),

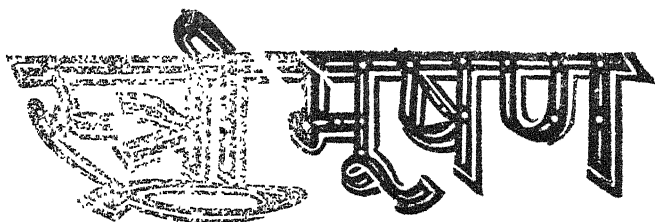
बढ़िया सुनहला जर्दा

२) तोला

भार्गव केशरी जर्दा कार्यालय
गायघाट बनारस

सूचीपत्र मँगाने के लिये -) का टिकट भेजिये।

स्त्रियों के लिये सर्वोत्तम ग्रन्थ-



(लेखक-पुरुषोत्तमजी० ए०)

स्त्री शिक्षा कितनी आवश्यक वस्तु है, यह कहनेकी आवश्यकता नहीं। विशेष कर इस युगमें माताओं और बहिनों को अशिक्षित रखकर हम जीवन में आगे बढ़ ही नहीं सकते, परन्तु उन्हें किस प्रकार सुगमतासे शिक्षा दी जाय इस प्रश्नसे बड़े बड़ोंके दिमाग चकराते हैं। इसी प्रश्नको हल करनेके लिये यह स्त्रीभूषण नाम की पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी गई है। वर्तमान सामाजिक और आर्थिक अवस्था स्त्री-शिक्षा में बहुत बड़ी बाधक है, परन्तु इस पुस्तकके सामने ये कठिनाइयां पेश नहीं आ सकतीं। थोड़ीसी साधारण हिन्दी जानने वाली स्त्रियां भी इसके द्वारा अधिक ज्ञान सुगमता से प्राप्त कर सकती हैं।

पुस्तकमें स्त्री जीवनोपयोगी सभी बातों का समावेश किया गया है और वह ब्रह्मचर्य-जीवन, दाम्पत्य-जीवन, मातृ-जीवन तीन खण्डों में समाप्त हुई है। पाक विधि, सिलाई, स्वास्थ्य रक्षा आदि के सिवाय इतिहास, धर्म, समाज, साहित्य आदि विषयों का भी ज्ञान कराने का यत्न किया गया है। दाम्पत्य-जीवन और मातृ-जीवन तो बिल्कुल नये ढंग से लिखा गया है। पृष्ठ सं० ७१६ मूल्य २॥=) है।

पता-भारगव पुस्तकालय बनारस सिटी

महान् पुरुषों के चरित्र

दूसरा
संस्करण

जिस विचारधारा को लेकर मनुष्य संसार में बड़े से बड़े सिद्धान्तवादका प्रचार कर सकता है। गुणज्ञ और परिडित हो सकता है। पृथ्वी का आधिपत्य प्राप्त कर सकता है। रङ्ग से राजा बन सकता है। विद्या लाभ कर सकता है; अच्छे से अच्छा वीर बन सकता है, सदाचार सीख सकता है और महा धुरन्धर राजनोति का पुजारी बन सकता है। ऐसी वस्तु को प्राप्त करनेको किसे उत्कट अभिलाषा न होगी ? भारत-वर्षके पाश्चात्यदेश के सभी महान् पुरुषों, वेदों और शास्त्रों एवं राम, कृष्ण, ईसा, महम्मद, शंकराचार्य और महात्मा गांधी आदि ऐसे आदरणीय पथ-प्रदर्शकों के पूरे १००० एक हजार सदुपदेशों से पुस्तक भरी पड़ी है। “वीरभोग्या वसुन्धरा” के महान्पुरुषों के विचारों से भरी हुई पुस्तक प्रत्येक आवाल वृद्ध नर-नारों के पढ़ने योग्य है। पाठक इसके नाम हो से इसका गुण जानें। लगभग २०० पृष्ठों के एन्टिक कागज़ पर प्रकाशित पुस्तक का मूल्य केवल ॥) मात्र है।

पुस्तक मिलने का पता—

भागीव पुस्तकालय बनारस

घर जमाई

दूसरा
संस्करण

यह पुस्तक क्या है। दुनियाँके दुरंगेपनका मार्मिक चित्र है। इस पुस्तक में लेखक ने चालबाजी, विश्वभ्रम, शासनप्रणाली, विश्वासघात, दरिद्रता, पतिभक्ति, वात्सल्यप्रेम और सौख्य आदिका सच्चा नमूना खींच दिया है। राखाल का मातृ-पितृ हीन होने के कारण ननिहाल में पलना, समय आने पर राज-कन्या से विवाह होना, राजाका राखाल का घरजमाई बनाकर रखना, राखाल को स्त्री मणिमाला की पति भक्ति, राखाल का दीन प्रजा और राजलेवकों पर प्रेम और उनका पत्न करना, राजाकी प्रजा पर क्रूरता, राखाल और राजा में द्वेष, राखाल का राज्य छोड़कर भागना, राखाल की स्त्री मणिमाला का पति प्रेम में राजत्याग करना, राखाल का राज-कन्या के साथ अपने ननिहालमें दुःखमय जीवन व्यतीत करना, राजाके मर जाने पर रानो के भाई भतोजोंका राज्य, घर, दखल कर रानो का कष्ट देना, राखालका रानो की सहायताकरना, दुष्टों पर विजय, अन्त में अगाध कष्टों को भेल कर राखाल के पुत्र भूपाल का पहाड़पुर के राज्यका अधिकारी होना आदि इसमें इस प्रकारसे लिखा गया है कि एक बार पढ़ने से पुस्तक बिना समाप्त किये छोड़ने को जाँ नहों चाहता, अवश्य मंगाकर देखिये। पृष्ठसंख्या ३०४ मूल्य केवल १।)

पता-भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी।

‘प्रणय’

(दूसरा संस्करण छप गया)

लेखक-देवनारायण द्विवेदी ।

यह मौलिक उपन्यास एक सत्य घटनाके आधार पर लिखा गया है। इस पुस्तककी कापी पढ़कर द्विवेदीजीके कई साहित्यिक विद्वान मित्रों ने तो यहाँ तक कह डाला कि “यद्यपि कर्त्तव्याघात हिंदीके उपन्यासोंमें बहुत ऊँचा स्थान पा चुका है, तथापि प्रणयकी भाषा, भाव और चरित्र-चित्रण चानुरी इतनी उत्तम है कि यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि ये दोनों पुस्तकें एक ही लेखककी लिखी हुई हैं।” प्रेममें कैसी आकर्षण शक्ति है, मनुष्य में किस प्रकार भ्रांत धारणा उत्पन्न हो जाती है और कोमल हृदय भी कभी कभो कितना कठोर बन जाता है, इसका बड़ा सुन्दर और उपदेश-प्रद चित्र खींचा गया है। अल्पावस्था होते हुए भी पंडिता रमाका गाम्भीर्य, उत्साह तथा कष्ट-सहिष्णुता एवं निर्लोभके साथ अद्भुत हंग से देश-सुधार करना और रूठे हुए पतिको विना मनाये ही हिंदी संसार में बिलकुल नयी वस्तु है। अहा ! रमाके चरित्र-बल के सामने उसके पतिको भी लज्जित होकर उससे क्षमा माँगनेका वर्णन कितना हृदय-ग्राही और मर्मस्पर्शी है। स्त्री पुरुष दोनों ही के पढ़ने योग्य है। मू० १॥)

पाठकगण इसको प्रशंसा ‘मांडर्नरिव्यू’ आदि प्रतिष्ठित और संसार प्रसिद्ध पत्रिकाओंमें पढ़ चुके होंगे ।

पुस्तक मिलने का पता—

भारत पुस्तकालय बनारस सिटी

छप गया !

छप गया !!

छप गया !!!

हिन्दी संसार में अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ हिन्दी पर्यायवाची कोश ।

लेखक—पं० श्रीकृष्ण शुक्ल-विशारद ।

अब तक हिन्दी संसार में एक भी ऐसा कोश-ग्रन्थ नहीं छपा जिससे उक्त ग्रन्थ की तुलना किञ्चित् भी की जा सके । ग्रन्थ के लेखक ने आज कई वर्षों के सतत परिश्रम के पश्चात् यह ग्रन्थ-रत्न लिख कर तैयार किया है जो बड़े सजधज के साथ, सुन्दर नये टाइप में छपकर तैयार है । यह ग्रन्थ चार खण्ड और ३७ वर्गों में विभक्त है । प्रथम खण्ड के ६ वर्गों में स्वर्ग के देवता, अवतार, तीर्थ, दिशा, ग्रहोपग्रह, नक्षत्र, समय आदि, द्वितीय खण्ड में स्थल-जल-भूगर्भ (खान), वन उपवनादि तथा समस्त धान्य, शाक, भाजी, वनस्पति मूल, कन्द, फल, फूलादि, तृतीय खण्ड, में मनुष्य के अङ्ग-प्रत्यङ्ग सम्बन्धादि, जाति, व्यवसाय, मनोविकारादि, शारीरिक रोग, भोजन के विविध व्यञ्जन, वस्त्र, आभूषणादि और चतुर्थ खण्ड में पशु, पक्षी, सरीसृप (रेंगनेवाले जोव)के, कीट पतङ्गादि के नामों तथा क्रिया पदों के पर्याय दिये गये हैं । इस प्रकार यह ग्रन्थ एक साधारण विद्यार्थी से लेकर शिल्प, लेखक एवं सम्पादकों के बड़े काम का है । सवा दो हजार शब्दों के यथेष्ट पर्यायों के अतिरिक्त प्रायः डेढ़ सौ पाद टिप्पणियाँ भी दी गई हैं, जो एक अलग ग्रन्थ का काम देती है । इस प्रकार यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य प्रेमियों का परम मित्र, और अनेक कोशों का महाकोश है । सुन्दर नये टाइप में ग्लेज़ पेपर पर छपा हुआ उत्तम कपड़े की जिल्द और पृष्ठसंख्या ४०० होनेपर भी मूल्य केवल २॥) है ।

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।

(सांगीत प्रकाश—प्रथम खण्ड)

अर्थात्

हारमोनियम मास्टर

(तृतीय-संस्करण)

वर्तमान समय में सभी सज्जनगण जितना हारमोनियम वाद्य को पसन्द करते हैं उतना अन्य किसी वाद्य को नहीं। यहा कारण है कि इतने अल्प समय में हमारे हारमोनियम मास्टर ने संगीत प्रेमियोंके दिलोंमें अपना ऊँचा स्थान बना लिया। यद्यपि अन्य स्थानों से भी इसके एकाध संस्करण प्रकाशित हुए हैं तथापि हमारे संस्करणकी समता वे नहीं कर सकते। इसमें लेखक ने हारमोनियम के अलावा तबला और मृदंगका भी विषय देकर पुस्तकको सर्वश्रेष्ठ बना दिया है। इस पुस्तकको पढ़कर आप हारमोनियम बजाना व मरम्मत करना तथा तबला आदि बाजोंके पूर्ण अनुभवों और ज्ञाता हो सकते हैं। पुस्तककी छपाई बड़ी सावधानी से हुई है। ऐन्टिक कागज़ पृष्ठ संख्या ४१६ सुन्दर जिल्द बँधी पुस्तक का मूल्य फिर भी कम केवल १॥ मात्र रक्खा गया है।

पुस्तक मिलने का पता—

शर्मा पुस्तकालय बनारस सिटी

टार्जनका बेटा

यह उपन्यास सांसाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक या जासूसी नहीं है। यह ऐसा अजीब उपन्यास है कि पाठक एक नयी वस्तुका अनुभव करेंगे। इससे पाठकोंको जंगली जीवनको जानकारी प्राप्त होगी, जंगली जानवरोंकी आहट पानेका उपाय मालूम होगा। जंगलमें रहकर मनुष्य किस प्रकार जंगली बन जाता है, जंगलके जीवोंमें कैसा प्रेमभाव और द्वेषभाव रहता है—आदि बातोंका बड़ा ही सुन्दर चित्र इस उपन्यासमें पाठकोंको दिखायी पड़ेगा। मूल्य भी खूब सस्ता केवल १॥) मात्र है।

कर्त्तव्याघात

श्रीयुत प्रेमचन्दजी बी० ए० की सम्मति

“हिन्दीमें इतना अच्छा उपन्यास अबतक हमारे नज़रोंसे नहीं गुज़रा था। कहानी इतनी सुन्दर है, लेखककी शैली इतनी प्यारी है, चरित्रोंका प्रदर्शन इतना मनोहर है कि पाठक मानो भावोंके उद्यानमें बिचर रहा है। कहीं मानमय पितृ-भक्ति है, तो कहीं दीप-शिखाकी भाँति हृदयमें जलनेवाला पुत्र-प्रेम! चन्द्रकलाका चित्र तो हिन्दी-संसारमें एक अनूठी वस्तु है।..... हम पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि इस कथका कथाका अवश्य पढ़ें। ऐसे उपन्यास उन्होंने कम पढ़े होंगे।.....”
फरवरी सन् १९२६ “माधुरी”

यह पुस्तक तीसरी बार छपकर तैयार हुई है। ४०० पृष्ठ
मूल्य १॥)

पता—शारंग पुस्तकालय बनारस सिटी

शीघ्रता कीजिये ! हाथों हाथ बिक रही है !!
होमियोपैथिक जगत् में अपूर्व क्रान्ति करनेवाली—

होमियोपैथिक चिकित्सा

लेखक—डा०—एस० एस० मिश्र एच० एम० बी०

वर्तमान युगमें होमियोपैथिक चिकित्साका जितना प्रभाव पड़ रहा है और इसका जितना शीघ्र प्रचार हो रहा है कहनेकी आवश्यकता नहीं है। कारण कि बिना कष्ट और बिना किसी चीड़-फाड़के भयङ्कर से भयङ्कर रोग अच्छे होते पाये जा रहे हैं। इस अवसरसे लाभ उठानेके लिये हमने सुविन्न पाठकों और प्रेमी होमियोपैथ डाक्टरोंके लिये बहुत शीघ्रतासे इस पुस्तक को निकाला है। इसमें चिकित्सा सम्बन्धी प्रत्येक बिषयोंकी ऐसी उत्तम व्याख्या की गई है कि आप बड़ी आसानीसे सब रोगोंकी पहिचान और उन सबकी दवा सरलता पूर्वक खोज निकालेंगे। इस पुस्तकके अनुसार यदि आप रोग-लक्षणों और औषधियोंका चुनाव कर जितनी मात्रा इसमें बतलाई गई है कर सकेंगे तो निस्सन्देह बड़ेसे बड़े रोगोंका समूल नाश कर देंगे। भाषा और संग्रह बड़ा ही सरल तथा सुबोध है। छपाई बहुत साफ और कागज़ पेन्टिक मोटा पृष्ठ संख्या १२६४ मू.३)

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

दूसरा संस्करण -

नारी धर्म-शास्त्र

दीनहीजनारीजाति का उद्धार करनेवाला बहुरानीके सच्चे गहनोंकी पिटारी

ले०-पं० रामतेज पाण्डेय-साहित्य शास्त्री । विषय सूची-

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| (१) दाम्पत्य प्रणय | (१०) गाम्भीर्य |
| (२) चरित्र | (११) सद्भाव |
| (३) सतीत्व स्वर्गीय रत्न | (१२) सन्तोष |
| (४) स्वामीके साथ बातचीत | (१३) अवसर शिक्षा |
| (५) चालचलन लज्जाशीलता | (१४) आत्म-रक्षा |
| (६) विनय एवं शिष्टाचार | (१५) गर्भिणी के कर्तव्य |
| (७) नारी हृदय | (१६) जननी-जीवन |
| (८) पड़ोसियोंके साथ व्यवहार | (१७) शिशु-पालन |
| (९) सांसारिक आय-व्यय | (१८) शिशु-शिक्षा |

आदि-आदि नारी जाति से सम्बन्ध रखने वाले अनेकों विषयों का समावेश किया गया है। नारीजाति के सम्बन्ध में कोई भी विषय ऐसा नहीं छूटा है जिसके लिये आपको निराश होना पड़े। इसलिये प्रार्थना है कि यदि आप अपनी गृहिणी को उत्तम गृहलक्ष्मी बनाना चाहते हों तो इधर-उधर न भटक कर शीघ्र ही यह ग्रन्थ अपनी बहू रानी को पढ़ा दीजिये। बढ़िया ऐन्टिक कागज़ पर छपी हुई ४५० पेज की मोटी जिल्ददार पुस्तक का दाम भी केवल १॥) मात्र रक्खा गया है।

पता-भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी ।

महाभारत भाषा

गुटका-दूसरा संस्करण

ले०-पं० रामलग्न पाण्डेय "विशारद"

भारतः पञ्चमो वेदः ऋ अनुसार महाभारत पाँचवाँ वेद है । संस्कृतमें होने के कारण अब तक इसका प्रचार बहुत कम था । पर हर्ष है कि वर्तमान युगमें इसके छोटे-बड़े सभी प्रकारके संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं । कारण कि देश और समाजको जागृत करनेके लिये देशका इतिहास ही पथ-प्रदर्शक होता है । अतः देश और समाजकी आवश्यकताओंका ध्यान रखकर ही हमारे कार्यालय ने महाभारतका यह संस्करण गुटकाके रूपमें प्रकाशित किया है । छपाई पर ध्यान रखते हुये ऐन्टिक कागज़ पर अठारहों पर्वका सम्पूर्ण वर्णन किया गया है । भाषा सरल और सुबोध है । दोरंगे तिनरंगे और एकरङ्गे ३७ चित्र लगे रहने पर भी मूल्य केवल ३) मात्र है ।

पुस्तक मिलने का पता—

भागवत पुस्तकालय बनारस

नकालों से सावधान !!

लेखक—बाबू अयोध्याप्रसाद भार्गव, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट व
ज़मिंदार, नवावगंज, गोंडा ।

देखकर लीजियेगा

अन्यथा धोखे में पड़कर पछुताइयेगा ।

सन्तति शास्त्र छठवाँ
संस्करण

अर्थात् उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के नियमों का संग्रह ।

हिन्दी-साहित्य-संसार में यह एक ही ग्रन्थ है जिसकी विषय-सूची पढ़ने से ही मालूम हांगा कि पुस्तक कितनी उपयोगी है। इसकी उपयोगिता के विषय में अधिक लिखना दीपक से सूर्य ढूँढ़ने का भाँति है। इसलिये प्रत्येक मनुष्यको एक २ प्रति रखना अति आवश्यक है। इस ग्रन्थ में वैद्यक और डाक्टरोंके मतानुसार सुन्दर तथा बलिष्ठ संतान उत्पन्न करने और स्त्रियों के नाना प्रकार के गुप्त रोगों के विषय में पारिडल्य पूर्ण विशद विवेचन किया गया है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या ४४८ ऐन्टिक कागज़ व सुन्दर कपड़े की जिल्द से आभाषत है।

मूल्य १०/०

पुस्तक मिलान का पता—

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

शीघ्र खरीदें—

हिन्दी अंग्रेजी मास्टर

इस अमूल्य पुस्तकको पढ़कर अपना

ज्ञान बढ़ाइये, व्यापार में उन्नति कीजिये, स्वतन्त्र बनिजिये ।

एक अनुभवी सुयोग्य ग्राजुएट से तयार कराके मैंने इस अपूर्व पुस्तकको प्रकाशित किया है, हिन्दी भाषा जाननेवालों के लिये ऐसी पुस्तक अबतक नहीं छपी थी । इस पुस्तक में अंग्रेजी भाषाका सम्पूर्ण व्याकरण सरल हिन्दीमें लिखा गया है, शब्दोंका शुद्ध उच्चारण पुस्तक भरमें आद्योपान्त लिखा गया है । प्रतिदिनके काममें आनेवाले अंग्रेजोंके सभी शब्द लिखे गये हैं, इनका शुद्ध उच्चारण, अर्थ तथा वाक्यों में इनका प्रयोग भी दिखलाया गया है । अंग्रेजीमें चिट्ठी लिखने, तार लिखने, हुराडो, हैन्डनोट इत्यादि लिखनेको विधि, वैज्ञानिक, भौगोलिक, रेल, तार, डॉक, व्यवसाय तथा अदालतों और फौजी शब्दोंकी बड़ी बड़ी सूचियाँ दी गई हैं । अन्तमें अंग्रेजी भाषाको कहावतें भी दी गई हैं ।

हिन्दी जाननेवाले इस पुस्तकको सहायतासे ही अंग्रेजी भाषाका पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, उनको किसी अन्य मास्टरकी आवश्यकता न होगी । इस पुस्तकके अध्ययन करनेसे एंग्लो-इण्डियन विद्यार्थीसे कहीं अधिक अंग्रेजीका यथार्थ बोध हो जायगा । मोटे मज़बूत कागज़ पर छपी हुई जुज़ुबन्दी सिलाईकी पुष्प जिल्ददार प्रायः ४८० पेजकी पुस्तकका दाम सर्वसाधारणके लाभके लिये केवल १॥) रक्खा गया है ।

पता—भारगव पुस्तकालय बनारस सिटी

दर्शनीय सचित्र जन्मपत्र ।

संसार में बेजोड़ हजारों की लागत से तैयार, अभूतपूर्व शास्त्राक्त विधि से उचित २ स्थानों में सैकड़ों चक्रों से सुसज्जित एवं राशियों के चित्र तथा अनेकों तिरंगे पँचरंगे नवग्रहों से सम्भव नौ अवतारों के चित्र, फल लिखने को रुलदार बेलबूटेदार कागज आदि लगाकर इस तरह से छापे गये हैं कि एक जन्मपत्र जिस गाँव या शहर के मुहल्ले में पहुँच जायगा, वहाँ उसके दर्शन करने का सैकड़ों लोग आवेंगे, ये जन्मपत्र नीचे लिखे माफिक पाँच तरह के छापे गये हैं ।

- | | | |
|-------|---|-------|
| (१) | जिसे परिडित लॉग पाँच रुपये में बनावेंगे । | १।) |
| (२) | ” दस ” ” ” | १।।) |
| (३) | ” पन्द्रह ” ” ” | १।२।) |
| (४) | ” बीस ” ” ” | ४।।) |
| (५) | ” पचोस ” ” ” | ५।।) |

हम इस जन्मपत्र के प्रकाशन से आशा करते हैं कि इस कार्य से सभी वर्ग के लोग प्रसन्न होकर इसे अपनावेंगे ।

पुस्तके मिलने का पता—

भारत पुस्तकालय बनारस सिटी